धान

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

धान

पी. वत्सला

अनुवाद

राकेश कालिया

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-2700-3

पहला संस्करण : 1999(*शक 1921*)

Original Title : Nellu (*Malayalam*)
Translation : Dhan (*Hindi*)

रु. 75.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

भूमिका

वत्सला ऐसे उपन्यासकारों में से हैं जिनके साहित्य में जिम्मेदारी तथा कला कौशल का सुंदर संगम हुआ है। उन्होंने सामाजिक उत्तरदायित्व को एक तपस्या की तरह, एक पवित्र अनुष्ठान की तरह लेकर अपने साहित्य को आकार दिया है। कुछ ऐसे उपन्यासकार भी होते हैं जो सामान्य जीवन को पढ़ने का कोई विशेष उद्यम नहीं करते। जो लोग एक-एक व्यक्ति में, भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को कल्पना के सहारे पुनः आविष्कृत करते हैं, उन्हें प्रसिद्ध कलाकार के रूप में ख्याति मिलती है। पी. वत्सला को भी ऐसी ही विशिष्ट सिद्धि प्राप्त है। किंतु वे यहीं पर विराम न लेकर समाज के अपरिचित और अब तक अनावृत रहे क्षेत्रों की खोज करने की साहसिकता भी दिखाती हैं। उन अपरिचित क्षेत्रों की कहानियों में निमग्न व्यथाओं को जानने के लिए यह मनोभाव आवश्यक है। 'नेल्लु' नामक इस उपन्यास में वत्सला ने वयनाड के आदिवासी गिरिजनों के जीवन को अनावृत किया है। तिरुनेल्ली नामक जगह के आसपास रहने वाला एक अपरिष्कृत मानव-समाज है, जिनसे केरल के अधिकांश लोग अपरिचित हैं। शिक्षा, आधुनिकता, नगरीय जीवन आदि मूल्यों में विकसित देशों से टक्कर लेने वाला राज्य केरल है। इस प्रदेश के हर सीमांत क्षेत्र में आदिवासी अपनी आदिम व्यवस्था के साथ जीवन बिताते हैं। इन क्षेत्रों को केरल का अफ्रीका कहा जाता है। इन आदिवासियों के लिए आधुनिक सामाजिक व्यवस्था असहनीय है। घनघोर जंगल, जोंकों से भरी पगडंडियां, गरीबी, खाने की चीजों का दुर्लभ होना आदि ऐसे कारण हैं जो नगरीय लोगों को यहां से दूर रखते हैं। इन दुरवस्थाओं के बीच वत्सला ने इन लोगों के मध्य खासा समय बिताया और इनकी जीवन-व्यवस्था का अध्ययन किया। तीस वर्ष की आयु जीवन का रस लेने का समय माना जाता है। एक उपन्यास की रचना के लिए इतने कष्ट उठाने का साहस कौन युवा कर सकता है? जिम्मेदारी का तीखा अहसास अगर नहीं है तो कोई भी यह त्याग नहीं कर सकता। वत्सला ने तिरुनेल्ली में रहकर गिरिजनों की तकलीफों का अनुभव किया, उनकी भाषा को अपनाया, जंगल के जीवन की जटिलताओं का प्रत्यक्ष अनुभव लिया और आदिवासी गिरिजनों के संकल्प, मूल्य-बोध आदि का सूक्ष्म निरीक्षण भी किया। उन्होंने सहानुभूति से देखा-समझा कि जंगली कहे जाने वाले लोगों में कितनी गहराई तक करुणा और कठोरता जड़बद्ध है। इतनी तैयारियों के बाद ही उन्होंने 'नेल्लु' पर काम शुरू किया। उनकी कठोर मेहनत और साहित्यिक क्षमता कितनी अनुपम है, इस तथ्य का प्रमाण उनका यह प्रथम उपन्यास ही है। मलयालम भाषियों के बीच यह पुस्तक समादृत है। सन् 1972-95

तक में इसके चार संस्करण इसकी लोकप्रियता का ही प्रमाण है। महाश्वेता देवी के 'अरण्येर अधिकार' उपन्यास में मुंडा जनजाति के इतिहास से संबंधित एक विप्लव कहानी प्रस्तुत की गई है। इस कृति में राजनीति की प्रधानता है। परंतु 'नेल्लु' राजनीति या इतिहास पर आधारित नहीं है, यह एक सामाजिक उपन्यास है। 'अरण्येर अधिकार' की तरह इसको भी भारतीय साहित्य में प्रमुख स्थान मिलेगा।

पच्चीस वर्ष पहले यह उपन्यास लिखा गया था। बीच के इस अर्से में पी. वत्सला ने आदिवासियों से संबंधित दो और उपन्यास लिखे—'आग्नेयम्' और 'कूमनकोल्लि'। श्री के. जे. बेबी का 'मावेली मन्ट्रम' भी आदिवासियों के जीवन से संबंधित उपन्यास है जो कुछ वर्षों के अंतर से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास को भी बहुत ख्याति और पुरस्कार मिले हैं। मलयाट्टूर रामकृष्णन का 'पोन्नि' उपन्यास भी इसी श्रेणी का है। इन कृतियों के अतिरिक्त इस अपरिष्कृत जन-समूह पर ध्यान केंद्रित करने वाली रचनाएं मलयालम में लगभग नहीं है। इन आदिवासियों का जीवन विकट घने जंगलों जैसा है। इसकी यथार्थ स्थिति समझने के लिए सहानुभूति पूर्वक उनकी प्राकृतिक जीवन-शैली मे खुद को ढालना होगा। साथ ही उनके जीवन के वस्तुपरक तथ्यों का इतिहास तथा समाज की पृष्ठभूमि में विश्लेषण करने के लिए मानसिक रूप से पूरी तैयारी करनी होगी। अपनी प्रथम रचना में ही एक नारी ने इन महत्वपूर्ण बातों का सफल समन्वय किया हैं, यह एक उल्लेखनीय बात है। महाश्वेता देवी का 'अरण्येर अधिकार' नेल्लु उपन्यास की तरह प्रथम उद्यम नहीं है। पचास वर्ष की परिपक्व अवस्था में उन्होंने इस उपन्यास की रचना की। शोषित वर्ग के प्रति सच्ची सहानुभूति और आदिवासी जनजाति के इतिहास और समकालीन जीवन के मूल्यों की खोज की तत्परता ने 'अरण्येर अधिकार' को भारतीय साहित्य मे प्रमुख स्थान पर प्रतिष्ठित किया है। महाश्वेता देवी की तुलना में पी. वत्सला उतनी प्रसिद्ध नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि भारत के सुदूर दक्षिण के एक छोटे राज्य में बोली जाने वाली भाषा मलयालम में वे लिखती हैं। इस कमी को दूर करने के लिए ही इस उपन्यास का अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद की योजना बनाई गई।

इस उपन्यास का शिल्प प्रकृति को इस सुंदर सृष्टि वन की याद कराता है—

दूरिकृताः वलुगुणैशैन्यानलता वनलतादिः

कालिदास के इस वर्णन की तरह ही कथा नायिका के अंग-प्रत्यंग में सज्जा रहित लावण्य है। जंगल में आग फैलाने वाले और दुष्टता की कुल्हाड़ी अपने साथ रखने वाले नगर के लोगों के आक्रमण से वन वृक्ष नष्ट हो जाते हैं, उसी तरह समाज के अग्नि के समान नियमों से भस्म होते लोग या फिर नगर के दुष्प्रभाव में ग्रस्त युवावर्ग नष्ट हो जाते हैं। जंगल के क्रूर जानवरों की तरह शिकार को अपने हाथों से न निकलने देने वाले मुखिया लोग हैं। जानवरों की तरह केवल आज के भोजन को छोड़ और कोई चिंता न करने वाले आदिवासी

गिरिजन हैं। उनको अपने बस में कर काम कराने वाले जमींदार लोग—यही है यहां की अवस्था। अंधी गुफाओं जैसी झोपड़ियों में जानवरों की तरह जीवन बिताते और जमींदार की खेती की रक्षा के लिए पेड़ों पर मचान बांधकर पक्षियों की तरह रहते आदिवासियों का दुखद जीवन, जंगल के पशुओं की तरह भूमि से सहज लगाव जैसे सामाजिक नियम, कभी-कभी झरने की तरह और कभी चट्टानों से टकराकर मोतियों की भांति बिखरती जल-प्रवाह के समान संवेदनाएं, बिना कष्ट दिए जोंक की तरह दूसरों का खून पीने वाले कुरुमाट्टी जैसे अपरिष्कृत स्वभाव के लोग, लकड़ी काटने के काम का प्रलोभन जो पेड़ पर ऊंचाई पर लगे छत्ते की तरह लुभाता है, जहां पहुंचने की कोशिश में अकसर गिरना पड़ता है—इस सारे इतिवृत्तों से बना उपन्यास का ढांचा जंगल के नियमों का अनुस्मरण कराता है। यह प्रयत्न से लाई गई शैली नही है बल्कि देह और देही की तरह गिरिजनों की कथा और उनका जीवन-सार एक ही भाव में आया है।

'नेल्लु' का आधार जंगल और जंगल के लोग हैं। नेल्लु (धान) सभ्य संस्कृति की उपज है। कृषि और किसान की समस्याओं पर केंद्रित रचनाओं में चेरुकाड्डु की 'मन्निन्टे मारिल' (धरती की छाती), तकषी की 'रण्डिटङ्ङपि' (दो सेर धान) है। इसी तरह वत्सला ने इस उपन्यास का नाम नेल्लु दिया। जंगल में बसे कृषकों पर हो रहे शोषण को इंगित करना उनका उद्देश्य था। जंगल में बाहर से आए लोग, तिरुनेल्ली मंदिर का महंत वर्ग, जमींदार—ये सब आदिवासियों के शोषक हैं। आदिवासी गिरिजनों को अपनी भरपूर मेहनत से 'नेल्लु' मिलता है और वही उनके लिए दुर्लभ बन जाता है।

लेखिका को यह स्तब्ध कर देने वाला अनुभव हुआ कि आदिवासियों की भूख मिटाने के लिए उनकी मेहनत से उत्पन्न अन्न ही उनको दुर्लभ है। इसी अनुभव को स्पष्ट करने के लिए श्रीमती वत्सला ने अपनी रचना का नाम 'नेल्लु' रखा।

मारा और मल्लन के बीच प्रेम और उसके दुखद अवसान की कथा उपन्यास के शिल्प में प्रमुख है। किंतु धान उपजाने की मेहनत उपन्यास के हर भाग में प्रज्वलित है। वन-भूमि के स्वामी कभी आदिवासी थे। बाद में बाहर से आए लोगों ने इसे हड़प लिया। जंगल में खेती होने लगी और इसी के साथ आदिवासियों की मुश्किलें बढ़ीं। उनकी मेहनत का कोई खास प्रतिफल भी नहीं मिलता, इसके अलावा जंगल के कंद-मूल की सुलभता भी कम होने लगी। कृषि के आगमन से आदिवासियों को दोहरा दंड भुगतना पड़ा। प्रकृति के वरदान के रूप में उपलब्ध वन के कंद-मूल दुर्लभ हो गए। दूसरी ओर धान की खेती कराने वालों के गोदाम भरते गए। किंतु गरीब गिरिजन को चावल का दाना भी मयस्सर नहीं। इस सामाजिक व्यवस्था में ही उनकी दुखद कहानी छिपी है। प्रेम की दुर्घटना भी इसी जटिल व्यवस्था के कारण है। अगर मल्लन को अपना मेहनताना मिलता तो वह अपनी प्रेयसी के साथ सुखी जीवन ही बिताता। मारा ने अपने मल्लन के सहारे ही सामाजिक

नियमों का उल्लंघन किया था। वेल्लामोडी या तिरुनेल्ली के ब्रह्मगिरि या पक्षिपातालम् जैसी दुरूह जगहों पर भी वह मल्लन के साथ आनंदपूर्वक रह लेती। वह मल्लन के लिए जीना-मरना चाहती थी। पर यह उसके भाग्य में न था। मल्लन उसको भगाकर ले आया। तब उसके मन में था कि अम्बलकुन्नु के मालिक गोरे तंपुरान और कलप्पाड की स्वामिनी तिरुवोलम्मा दोनों ही उसे आश्रय देंगे। गोरे तंपुरान के नाम से मशहूर रायवन नायर 'वार्यत्त' घराने का मुख्य कारिंदा था। अन्य जमींदारों की तरह वह आदिवासियों का अनुचित लाभ नहीं उठाता था। उसके मन में दया थी। इसीलिए मल्लन को आशा थी कि उसे स्थायी नौकरी और घर मिल जाएगा। किंतु मालकिन तिरुवोलम्मा ने उसे कोरा जवाब देकर मुंह फेर लिया। मल्लन ने वहां दिल-तोड़कर काम किया था। अपनी पत्नी को लाने पर रहने का इंतजाम करना उन लोगों का कर्त्तव्य था। मालकिन को पता था कि अदरम के खेत की झोपड़ी खाली है पर वे उन्हें बचाने को तैयार न थी। मल्लन के निराश लौटने पर वह बड़बड़ा रही थी कि अब कुरिच्चन केलन उसे अपना दास बनाएगा। मल्लन जैसे कार्य कुशल व्यक्ति को ये लोग दास बनाएंगे पर संरक्षण नहीं देंगे। यही मनोभाव सब भूपतियों का है। सिर्फ राघवन नायर अलग था। उसने ही इस शोषण की क्रूरता समझकर आदिवासियों के साथ इंसानियत का व्यवहार करने का सफल प्रयत्न किया। परंतु एक कारिंदे की सीमाएं उसे रोके हुए थीं।

दोपहर तक काम करने के बाद खेत के मजदूरों को वल्ली के रूप में निश्चित मात्रा में चावल दिया जाता है। इसे घर लाकर, साफ करके उबालना है। वह मांड़ पीकर फिर काम में जुटना है। मजदूरनियों को तो ये वल्ली भी नहीं मिलती, उन्हें कल के चावल से ही संतोष करना होता है। राघवन नायर ने उन्हें वल्ली देना शुरू किया तब वारस्यार (मालकिन) ने मारा और उसके बीच संबंध की कहानी जोड़नी शुरू की। यहां मालकिन की ईर्ष्या भी झलक उठती है। घास की दरियां बिनने वाले गृह स्वामी खेतों की देखभाल नहीं कर सकते। कारण—कार्यकुशलता का अभाव।

राघवन नायर पितृतर्पण के लिए तिरुनेल्ली आया था। फिर वह लौटकर वापस नहीं गया। यहीं पर खेती करके रहने की उसने कोशिश की। तब उसे वार्यत्त घर के अम्बलकुन्नु खलिहान की देखरेख का काम मिला। मालकिन का रुख राघवन नायक के प्रति बदलने लगा। परंतु राघवन नायर अपनी सीमा पार करने को तैयार न था। मल्लन और मारा को रहने को जगह नहीं मिली, इसीलिए राघवन नायर क्रोधित था। वह अस्वस्थ भी था। दास-दासियों में स्वाभिमान होना जमींदारों की कल्पना से भी परे था। किंतु मल्लन और मारा के बिना गिड़गिड़ाए चले जाने पर समस्त उच्च वर्ग स्तब्ध रह गया। उनकी चिंता अपनी दोष भावना के कारण न होकर इसलिए थी कि ऐसे अच्छे मजदूर और नहीं मिलेंगे। मल्लन को यहां तनख्वाह पेशगी में ही मिल जाती थी। मल्लन के कहीं और मजदूरी करने

पर वह वहां से पेशगी लेकर यहां का उधार वापस कर देगा, ऐसा वारस्यार का विचार था। कुरिच्चन केलन मल्लन को अपने यहां बहलाकर ले आया है, इस बात का पता राघवन नायर को मालकिन वारस्यार से लगा। वह केलन के यहां जाकर मल्लन को वापस ले आया। उसने वेल्लरोटिमूला में उन दोनों को ठहरने का निश्चय किया। वह जमीन तिरुनेल्ली मंदिर से मिली थी। इसके लिए तिरुनेल्ली देवी को दिन में दो बार चावल चढ़ाया जाता था। आठ एकड़ भूमि थी। उसे साफ करवा के मल्लन के अतिरिक्त अन्य दो परिवारों को भी वहां बसाकर खेती शुरू करने का राघवन नायर ने निश्चय किया। चात्तन और कुरुमन की झोपड़ियां पास-पास थीं। यहां रहकर सफाई करने के अलावा जंगल के बांस काटने की अनुमति मल्लन को राघवन नायर ने दे दी। यहां की आमदनी से जुर्माना भर के अपने सामाजिक-निषेध के दंड को छुड़वा लेने की मल्लन की आशा थी। यह जुर्माना क्या है?

समाज के नियमों के अनुसार एक ही परिवार के दो लोगों के बीच विवाह का निषेध था। मल्लन और मारा को एक ही परिवार का समझा गया। इस निषेध का उल्लंघन करने पर उन्हें जाति-बाहर कर दिया गया।

गुदना गोदने वाली एक लड़की कुरुमाट्टी मल्लन को चाहती थी। उसने अपने पति को छोड़ दिया था। एक रात वह मचान पर मल्लन के पास पहुंच गई। मल्लन ने किसी तरह पीछा छुड़ाया क्योंकि वह मारा को प्यार करता था। मारा और मल्लन की शादी रोकने के लिए तब कुरुमाट्टी ने झूठी कहानी गढ़ी। उसने मुखिया लोगों को भी अपने बस में कर लिया। इसलिए मल्लन-मारा की शादी पर रोक लग गई। मारा ने स्वयं मुखिया के पास जाकर अपना दुखड़ा रोया। मुखिया ने एक हजार सिक्कों का जुर्माना अदा करने का फैसला दिया।

जंगल में काम करते-करते मल्लन को मलेरिया हो गया। चिकित्सा की जगह झाड़-फूंक आदि चलता रहा। सही इलाज के अभाव में मल्लन की मृत्यु हो गई। पर लोगों का विश्वास था कि अनीति करने के कारण उस पर मलुकारी देवी का कोप पड़ा है। मारा को मल्लन की मृत देह देखने की भी अनुमति नहीं मिली।

जुर्माना भर दिए जाने पर यह नौबत न आती, ऐसा उन लोगों का विश्वास था। एक हजार सिक्के भरने पर मल्लन और मारा का विवाह स्वीकृत मान लिया जाएगा, मल्लन-मारा का स्नेह, संघर्ष आदि का निरुपण इस उपन्यास में हुआ है। पर इन सबसे बढ़कर जिस तथ्य की तीखी, मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है वह यह है कि उत्पादक को अपनी उत्पाद्य वस्तुओं का उपयोग करने की आजादी नहीं है।

जमींदार भूमि के मालिक और आदिवासी महज गुलाम हैं। ऐसी विषमता की सामाजिक व्यवस्था का कारण क्या है? पहली बात तो यह कि 'यह भूमि हमारी है, तुम्हारा इस पर कोई हक नहीं' की घोषणा करने के लिए आदिवासी अशक्त थे। शिक्षा का उन्हें अभाव

था। महावत सिर्फ एक अंकुश और अपने मनोबल से हाथी को अपने नियंत्रण में रखता है। हाथी को अपनी शक्ति का पता ही नहीं। इसी तरह शिक्षा और व्यवहारिक ज्ञान से लैस जमींदारों ने इस असंगठित मानव-समूह से लाभ उठाया। इनकी मेहनत से अपने खलिहान भरे। हाड़ फूंककर मेहनत करने वालों को दोपहर की वल्ली देना भी उन्हें अपनी कृपा और दया लगती है। आदिवासियों के अपने ही समुदाय के लोगों के प्रति किए जाने वाले अनाचारों के पीछे शिक्षा के अभाव का कारण छिपा है। एक जगह से आने वालों को एक ही परिवार का मान लेने की बात पर आंखें मूंदकर विश्वास कर लेना, एक ही परिवार में विवाह होने पर देवी मलंकारी के कोप का प्रचार करना कि घाटी में विष ज्वर फैलेगा, तूफान आएंगे आदि बातें मल्लन-मारा के गठबंधन को एक दुर्घटना मे बदलने का कारण बनीं। देवी के कोप पर जुर्माना ही प्रायश्चित है, यह एक अन्य अंधविश्वास था। ऐसे मौकों पर समाज व्यक्ति का शिक्षक बन जाता है। जुर्माना न देने पर समाज बहिष्कृत कर देगा। उत्सवों और काक्कप्पुला जैसे आयोजनों में भाग लेने का अवसर नहीं मिलेगा। मारा ने मुखिया जवरण और उसके उत्तराधिकारी जोगी की खुशामदकर सजा कम करवाने का बहुत प्रयत्न किया। यह जुर्माना ही मल्लन के जंगल में जाकर लकड़ी काटने का कारण बना। यदि वह जुर्माना नहीं भरेगा तो ज्वर उसे ग्रस लेगा, मलंकारी का प्रकोप पड़ेगा, ऐसा उसे डर था। इन सबका कारण कुरुमाट्टी है। उसी ने मुखिया को अपने वश में करके बहिष्कार की सजा घोषित करवाई। उसने ही कहा कि मल्लन और मारा एक ही परिवार के हैं। जुर्माना देने से समस्या का अंत हो जाएगा, इसके लिए मारा ने पान-सुपारी मुखिया की भेंट चढ़ाए। सभी को पता है कि पान सुपारी की रिश्वत से मुखिया लोग समाज से निकाल सकते हैं या फिर अपना आदेश वापस ले सकते हैं। फिर भी लोग इनको देवी का प्रतिनिधि और अपने समाज का नियमकर्त्ता मानते हैं। यह अंधापन उनके शोषण के मार्ग खोलता है।

अगर मछुआरों के समुदाय में किसी लड़की ने अपना धर्म तोड़कर बाहर दूसरी जाति के जमींदार से संबंध जोड़ लिया तो मछुआरों के वंश और समुद्र तट का विनाश हो जाएगा, यह अंधविश्वास जैसे तकषी के 'चेम्मीन' उपन्यास को प्रभावित करता है, वैसे ही एक परिवार में विवाह होने पर विनाश होने का अंधविश्वास 'नेल्लु' में खलनायक बनकर आता है। यद्यपि यहां धान पर आधारित दो विरोधी वर्गों के बीच होने वाले संघर्ष का कोई लेना-देना नहीं है। पर तकषी के 'चेम्मीन' के उस अंश में और धूमकेतु जैसे मल्लन और मारा के पवित्र प्रेम को नष्ट करने वाली कुरुमाट्टी वाले 'नेल्लु' के अंश में साम्य देखा जा सकता है। इस तथ्य को भी मान्यता देनी होगी कि मनुष्य के जीवन में ऐसी भी समस्याएं होती हैं जिनका वर्ग संघर्ष से कोई नाता नहीं है और इनकी संवेदनाओं के चित्रण को भी साहित्य में प्रमुख स्थान प्राप्त है। एक लेखक जिसने व्यक्ति विशेष के मन में उठने वाले उन तूफानों

का अध्ययन नहीं किया है, जो जीवन में अनबूझ पहेलियों और त्रासदियों को जन्म देते हैं, तो वह श्रेष्ठ कृति का रचयिता नहीं हो सकता। मारा के मन में गोरे तंपुरान राघवन नायर के प्रति आत्मीयता का भाव है। उस भाव की पवित्रता, उसकी निष्कपटता, उसकी तीव्र व्यथाएं, जिनके लिए वे अधिकृत नहीं थीं –ये सब बातें राघवन नायक के मन में सहानुभूति जगाती हैं। इसकी परिणति है प्रेम का सूक्ष्म आविष्कार। इस चित्रण में वत्सला की साहित्यिक विजय अभिनंदनीय है। साथ-साथ उनकी कल्पना समाज की बाह्य परिधि और व्यक्ति के भीतरी क्षेत्रों को समान निरीक्षण प्रतिभा से जोड़ती है। इसलिए कह सकते हैं कि 'नेल्लु' में सामाजिक उत्तरदायित्व और काल्पनिक सौंदर्य का मेल हुआ है। वत्सला ने स्वयं इस जीवन की समस्याओं का अनुभव किया है। पहाड़ों पर रहते आदिवासी, उनकी भाषा, विश्वास, व्यथाएं, आशाएं, दुर्घटनाएं—इन सब के अद्‌भुत मेल में, एक समग्र ज्योति की तरह 'नेल्लु' प्रस्तुत किया गया है। वत्सला को इस स्वरूप को बनाने में अपनी पूर्व-तैयारियों से सहायता मिलती है। बावली नदी के समान कभी रोकर, कभी हंसकर विभिन्न, विचित्र मार्गो से मानव जीवन भी बहता जाता है। वत्सला ने अपनी संपन्न कल्पना शक्ति से इसे रंग-विरंगे रूप में प्रस्तुत किया है। कुमारन आशान की 'लीला' या तकषी की 'चेम्मीन' की तरह 'नेल्लु' भी एक प्रेम-दुर्घटना के रूप में समाप्त हो सकता था। किंतु वत्सला का निर्णय कुछ और था। यह कृति अंधकार के बाद आने वाली सूर्य-किरणों की कांति ग्रहण कर समाप्त होती है। इच्छा-भंग के अंधकार के बाद आशा की अरुणाभा फैलाने को तत्पर एक जीवन-दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति लेखिका का उद्देश्य है। चीते की धारियां मिटाई नहीं जा सकतीं या स्थाई बुराई नष्ट करना आसान नहीं है। इसी तरह बुर्जुआ वर्ग और शोषित वर्ग की दूरी मिटाई नहीं जा सकती। लेकिन राघवन नायर इस अंतर को मिटाने में सफल होता है। यह एक तरह का काल्पनिक सपना है। फिर भी इस उज्वल आशा को क्रिया में लाने पर सामाजिक परिवर्तन हो सकता है। राघवन नायर की तरह लोग हो जाएं तो रक्त की एक बूंद बहाए बिना इन्कलाव लाया जा सकता है। फिर भी यह कल्पना मात्र है। राघवन नायर जैसे लोग मुट्ठी भर ही हो सकते हैं। उच्च वर्ग में जन्मे लोगों की कपटता की धारियां मिटाना आसान नहीं है। वारस्यार के बेटे उन्नि को मारा के प्रति उपभोग करने की जो भावना है, वही उच्च वर्ग का निम्न जातियों के प्रति दृष्टिकोण है। 'कुटियोषिकल'[1] नामक कविता का नायक इस संसार को अच्छा बनाना चाहता है। उसे गर्व है कि वह एक ऐसे समाज के पक्ष में जहां 'उच्च-मध्य-निम्न' कोई वर्ग नहीं है। फिर भी निम्न जाति की लड़की को प्रलोभन देकर भोग कर छोड़ देना साधारण बात है। कुमारी लड़कियों का स्नेह, अनुराग उनके लाल कंगनों की तरह है। उनमें से यदि एक टूट गया तो दूसरा आ जाएगा, कालेज विद्यार्थी उन्नि का यह मत था। किन्तु राघवन नायर का

1. कुटियोषिकल—वइलोप्पल्लि श्रीधर मेनोन की एक कविता।

मत भिन्न है। मल्लन की मृत्यु के बाद अनाथ मारा को समाज के विष से बचाने के लिए जो अपराध राघवन नायर ने किया ही नहीं, वह अपराध अपने सिर पर उठाने को वह तैयार था। राघवन नायर का मारा से कोई संबंध नहीं था। उसका व्यवहार स्त्रियों के प्रति दयालु था। उसे पता था कि मारा की इस स्थिति का कारण उन्नि है। इस बात को छिपाकर, जुर्माना देकर मारा को स्वीकार करके उसके सम्मान की रक्षा करना ही राघवन नायर का उद्देश्य था। वह सहृदय था। उच्च वर्ग का होते हुए भी वह अच्छा आदमी था। भले-बुरे सब जगह होते हैं, यह कहने में वत्सला को कोई संकोच नहीं है। इस कथा पात्र के चित्रण से वत्सला की सामाजिक जिम्मेदारी में कोई कमी नहीं आती क्योंकि मानवीयता पर उनका पूरा विश्वास है।

'राजा मर गया उसकी जय हो' के नारे सी इस उपन्यास की आशा इसकी आत्म-सत्ता में किसी प्रकार की कोई भी कमी नहीं करती है। नेल्लु या धान एक ऐसा पौधा है जो अपना सिर भी पराया मानता है। इस पौधे को देखने पर ही कुछ महान लोग जीवन का अर्थ समझते हैं। जब लव-कुश अपने गंतव्य पर पहुंच गए तब सीता ने भूमि में मिल जाना ही श्रेयस्कर समझा। धान का पौधा भी इसी तरह बीज खलिहान पहुंचने पर धरती में मिल जाता है। दोनों एक ही प्राचीन तत्व के रूप हैं। यह पौधा भूमि में मिलकर खाद बनाता है और आने वाली फसलों का पालन-पोषण कर मातृत्व धर्म की निरंतरता बनाए रखता है। यह निरंतरता भी जीवन के परमार्थो में एक है। उपन्यास के अंत में मन को पवित्र कर देने वाली त्रासदी, संध्या के उस अंधकार सी है जिसमें सब कुछ विलीन हो जाता है। उपन्यास के अंत में नए सूर्योदय की कथा का मंचन इस अंधेरे को मिटा नहीं पाता। फिर भी कर्तव्य की चिंता दिल से नहीं जाती। जीवन-प्रवाह की निरंतरता धान को परिपक्व कर धान की वाली में बदलती है। जीवन की समस्याओं को दार्शनिक प्रभामंडल के साथ इस उपन्यास में प्रस्तुत किया गया है। पी. वत्सला के 'नेल्लु' ने अवश्य ही मलयालम साहित्य की श्री वृद्धि की है।

—एम. लीलावती

1

धनु का महीना। पूनम की रात। धरती की गति, घूरता काना राक्षस आकाश। मल्लन को डर लगा। अपने में सिमटकर कांप रहे मचान... सो रहे मचान। रखवाली के लिए आकर लौटने के समय मल्लन सोच रहा है—

'सोना नहीं! एक भी दाना सूअर को नहीं देना है।' फटे बोरे के टुकड़े को खीच-खांचकर उसने पैरों की एंड़ी तक ढक ली।

कड़कड़ाती सर्दी—हजारों दांत हैं शीत के ...जैसे अंधेरे में बढ़ा जा रहा बड़ा-सा जंगली बिल्ला। वह अंधेरे की आड़ में पैरों को खरोंच रहा है। जंगल से सीटी बजाती आ रही हवा उसके कानों और नाक पर आक्रमण कर रही है। मल्लन की नींद उड़ गई।

सोना नहीं है। जरा-सी निगाह चूकी तो बांसों के झुरमुट की ओट में बैठे सूअर झाड़ियों की छाया में छिपकर मुंह मारने आ जाएंगे।

नींद के हमले से शिथिल रखवाले की सांस की गंध की ताक में लगे सूअर सूंघ लेते हैं।

जो खाना है वह खाकर बाकी कीचड़ में दबाकर जब सूअर जंगल के अंधेरे में गायब हो जाते हैं तब जाकर रखवाला जगता है। खेत में बस ठूंठे, अंधकार देखकर उसका मुंह विकृत हो उठता है, फिर भी करवट लेकर वह गहरी नींद में डूब जाता है। जिस बात का डर था, वह तो हो गई। अब छोड़ो भी...।

'नहीं-नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए।' मल्लन ने सोचा। तम्पुरान ने मुझ पर विश्वास किया है।

आस-पास के खेतों में गंधकशाला धान पक गया है। एक-एक दाने में तम्पुरान के प्राण बसते हैं। एक भी दाना झड़ने पर उनका दिल टूट जाएगा।

जंगल में कहीं किसी पेड़ की सूखी डाल टूटी। चौंककर उठे मल्लन की डरी आंखें चारों ओर घूमने लगीं। फिर उसने पुरानी चादर में, मचान के अंधेरे के पंखों के बीच खुद को छिपा लिया।

कभी लाल रंग की, लेकिन अब काली पड़ गई चादर को उसने सिर तक खींच लिया। कड़ी सर्दी। 'चाहे पैरों को ही खरोंच खाए, आज सूअर को एक दाना भी नहीं देना है।' उसने सोचा। कोई सूअर आज उसे हरा नहीं सकता।

जंगल से एक तरह का स्वर निरंतर सुनाई पड़ रहा है। पत्ते हिल रहे हैं क्या? या पतझड़ में किसी पदचाप से उभरती रोने जैसी आवाज है? नाले के किनारे की नरम मिट्टी से होकर जब सूअर बाहर आएगा तब और तो और मलंकारी देवी तक को भी पता नहीं चलेगा।

खलिहान की ओर से कोई बुला रहा है? टार्च की रोशनी खेतों में झलकती थी। जंगल की सीमा से लगे खेतों में भी, दूर-दूर जहां अभी चांदनी नहीं पहुंची थी, टार्चें जल-बुझ रही थीं। एक-एक कर फिर सब बुझने लगीं। उस समय धनी-मानी जमींदार खलिहानों के सामने बरामदों में गरम कंबलों के नीचे सो रहे थे।

मल्लन ने करवट ली। मचान के कच्चे बांसों से चरमराने की रोती सी आवाज निकली। उसे तेज भूख लगी थी जो जंगली बिल्ली की तरह उसकी आंतों को खरोंच रही थी।

कितने दिन हो गए चावल की मांड़ देखे? चुंडली के रजस्वला[1] होने के अवसर पर भात खाया था। अच्छा ही हुआ कि तृश्शिलेरी से लौटने के बाद ही वह लड़की रजस्वला हुई। आते समय अपने साथ एक छोटी बोरी भर चावल लाई थी— वह गोरी चुंडली। चावल जब तक खत्म हों, उसने यह कर दिखाया।

तब से पांच दिन-रात बीत गए। मल्लन के मुंह में पानी भर आया। नसें जैसे फड़क उठीं।

खलिहान से दूर, बर्फ की तरह जमी चांदनी में तैरती, उसे खोजती एक पुकार, 'मल्ला ...!...!' उसी की प्रतीक्षा है उसे।

एक नींद का समय बीत जाने के बाद ही मना[2] की तिरुवोलम्मा उसे खाने के लिए बुलाती थी। सांझ की पहली नींद के समय, जब सूअर निकलते हैं, मचान पर बैठा रखवाला खाने की उस पुकार के लिए सो नहीं सकता। अपने दुश्मन को दोगुनी ताकत से भगा देता है।

'ऐ...म...ल्ला...!...!'

मल्लन ने जल्दी से चादर ओढ़ी। भात का ध्यान आते ही उसकी नसों में खून दौड़ पड़ा। मुंह में पानी आ गया। भयंकर जाड़े में खेतों में पसरी ठंड के बीच जैसे उसने डुबकी लगाई। तम्पुरान के बरामदे में मंद-मंद जलते दीये की लौ को लक्ष्य बनाकर अंधेरे को चीरता हुआ तैरता-सा वह आगे बढ़ा...

घुप्प अंधेरे में जब खांसी सुनाई पड़ी तो वह चौंका। बीमार पड़ गए हैं तम्पुरान। दूसरे आसामियों पर विश्वास भी नहीं करते।

'भात के बारे में सोचते ही दौड़ता आ गया ना? मेरे वहां पहुंचने पर नहीं निकल

---

1. केरल में हिंदुओं में प्रथम बार रजस्वला होने पर उत्सव मनाया जाता है।
2. नंबूदरी घराने को मना कहते हैं।

सकता था?'

इतने अंधेरे में भी मल्लन का मुख लज्जा से लाल हो गया, फिर काला हुआ और बाद में पीला पड़ गया।

'हरामी, नाले के पार आम की ओट में ताक लगाए बैठे होंगे।' तम्पुरान बड़बड़ाए।

मल्लन को शरम के साथ दुख भी लगा।

चार दिन की भूख!

मेंड़ से उतरकर वह चुपचाप खड़ा रहा।

टार्च लिए मूसत तम्पुरान निकल गए। चार कदम आगे जाने के बाद मुड़कर पूछा, 'दूसरी तरफ से कोई आवाज सुनी, रे मल्ला?'

'पुलयन कोल्ली में एक हाथी...'

'हट...! हाथी! कोई सूअर या हिरन होगा।'

खंखारकर तम्पुरान चले गए।

खलिहान की ओर जाते समय मल्लन ने सोचा, 'बिना बच्चों का ऊरुवयल[1]।

चारों ओर सन्नाटा छाया था।

हवा केले के पत्तों से टकराकर शोर मचा रही थी। बरामदे से गाय के खुरों की आवाज आ रही थी। रसोई के पीछे जाकर मल्लन ने गला साफ किया।

चौके में बर्तनों की खटपट हुई। बांस की पात्ती[2] से आते पानी से उसने हाथ धोए। पानी बर्फ जैसा ठंडा था। हाथ सुन्न पड़ गए। बदन भी कांप उठा। इस साल की ठंड अभी से शुरू हो गई। संभावित जाड़े के बारे में सोचकर मल्लन उत्कंठित हो गया। दिन भर के काम से हाथों में लगी मिट्टी पानी से धुल-धुलकर बहने लगी। हाथों में मटमैला पानी भर गया।

उसने मल-मलकर मुंह-हाथ धोए और चादर के अगले हिस्से से पोंछ लिए।

द्वार पर तम्पुराटी[3] खड़ी थी। वह बोली, 'आज इतनी सफाई क्यों?' एक हाथ में छोटी लालटेन और दूसरे में भात।

मल्लन संतोष के साथ हंसा।

'रात की रखवाली के लिए ही है न तू?''

वह सकुचा गया।

रसोई के बगल वाली छोटी कोठरी में घुसते समय उसका सिर रोज की तरह चौखटे

---

1. पिछडी जातियों के लोग तम्पुरान (जमींदार) के घर को ऊरुवयल कहकर पुकारते हैं।
2. उत्तर केरल के गांवों में वर्षा से एकत्रित जल। नाले के पानी को नालियों द्वारा घर तक पहुंचाते हैं। इस नली को पात्ती कहते हैं।
3. जमींदार (तम्पुरान) की पत्नी।

से टकरा गया।

'लगता है, तू यह घर ही गिरा देगा।'

पुरानी कड़ाही में भरा भात और उस पर रखा आम का अचार।

'एक पत्ता काट ले।' तम्पुराटी ने चाकू चक्की की ओर फेंक दिया। मल्लन ने अंधेरे में टटोलकर उठाया। चांदनी के प्रकाश में केले के झुंड काले और चांदी के रंगों में रंग-से गए थे। उसने एक पेड़ से पत्ता काट लिया। बाहर निकलते समय तिरुवोलम्मा (तम्पुराटी) ने आवाज लगाई, 'दो हरी मिर्च भी तोड़ ले। सब्जी कुछ नहीं है।'

वह पौधा टटोलने लगा। अंधेरे में फूल भी साथ उखड़ गया।

तिरुवोलम्मा को पता नहीं चलना चाहिए। वह डांटेगी। खुद सींचकर इन्हें बड़ा किया है उसने। देखते ही चिल्लाना शुरू कर देगी, 'सत्यानाश हो इनका। इधर-उधर जो ये भटकते फिरते हैं, उसकी वजह क्या कुछ और है?... अभागे... अपशकुन ही है।...नीच... गंदे...!' सुन-सुन ऊब हो गई है जिन बातों से वही फिर से सुननी पड़ेंगी।

हरी मिर्च से फूल अलग किए बिना ही पत्ते के नीचे छिपाकर वह तेजी से चला।

तिरुवोलम्मा रसोई में ही है।

मिर्च दांतों से काटी। सिसिया उठा... जीभ और पेट में जैसे आग लग गई।

'बकरी की तरह क्या मुंह चला रहा है?'

मल्लन चुप रहा और चबाना बंद किया। चींटियों के बीच फंसे कीड़े-सी हालत थी उसकी जीभ की। कितनी छोटी-सी मिर्च और कैसी जलन है मुंह में...!

'ऐसा नहीं कहना चाहिए था मल्लन को।' तम्पुराटी ने सोचा। दूसरे आसामियों की तरह निर्लज्ज नहीं है मल्लन। काम भी अच्छा करता है। तम्पुराटी ने सिर से पैर तक मल्लन को देखा। लंबा कद, गंदे कपड़े। बस लोग उसे 'जंगली हाथी मल्लन' कहते हैं तो वह गलत नहीं।

जो इस जंगली हाथी को अपने वश में कर ले, भाग्यवान ही है। मेरे पति में ऐसी शक्ति है क्या?

'कितने दिन हो गए नहाना-धोना किए हुए?' मल्लन का सिर लज्जा से झुक गया। तिरुवोल्म्मा ऐसा कह सकती है। वह क्या जाने...?

कल भी नहाया था। आज तो खेत में काम था। घर में भी काम था। ईंधन की लकड़ी बटोरकर रखी तो अंधेरा घिर आया था। नए मचान पर पुआल बिछाकर आया तो रात हो गई थी।

तम्पुरान बोले, 'वल्लि[1] बाद में ले लेना। अभी तो नहीं है।'

---

1. एक दिन की मजदूरी (धान के रूप में)।

कल पूंकुन्नम से कुछ धान मंगवाना है। अपने यहां की गंधकशाला[1] कटने तक तो अकाल खत्म हो जाएगा।

मल्लन खाली हाथ लौट चला। औवा (मल्लन की मां) के पिता का 'पुला'[2] अभी पूरा नहीं हुआ। बहुत तकलीफ में है वह। अपने पास तो फिर रखवाली का काम है। मना के खेत में काम है, इसलिए रात के खाने की चिंता नहीं।

झोपड़ी में सिकुड़ी बैठी औवा के पास खाली जाने को मन नहीं करता। नहाने और कपड़ा धोने का समय बीत गया। नाले का पानी बर्फ की तरह ठंडा होगा। पहना हुआ कपड़ा धोए भी तो पहनने को और कपड़े नहीं हैं।

कल वल्लि मिल जाएगी। एक मानम[3] वल्लि दें तो सेय्दु की दुकान से साबुन लाऊं। बिना झाग वाला हरे रंग का साबुन। कल ही चाहिए।

कुरुमाट्टी के पास से गुजरने पर कैसी सुगंध हवा में फैल जाती है।

उसे वह गमकता साबुन ला देने वाला कौन है?

कुरुमाट्टी का ध्यान आते ही मल्लन की नसें गरम हो उठती हैं।

लकड़ी के नए आसन पर वह खाने बैठा। ठंडे भात में उंगलियां डालने पर उसे चूल्हे के पास आग तापती औवा की याद फिर से आई। उसने ज्यादा नहीं सोचा और भूख ने उस पर हमला कर दिया।

पेट भर गया। ऐसा लगा जैसे बिना पिघला जस का तस पड़ा बर्फ का एक टुकड़ा निगल लिया हो। कड़ाही साफ करके उसने बरामदे में रख दी।

तम्पुराटी बोली, 'मल्ला...जाते समय बरामदे में रखे पटाखे ले लेना।'

फिर से ठंड में। दाईं ओर की मेंड़ पर चलते समय किले की तरह फैले बड़े जंगल की ओर देखने में वह डरता था। हिलती-डुलती, मुंह फैलाती छायाएं। उनमें मृतात्माएं भटक रही हैं। सांस रोककर चलते-चलते मल्लन अपने मचान पर पहुंच गया।

मचान के भीतर मिट्टी की बनाई, अंगीठी में जली आग अब तक तीन-चौथाई से अधिक बुझ चुकी थी। धीमी हवा में धीरे-धीरे हिलती राख की परतों को वह घूरता रहा।

चेट्टुविलयन के खेत की मेंड़ से चलते तम्पुरान की सफेद छाया मल्लन को दिख रही थी। अभी धान फूटना शुरू ही हुआ है। बाली नहीं आई। पुंजा (धान की एक किस्म) वाले खेत में बहुत पहले गंधकशाला रोपी गई थी। उसके पक जाने पर अगली पुंजा की फसल के लिए मिट्टी तैयार की जा सकती है। इस साल का काम यहीं जम जाएगा।

---

1. धान की एक किस्म।
2. मृत्यु के बाद सोलह दिन तक किया जाने वाला अशौच।
3. तौल का एक मात्रक।

बावली नदी के किनारे फसल कटे खाली खेतों में जैसे फीकी चांदनी ने घर बसा लिया हो।

पटाखे वाले थैले की गांठ उसने खोली। आग में और लकड़ियां झोंक दीं। आग भड़क उठने पर सूअरों को भगाने वाले पटाखे छांटे। हाथियों को भगाने के लिए भी पटाखे हैं, पर अभी उसका समय नहीं। पटाखे सुलगाकर उसने ठूंठों के बीच फेंक दिए, पर उनमें धुआं निकलता रहा, फटे नहीं, बुझ गए। खेत की सीमा तक गए दो और पटाखे लक्ष्य पर पहुंचे। झाड़ियां हिल गईं। ध्वनि की तरंगें चांदनी और छाया के किनारों पर टकराकर बिखर गईं। आवाज धीमी होकर खमोश पड़ने तक वह सांस रोके खड़ा रहा।

कुरिच्चन[1] केलन की फसल की भी कटाई हो गई। उसके खेतों में गिरा दिए गए मचान के अवशेष, चांदनी में राख का रंग लिए, दांत निपोरे मल्लन को डरा रहे थे।

केलन अपने घर के बरामदे में खेत की ओर कान लगाए, सोए बिना ही लेटा होगा। चलो, मोतियाबिंद से जकड़ी भतीजे की आंखों को सो लेने दो। फूस भी नहीं छाटी जाती उससे। क्या काम कहें उस निकम्मे से?

सच है न? आज भी रखवाली के लिए नब्बे साल से ज्यादा उम्र वाला केलन ही चाहिए —चाहे खेत हों या खलिहान। उसके पाले-पोसे दूसरे भतीजे-बच्चे कहां गए?

मल्लन ने सोचा, 'उन जमीन वालों से तो हम फिर भी अच्छे हैं।' जंगली सूअरों की अपेक्षा अधिक डर उसे अपने भतीजों से है। खलिहान पहुंचने पर ही धान सुरक्षित है। जानवरों से डरने की जरूरत नहीं, उसे तो समय-समय पर डरना पड़ता है – अपने ही भतीजों-बच्चों से। लेकिन दूसरों को उनसे कोई परेशानी नहीं।

खलिहान में धान भरा पड़ा है। उसके पेट में केवल चावल की मांड़ है। भूखे रहकर इकट्ठा किया गया है वह माल।

यहां का सबसे अच्छा किसान अंदर सोने का बहाना किए पड़े भतीजों के डर से रात-रात जागकर बिताने वाला बूढ़ा है। बावली के पश्चिम में सबसे पहले उसका ही धान पकता है। दूसरों के खेतों में जब तक पहली जुताई पूरी हो, उसका धान रोपाई के लिए तैयार हो जाता है। उसके खेत की मिट्टी अधिक नरम है, लेकिन गहरी भी है। पैदा होने वाला धान ज्यादा समय ले लेता है। फिर भी, बहुत दिनों से मलंकारी देवी की कृपा है उस पर।

सच है कि केलन जगा हुआ है, पर है तो अपने खलिहान में ही। यहां तो बस शून्यता छाई हुई है।

नदी के उस पार कोल्लिमूला से मचानों के गीत उभर रहे हैं। वे बावली पर गुजरती

---

1. आदिवासियों की एक जाति।

ठंडी हवा को गलाकर मृदुल कर देते हैं।

मल्लन ने भी गाने की कोशिश की।

'बत्ता...मा...रा...ना...रा

मैं... भी...आ...या...मा...रा...'

मचानों पर उधर सोए हुए लोग जग उठे। गाने ने भी जोर पकड़ा। ठंड से जमा गला धीरे-धीरे खुलने लगा—

'आ...जा...आ...जा रे।'

मल्लन उठ बैठा। गला साफ किया। मजबूत लेकिन खुरदरी आवाज गूंज उठी। खुले, दूर-दूर तक फैले खेते और बिना रुकावट का प्रवाह—

'फसल की कटाई हो गई...ई...हो...गई...ई

उत्सव हो गया...आ...हो...गया...या...

परिवार मिलन हो गया...आ...आ...ऐ-ऐ

आ...जा...आ...चल, हम कहीं चलें...ए...।'

सहसा गाना बंद हुआ। संकोच से उसका गला अवरुद्ध हो गया।

अभी विशु का दिन नहीं आया। उत्सव भी नहीं हुआ। परिवार मिलन तो छोड़ो, एक काक्कप्पुला[1] तक तो हुआ नहीं।

मैं किसको साथ के लिए बुला रहा हूं? मेरे साथ कौन-सी लड़की जंगल चलेगी? अंधेरे में उसके ओंठ मुस्करा पड़े। ठंड से सुन्न ओठों में गरमी आई।

बावली के पूर्वी और पश्चिमी छोरों के टीलों पर, घास की झोंपड़ियों में रहने वाली कई लड़कियों के चित्र उसके मन में उभरे।

मारा, चंपा, कुरुमाटी?

सोच वहीं रुक गई। खेत के नरम हिस्से में बैल को आगे चलने में जो हिचक होती है, वैसा ही कुछ अनुभव हुआ उसे।

कुरुमाटी, क्या....मुझे छोड़ेगी नहीं?

...शहद जैसा रंग है उसका।

आकाश के तारों-सी चमकती आंखें।

बिना कोहरे के खुली आकाश में राक्षस जैसा डराने वाला वह काना कहां गया?

अपना क्रूर भाव छोड़कर, बहुत कोमल भाव से, उदारता से उसे देखकर चांद मंद-मंद हास विखेर रहा है।

नदी के उस पार के अंधकार की गहनता में समा जाने को उत्सुक गीत की तरंगों को उसने बटोर लिया—

1. कौवों के वेश में आई पुरखों की आत्माओं को संतुष्ट करने हेतु गाया जाने वाला गीत।

'सो गए सब...

साथ तुम्हारे मैं भी ...

आ...आ...

आ जा रे...ओ...आ

जा...रे।'

गहरी नींद में डूबी झोंपड़ी से, सबकी आंख चुराकर उसे ले आना है। मैं उससे शादी नहीं कर सकता। उठाकर ला सकता हूं। उसके पति हैं, बेटी है। उम्र भी मुझसे अधिक हो शायद।

फिर भी, है तो वह कुरुमाट्टी।

बुलाऊं तो क्या आएगी?

तम्पुरान के कारिंदे तक को भगा देती है वह।

'ना...ना...मैं न आऊंगी।'

'मुझे तेरी जरूरत है...।'

'ना...मैं न आऊंगी।'

नदी के उस पार से गीत तिरता चला आ रहा है। कोई लड़का है जिसे नींद नहीं आ रही। धान सब सूअर खा गए होंगे, पता भी न चल पाया होगा उसे। क्या कुरुमाट्टी भी यही कहेगी—'मैं न आऊंगी, यह न होगा मुझसे।'

ठंड ने जैसे जंगली कुत्तों की तरह मल्लन को चारों ओर से घेर लिया। वह करवट बदलने लगा। मचान के कच्चे बांसों से रोने जैसी आवाज निकली।

फसल की कटाई हो जाए। फिर कुंटल[1] मिल जाएगी। वल्लियूरकाव[2] के उत्सव में उसे एक लाल साड़ी खरीदकर देनी है।

एक सुनहले रंग की जरीदार साड़ी।

शहद जैसे उसके रंग पर खूब फबेगी वह।

उसकी सुंदर गोल-गोल कलाइयों पर उसकी पसंद की चूड़ियां पहनाने वाला चित्र मल्लन के मन में उभरा।

चमकती बिंदी, चांदी की चूड़ियां, कांच की रंग-बिरंगी चूड़ियां, मोतियों की माला ...हां...बालों में बांधने वाला फूल भी तो चाहिए उसको।

'कुल कितना रुपया लगेगा?' उसने हिसाब लगाया। कुंटल में पांच सेर धान मिल जाए तो काम चलेगा। कुछ तो पहले ही ले चुका, है ना? जितनी कमी पड़ेगी, अगले साल

---

1. आसामियों को साल के अंत में मिलने वाला धान।
2. आदिवासियों का प्रसिद्ध मंदिर।

के काम का अभी लेकर पूरा करना होगा।

कितना धान ले चुका, अब तक? पिता के तीपुला[1] के लिए साढ़े बारह सेर धान। फिर खाने के लिए...दो-तीन बार...जब कन्नी माह में कुछ भी काम न था।

उसने उंगलियां खोलीं, बंद कीं, फिर खोलीं। ऐसे कई बार किया। गिनती तो ठीक न हुई, हां, ठंड से सुन्न पड़ी उंगलियों में खून फिर से दौड़ पड़ा।

नदी के किनारे जो स्कूल है, वहां दूसरे दर्जे तक पढ़ा था। पर वह सब कब का भूल गया!

कुरुमाट्टी चुस्त है। अपना नाम लिखना आता है उसे। अखनाषी के अनेक लोगों का भी नाम लिख लेती है वह। गुदना गोदना भी जानती है। लड़कियों के माथों और नाक पर हरी स्याही से चित्र रच देने में भी निपुण है। मानंतवाडी से आए सिनेमा के पर्चे भी पढ़ लेती है वह।

तू भाग्यवान है रे! मलंकारी देवी कृपा करें तो...।

उसकी चमकती आंखों के पीछे उस अंधेरे का क्या मतलब है? वह मेरे साथ नहीं आएगी?...नहीं आएगी?'

2

जैसे बांध टूट जाने पर पथ भूला समीर, बांस के सूखे पत्ते उड़ाता, सीटी बजाता हुआ चला। ओस में नम पत्ते जैसे थक-थककर पके खेतों में गिरने लगे।

नींद। जादूगर की तरह पलकों को बंदकर देने वाली नींद। जादूगर रूपी चोर! सूखे पत्तों के झड़ने की मर्मर ध्वनि, झिल्लियों की अनवरत आ रही आवाज से मिलकर वन के कोलाहल में लीन हो गई।

जंगल के किनारे झाड़ियों से दबे पांव निकलते सूअर।

वह चौंक उठा। नहीं सोने का इरादा कर, वल्लियूर भगवती का ध्यान कर रखवाली के लिए बैठा था, फिर भी...।

शरीर कांप उठा। रोंगटे खड़े हो गए।

हाथी की चिंघाड़!

कहां से आ रही है?

---

1. मृत्यु के बाद सोलहवें दिन किए जाने वाले कर्म।

पास के खेत से? बावली नदी के किनारे से? कुरिच्चन केलन के खाली खेत में तो अकेला हाथी नहीं उतरेगा।

हिलने में भय। सांस लेने में भय। आंखों की पुतलियां हिलाने में भी भय। भय रूपी सुई की नोक में जकड़े कागभगोड़े की तरह स्थिर वह मचान पर बैठा रहा। निश्चल आंखों में डर सिमट आया।

म्ह्री...ई...ई...।

शरीर के खून को जमाने वाली वह चिंघाड़ फिर से — दूर खेतों के उस पार तिरुनेल्ली की रखवाली करने वाली पहाड़ियों के बीच की पुलयनकोल्ली से। सांस वापस आई।

पहाड़ चढ़कर वह नहीं आया। अगर आता, खेत में उतरता तो आवाज नहीं आती? उसका स्वर्ग तो पुलयनकोल्ली है।

कोल्ली, प्रकाश भी जिसे झांककर देखने में डरता है। कभी न सूखने वाला नाला, अरारोट की घनी झाड़ियां। झाड़ियों और बांस के झुरमुट में हाथ से हाथ गूंथकर किला बनाए पुलयनकोल्ली। बांस का अंखुआ खाते-खाते वह ऊब गया होगा। बावली के किनारे के धान की गंध उसे आकृष्ट करती है। कच्चे धान की मादक गंध।

अकेला हाथी।

पैरों में जंजीर का एक टुकड़ा घिसटता चलता है। समूह में लाते समय बचकर निकल भागे उस हाथी को दुनिया की प्रत्येक वस्तु से दुश्मनी है।

जंजीर के टुकड़ों से बधे घायल पैर को घसीटकर वह ब्रह्मगिरि की घाटियों और आस-पास में मदमत्त घूमता रहता है।

जंजीर की आवाज आई क्या?

कान लगाकर सुना कुछ देर। नहीं, कुछ सुनाई नहीं देता। पहला कंपन दूर हो गया। पैर झटककर वह मचान से नीचे कूद आया। ठंड अपनी चरम सीमा पर थी। 'मेरे पास तो बस यही बांस के दो डंडे हैं। अंकुश तो नहीं।' वह तड़प उठा।

फिर से!

सूखी लकड़ियों के चरमराने की आवाज है न? सच में ही वह यहां पहुंच गया? पल भर में ही मूलप्पाटिप्पुषा को पार कर...।

मल्लन ने कान लगाया।

मना की रसोई के पीछे के आंगन में बांस की पात्ती से गिरते पानी की झर-झर के सिवा कुछ भी नहीं सुनाई देता। रात होने पर पात्ती से बहाए गए जंगली नाले के पानी का प्रवाह तेज हो जाता है। पात्ती के नीचे की चिकनी शिला पर गिरकर, सिर धुनती जल-धारा का विलाप — मल्लन उसी तरह खड़ा रहा। पूस की सर्दी हजारों अदृश्य भालों से आक्रमण करती है। ठंड की परवाह किए बिना वह चादर गले में डालकर, गीली घास पर पांव रखते

हुए खेत की मेंड़ पर से चला।

पकी हुई गंधकशाला।

बच्चों का अभाव तम्पुरान इन्हीं खेतों को देखकर भूल जाते हैं।

कच्चे धान की गंध नाक में भरता वह चला। शिराओं में मचान से उठने वाले गीतों के स्वर अभी बह रहे हैं। हाथी रूपी विशाल काली छाया अदृश्य हो गई। सूअर नहीं उतरे। कटाई हुए खेतों की मेंड़ के पास से, नाले का पानी कल-कल स्वर में बह रहा है।

वह फिर मचान पर आ बैठा। अलाव में रखी लकड़ियों के टुकड़ों को थोड़ा उकसा दिया। आग अंगड़ाई लेती हुई उठी। आग के मुंह में और लकड़ियां झोंक दीं। आग की लालची जबान लपलपाती हुई थी। बाकी बचे पटाखों को जलाकर फेंक दिया। मन को धोखा देता शरीर अलाव के और निकट आ गया। कच्चे धान की गंध और झरने का संगीत अनुभव करते हुए वह लेटा रहा। हाथों को घुटनों के बीच दबाकर गरम किया। भयंकर सर्दी के कारण जंगल में जगी रोती चिड़ियों का स्वर कानों में पड़ा। इधर कभी भी इतनी ठंड नहीं पड़ी थी। शरीर ने इतनी ठंड कभी नहीं झेली थी, हार मानने पर आखिरकार विवश हो गया।

पलकों को सुला देने वाली कोमल उष्णता। रात की लोरी...। किसी ठंडी चीज ने पैरों का स्पर्श किया। चादर में घुसकर शरण लिए पैर। नींद उड़ गई।

सांप!

जहर उतारने वाला काला चुंडेलि तो वेल्लमुंडा गया है, यह ध्यान उसके मन में दूसरे सांप की तरह तड़प उठा।

इन नए खेतों की जगह पहले चट्टानें और झाड़ियां थीं। बाद में खेत बनाए गए तो सांप नष्ट वास-स्थान छोड़ बाहर निकल पड़े। शिकारी जोसफ को एक उग्र सांप ने डंसा था। जोसफ का पैर सूज गया था। काले चुंडेलि की दवा से ही वह बच पाया था।

हे देवी, रक्षा करो!

मलंकारी!...

पैरों को जोर से झटका दिया।

फिर चादर के अंदर उन्हें छिपा लिया।

मचान के बाहर जा गिरे-सांप की फुफकार है क्या? वह भय से बिना हिले-डुले पड़ा रहा। कुछ सुना भी नहीं।...

तभी चौंककर उठ बैठा।

सांप चादर के अगले हिस्से को खींच लेगा? नहीं, सांप तो नहीं।

भय दोगुना हो गया। ठंडी उंगलियों का स्पर्श!

पिशाच। मचान तक लंबा पिशाच। बांस के खंभे के सहारे खड़े पिशाच के पैर उलटी तरफ हैं। एंड़ी सामने कर चलने वाला पिशाच।

मलंकारी!

सिर के भीतर खून जम रहा है। शिराएं बल खाती हैं। वह सिर से पैर तक हिल उठा।

पिशाच की लंबी ठंडी उंगलियों ने पांव के अंगूठे को कसकर जकड़ लिया है।

धीरे-धीरे गर्म पड़ रही उंगलियां। काली साड़ी पहने पिशाच। उसकी चमकती आंखों में जलती आग। उस दृष्टि के स्पर्श से अलाव में जबान लपलपाती और ऊंची उठती हुई ज्वालाएं।

कई बार आंखें मलकर खोलीं।

वह आकृति मचान के भीतर की ओर ही आंख गड़ाए खड़ी है।

खून पीने के लिए पिशाच के मुंह खुलने की प्रतीक्षा में, मृत्यु-भय के साथ उसे घूरता मल्लन निश्चल हो गया।

लो!

सफेद चमकते दांत पिशाच के। फिर से आंखें कसकर मूंद लीं। खोलीं...धीरे...बहुत धीरे से। आग की लपटों का प्रकाश उस आकृति के मुख पर ही...।

शहद के रंग वाले, मोटे, सुंदर ओठ दिखते हैं। अधखुले ओंठ। गाल पर गुदने की निशान। लंबी, खिंची भौहें।

कुरुमाट्टी!

मशाल अपने मुख की ओर कर वह खिलखिला कर हंसती है।

दिशाओं को हिला देने वाली हंसी।

घमंडी!

आधी रात। अकेली औरत। सुनसान खेतों के बीच अकेला पड़ा मचान।

उसने मशाल को धधकती आग में फेंक दिया। आग की लपटें देखकर वह ठठाकर हंस पड़ी।

वह मचान से कूदकर उतर आया।

बालों में खुंसे चंपा के फूल हवा में हिल उठे। उस सुगंध ने एक स्वर्णनाग की तरह उसी चेतना को जकड़ लिया।

एक तरह की मायापूर्ण अचेतन स्थिति।

उस तंद्रा में वह ठंड भूल गया।

'क्या है, कुरुमाट्टी?'

'आई तो क्या हुआ?'

उलटा सवाल! आई तो क्या हुआ!

आधी रात, एक पराए आदमी के मचान पर रखवाली करते समय अकेले आने में कुछ नहीं?

उसकी आंखों में आग जल उठी। 'आधी रात को मचान पर क्यों आई?'

वह चुप रही। मल्लन की आंखों पर तीक्ष्ण दृष्टि डाली। अपनी लंबी, गोल-गोल दृढ़ बांहों में फिर उसका मुंह लेकर अपने सीने से लगा लिया।

मोटे ओठों के कोने में एक सूक्ष्म हंसी आकर विलुप्त हो गई। विजय की हंसी। छाती को ढंके, साड़ी का पीला किनारा भी मल्लन को देख हंस पड़ा।

बाहर ठंड बढ़ गई।

मल्लन ने उसे उठाकर मचान पर बिठा दिया। सधवा स्त्री! उसे देख मल्लन संकुचित हो उठा।

'चात्तन जुर्माना लगाएगा न, कुरुमाट्टी?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'नहीं चाहिए मुझे चात्तन।'

'और तेरा बच्चा?'

'तीन बरस की एक बेटी है तो क्या? चात्तन तो अलग हो गया है न मुझसे? कहां-कहां घूम-फिरकर फिर लौटा है।' चात्तन का जिक्र छिड़ते ही उसे क्रोध आ गया।

'नहीं चाहिए मुझे वह।' निश्चित रूप से उसने कहा। मल्लन चौंक गया। क्या यह सोचती है, इसे मैं ब्याह लूंगा? इस तिरुनेल्ली का कोई भी आसामी इसका पति बनकर रह पाएगा? मुझसे अधिक हाड़-मांस वाला कोई दूसरा आदमी मिले तो यह उसके पीछे चली नहीं जाएगी?

कोई ऐसी विद्या नहीं जिसे वह न जानती हो। ऐसी औरत जो पिशाच से न डरे, अपने पति को न चाहे, जो मूप्पन[1] के निर्णय को न माने, ऐसी औरत कुछ भी करने में कोई संकोच करेगी? अफवाह है कि चात्तन ने हाथ भर तमाखू और चांदी के सिक्के देकर पूरे इलाके के मूप्पन लोगों को अपने वश में कर लिया है। नालायक मूप्पन लोगों को मैं नहीं मानूंगा।

कुरुमाट्टी का सौंदर्य देखते-देखते बढ़ता ही जाता है। कोई विद्या ऐसी नहीं जिसे काली की बेटी न जानती हो।

कुछ दिनों के बाद उसकी मां की पुला खत्म होगी, पर पहले से उसने बालों में फूल लगाना शुरू कर दिया है। गले में मालाएं और हाथों में कंगन।

---

1. समूह का मुखिया।

कहां लंबी, दुबली, सांवली मारा और कहां यह, कितनी अलग हैं दोनों एक-दूसरी से! गोरी चुंडली की बेटी मारा — सेयतु के पालतू मेमने से भी अधिक शांत...

कुरुमाट्टी ने उसके कंधों को झकझोरा। शीत और अंधकार को पारकर वह तो यहां तक पहुंच गई, फिर यह मूर्ख क्या सोच रहा है?

अलाव से फैलती रोशनी में, मचान के सामने, धुंधली चांदनी की ओर पीठ किए खड़ी उस स्त्री को मल्लन कुछ क्षण घूरता रहा। चंपे के फूल की सुगंध ने उसे सचेत किया।

वह मदमत्त हो उठा।

उधर की झोंपड़ियों में, जहां लोग अभी सोए नहीं थे, बहकर आती ढोल की ध्वनि जैसी, बावली नद्री के संगीत-सी, कच्चे धान की गंध जैसी उसने मल्लन में नशा भर दिया।

कंधे पर पड़े मल्लन के हाथ को झटक उसने अपनी गोद में रखी केले के पत्ते की एक पुड़िया बाहर निकाली और खोलकर सामने रख दी।

अरीकिषड़ (जिमीकंद)! मक्खन जैसा चिकना। देखकर मल्लन ललच गया।

'कहां से मिला?'

'खा ले।' आज्ञा के स्वर में उसने कहा।

मल्लन ने खाना शुरू किया। कुरुमाट्टी को इस बीच जो कुछ कहना था, सब सुना दिया।

कुरिच्चन चात्तु के बेकार पड़े धनुष जैसा टेढ़ा-मेढ़ा चात्तन नहीं चाहिए उसे। मूप्पन लोगों ने पैसा लिया है तो खाएं वे लोग। चात्तन को तो अब वह नहीं अपनाती।

एक लंबी सांस। जगमगाती हंसी। कुरुमाट्टी ने उसके दाएं गाल पर धीरे से हाथ फेर दिया।

पूस की रात। मक्खन की तरह चिकना, मीठा, आग में पका अरिकिषड़। चंपा के फूल की मतवाली सुगंध।

अस्त होती चांदनी।

सुंदर है कुरुमाट्टी। इस प्रदेश की सुंदरी। पुलय स्त्रियों की रानी। बिन मांगे ही आज वह रानी मेरे पास है।

मल्लन की बलिष्ठ बांहों ने उसे घेर लिया।

जैसे खुद को भूल, कुरुमाट्टी पूछ बैठी, 'मल्ला मेरे !'

'हूं?'

'शादी करोगे मुझसे?'

वह हां या न कुछ भी नहीं बोला।

'चात्तन?'

'नहीं।'

फिर चात्तन के बारे में उसने कुछ भी न कहा।

अचानक मिली औरत। पूस की रात।

पात्ती के नीचे मुंह धोते समय मनयम्मा ने जो कहा था, उसे याद आया। हाथ-मुंह साफ कर लिया तो अच्छा ही हुआ।

बागानों में काम कर लौटी कुरुमाट्टी खूब बदल गई है। अब उसे मिट्टी और पसीने की गंध अच्छी नहीं लगेगी। उसके शरीर से महकती साबुन की सुगंध। मैं चात्तन की तरह नहीं। कभी होऊं भी नहीं। होने पर वह मुझसे भी घृणा करेगी।

आग जलती रही...।

कोई आवाज आई। चौंककर मल्लन उठा। कुरुमाट्टी नहीं है। लगा जैसे एक सपना देखा हो। गायब हो चुके उस सपने को दुलारते वक्त उसका मन कांप उठा।

सर्दी में सुन्न पड़ी रात कांप रही है। रोशनी फैल रही है। शून्य की ओर, अंधकार की तरफ उड़ती मशालों की रोशनी। ब्रह्मगिरि के माथे पर बल पड़ते हैं। गुलेल से सनसनाते निकलते पत्थर जंगली पशुओं की तरह हुंकारते हुए जंगल के हृदय की ओर जैसे गोता मारते हैं।

बदला लेने की हलचल।

विरोध का शोर।

सारी आवाजें एक हो गई हैं।

पारिवारिक शत्रुता ऐसे मौके पर भूल जाती है — सूद पर धान न मिलने की शत्रुता, पानी न मिलने की दुश्मनी। सभी के शत्रु — सूअर को भगाने के प्रयत्न में वैमनस्य के धब्बे बह जाते हैं।

कुछ कर न पाने के कारण वह सुन्न रह गया। आस-पास कहीं कोई मचान नहीं। कोलाहल उस पार है।

छाती के भीतर जैसे चिड़िया ने डरकर पंख समेट लिए हों। उसे लगा कि शरीर का सारा रक्त जैसे पैर की उंगली से बह जा रहा हो।

उसने धोखा दिया। सूअरों का एक समूह।

सूअरों द्वारा नष्ट किए गए, बिखरे पड़े गंधकशाला के खेतों को देखकर वह मेंड़ पर शिलावत बैठा रहा। आंसुओं की मोटी बूंदें पलकों में तैर आईं।

खराब हो गए धान के पौधे कीचड़ में दबे पड़े हैं।

उस पार का शोर थमने लगा।

तम्पुरान अपने उरुवयल में बीमार पड़े हैं। तम्पुरान के दिए तंबाखू का स्वाद जीभ से दूर होने के पहले ही...? तिरुवोलम्मा के दिए भात के पचने के पहले ही...? चौकीदारी के लिए रखा गया मैं...।

डर से उसका शरीर सुन्न हो गया।

इन खेतों की जगह कभी जंगल था। घास-पात से भरे जंगल से खेत। जोंकें सिकुड़ी पड़ी रहीं। केंकड़े इधर-उधर सरकते रहे।

पहाड़ के ओठों पर की भूमि, बिना किसी आदि-अंत की और मनुष्य के लिए बेकार। दलदली क्षेत्र। तम्पुरान ने लगातार मेहनत कर इस ढालू भूमि को खोद-खोदकर समतल बनाया, खेत बनाया। पिता के हाथों समतल हुए खेत। उसकी रखवाली न कर पाने वाला मैं...।

तम्पुरान को तुरंत न बताने का फैसला उसके कायर मन ने किया। जो गालियां सुननी हैं, कल सुन लेंगे। पूस की इस रात में उनकी खांसी सुनने की ताकत मुझमें नहीं बची है।

उसका माथा पसीने से तर हो गया।

सुबह हो आई। वह मचान में बिछे भूसे पर औंधे मुंह तब तक लेटा रहा जब तक धूप उसके पांवों को अपनी जीभ से सहलाने न लगी।

कुरुमाट्टी सपना नहीं थी। सुबह की ठंडी हवा में, उसके बालों की, बालों में लगाए रेंडी के तेल की, चंपे के फूल की और सबसे परे उसके शरीर की गंध उसने पहचान ली।

स्वप्न ही थी वह। मन को समझाने की चेष्टा की। अगर सचमुच ही थी वह तो फिर एक पिशाच ही होगी। पिशाच ने ही मुझसे अपराध करवाया। अपराध होने के कारण ही गंधकशाला के खेत में सूअर घुसे।

ऐसा अपराध जिसका कोई प्रायश्चित नहीं।

छह मास की मेहनत का नतीजा...।

पागल बना देने वाली उस खुशबू के जादुई चक्कर से बचना चाहिए।

निर्णय लेकर वह उठ बैठा।

मचान से उतरा। पाया कि सिर के नीचे रखी लकड़ी के पास तंबाखू का एक टुकड़ा पड़ा है।

वह फिर आएगी।

मलंकारी!

कुरुमाट्टी जो सोचती है, कर भी देती है। मैं एक फंदे में फस गया हूं। कुरुमाट्टी का लगाया फंदा, जिससे बचने का कोई रास्ता नहीं।

तंबाखू हाथ में लेने पर भी उसे लालच नहीं हुआ।

उसकी गंध नाक के भीतर घुस गई।

हल्की धूप में मेंड़ से होकर वह आगे बढ़ा। घास पर झड़ने की प्रतीक्षा में लटक रही ओस की बूंदों को पैरों से बिखेर दिया। शीत का पर्दा हटा, लालिमायुक्त मुख से झांककर

धीरे-धीरे हंसता ब्रह्मगिरि।

फसल की कटाई करने खेतों पर एक साथ आ बैठी गोरैयों को उसने नहीं देखा। तम्पुरान से कैसे कहे?

मना (तिरुवोलम्मा) के घर के पास पहुंचते-पहुंचते उसकी खुमारी दूर हो गई।

विलाप की ध्वनि। कोई परिचित स्वर।

चारों ओर के टीलों से नदी पारकर लोग इकट्ठा हो रहे हैं।

चौंकाने वाला, सुबह के आलस को दूर भगाने वाला विलाप।

पल भर में उरुवयल का आंगन लोगों से भर गया...।

वह दौड़ा।

दौड़ते समय दोनों ओर के उजाड़ खेत उसकी दृष्टि में नहीं पड़े।

रसोई के आंगन से बह आया नाले का पानी खेत के किनारे जमा हो गया है। उस जगह खड़े होकर मल्लन हांफने लगा।

कीचड़ में सूअर के पंजों के निशान दिखाई देते हैं। ठीक बगल में अनेक लोगों के जल्दी-जल्दी चलने के कारण पांवों की छाप पड़ी चौड़ी मेंड़। वह जानता है कि उधर क्या है। वह खड़ा रहा।

हे भगवती मलंकारी, सहारा दो!

मल्लन ने जान-बूझकर कोई अपराध नहीं किया।

दूसरे रखवाले भूखे पेट होने की वजह से, रात की ठंड बढ़ जाने पर चादर तान मचान पर सोते हैं। तम्पुरान लोगों के मशाल लेकर जांच करके लौटने तक सब सजग रहते हैं।

रखवाली के वक्त रातों में कभी न सोने वाला मैं, नींद भगाने के लिए हड्डियों के ठंडे होने तक खेत की मेंड़ पर धीरे-धीरे चलता रहता हूं।

पहने हुए कपड़े या चादर से केवल पैर ढंककर लेटता हूं।

कुरुमाट्टी ने धोखा ही दिया।

जैसा सब लोग कहते हैं, क्या कुरुमाट्टी मलंकारी की उपासना करती है?

अपनी मां की तरह ही?

पिता का काक्कप्पुला नहीं हुआ। होने तक पिशाच ऐसे ही मेरी परीक्षा लेता रहेगा। कल सेयतु की दुकान में जंगली भैंस के मांस और पुट्ट के रूप में...हाथ में जो तंबाखू था, उसे कीचड़ में फेंक दिया।

सबकी नजर बचाकर, केले के झुंड से होकर वह घर के पीछे पहुंच गया। तालाब के उत्तरी कोने की ओर जाकर खड़ा रहा।

उसे लगा कि सभी पुलय लोग आए हैं। लोग चींटियों की कतारों की तरह खेत की मेंड़ पर तब भी चल रहे थे।

सिर्फ वह अपराधी की तरह दूर खड़ा रहा।

भीतर से बारीक रुदन का स्वर कानों में आ पड़ा। तिरुवोलम्मा का विलाप।

वह रोना जानती है? कानों में झूलते झुमके के साथ हंसते गालों पर आंसू बहने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

पहर बीत गए।

केलों के झुंड पर हवा हलचल मचाती है। जमीन का गीलापन दूर हो जाता है। मल्लन के पैर सुन्न पड़ गए।

मिट्टी उठने तक उसने केलों के झुंड की आड़ में बैठे-बैठे समय बिताया। किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। कुछ भी नहीं पूछा किसी ने। भीतर जैसे कुछ-न-कुछ अभी तनकर टूट जाएगा, कुछ इसी तरह की प्रतीक्षा करता रहा वह।

अंत में लोग एक-एक कर चले गए। अब कुछ नहीं। फूस से छाया यह बड़ा पुराना घर और उसमें रहती बिना बच्चों की, अनाथ मनयम्मा।

सालों से पानी बहते-बहते जीर्ण-शीर्ण हो चुकी बांस की पात्ती की तरह ही वह घर कुछ दिन और यहां ऐसे ही खड़ा रहेगा।

एक दिन मनयम्मा भी...।

ज्यादा सोच नहीं पाया।

'सूअर, मेरी गंधकशाला की कटाई हो चुकी न?' तम्पुरान का प्रश्न।

'तेरी इतनी ज्यादा हाथ-मुंह की सफाई करते वक्त ही मुझे ऐसा लगा था।' मनयम्मा बोली।

अस्त्र की तरह धारदार सवाल उड़कर आते हैं। केलों के पीछे, पांवों तले की मिट्टी धंस जाती है। एक चिड़िया पेड़ से लगातार बोली। तम्पुरान का पिशाच। वह चौंका।

तिरुवोलम्मा को एक बार देखने का मन हुआ। फिर इच्छा छोड़ दी। पांवों को मिट्टी से खींच, सुनसान पड़े उरुवयल के आंगन पर अंतिम नजर डाल, वह जल्दी से उतर चला।

खेतों की मेंड़ को छोड़, जंगल के किनारे से खेतों को घेरते हुए जाते पशुओं के रास्ते से वह चला।

झोंपड़ी के ठीक पीछे पहुंचने पर याद आया कि लकड़ी काटनी है। आग नहीं, लकड़ी नहीं, चावल नहीं। सारी रात ठंड में कांपती रहती अम्मा।

उसे लगा कि चक्कर आ रहा है। हठपूर्वक, बल लगाकर शरीर कड़ा किया। छोटे पेड़ों की कच्ची डालियां कट-कटकर नीचे गिरीं।

लकड़ियों को आंगन में फैलाकर वह झोंपड़ी के भीतर गया। पुरुष और स्त्रियां आंगन के बीच समूह में बातें कर रही हैं। दबे स्वर, भयभीत दृष्टियां। उन सभी की आंखें तम्पुरान के घूमते पिशाच को वहां देख रही हैं। केले के हिलते पत्तों में, हवा में उड़ते सूखे पत्तों

में, मुर्गे की बांग में, हवा में हिलते पाला वृक्ष[1] की शाखाओं में...

उसने कुछ भी नहीं देखा। किसी की भी ओर दृष्टिपात नहीं किया। बरामदे में रखी चटाई खोलकर उस पर पसर गया।

3

धोने लायक क्या कोई पाप किया है मां ने? फिर भी उनकी अंतिम इच्छा यही थी—बड़ा बेटा पापनाशिनी में पिंड अर्पित कर दे। तिरुनेल्लि के पेरुमाल भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए। पेरुमाल कहां हैं? पापनाशिनी कहां हैं?

नरिनिरङ्गि[2] पर्वतों के बीच से गुजर रहा हूं। आगे गए गीदड़ नहीं, हाथी हैं, यह स्पष्ट है। पूरे रास्ते भर हाथी का मल। हाथी के राजपथ की रखवाली करते सागवन के वन, मनुष्य के वश में अब तक न आए बांस के जंगल।

चारों तरफ फैला हुआ वन। जंगली रास्ते से दाएं-बाएं जाती पगडंडियों को निगलते वन।

निर्जनता का, भय का समुद्र। जिसमें पूरी तरह डूब जाने पर एक अलगावपन का-सा अनुभव होता है।

'मंदिर को जाते हो?' सड़क के मोड़ के उस पार से एक मौन आकाशवाणी। पर्वतीय क्षेत्र की, घाटी की भाषा।

लगता था कि इस वन का कभी अंत न होगा, लेकिन धीरे-धीरे घनापन हो रहा है। एक छोटे खेत की ओर जाती सड़क।

सामने चार लोग गठरी लिए खड़े हैं। तीर्थयात्री। पाप-नाशिनी में स्नान करके पवित्र होकर आने वाले लोग। पर चेहरों पर भय की छाया है। वन की छाया में फैले खेत के किनारे डरे-से खड़े हैं।

पेरुमाल पास ही कहीं विराजमान हैं।

सारे पाप धो आए, अब डर इन लोगों को किसलिए?

ओठों में मुस्कराते हुए उसने उन लोगों पर नजर डाली।

तीर्थयात्रियों में एक अधिक आयु वाले ने कंधे पर रखे गीले तौलिए से मुंह और गला

---

1. ऐसा विश्वास है कि इस पेड़ पर पिशाच निवास करते हैं।
2. एक पर्वत का नाम। इसका शाब्दिक अर्थ गीदड़ों वाला पहाड़ होगा।

पोंछकर प्रश्न किया, 'रास्ते में कहीं देखा?'

'क्या?'

'अरे वही। कल दोपहर के बाद आते वक्त उसके द्वारा तोड़े गए पेड़ हमने देखे।'

'अच्छा, मैंने नहीं देखा।'

'नहीं देखा तो भाग्य।'

'मल जरूर दिखलाई पड़ा, नया और पुराना।'

'ठीक?'

'और कटे बांस भी।'

'हाय!' पीछे दूर खड़े दुबले से युवक की दयनीय पुकार।

'कोई बात नहीं। यह तो अकेले ही आ गए, हम तो चार हैं न?'

'हे भगवान!'

'कोटियूर भगवती!'

'पेरुमाल ही रक्षा करे!'

धूल भरे कपड़ों को उन लोगों ने सिर से पैर तक देखकर फिर श्रद्धा से हाथ जोड़े।

दोस्त, यह काषाय वस्त्र नहीं। अनेक मीलों की यात्रा का प्रमाण है। पर कहा नहीं।

वन के मुंह में घुसते जा रहे डरे-सहमे उन लोगों को मुड़कर देखता रहा। नानी की सुनाई कहानी याद आई। चावल की गाड़ी लिए बरुन[1] के सामने हाजिर होते परिभ्रांत गंवार की कथा।

नीलगिरि के बीच एक हरी छाया। बीच-बीच में काली, नीली और लाल रंग की बिंदियां। हिलतीं, खड़ी होतीं, आगे बढ़तीं।

मेंड़ से होकर चला। घास-पात साफ करती औरतें। धूप में उनकी रंग-बिरंगी साड़ियां चमक उठती हैं। एक-दो उखाड़े घास-पात हाथ में लिए खड़ी होकर वे देखने लगती हैं। छाती से लपेट कर बांधी साड़ियां, गालों, हाथों में हरी स्याही का गुदना गुदा हुआ। पसीने और धूल से लथपथ पोशाक। धूप से मेल न खाती ठंडी हवा वन से फिसल आकर शरीर को थपथपाती रही।

चलते समय औरतों के हाथ की चूड़ियां और पत्थर की मालाएं झनझनाई। उन लोगों की बातचीत के अपरिचित शब्द। कुछ समझ में नहीं आता।

रास्ता पूछना चाहिए। पर इन लोगों की अनजान भाषा। आगे और चलें तो रास्ता समझ में आ जाएगा। खेत और लोगों के घर शुरू हो रहे हैं।

---

1. महाभारत का एक पौराणिक पात्र।

'मंदिर का रास्ता किधर से है?'

सब उठकर खड़े हो गए। एक-दूसरे से कुछ कानाफूसी। अविश्वास, अपरिचय की भावना। उनके मुखों पर एक हंसी फूटते देखने की इच्छा हुई। पर सब यथावत खड़े रहे। धुंधले मुख। वन की कालिमा से छाई हुई आँखें।

उनमें से एक हंसमुख औरत ने जरा आगे बढ़कर दक्षिण की ओर इशारा किया।

'पेरुमाल का दर्शन करना है?'

शुद्ध मलयालम बोलने वाली स्त्री। पोशाक और भाव दूसरों के। दृढ़, गोल-गोल शरीर। लंबे कद पर सिर ऊंचा किए हुए। गहरी आंखें। कौन है यह?

'हां।'

'बहुत दूर नहीं।'

आगे बढ़ा। उत्तरी दिशा में हरे-भरे जंगल के पास कहीं विराजमान पहाड़ी देवता तिरुनेल्लि पेरुमाल को ढूंढते आगे बढ़ा...मधुर उष्ण धूप और तीखी हवा का अनुगमन करते हुए। एक अपिरिचित और गहन संगीत...

कई तरह के आकार की शिलाओं वाली सीढ़ियां। आंखें उठाकर देखा। चढ़ाई। पसीने और धूल से लथपथ बदन के भीतर से गहरी निःश्वास। बच गया।

आधा रास्ता तय कर लिया। फिर रुका। सीढ़ियों की रखवाली करते बूढ़े वृक्षों के धुंधले अंतःपुर को देखा।

तीन बच्चे, जैसे सीढ़ी के सामने पेड़ की शाखा से टूटकर गिरे हों। मनुष्य ही हैं। दस-बारह साल का एक लड़का जमीन पर गिरा एक सूखा आम लेकर दांतों से चूस रहा है। दो छोटे बच्चे उसके मुंह को ताकते खड़े हैं। सबसे छोटी है लड़की। अभी रो पड़ेगी, ऐसा है मुख।

बच्चे बड़ी-बड़ी विस्फारित आंखों से देखते रहे। बड़े लड़के ने अपना आम चूसने का काम जारी रखा।

अमावस्या के दिन पाप-नाशिनी में पिंडदान करने के लिए आते यात्री की ओर अलक्ष्य भाव से एक दृष्टि। वह सीढ़ियां चढ़ने लगा। देखते-ही देखते एक आम और गिरा। एक छोटा आम। बड़ा लड़का मुड़कर कूदा और नीचे उतर आया। छोटी लड़की जमीन पर पीठ के बल गिर पड़ी। दूसरे गाल पर खरोंच लगी।

तीसरा एक और आम भी। उसने वह भी अपने हाथ में लिया।

'वह मुझे दो।'

उसकी घूरती दृष्टि। उसने अनमनेपन के साथ आम हाथ में दिया। राघवन नायर ने आमों को छोटे बच्चों में बांटने का काम शुरू किया।

उस छोटे आम को छोटे बच्चों के बीच बांटा। भूखे बच्चे। वे धीरे-धीरे सीढ़ियां

चढ़ने लगे। बीच में दाईं ओर मुड़कर झाड़ियों के बीच उनको ओझल होते वह देखता रहा।

मंदिर का निर्जन अहाता। टूटकर गिर पड़ने को उद्यत शिला-स्तंभ। दीवारें। मिट्टी की पुताई की हुई टूटी भित्तियों वाला रसोईघर। ठंड के कारण सुन्न पड़ी बलि-शिला पर जंगली चूहों की मेंगनी। टूटकर गिरी शिला की नली से जंगली नाले का पानी आंगन में गिरता है।

फूस के छप्पर वाले मंदिर के भीतर पीले रंग की मंदार मालाएं पहने अधखुले नेत्र वाले तिरुनेल्लि पेरुमाल। एक बार और देखा। पहाड़ी देवता शिव नहीं, विष्णु भगवान। यह कैसे? सोचता हुआ दाईं ओर मुड़ा। दूसरा कोई रास्ता नहीं दिखता। यह मार्ग पापनाशिनी की ओर ही जा रहा है।

'पापनाशिनी का रास्ता नहीं जानता?' गीले कपड़े पहने एक अंबलवासी[1] ने पूछा।

'ढूंढ लूंगा।'

'कुछ दूर जाना होगा।'

नीचे उतरती उत्तरी मीनार की सीढ़ियां। उसके नीचे मंदिर का टूटा-फूटा तालाब। तालाब के बीचों-बीच सालों पहले अधबना एक चबूतरा। स्तंभ। शिला में निर्मित अपूर्ण विष्णु-पाद।

मामा ने इस पद्मतीर्थ की कथा सुनाई थी।

ठहरे रहने के कारण तीर्थ-जल में गंदगी थी, ऊपरी सतह पर झिल्ली बन आई थी।

और नीचे की ओर?

नीचे एक समतल खाली जगह। बीच में एक बूढ़ा पीपल। पीपल के नीचे एक चपटी शिला जो अधिक विस्तृत नहीं थी। शिला के नीचे एक छोटी गुफा। जमीन से सटकर बैठते हुए देखा। गुफा के अंधकार में धीरे-धीरे जलता एक दीपक। लगता है। सामने शिला-निर्मित मूर्ति दीपक को घूर रही है। मूर्ति का सिर गुफा की छत तक पहुंचता है।

चारों ओर वन। बीच में बिखरी पड़ी चट्टानों से भरी एक खुली जगह। चट्टानों के हृदय से फूटता एक कोलाहल। चढ़कर ऊपर से देखा। उफनता हुआ निर्झर-जल चट्टान के भीतर अदृश्य होता जा रहा है। लाई, चिवड़ा और केले के पत्तों के टुकड़े जल-भंवर में चकराते हुए नाचते हैं। यह है पापनाशिनी।

आखिरकार पहुंच गया।

अलौकिक शांति। पांचों इंद्रियों को वश में कर लेने वाली ठंड। विजनता का संगीत बन उभरता पक्षियों का कलरव। पापनाशिनी का उत्साहातिरेक।

---

1. मंदिर की देख-रेख करने वाली एक जाति।

देवता का दर्शन करने के लिए भक्तों के धक्के, लात-घूंसे झेलने और अपशब्द सुनने की जरूरत नहीं। देवता यहां है। घाटी के धूल भरे शहर में नहीं। मंदिर के टूटे-फूटे रसोईघर के या फूस के छप्पर वाले घर के भीतर या मध्य में नहीं।

कुछ दिन यहीं कहीं ठहरें तो क्या?

घर में कोई प्रतीक्षा नहीं कर रहा है।

पीछे छूट गया बचपन।

चावल की मांड़ भी नसीब न हो, ऐसे दिन। चूल्हा न जले, ऐसे दिन। भूखे पेट पर कपड़ा कसकर बांधकर, स्नान कर शुद्ध होकर नंबूदरी पिता की प्रतीक्षा करती मां। सब दूर...आज कुछ नहीं। केवल मैं। धूल लगे ये कपड़े चिंताग्रस्त मन और सामने फैला विजन वन।

जिस घर में संबंध[1] किया है, वहां चूल्हा भी जलता है या नहीं, यह जानने की आवश्यकता नंबूदरी पिता को नहीं।

नहा-धोकर, साफ कपड़े पहन, माथे पर चंदन का टीका लगाए और आंखों में आंसू लिए बरामदे में बैठी मां को वह क्रोध से तकता रहता था।

भयंकर बारिश थी। कर्क्किटकम (मलयालम मास—जुलाई) की मूसलाधार वर्षा। टूटे-फूटे छज्जे के बीच से बरामदे में वर्षा की फुहार ऐसे पड़ रही थी जैसे हाथी की सूंड से पानी की बौछार।

पुरानी लालटेन की बत्ती बढ़ाते हुए नंबूदरी पिता आए। बरामदे में रखे कांसे के दीपक की बत्ती बिना तेल के सुलग रही थी। लालटेन के प्रकाश में मां के गाल पर आंसुओं की रेखा स्पष्ट हो उठी।

'कुंजुलक्ष्मी, रोती क्यों है?' फटे बोरे के टुकड़े पर पैर पोंछकर पिताजी ने पूछा।

'कुछ नहीं।'

तनाव से आया क्रोध। कुछ नहीं। भूख लगने के कारण रोती है। तीन बच्चे और उनकी मां और असह्य भूख। बरामदे की बेंच पर पहनी धोती से शरीर ढककर लेटा था, मैं।

सिर उठाकर देखा। बारिश में भीगा बरामदा।

ऊंचे स्वर में कहा— भूख लगी है, इसलिए।'

'क्या? आज कुछ नहीं खाया?'

'आज ही नहीं, कल भी। शिवराम और सुभद्रा रो-रोकर सो गए।'

'सच है, कुंजी?

---

1. पहले के समय में नंबूदरी ब्राह्मण नायर स्त्री को एक धोती देकर विवाह की रस्म पूरी कर लेते थे। इसे 'संबंध' कहते थे।

मां की तीक्ष्ण दृष्टि को उसने अनदेखा किया।

'सच।'

'नहीं है तो क्या भूखे रहें?'

चमकती बिजली के बीच दिखाई पड़ा कि मां के चेहरे पर बादल छा गए हैं।

'कल से बच्चों को इल्लम[1] से कंजी[2] देने का प्रबंध कर दूंगा।'

'मेरे बच्चों को इल्लम से कंजी नहीं चाहिए।'

'चाहिए। बच्चे मेरे भी हैं।'

मां चुप हो गई। चेहरा जिसमें एक काली छाया पड़ गई थी, प्रसन्न नहीं हुआ।

इल्लम के आम, इमली और करौंदे से भरे अहाते को यादकर दुराभिमान दूर हो गया।

दोपहर की कंजी के नाम पर सुबह ही निकल पड़े। अहाते में उछल-कूदकर खेलते रहे। करौंदे तोड़कर खाए। आम के पेड़ की शाखाएं पकड़कर हिलाईं।

रसोई के बरामदे में कंजी रखकर बुलाया गया। थाली में दो-दो कटहल के पत्ते। दो पत्ते किसलिए हैं, समझ में नहीं आया।

शिवरामन बुद्धिमान बन गया।

'एक टूट जाए तो दूसरे से पीने के लिए।'

नंबूदरी पिता की पहली शादी से हुई लड़की दरवाजे के पीछे से हंस दी। उसकी खिलखिलाहट—

'एक पत्ते से कंजी लेकर दूसरे में डाल देना और तब पीना।'

'ऐसा क्यों?'

'नायर बच्चे का जूठा पत्ता जिससे यहां की थाली न छुए।'

कंजी तालाब के घाट पर उड़ेल दी और थाली मांजकर रख आया।

शिवरामन ने कहा, 'मैं मां से कह दूंगा।'

'कह दे।'

उसके बाद फिर वहां नहीं गया।

मन और शरीर का कलंक धो देने के लिए पापनाशिनी में डुबकी लगाई। उठकर खड़े होने में ठंडी हवा में बदन कांप उठा। दांत कटकटाए।

गीले कपड़े पहने सीढ़ियों के सामने गया तो पहले वाले मंदिर के कर्मी ने आश्चर्य के साथ पूछा, 'इस समय ठंडे पानी से नहाए?'

'हूं।'

'बदलने के लिए कपड़े नहीं?'

---

1. ब्राह्मणों का घर।
2. चावल की मांड।

'ये सूख जाएंगे।'

'हे भगवान!'

अपरिचित असहनीय सर्दी की प्रेरणा। पहले पेड़ की शाखा पर रख आए वस्त्रों की छोटी गांठ खोली। धोती और आस्तीन वाली बनियाइन दिए।

कपड़े बदल लिए।

'आज कहां सोओगे?'

'यहीं कहीं।'

'नहीं, मेरे घर चलो। अकेले यहां मत सोना। सर्दी है।'

'ठीक है।'

संध्या समाप्तप्राय थी। धुंधला रास्ता। वारियर (मंदिर का कर्मी) आगे-आगे चला।

उसके हाथ में लंबी-लंबी घास की गठरी। बेंत की तरह मोटी। घास के आगे की नोक से आंसू की तरह पानी की बूंदें झर रही थीं।

'यह किसलिए?'

'चटाई बुनने के लिए। यही एक काम जानता हूं।'

'मंदिर किसका है?'

'उसके स्वामी और लोग हैं।'

'वारियम (वारियर का घर) पास है?'

संध्या दूर, पूरब की ओट के जंगल के अग्रभाग में अटक-सी गई थी।

मंदिर थोड़ी ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। दिन के प्रकाश में चारों ओर स्पष्ट दिखते वन...

तुलसी के पौधों से भरे एक आंगन में जा उतरे।

गोरे रंग का पीली छाया लिए एक मुख कांसे के दीपक के पास दिखाई पड़ा। दीपक की बत्ती बढ़ाई गई। बाहर की ओर ध्यान से देखती कालिमायुक्त, थकी दृष्टियां।

'बैठो।' बरामदे में घास की चटाई बिछाकर आतिथेय ने कहा।

'यहां ऐसे ही कोई आता-जाता रहता है।

'अमावसी के दिन मंदिर में भीड़ लगती है, है न?'

'ऐसा नहीं कि पिंडदान करने वाले सभी यहां आएंगे। मंदिर के अहाते के बाहर कमरा और चटाई रात बिताने के लिए मिलेगा।'

'ऐसा है? मुझे पता नहीं था।'

'अच्छा ही हुआ।'

'पास कहीं कोई घर नहीं है?'

'पहाड़ के नीचे मारार का खलिहान है। पुजारी का घर भी।'

'आज सुबह घर से निकले हो?'

'एक साल पहले।'

'क्या?'

'मां मर गई। रामेश्वरम, काशी और बद्रीनाथ गया। घूम-फिरकर यहां पहुंच गया।

'परिवार नहीं?'

'नहीं। खुद में एक बोझ हूं। फिर...'

'ऐसा क्यों?'

तीर्थयात्री के अभी अस्त न हुए यौवन और भरे-पूरे स्वास्थ्य वाला शरीर मेजबानों में आश्चर्य पैदा कर रहा है। दर्शन के लिए यहां आने वालों में बालक और वृद्ध होंगे। या फिर पुरुष-स्त्रियां काले, काषाय और लाल वस्त्र पहने साधू, किंतु देश भर में घूम-फिर कर आने वाले पैंतीस साल की उम्र वाले को कभी देखा ही नहीं।

'खाने का समय हुआ।' सामने आई वारस्यार (वारियर की पत्नी) के गोरे चेहरे पर खिले नयनों में विस्मय। ऐसा लगा कि एक शिशु की स्निग्ध आंखें निहार रही हैं। हजारों वर्ष पुराने जंगल के आंचल पर पलते यहां के लोग शाश्वत शिशु हैं। बाहरी संसार से अनजान, अपरिष्कृति के पालने में समय बिताने वाले शिशु।

वन और उसके वक्ष पर पड़ी उपजाऊ मिट्टी जो कुछ देती है, वही है इन लोगों की जीविका। बाहर से आने वाले सभी लोग इनके लिए अद्भुत हैं। मैं भी अद्भुत हूं।

खाना खाने बैठे। हाथ धोकर विनयपूर्वक पत्ते के सामने प्रतीक्षा करते वारियर। इल्लम के रसोईघर के बरामदे में विनयपूर्वक प्रतीक्षा में बैठा उन दिनों का बालक। भूखी दृष्टि। उस बालक और आज के इस मनुष्य में केवल वर्षों का ही अंतर है न? चावल लेकर आई पत्नी को वारियर ने देखा। उसको अनदेखा कर वे मुझ अतिथि से कहती हैं, 'भोजन में स्वाद नहीं होगा। सब्जी बनाने के लिए कुछ नहीं था।'

'काली मिट्टी के इस प्रदेश में?'

'ऐसा नहीं कि कुछ भी नहीं, पर देखभाल करने के लिए कोई तो चाहिए न?'

वारियर कुछ सुनता नहीं। ऐसा लगता है, जंगल से आती झींगुर की ध्वनि की तरह यह उलाहना उसके लिए चिरकाल से परिचित है।

'उप्पेरी (चिप्स) अच्छे हैं या नहीं, हम भी पुलयों (आसामी) की तरह हो गए।'

'चुंडङ्ङा (एक प्रकार का कड़वा फल) है। पुराने जमाने में पुलयों के अलावा इसे कोई नहीं खाता था।'

'स्वाद है।'

'कड़वा है। एक ही बीज काफी है, कड़वा लगने के लिए।'

'कड़वाहट मुझे पसंद है।'

वारियर सिर उठाए बिना ग्रास निगलते रहे।

'पतली छाछ है। यह भी मामा लाए हैं पनवल्ली से।'

'मामा हैं?'

'हैं। रोज यहां से वहां और वहां से यहां पैदल चलते हैं।'

'दो जगहों की खेती की देखभाल मामा ही करते हैं?'

'नहीं तो कैसे चले? मैं और ये बच्चे मुसीबत में नहीं फंस जाएंगे?'

'बच्चे?'

'सो गए। कह रह थे कि किसी को देखा। तुम्हीं होगे वह।'

'बड़ा जरा नटखट है,' पिता बोले।

खाने के बाद पत्ता उठाने को हुआ तो गृहणी ने टोक दिया—

'नहीं, मैं उठा लूंगी।'

'यह ठीक नहीं। अपना जूठन मैं ही उठाऊंगा।'

खाने के बाद वारियर ने एक कुप्पी जलाई।

'कहां जा रहे हैं?'

'अधबुनी चटाई ओखली वाले कमरे में है। उठाकर अलग रख दूं वरना चूहे काट देंगे।'

एक टार्च की आंखें सीढ़ियों से चमकीं।

एक लंबा मनुष्य।

टार्च बरामदे में रख उसने कहा—

'लगता है, बैटरी चुक गई।'

'मामा, इतना अंधेरा होने तक—?'

'कुछ मत बोलो। कल या परसों बारिश होगी। सबकी फसल कट चुकी। कहने से क्या, बारिश के पहले कटी फसल को खलिहान में भी पहुंचाना होगा न?

'कुरुमकालन ने क्या कहा?'

'केलन के खेत मे कल भी उसे काम है।'

'खाना हो चुका?' — अतिथि से पूछा।

'कारणवर[1] होंगे।'

'हां, इसके कारण ही परेशानी है। किसी भी काम में हाथ बंटाने को कोई नहीं।'

ओखली वाले कमरे से लौटकर वारियर बरामदे के दक्षिणी भाग में बिछावन लगाकर लेट चुके थे।

---

1. मलयाली संयुक्त परिवार के मुखिया (सबसे बड़े मामा) को कारणवर कहते हैं।

'खाने के लिए कुछ तो होना चाहिए? भोजन तो करना ही है। जमीन की देख-भाल किए बिना इस प्रदेश में क्या करके जीवन बिताएं?'

ऐसा लगा कि यहां की काली मिट्टी से, भयंकर वन से, अत्यधिक भूखे जंगली जानवरों से युद्ध न कर पाने वाले व्यर्थ के जन्मे एक मनुष्य हैं, चटाई बुनकर जीविका चलाने वाले ये वारियर।

यहां प्रतिरोध की शक्ति रखने वाले वही वनवासी हैं जो आते समय रास्ते में मिले थे। उनके बिना ये लोग जिंदा नहीं रह सकते। यह मिट्टी कृपा नहीं करेगी, वन अनुसरण नहीं करेगा, जंगली पशु डरकर नहीं भागेंगे...।

'मामा, खाना नहीं खाएंगे?'

'नहीं, जाकर नहाना है।'

'मामा को यहां का चावल अच्छा नहीं लगता।'

'नहीं सावित्री...इधर कहीं मल्लन को देखा है।'

'नहीं।'

'मना में अब नहीं है वह।'

'और कौन है, वहां?'

'मनयम्मा के ताऊ का बेटा है न गोपालन मूस?'

'तब आसामी?'

'गंधकशाला में सूअर घुसे तो वह वहां से भाग गया।'

'वह जरा बुद्धिमान और सच्चा था।'

'हां, आज पूरे दिन उसे ढूंढा। कल यहां आने के लिए सेयतु की दुकान में कहा है।'

'आएगा?'

'तो चल रहा हूं मैं। मल्लन आए तो मुझसे मिलकर जाने को कहना।'

'मामाजी, अभी सर्वणी जा रहे हैं? इस अंधेरे में?'

'सेयतु की दुकान से नई बैटरी खरीद लूंगा।'

आगंतुक से पूछा, 'तो, नाम क्या है?'

'राघवन नायर नाम से पुकारते हैं।'

वह लंबा मनुष्य फाटक पारकर अंधकार में ओझल हो गया तो जैसे घर और अधिक निर्जन तथा सूना हो गया।

तंबाखू खाया। बरामदे में बैठकर आकाश की ओर देखा। काला चेहरा फुलाए-सा खड़ा है। आज या कल बारिश होगी। नींद नहीं आई। मकरम (मलयालम मास) बीत चुका है, पर ठंड की कोई कमी नहीं। वारस्यार के भीतर से लाए मोटे कंबल के अंदर घुस जाता है शीत। रोम छिद्रों से होकर भीतर तक जा पहुंचता है। उधर की बिछावन से वारियर

के खर्राटों का शब्द सुनाई पड़ रहा था।

4

पापनाशिनी के मिल जाने से कालिन्दी की शक्ति और भी बढ़ जाती है। शायद उसका ऐसा विचार है कि तलमला और अरवनाषिकुन्न की बीच की चट्टानों को तोड़ दें तो कैसा रहेगा। दोनों एक रास्ते से जा भी नहीं पाते। दाई-बाई ओर मुड़ जाते हैं। बीच में चट्टानों के सामने उर्वर मिट्टी जम जाती है। फिर नीचे जाकर एक-दूसरे से मिल जाती नदी और अधिक शक्ति अर्जित् कर पश्चिमी घाट के पूरव की ओर घाटियों में बह जाती है। यही है बावली। तिरछी खड़ी पहाड़ियों और घने जंगल के बीच की एकमात्र जगह वही है।

चट्टानों के सामने, बावली की दो धाराओं के बीच जमी तलछट से समतल हो गई पुषकुनि (स्थान का नाम) को देखकर गोरा चुंडली वहीं खड़ा रहा। तृश्शिलेरी के उस निवासी को भूमि का महत्व मालूम है। वहां का तोमा चेट्टन कहा करता था, 'अपने बच्चों से भी अधिक विश्वास मिट्टी पर कर सकता है वह।'

कंधे की गठरी पत्नी के हाथों में थमा वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। बेटी बोली कि वह जरा भी नहीं चल सकती।

टीलों और पहाड़ों को पार किया।

नारिनिरङ्गि पहाड़ चढ़कर उतर आते तो इतना चलना नहीं पड़ता। हाथी वाला वन पार कर लेते तो दूरी और भी कम हो जाती। दोनों ही जगहें हाथियों से भरी-पूरी हैं। साथ कोई नहीं था, इसलिए घूम-फिरकर आना पड़ा। चलते-चलते थक गए।

गोरा चुंडली बोला, 'देखो, वह पहाड़।' जिस पहाड़ की ओर उसने इशारा किया वहां उसका छोटा भाई रहता है। 'वहीं रहे।' —और कहीं रहने की जगह नहीं। इस भाई के साथ ही रहे। रास्ते में चुंडली ने फिर से मुड़कर देखा। काली मिट्टी से भरी पुषकुनि। दोनों ओर पानी। दो बार खेती हो सकती है। बिना किसी स्वामी की भूमि। आसामी का काम मुझसे नहीं होगा। तृश्शिलेरी के भाइयों की तरह क्या मैं भी कठिन परिश्रम नहीं कर सकता? दक्षिणी भाग में एक कुटी—सब ओर नजर रहेगी।

पेम्बी से शादी की तो निरुनेल्लि छोड़ दी। तृश्शिलेरी में था। वहां आसामी का काम नहीं किया। प्रतिदिन वेतन। दो रुपया और कंजी।

बेटी बड़ी हो चली है। एकमात्र बेटी, मारा। यहीं, इस मिट्टी पर ही कहीं उसकी शादी करनी होगी, जहां मैंने जन्म लिया। उसकी मां की जिद है। परिवार का और इस क्षेत्र का

मूरपन यहीं है। परिवार के सब लोग तिरुनेल्लि में हैं। एक अच्छे लड़के को ढूंढ लेना यहां कोई कठिन बात नहीं।

गांठ बांध ली। उलटे, कुछ सोचने को नहीं। आगे चला।

पुषकुनि एक स्वप्न की तरह मन में गड़ गई है। गोरा चुंडली कुछ देर के लिए किसान चुंडली बन जाता है।

भाई कहता है कि पुषकुनि मंदिर-कर्मी वारियर की परिधि में आने वाला स्थान है। होने दो। भागीदार बनकर बंटाई पर ले लें। सरकारी भूमि नहीं तो क्या हुआ? दोनों की हालत एक जैसी ही है। भागीदारी होने पर बीज, वल्लि (एक दिन का वेतन धान के रूप में) और बैल वार्यन से मिल जाएंगे। सरकारी जमीन होने पर सबका प्रबंध स्वयं करना होगा। बीज और वल्लि के लिए सूद पर पैसा लेना होगा। कटाई के बाद आधा जमींदार को। नहीं तो आधा उधार देने वाले को।

चुपचाप जाकर तिरुवोलम्मा से मिला। दामु वारयर की वारस्यार अच्छी है। हिसाब बताएगी। कहे तो क्या? उसकी बात पक्की है। ये सब छोटे भाई की बताई बातें हैं।

'खेती कर पाने का धीरज है तुझमें?'

'हां।'

'अपने छोटे भाई कुरियन की तरह तो नहीं बनेगा?'

'नहीं।'

'सूद पर लिया गया है धान जो तुझे वल्लि में दे रही हूं। याद रखना।'

उसने सिर झुकाकर स्वीकार कर लिया।

मंदिर-कर्मी के यहां से मिले बीज और वल्लि से गोरा चुंडली पुषकुनि में खेती करने लगा। वारस्यार ने अपने मामा से विनती करके तत्काल चुंडली के लिए बैलों का प्रबंध कर दिया।

किसी ने चुंडली की सहायता नहीं की। दो पोति (एक पोति — साठ वर्ग राज) खेत उसने अकेले ही जोत लिए। मिट्टी को मुलायम बनाकर बीज बोया।

शेष आसामी भाड़ के सामने कपड़े ओढ़ पालथी मारकर बैठे-बैठे चुंडली के पुषकुनि में हल जोतने को ईर्ष्या पूर्वक देखते रहे। बैठे-बैठे ऊब गए तो लेटकर सो गए। सोने में, आग तापने में और न मिल पाने वाले कंद-फल के लिए वन-वन भटकने में उन लोगों के दिन बीत गए। औरतें खेतों की मेंड़ पर चलकर ऐसे पौधे-पत्ते इकट्ठा करती रहीं जो जहरीले नहीं होते। उन्हें झोंपड़ी में लाकर पानी और नमक डालकर पकाते और खाते रहे। चुंडली की पत्नी पेम्बी इस समय खेत से घास-पात हटा रही थी। वल्ली के रूप में तिरुवोलम्मा ने जो धान दिया था, वह खत्म हो चला था। एक मानम, दो मानम करके पड़ोस की औरतें ले गईं। उसके खत्म होने तक सभी कंजी पीते रहे। अब केकड़े खाएं या फिर पत्ते-पौधे।

खर-पतवार साफ करने का काम खत्म करके पेम्बी भी पत्ते तोड़ने के लिए निकली।

धान में बाली फूटने का समय आ गया। लहलहाते धान के पौधे कुछ पीले पड़ गए। चार दिन के अंदर बाली फूट आएगी। फिर रखवाली करनी होगी। ठीक तरह से रखवाली। पास कहीं पुंचा का खेत नहीं। सूअर कब से नजर लगाए हुए है।

धाराओं में विभक्त हो गई बावली का वेग, विस्तार और गहराई यहां कम है। दाएं-बाएं ढलुए पहाड़। पेड़-पौधों से ढंके पहाड़। उनका वास-स्थान वहां है। एक साथ निकल आएंगे। नदी तैर कर पार कर लेंगे। अब छोटे भाई के साथ अरवनाषिकुन्न में रहें तो ठीक नहीं रहेगा...।

चुंडली ने झोंपड़ी बनाने का फैसला कर लिया। पुषकुनि की पहली झोंपड़ी।

चट्टानों तले बिखरे पड़े गोल-गोल पत्थर। बड़ी हो गई अरिपू (एक प्रकार का पौधा) की झाड़ियां।

झाड़ियां काटकर कूड़े को आग लगाई। जिन पत्थरों को हिला सका, उन्हें पहिए की तरह चलाकर नदी के किनारे पहुंचाया। जंगल से कच्चा बांस काटकर लाया। उसे चीरकर, गांठ बनाकर अंजीर के पेड़ से बांध बहते पानी में लटका दिया।

वाह रे, उसकी झोंपड़ी!

आसामी लोग मुंह दबाकर हंस लिए। मन के भीतर जलन हुई। देखो तो, बांस को पानी में डालकर दृढ़ क्यों बना रहा है? सड़ गए तो अगले साल झोंपड़ी हटानी होगी। तिरुनेल्लि के जंगल में क्या बांस चुक गया? इसका क्या जिम्मा कि अगले साल भी इसी को ही पुषकुनि बंटाई पर मिल जाएगी?

अंबलकुन्न के खेतों की देखभाल के लिए एक गोरा तम्पुरान कारिंदा बनकर आया है।

अगले साल देख लेना–

उन सबने जो कुछ कहा और सोचा, चुंडली को कुछ भी नहीं पता चला।

वह भीगकर दृढ़ हो गए बांस को पानी से बाहर खींच तट पर लाया। बांसों को बुनकर टटिया तैयार की। मां और बेटी उरुवयल से गोबर ले आई। जंगल से दीमक की मिट्टी तोड़ लाकर उसमें खेत का कीचड़ मिलाया। गोंद की तरह की मिट्टी बांस की टटिया के दोनों ओर लगा दी।

एक अच्छी झोंपड़ी।

आंगन में खड़े होकर देखते-देखते भूख फूट आई। दोपहर बीत चुकी है। खेत में अभी बाली फूटने को हैं, वहां से तत्काल कुछ नहीं मिलने वाला। झोंपड़ी के भीतर कच्ची मिट्टी की गंध के सिवा कुछ भी नहीं। किसी भी खलिहान में आसामी के लिए कोई काम नहीं। यहां आए तीन महीने बीत गए, जितना धान मिला था, सब कुछ दूसरों को दे चुके। इसलिए

पेम्बी पर क्रोध करने में कोई लाभ नहीं। दूसरों के भूखे रहते अपने यहां धान रखना पाप है। पूर्वजों की प्रेतात्माएं क्रोध करेंगी। जो कुछ है, उसका नाश करेंगी। इसलिए टोकरी में जितना धान बन पड़े, दे देते हैं। फिर सब समान दुखी। प्रेतात्माओं को शिकायत नहीं।

कुरियन को कल तलमला से वल्लि मिली थी। कंजी बनाई तो एक हिस्सा सबको मिला। उसके बाद आज दोपहर तक कुछ नहीं खाया। शिकायत नहीं है। किससे कहें?

यह बात आज या कल से तो शुरू नहीं हुई। पिता के दिनों से ही यही हालत है।

नदी-तट पर अंजीर के पेड़ के नीचे समतल चट्टान पर लेटा रहा। धूप में तपती झोंपड़ी से कच्ची मिट्टी की गंध आ रही है। नदी से ठंडी हवा। भूख। नींद। थके नेत्र बंद होने लगे।

दूर, तृश्शिलेरी में बीते दिन बंद आंखों के सामने उभरते हैं, ओझल हो जाते हैं। सूअर भगाकर भाइयों द्वारा ठीक की गई भूमि। पेड़-पौधे काटकर साफ किए गए पहाड़। धान और कंद। कुछ नहीं तो खाने के लिए कंद तो मिलेगा ही। यहां के जंगल के अरिकिषङ जैसा कंद। भाइयों के साथ काम न रहे, ऐसे दिन बहुत कम। अभाव के दिन में कहेंगे, 'लो, जाकर भून लो और खाओ।'

यहां कुछ नहीं है। है तो है बस गरीबी। धान खलिहान में पहुंच जाए तो खाने योग्य बाहर कुछ भी शेष नहीं रहेगा। रक्षा न देने वाली भूमि। आलंबनहीन मिट्टी।

कंद लगा भी लें तो जड़ तक खोदकर खाने वाले भूखे सूअर।

कच्चे धान की गंध। कटाई के दिनों का सपना देखते-देखते नींद लग गई...।

पेम्बी खेत में उतरी। तलमला वालों के विस्तृत खेत। उन छेदों के ऊपर से होकर वह चली जिनमें केंकड़े छिपे हुए हैं। उसकी समर्थ, परिचित आंखों ने जैसे उनके चारों ओर जाल-सा बिछा दिया।

बरामदे के छप्पर से लिए भूसे के नए, दृढ़, टुकड़ों को हाथ में रखा। उसने सोचा कि तिरुवोलम्मा ने छप्पर छाने के लिए यह कौन-सा भूसा दिया है? बहुत दृढ़। लगता है, चेट्टुविलियन (एक किस्म का धान) का है। इसमें एक नहीं, दस केकड़ों को छेदों से बाहर खींच लाने की शक्ति है। नहीं, चलते नहीं बनता। भूख लगी है। एक खेत की मेंड़ पर, जहां केंकड़ों के बहुत-से छेद हैं, रुकी और बैठ गई। दोपहर की कड़ी धूप सिर पर पड़ी।

खेत के नाले में छोटी-छोटी मछलियां हैं। आंखों में डालने पर भी न दिखे ऐसे छोटे हाथों से छान, पत्ते में ढंककर कमर में रखी थैली में डाल लिया। भूसे की नोक पर एक छोटी मछली गूंथकर तैयार होकर बैठ गई। सामने दो-तीन छेद हैं। किसी एक में उसकी गोल-गोल आंखें होंगी।

दोपहर की धूप में पलकें बिना हिलाए-डुलाए बैठी रही। छेद में डाल दिया भूसा जरा

भी न हिला। जला देने वाली गर्मी।

नदी में लड़कियों के तैरने की आवाज। खेत के किनारे के जंगली पेड़ की डालियों पर उछल-कूद करती जंगली गिलहरी ऊंचे स्वर में चहचहाती रही।

धूप में हिलाती-डुलाती कभी-कभी ठंडी हवा निकल गई।

छेद से गोल-गोल आंखें दिखती हैं, गायब हो जाती हैं। भूसा हिलना नहीं चाहिए।

अंत में—

भूसा पकड़े उंगलियों को कोई अंदर खींच रहा है। एक ही सांस में उसने उसे बाहर खींच लिया। बहुत भारी।

भूसा दांतों से पकड़े एक बहुत बड़ा केंकड़ा बाहर गिरा। जलती धूप में, सूखकर दरारें पड़े खेत पर वह मृत्यु-भय से दौड़ा। फिर छेद के पास पहुंचने से पहले ही एक थप्पड़। हरी घास पर औंधे सिर गिरा। मछलियां नाले के पानी में जा छिपीं।

पानी रोकने के लिए रखे गोल पत्थरों में से एक उखाड़कर उठाया। एक और प्रहार। अब वह नहीं हिलेगा। इतने से काम नहीं चलेगा। उसके बच्चे होंगे। नया भूसा फिर तैयार किया।

फिर परीक्षा। धूप...

अंत में शिकार खत्म हुआ। बाप और चार बच्चे। पैरों से पकड़कर उठाया और नदी की ओर चले। खुशी हुई। धूप तो लगी, पर व्यर्थ नहीं। आज का दिन बीत जाएगा। बिताना होगा। सूरज वन की हरीतिमा पार करके बाहर आ रहा है। भाड़ में रखे बर्तन की तरह गाल तप रहे हैं।

बेटी को बुलाना चाहिए। नदी में तैर-तैरकर वह भूख भगाने की कोशिश करती है।

नीचे जहां पानी रोक रखा है, उस ओर चली। साड़ी के एक हिस्से से शरीर ढंककर, दूसरा हिस्सा चट्टान पर बिछाकर उसके सूखने की वह प्रतीक्षा कर रही है।

केंकड़े दिखे तो गीले कपड़े पहने ही दौड़ आई।

'केंकड़े मिल गए?'

'बड़े केंकड़े।'

झाड़ियों में से दो वेल्लिला (सफेद पत्तियों वाला एक पौधा) तोड़ जूड़े में खोंसे और खाना पकाने को तैयार हो गई। भूख की छाया चेहरे से अदृश्य हो गई।

मां-बेटी आग की खोज में नदी तट पर चलीं। एक जगह चट्टान पर राख जमी हुई थी। राख हटाई। आग बुझने ही वाली थी। सूखे पत्ते डाले, सूखी डालियां डालीं। क्षण भर में आग बढ़ गई।

भुने केंकड़े की गंध फैली। पिता ने पेड़ की छाया से सिर उठाकर देखा। उठकर इस ओर चले आए।

अमावस निकट है। इसलिए मांस बहुत था। स्वाद अच्छा था, पर पूरी तृप्ति के लिए काफी नहीं था। अब तक शांत पड़ी धूप सांप के फन की तरह सिर उठाने लगी। नदी से ठंडा पानी पिया।

बेटी वहां नहीं रुकी। नीचे घाट पर उल्लास के साथ नहाती सहेलियों को ढूंढने दौड़ गई। तलमला की सब लड़कियां वहां पहुंच गई होंगी। अरवनाषि में मनपसंद सहेलियां नहीं हैं।

तभी वह ऐसे थम गई जैसे किसी ने लगाम पकड़ ली हो। सामने रास्ता रोककर एक मनुष्य खड़ा है।

साफ, सफेद कपड़े। गोरा, लाल-लाल-सा चेहरा।

मन में आया कि केवल तृश्शिलेरी में ही इस तरह के साफ कपड़े पहने तम्पुरान लोगों को देखा है। इस देश में पढ़ाई के बाद योग्य बनकर लौटते छोटे तम्पुरान लोग।

यहां के जमींदार लोग दुबले-पतले हैं। केवल उस तरह के लोगों को देखने की अभ्यस्त आंखों के लिए यह एक नया दृश्य था! उसके पिता चुंडली के समान ही थे।

लंबा शरीर!

दृढ़ गोल-गोल बांहें।

सिर ऊंचा कर चलना।

उसकी काली आंखों में छाए आश्चर्य के भाव को देख राघवन नायर को मजा आया।

'गोरे चुंडली की गोरी बेटी मारा हो न?'

चट्टानों पर बिखरती बावली की-सी आवाज। सिर हिलाया। गला रुंध गया।

'यह पुष्कुनि की फसल तेरे पिता की है?'

सिर ही हिला सकी। भीतर एक तरह के अनिर्वचनीय भय का उदय हो रहा है। तम्पुरान की नजर फसल पर है।

चाचा की कही बात—

हिस्सेदारी वापस करनी होगी।

जंगल काटे, आग लगा-लगाकर कूड़ा साफ किया, पत्थर निकाले। सब व्यर्थ। इतनी उम्र वाले पिता ने भी ऐसी मूर्खता की।

उस आदमी को देखने पर फिर आश्चर्य हो रहा है। मंदिर-कर्मी वारियर के कारिंदे ही हैं न? जब ध्यान आया कि इतने समय से वह मेंड़ पर सामने खड़ी है, तब लज्जा के साथ कीचड़ में कूदकर रास्ता बना दिया। साड़ी हवा में सूख गई थी। जूड़े में खुंसी वेल्लिलाएं उत्साह के साथ हंस पड़ी।

आंखें तम्पुरान के पीछे स्थिर हो गईं। पुष्कुनि की ओर ही जाते हैं। लंबी छाया को पिता की झोंपड़ी की ओर जाते देख वह संदेह से ताकती रही। अधखुले होठों पर अनिश्चय

और संदेह के रंग। छाया झाड़ियों के पीछे ओझल हो गई...

अब पिता से बातें कर रहे होंगे। फिर भी, वह सौम्य हंसी और गंभीर स्वर उसके मन में घर कर गए।

अब नीचे, घाट पर सहेलियों के पास चलें? या वापस झोंपड़ी में जाकर सुनें कि तम्पुरान क्या कह रहे हैं? घाट पर कुरुमाट्टी से मिलना है। उसने कहा है कि गुदना गोद देगी।

अपने गोरे हाथ को देख उसने सोचा, एक कमल गुदवाना है। उसके पास एक बत्तख भी।

बत्तख वाले पोल के बत्तखों की झुंड में से, एक जो सबसे सुंदर है, उसे अपने मन में रखा।

नाक में गुदना नहीं। बस माथे और गाल पर एक-एक बिंदी।

कमर में रखी थैली खोलकर देखा।

पच्चीस पैसे हैं, न?

अब कितनी बार गिनूंगी?

एक भी पैसा कम हो जाए तो वह सुई को हाथ भी न लगाएगी। कुरुमाट्टी को पैसे से इतना प्यार है। पच्चीस पैसे हैं। एक आना और भी है। चवन्नी का सिक्का बनाना है। कुरुमाट्टी को वही पसंद है। पसंद नहीं, जिद। चवन्नी कहां मिलेगी? पिता के सेयतु की दुकान पर जाते समय कह दूंगी।

इतनी चवन्नियों से कुरुमाट्टी जो माला बनाने जा रही है, वह कितनी लंबी होगी? एक थैली भर सिक्के हैं उसके पास। उसकी छोटी बहन जवनी कहती है कि माला बनाने के लिए इकट्ठा कर रही है।

कुरुमाट्टी से फिर कभी मिलूंगी। घाट पर जाने को अभी मन नहीं करता। वह नदी-तट से झोंपड़ी की ओर दौड़ पड़ी।

हांफती हुई घर पहुंची तो खाली। आशा की ज्योति बुझ गई। गोरे तम्पुरान इतनी जल्दी चले गए?

मंदिर की ओर की शिलाओं की सीढ़ियों पर चढ़ गई। पेड़ों के बीच ओझल होते एक सफेद धोती के अग्रभाग को वह बिना हिले-डुले देखती रही।

एक दीर्घ निःश्वास—

'बेटी!' वह चौंक पड़ी, मुड़कर देखा। पिता झोंपड़ी के बरामदे में लेटे हुए छत की ओर दृष्टि लगाए हैं।

'तम्पुरान ने क्या कहा?'

'चावल है, बेटी?'

'नहीं।'

तब भी दृष्टि उधर टीले की ओर ही मंडराती रही।

5

तलमला में काक्कपुला मनाया जा रहा है। डमरुओं की आवाज ने दिशाओं को जगा दिया। अभी शाम नहीं हुई। क्षेत्र के चारों ओर की घाटियों से मनुष्यों की कतारें बावली और उसके किनारे के खेतों को पार कर टीले के ढाल की ओर झोंपड़ियों की तरफ बढ़ रही हैं।

पुत्तूर परिवार के चेम्मक्कारन वेल्ली की झोंपड़ी सज-धज कर खड़ी है। नई मिट्टी और गोबर से पुती दीवारें। फर्श काले शीशे की तरह चमक उठा। ये सब नदी के उस पार से ही दिख रहे थे।

बारिश न हो।

मलंकारी बचाएं!

सब मिलकर प्रार्थना कर रहे थे।

मल्लन को किसी बात में उत्साह नहीं लग रहा था। दो झोंपड़ियों के पार वेल्ली की झोंपड़ी। एक बार और डमरू बजाना सीखना चाहिए। ठीक-ठीक सधाना है, अच्छी तरह आना हो तो बजा-बजाकर हाथ तोड़ना होगा। ऐसा नहीं लगना चाहिए कि बजा रहा है, बल्कि हाथ से स्वतः हो रहा है।

कल पुला की बात करने के लिए जवर पेरुमन आया। तभी बात समझ में आई।

पिता की मृत्यु के बाद आने वाली पहली पुला। घर में बेटियां नहीं। एकमात्र लड़का। मुझे कुछ देना होगा। साढ़े बारह सेर धान ही हो तो भी। तम्पुरान को मरे बहुत दिन नहीं हुए।

उरुवयल से कुंडल मिलेगा? एक-दो बार फाटक तक गया। चामुंडी देवी से प्रार्थना की—कोई न देखे। लगा कि तिरुवोलम्मा की सांस उसके कानों में पड़ रही है। लौट आया।

जमीन की देखभाल गोपालन मूस कर रहा है। अब कौन कुंडल देगा? क्या मैं उसके लायक भी हूं? कोशिश करता हूं, उस दिन की गंधकशाला के बारे में सोचना न पड़े। फसल काटकर, धान बनाकर खलिहान में पहुंचा देना चाहिए था। उसके बाद में ही अपना अधिकार मांगना चाहिए न?

वह टटिया की आड़ में छेद से जवर पेरुमन, कर्मी और मूप्पन लोगों को चेम्मक्कारन की झोंपड़ी में आते बेचैनी के साथ देखता रहा।

अव्वा को सफेद साड़ी हटाकर नई साड़ी खरीदने का पैसा देना चाहिए। ब्याही बहनें होतीं तो पिता के पुला पर वल्ली ले आतीं। कहने से कोई लाभ नहीं। अव्वा ने लड़कियों को जन्म ही नहीं दिया। लड़की वालों को सदैव मिलता ही रहता है।

पुला, जिसकी प्रतीक्षा थी।

अच्छी तरह डमरू बजाना है। मचान-नृत्य में दूसरों को हराना है। ...पर अब मौका

आने पर खाली निराशा।

धुएं की कालिख लगे पुराने ढोल को बरामदे में पोंछकर साफ कर रहा था जब जवर पेरुमन और बाकी साथी लोग आए। नजर पड़ते ही भीतर की ओर सरक गया।

अंदर, अंधेरे कोने में बिना धोई काली पड़ गई सफेद साड़ी पहने अव्वा लेटी हुई है।

पिता की मृत्यु के दिन—

औरतों ने अव्वा की लाल साड़ी हटा दी। बदले में नई सफेद साड़ी पहनाई। गरम पानी से नहलवाया। दावत दी। हाथ की चूड़ियां उतरवा दीं। पत्थर की मालाओं को तोड़ दिया। चेहरे के गुदने को छोड़कर शेष सभी प्रसाधन हटा दिए।

आज वे लोग अव्वा को अच्छा बनाएंगी। उतारी गई सभी चीजें फिर से पहनाएंगी।

अंदर पैरों की आहट से अव्वा ने सिर उठाकर देखा। बेटे के चेहरे पर खुशी नहीं।

'क्या है, बेटा?'

'कुछ नहीं।'

'आज यहां काक्कपुला का दिन निश्चित करना होगा न?'

'हां।'

'फिर परेशानी किस बात की?'

'तुमने कुंडल के बारे में पूछा?'

'नहीं।'

अव्वा पूछ रही है कि कुंडल के बारे में कहा कि नहीं। किससे कहूं? अव्वा की तरह ही तिरुवोलम्मा भी है। उसका भी स्वामी नहीं है। संतान भी नहीं है।

अव्वा और भी बातें पूछेंगी।

वह बरामदे में लौट आया। टटिया के छेद से चेम्मक्कारन की झोंपड़ी दिखती है।

आंगन में केले के पत्ते में रखे चावल में बत्ती हिल-डुलकर जलती है। जवर पेरुमन के साथ आए युवकों ने आंगन के बीच मचान के खंभे जड़ दिए। वे लोग जंगल से झाड़ियां तोड़ लाए।

मचान का काम पूरा हुआ।

चेम्मक्कारन वेल्ली के आंगन पर एक बड़ी हरी छत है। कोन्ना (एक वृक्ष) की कुछ और डालियां उस पर डाल दें तो अच्छा रहेगा, उसने सोचा।

कालन, पुलयन, मारन और जोगी...सभी दोस्त इकट्ठा हो गए— मन करता है जाने को।

जा नहीं पाऊंगा। जिसके पास पुला के लिए देने को एक भी पैसा नहीं, वह चेम्मक्कारन का मुंह कैसे देखे? काला मुख, जिसकी आंखें कभी प्रसन्न नहीं होतीं।

जुरमाना देने के लिए भी पैसा चाहिए। बेटे का जुरमाना दिए बिना अम्मा को कैसे अच्छा बना लेंगे!

पिछले महीने सेयतु की दुकान से पुट्ट और गोश्त खाया था। अच्छा स्वाद था।भयंकर जलन! अव्वा जिसको चूल्हा जलाना चाहिए, बीमार पड़ी है।

वल्ली ला देने पर पड़ोस के मानी की पत्नी कंजी दे देती है।

वह दिन जब मांस खाया था, स्मृति से उतर गया। क्या किया...?

हाथ धोकर अठन्नी सेयतु के हाथ में दे दी।

उसे कपड़े के अगले हिस्से में बांधकर सेयतु ने गरम पुट्ट (एक खाद्य पदार्थ) और मांस परोस दिया।

खा चुकने के बाद सेयतु बोला, 'अब एक सेर धान और लाओ।'

'हां?'

'मल्लन, अभी तुमने क्या खाया?'

'गोश्त।'

'कौन-सा गोश्त?'

कौन-सा खाया? भूख में खाते समय कुछ भी नहीं सूझा। सूअर तो नहीं ही था। शिकारी जोसफ को तिरुनेल्लि गए एक हफ्ता बीत गया था। धनु महीने में कटाई के समय आकर फिर वापस चला गया था। तो?

'वह गाय का गोश्त था।' सेयूतु ने ऊंचे स्वर में ठहाका लगाया।

गाय का गोश्त? क्रोध और दुख उभर आया। जो कुछ वह कहता है क्या सच है?

मांस बहुत सख्त था।

जो कुछ खाया, खड़े-ही-खड़े हजम हो गया।

उसे भी पचा लेना चाहिए।

जिसने भूख में धोखा देकर खिलाया, उसे जता देना चाहिए।

कुछ नहीं हो सकता। पाप मिटाने के लिए पुला पर जुर्माना देना ही एकमात्र उपाय है। अब सेयतु इस बात का ढिंढोरा न पीटे तो ही भला है।

'अब जुर्माना दो।' उसने गंदी हंसी हंस दी। ढीले होकर पड़े झूलते दांत। जुगुप्सा और घृणा के साथ वापस लौट आया।

गाय का गोश्त खाने का जुर्माना सोलह चूड़ियां है। पुराने समय में एक चूड़ी के लिए एक आना लगता था। अब दो आने। दो रुपए कैसे बनाऊंगा?

युवक ढोल बजा रहे हैं। काक्कपुला मनाने की घोषणा दूर-दूर दिशाओं में गुंजित हो रही है।

बहुत इंतजार के बाद आया पुदिन। पुला हर दिन नहीं होता। कुछ लोग साल में एक बार भी पुला नहीं मनाते। खर्च इतना अधिक है। जैसे-जैसे गरीबी बढ़ रही है, पुला मनाने के दिन कम होते जाते हैं।

मारा और कुरुमाट्टी आएंगी। सभी औरतें आएंगी। सिर में रेंडी का तेल लगाकर, फूल बांधकर, मालाएं और चूड़ियां पहनकर, उनका एक रंगमय प्रवाह बहेगा। चेम्मक्कारन की झोंपड़ी, आंगन और पड़ोस के घर रंगों से भर जाएंगे।

कुरुमाट्टी की काली आंखें मुझे ढूंढेगी? मारा से एक शब्द बोलने का मौका मिलेगा?

यहां, इस अंधेरे बरामदे में, फटे बांस की टटिया के छेद से पुला देखना होगा?

सब लोग उरुवयल से वल्ली खरीदते हैं। अगले साल की पेशगी लेते हैं। सज-धज कर काक्कपुला पर आते हैं।

इतने दिन मेहनत करने के बाद मुझे क्या मिला?

क्यों एक शुभ अवसर को अशुभ करने के लिए तम्पुरान की गंधकशाला में सूअर घुसे?

क्यों तम्पुरान मर गए?

क्यों मुझसे भूल करवाने के लिए कुरुमाट्टी आई?

पिशाच मेरी परीक्षा ले रहा है?

उस दिन जो अरिकिषड वह भूनकर लाई थी, उसमें कुछ टोना-टोटका किया था? उसी की वजह से मैं भूल कर बैठा। मुझे मचान पर जगते रहना चाहिए था, उसी के कारण सो गया। उसी की वजह से सूअर आए, गंधकशाला का नाश हुआ।

वह कई तरह के दांव-पेंच जानती है।

बैठने की जगह नहीं मिलती। सब लोग आनंद मना रहे हैं। अपराधों की सजा। काश! वह भी सज-धजकर, चंपा के फूल लगाकर—

'कोई है यहां?'

'आंगन में कौन है?'

आंगन के दक्षिणी ओर आ मिलती सड़क से आवाज आई।

कौन है?

पिशाचों के एक साथ घूमने निकलने वाला दिन। आज तक ही है उन लोगों का दिन। पुला के पश्चात वे शांत हो जाते हैं, तब तक अपराधियों को दंड देते रहते हैं...

मल्लन चौंककर टटिया से सटकर बैठ गया जैसे कुछ सुना ही नहीं।

'क्या कोई नहीं है यहां? — गोरे तम्पुरान पूछते हैं।

'है।'

संदेह और लज्जा के साथ बाहर आया।

शाम की लाल रोशनी में तम्पुरान का गोरा चेहरा लाल हो उठा है। सफेद कपड़े, जिन पर खेत के कीचड़ के धब्बे नहीं पड़े हैं। यहां जो लोग आते हैं, उन सबके कपड़े इस जगह

के कीचड़ से रंगे होते हैं।

अपने गंदे कपड़ों पर उसे शर्म आई।

तम्पुरान मेरे जितने ही लंबे हैं।

उनकी लंबी छाया मेरी ओर बढ़ रही है। चेहरा छिप-सा गया।

'मल्लन, खाली है?'

'हां।' मुंह ढंककर दो कदम पीछे हटकर खड़ा रहा। लंबी छाया तब भी चेहरे पर भी।

'काम चाहिए?'

काम चाहिए? लगा, ईश्वर ही पूछ रहे हैं।

बिना काम के दिन।

खलिहान, जिसमें एक बार पिशाचों ने उपद्रव किया है।

'काम चाहिए तो कल अंबलकुन्न की तरफ आ।'

ओठों पर खिलने को आई हंसी फिर थम गई। शुरू ही में बाधा आ गई। कल काक्कपुला का दूसरा दिन है। कैसे जा सकता हूं? टीले पर चढ़कर आते वक्त तम्पुरान ने चेम्मक्कारन के आंगन में लगे मचान को नहीं देखा क्या? अनजाने ही आंखें उस ओर गई।

ढोल की आवाज।

'ओह! मैं भूल ही गया। काक्कपुला तीन दिन होगा न? उसके बाद आ—'

'हां।' सिर हिलाया।

गोरे तम्पुरान ने गांठ से पांच रुपए का नोट निकाला। नोट नहीं, निधि। ईश्वर द्वारा भेजे गए तम्पुरान। मन रोमांचित हो उठा।

एक आसामी को, जिसे अब तक देखा ही नहीं, तम्पुरान पांच रुपए का नोट दे रहे हैं।

आश्चर्य से आंखें अनजाने ही फैल गई। यह ले लूं? संदेह की छायाएं। इसके पीछे कोई बात है? यह भी पिशाच का काम है? विस्फारित आंखें एक विषैले जीव की तरह उधर घूरती रहीं। पलकें झपक जाएं तो वह डस लेगा? एक क्षण पहले आई आश्चर्य और आदर की भावना दूर हो गई।

'अरे, यह लो।'

सौम्य हंसी, किसी भी विष की दवा। तम्पुरान को मुझसे छल करने की क्या आवश्यकता थी? मंदिर के खेत के काम के लिए यह पैसा है या फिर अगले साल के लिए मुझे मोल लेने की पेशगी?

सोचता था, पैसे हाथ में आने के लिए वल्लियूर मंदिर के उत्सव तक प्रतीक्षा करनी होगी।

कुंभ मास के पहले ही तम्पुरान पैसा लेकर आए हैं।

एक क्षण।

अनाथ हो गई तिरुवोलम्मा मन में आ खड़ी होती है। नहीं, उस भूमि में काम नहीं करूंगा। स्वामीहीन खलिहान।

'भूलना नहीं। परसों के बाद चौथे दिन आ जाना।'

'नहीं भूलूंगा।'

नोट लेकर पहले आंखों में और फिर सीने से लगाया। हाथ में लेकर सीधे चेम्मक्कारन की झोंपड़ी की ओर दौड़ा। खुशी से सांस रुक-सी गई।

मचान लगाकर, उस पर झाड़ियां बिछाने के बाद पुला मनाने आए लोग चावल खाकर लौट चुके थे।

पांच रुपए का नोट देखकर वल्ली का चेहरा लाल हो गया। मुंह में भरी तंबाकू की आंगन में बिछे फूस पर पीक थूककर बोला, 'अव्वा के लिए साड़ी खरीदें।'

मन में जैसे फूल झर आए। मैं भी ढोल बजा सकता हूं। सुबह तक नाच सकता हूं। मेरा मचान-नृत्य लड़कियां नींद भगाकर देखती रहेंगी। साथ में वह काली आंखें भी होंगी—कुरुमाट्टी की। मारा नहीं आएगी?

मन के भीतर पायल झनझना गई। उस झंकार में वह लीन हो गया। अंदर चूल्हे के ऊपर छत से लटकते डमरू उठा लाया।

मनुष्यों की पंक्तियां चींटियों की अंतहीन कतारों-सी लंबी हो गई हैं।

खुले आकाश से बादल जाते रहे। कुछ दिन ऐसे ही रहेगा। वर्षा अब हुई, अब हुई, ऐसे भाव से डराएगी तो भी बिना कोई समस्या पैदा किए निकल जाएगी। आंखें घुमाकर डराने वाले घर के मुखिया की तरह बाद में फिर आकाश शांत हो जाएगा।

मलंकारी! बारिश न हो।

सज-धजकर आई औरतों से आंगन भर गया। उनके हाथों की चूड़ियां खनक उठीं। बिना किसी कारण के वे लोग हंस रहे हैं।

शिलाओं को भी चकनाचूर कर देने के भाव से बहते जंगली नाले की उल्लास भरी हंसी।

आकाश में छाए मेघों को मलंकारी द्वारा भगाते देख वे फिर हंस दिए। आज बारिश नहीं होगी। तेज-तेज मचान-नृत्य होगा।

मल्लन ने अव्वा की पुरानी बांस की टोकरी खोली। पिता के समय उसमें धान रखा जाता था। अब उसमें अव्वा चीथड़े रखती है। उसमें से एक लाल रेशमी टुकड़े को खींच निकाला। फट गए भाग को अंदर कर तह बनाई। कमर में धोती और कमीज के ऊपर बांधकर वह चेम्मक्कारन के घर की ओर चल दिया।

ढोल बज उठे। सीटियों का गला खुल गया। आंखों से नींद दूर हो जाती है। रंगों

में लहरें पड़ रही हैं। इधर-उधर बातें करती हुई खड़ी औरतें गोबर पुती बरामदे की आधी मुंडेर पर अपनी जगह बनाने के लिए धक्का-मुक्की कर रही हैं।

वेल्ली ने एक चलनी में चावल लाकर मचान पर रखा।

जवर पेरुमन की सहायता के लिए पास ही बैठे पेद्दमारन ने ईर्ष्या से देखा। ढाई सेर चावल रखने की जगह दो मानम चावल...!

मल्लन ने सोचा — कोई भी पुला पर धान नहीं लाता है। सब दो या तीन रुपए से काम चलाते हैं। खेतों में काम करने वाले को भी वल्ली नहीं मिलती। कहते हैं, धान की कटाई हो जाए फिर...

जवर पेरुमन ने तीन-चार बार आंख झपकाई। आंखें चकरा गईं। आजकल देखने की ताकत बिलकुल नहीं रही। कुछ छायाएं। एक-दूसरे में उलझी छायाएं। कान भी मंद पड़ गए हैं।

ढोल और सीटी की आवाज। दूर नरिनिरङ्गि पर्वत-माला के पार से सुनाई पड़ते बादलों के गर्जन के समान केवल एक अव्यक्त गूंज।

जवर दो लोगों की मदद से उठ खड़ा हुआ। पेद्दमारन और एलुतपोट्टन उसके दाएं-बाएं खड़े हैं। दोनों की आशा है एक बार क्षेत्र का मूप्पन बनने की। जवर के एक बार छींकने भर से दोनों अपनी-अपनी ओर से पंखा चलाने लगेंगे। छाती और पीठ थपथपाएंगे। बीच-बीच में तंबाकू के टुकड़े मुंह में रख देंगे।

सहायकों का हाथ पकड़कर जवर पेरुमन आंगन में उतरा।

मचान पर रखी चलनी को मारन ने पेरुमन के सामने रखा। चावल पर दृष्टि डालते ही उसकी आंखें क्रोध से जल उठीं।

क्षेत्र के मूप्पन ने चलनी से एक हथेली भर चावल लिया। छितरे स्वर में, रुक-रुक कर मंत्र निकलने लगे।

हथेली भर चावल से बूढ़े ने सामने फर्श पर एक मनुष्य का रूप रचा। धुंधली आंखों वाले पेरुमन की करामात लोग बिना हिले-डुले देखते रहे।

वृत्ताकार एक सिर। गोल शरीर। दो पैर। बनाते-बनाते चलनी का चावल खत्म हो गया।

चुंडम (आदिवासियों का एक सांप्रादायिक चिह्न) की रचना पूरी होने तक बच्चे भी चुप बैठे रहे। मृत लोगों की आकृति। पीढ़ियों से पहले के और कल तक मरे सब लोग उनमें हैं। जीवित रहने वाले चावल से रचे उस आकार में अपने प्रिय जनों को देखते हैं, याद करते हैं।

नाक साफ करने की आवाजें। दबा रुदन, खुले गले से रोना —बाकी सब उस विलाप में डूब गया। सबसे बढ़कर बच्चों का रोना। दूध-रहित शुष्क स्तन चूसते वे बच्चे ऊंचे

स्वरों में रोने लगे।

ढोल फिर बज उठे। उस नाद में विलाप के स्वर विलीन हो गए।

जवर पेरुमन की छितरी आवाज ऊंची उठी तो सब लोगों ने, बच्चों ने भी रुलाई रोककर उस ओर कान लगा दिए।

'आकाश और भूमि...है...'

मूप्पन का गला पूरी तरह खुलता नहीं। पेद्दमारन ने ऊंचे गले से गाया :

'चांद और सूर्य है...
चंद्राल भगवान
सूर्याल भगवान
कामदेव—आ...वेल्ली दे...वा...
कौरव, पांडव, सैकड़ों देवताओ
कोटि-कोटि देवताओ...आओ...'

एलुतपोट्टन ईर्ष्या के साथ शत्रु को देखता रहा। जब भी साथ देने की कोशिश की, आवाज थककर गिर गई। उसको भी पता है। छोड़ तो नहीं देना है न? शायद यह सब सुनकर ही लोग भावी मूप्पन की योग्यता की परीक्षा लेते होंगे। साथ में शोभा न देने वाला कैसा मूप्पन है। उसने गाया :

'चंद्र और सूर्य है...
चंद्राल भगवान...
दक्षिण के देवता और
उत्तर के पेरुमाल भी...'

चट्टान पर पशुओं के पांव खुरचने की-सी आवाज। सामने रचे हुए चुंडम की गंभीरता भूल युवक हंस पड़े। एलुतपोट्टन चिढ़ गया।

मुझे भी शास्त्रों का ज्ञान है। किसने कहा कि शास्त्र बोलने के लिए अच्छा स्वर चाहिए? नहीं तो मूप्पन को कहने दें। पोट्टन ने प्रश्नवाचक दृष्टि से पेरुमन के अंधे-मुख की ओर देखा। बूढ़े ने युवकों की हंसी के बारे में कुछ नहीं कहा। ध्यान ही नहीं दिया था। उसके टेढ़े ओंठ कांपे। सिर पर डाले फटे रेशमी कपड़े के दोनों छोर पैरों के अंगूठे से दबाकर धीरे-धीरे दाएं-बाएं हिलाने लगा।

एलुतपोट्टन ने जारी रखा :

'आकाश में हुए मीन और वेल्ली
भूमि में हुए घास और रोम—
समुद्र में हुए पत्थर और कविताएं—
अहाते में फेंके गए बीच और बर्तन।

आकाश में... ।'

तीन ढोल बिना व्यवधान के बज उठे। ठंडी रात की चुप्पी में ढोल की आवाज और गीत ने गोता लगाया। आवाज की लहरें वन की सीमाओं से टकराकर बिखर गईं। गीत की गति बदल गई :

'उत्तर परिवार में, वायनाड इल्लम में—
लगे रहे...ए...
साठे पेनवल्ली, तीस कानवल्ली
अशि आरयंगी, बेवुपट्ट...'

ढोल चुप हो गए। वयनाड इल्लम में, उत्तर परिवार में और बाकी सब परिवार के मृतकों के पिशाचों को मूप्पन लोग बुला रहे हैं।

जंगल से बाज की आवाज आई। उधर अहाते में केले के पत्तों के हवा में टकराने से शोर हुआ। दूर कहीं मुर्गा बांग दे रहा है। सब पिशाच हैं। उनको दबाने के लिए मूप्पन लोग शास्त्र के मंत्र पढ़ने लगे—

'कालनेन्ट....नीलियेन्ट्
पुलयनेन्ट, कालियनेन्ट...
जवरनेन्ट, मारबेन्ट...
वेल्लनेन्ट, जवनियेन्ट....'

मृतकों के प्रेतों को, जो आपस में संबंधी न हों, एक-दूसरे के साथ गठजोड़ कर भेज देना है। नारी के संरक्षण के लिए परलोक में भी साथी चाहिए। एक स्त्री के लिए एक पुरुष। नहीं तो, शास्त्र मंत्रों के द्वारा परस्पर गठजोड़े के बिना भेजी गईं पुरुष-स्त्री की आत्माएं बिना मुक्ति के भटकती रहेंगी — खेतों में, अहातों में, प्रांतों में, जंगलों में। जो जीवित हैं, उनके ध्यान की कमी के कारण इन्हें मुक्ति नहीं मिलेगी।

स्मरण में आती सभी प्रेतात्माओं को एक-एक साथी के साथ भेज देना चाहिए। कोई भी छूट न जाए।

पेद्दमारन ने पहले ही अरारोट के पत्तों का प्रबंध कर लिया था। उन्हें चुंडम के पीछे एक-एक करके फैलाया। एक-एक जोड़े के लिए एक-एक पत्ता। पत्तों के फैलने पर, पंक्तियां बढ़ने पर लोगों के मन रोमांचित हो उठते हैं। मेरा बेटा, मेरी पत्नी, मेरा पति, मेरी बेटी, मेरे मामा... ।

मूप्पन लोगों के मुंह से मृतकों का नाम उच्चरित होने पर भीतर स्त्रियां रोने लगती हैं। वह रुदन एक साथ मिलकर एक ही ताल में उठता-गिरता रहता है।

एक माया-भरी चुप्पी उस विलाप को चारों ओर से घेरकर खड़ी है। कोई बात नहीं। कोई हंसी नहीं। केवल ढोल का नाद और रोने की आवाज। सबसे परे, जैसे किसी गूढ़

रहस्य से ढंके मंत्र बोलने का दबा स्वर।

मूप्पन और सहायक लोग सिर पर कपड़े डालकर ताल के अनुसार बैठे-बैठे नाचने लगे।

मूप्पन की गोद में रखी चलनी में पड़ी पायलें कई बार उठीं-गिरीं। बूढ़ा हाथ थक जाने पर भी चलनी गोद में रख नाचने का क्रम बनाए रखता है।

ठंड में सुन्न पड़े घुंघरुओं पर आवाज रूपी खून का प्रवाह।

भीतर से आते विलाप से अव्वा का स्वर अलग करने की मल्लन ने व्यर्थ कोशिश की।

'चात्तनेन्टु....मारयेन्ट...
वयनाड इल्लम में, उत्तर में...'

पिता के नाम पर है। पिता का साथ देने के लिए मानी की बेटी मारा गई है जो अंजुकुन्न में बुखार से मर गई थी।

मल्लन की आंखें भर आईं। झोंपड़ी की ओट में जाकर उसने आंखें पोछ लीं।

अब अव्वा का विलाप स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ रहा है। किसी भी पुरुष के मरने पर उसकी पत्नी रोएगी?

तुरंत कुरुमाट्टी की याद आई।

नहीं, नहीं। चात्तन के मरने पर कुरुमाट्टी रोएगी नहीं। ऊंचे स्वर में, मुंह फाड़कर बैन करती कुरुमाट्टी की कल्पना उसे अच्छी नहीं लगी।

भीतर विलाप थम गया है। ढोल थककर आराम कर रहे हैं। चलनी में पायल सांस रोके पड़े हैं। घनी होती ठंडी रात।

चेम्मक्कारन की पत्नी वट्टा, एल्मुनियम के टोंटीदार लोटे में पानी लेकर सामने के बरामदे के द्वार से आंगन में आई। उसकी ऊंची नाक के अगले भाग और तीखी दृष्टि में कुछ ऐसा भाव था कि यह सब उसी की वजह से हो रहा है।

वह मचान के सामने ठिठक गई। गोरा रंग, मोटा और गोल चेहरा जिस पर गुदना गुदा है। मंदिर की तिरुवोलम्मा का दिया नाम है, वट्टा। और काई काम है या नहीं, किसी को पता नहीं।

'अव्वे!' साड़ी पकड़े पीछे आई बेटी को एक झटके से अलग कर वह भीतर की ओर खुलते दरवाजे में से अंदर को दृष्टि लगाए खड़ी रही।

धक्का-मुक्का-भीड़। विलाप करती औरतें भी आंगन में उतर आईं। मल्लन ने सोचा – सबसे बूढ़ी मेरी अव्वा है। अव्वा के मरने पर इस तरह रोने के लिए कोई नहीं। बिना औरत का घर।

रो-रोकर,

लाल हो गए चेहरे।

बिखरे बाल।

बिना फूलों वाले जूड़े।

मैले चेहरों पर आंसुओं के धब्बे।

आज की काक्कपुला उन औरतों के दुख का दिन है जो पुला मना रही हैं।

वट्टा टोंटीदार लोटे से गरम पानी डालने लगी। आंगन के बीच भूसे के ऊपर हाथ पकड़कर उन लोगों ने आंसू और मैल से गंदे हुए मुख धो लिए।

चुंडम के चारों ओर घेरा डालकर सब बैठ गए। ढोल फिर से बज उठे। नूपुरों से झंकार उठी। औरतों ने अपने दाएं हाथ से आकृति को साफ कर दिया। आज से कोई प्रेतात्मा यहां किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगी। कम से कम अगले साल तक।

अपने-अपने साथी का हाथ पकड़कर वे स्वर्ग गए हैं, जहां केवल आनंद है। वहां गुलामी का काम नहीं करना पड़ेगा। भूखा नहीं रहना होगा। कष्ट नहीं उठाना होगा।

बिखेरे गए चावल आंगन पर बिछे भूसे में गायब हो गए। लकड़ी के कोयले से पुता फर्श कई हाथों के स्पर्श से लाल हो उठा।

रुदन थम गया। ढोल शांत पड़ गए। सीटियों ने चुप्पी साध ली।

पुला मनाने वाली औरतों को पुला समाप्त करने के लिए कंजी देनी होगी। मछली और केले की सब्जी भी। उन लोगों का व्रत आज समाप्त हो रहा है। आज तक जो निषिद्ध था, जो उपलब्ध नहीं था, वह आज कहां से मिलेगा? वट्टा चुस्त थी। उसने सेयतु की दुकान से पहले ही सूखी, नमक लगी मछली खरीद रखी थी। साथ में मंदिर की तम्पुराटी के दिए केलों की सब्जी बनाई थी। उसको भी मछली खाए कई दिन हो गए। दूसरों को कंजी देने के भाव से, लालच छिपाकर वह भीतर चली गई।

जिन लोगों ने पुला नहीं की थी वे खाली पेट वापस लौट गए। लौटते समय बीते हुए अच्छे दिनों को याद करते रहे। पुला के तीनों दिन सभी को दावत देने वाले लोग। दावतों में तिरुनेल्लि और तृश्शिलेरी का कोई भी पुलया (आसामी) नहीं छूटता था। वह समय जब धान की अधिक कीमत नहीं थी, जब मलंकारी का कोप नहीं था। तीन दिन तो छोड़ो, आज एक दिन भी सबको दावत देने की शक्ति नहीं। एक जून का खाना, वह भी एक स्वप्न की तरह रह जाता है। उस स्वप्न में भूख भुलाते हुए, नींद को आमंत्रण देते हुए वे लोग टीलों से उतरने लगे। बिखरे पड़े टीलों से मनुष्यों की पंक्तियां गुजर रही हैं। मंद प्रवाह। सुबह होने को है। सिर पर कपड़े डाले, अनेक रंगों की बिंदियों-से वे चल रहे हैं।

गोरे चुंडली ने पुष्कुनि की झोंपड़ी में जाने की जल्दी नहीं की।

कहां है वह बलवान युवक?

शाम से जो उसने ढोल बजाना शुरू किया वह सुबह तक जारी रखा। आजकल के युवक एक बार बजाते ही थक जाते हैं। पड़ोस के घरों के लिए ही वह आते हैं।

चुंडली का संशय अभी भी नहीं जाता।

वह लड़का कौन है?

'जो ढोल बजा रहा था, वह कौन है?' उसने अपने छोटे भाई करियन से पूछा।

वह हाथी? वह मल्लन है।

चुंडली उस चुस्त, बलवान जवान मल्लन को ढूंढने लगा।

6

सुबह की स्निग्धता। छत पर ओस की बूंदें टप-टपकर गिरती रहीं। मल्लन झपकी लेकर उठा।

लोग भूसा बिछे मचान के नीचे तथा बरामदों में पड़े सो रहे हैं।

वेल्ली की झोंपड़ी के सामने बातें करती कुरुमाट्टी खड़ी है। हंसती युवतियां, आंख न लगने पर कहानियां कह-कहकर समय बिता रही हैं। मणियों की झनझनाहट-सी कुरुमाट्टी की हंसी गूंज उठी। मल्लन ने अनसुना किया। घमंडी कहीं की!

किसी ने झकझोर कर जगाया। पहने हुए कपड़े से मुंह ढंक रखा था। मुंह से हटाकर देखा।

'मल्लन है?

'हां।'

कपड़ों से भूसे के तिनके झाड़कर उठ बैठा।

'सोते रहे थे?'

'हां। कैसा जाड़ा है!'

'तू किसके अरुवयल में काम कर रहा है?'

एक क्षण को सोचा। किस अरुवयल में काम कर रहा हूं, खुद भी नहीं पता। गोरे तम्पुरान ने पांच रुपए दिए थे, पर किसलिए?

'मना में काम कर रहा है?'

'अगले साल वहां नहीं जाऊंगा।'

'उत्सव के बाद कहां जाने को सोचा है?'

'अंबलकुन्न के गोरे तम्पुरान ने वहां काम करने को कहा है।'

चुंडली ने सोचा—बुरा तो नहीं। अंबलकुन्न का खलिहान बहुत दूर तो नहीं। उसको डर था कि कहीं ये तगड़ा युवक खेती-बाड़ी छोड़ दूर तृश्शिलेरी न भाग जाए। मारा को साथ लेकर तृश्शिलेरी से यहां आकर बसना व्यर्थ नहीं हुआ। पेम्बी वस्तुतः बुद्धिमती है।

देर सुबह तक सोते रहे लोग भी वापस जाने लगे। हां, जिनको काम पर नहीं जाना था, वे करवट बदलकर पड़े रहे। झपकी के बीच चौंक-चौंककर मक्खियां भगाना, कोसना आदि करते रहे। खाली पेट में धधकती भूख का विचार उन्होंने छोड़ दिया।

शाम को फिर सब इकट्ठा होंगे। पर मल्लन को छोड़कर चले जाने को चुंडली का मन नहीं हो रहा था। यहां लड़कियां बहुत अधिक, लड़के बहुत कम। इस बीच किस-किसने जाल नहीं बिछाया होगा?

'शाम को आऊंगा।' चुंडली ने विदा ली।

पुषकुनि में छोटे भाई को रखवाली के लिए बिठाकर आया है। पेड़ों के बीच से अदृश्य सूअर की छोटी-छोटी आंखें खेत के सुनसान होने की ताक में लगी रहती हैं।

मल्लन उठ बैठा। काम नहीं है। एक बार और सो लिया जाए? रात में फिर नाच के लिए तैयार रहना है। फिर सुबह तक सो नहीं सकता।

चेम्मकारन को बैठने की भी फुर्सत नहीं। नींद के अभाव में आंखें गुड़हल-सी लाल हो गई हैं।

जम्हाई लेकर झोंपड़ी के बरामदे में आया और पत्नी से पूछा, 'कंजी के लिए चावल है?'

'धान है।' वट्टा ने सोने जा रही दो-तीन युवतियों को जगाया।

'धान की पिसाई करनी है। सोने का काम कल।'

अब वट्टा ने कहा है तो कल ही सो सकते हैं। जिसने आदेश दिया है वह चेम्मकारन की पत्नी है—वट्टा।

नदी से घड़ों और तांबे के बर्तनों में पानी ढो-ढोकर लाना है। खेतों को पारकर, पहाड़ चढ़कर यहां तक पहुंचाना है। पानी कुछ कम तो नहीं चाहिए। टीलों पर रहने वाले सभी लोगों की दावत है, छोटी ही सही। धान पीसना है। सो कल लेंगे।

आपस में वे लोग फुसफुसाईं। जम्हाई ली। बिना नींद के पीले पड़े गालों को रगड़ लिया। जगने से अध-खुली हुई आंखें। कुरुमाट्टी ने तांबे का एक बड़ा घड़ा उठाया और निकल पड़ी। फिर कोई नहीं रुकी। चलते-चलते सबकी नजर बचाकर उसने मचान की ओर आंख दौड़ा ली। मल्लन हिला भी नहीं।

मारा कहां है?

कोई नहीं बता सकता, वह कहां है? देखने या दिखाने की कोई इच्छा ही न हो — ऐसी लड़की। गायों के बाड़े के पीछे, चट्टानों की आड़ में फूलों से भरी वनमालिका

की तरह। कुरुमाट्टी ठीक उल्टी है। नदी के किनारे खिलखिलाते-से वेल्लिला के पौधों की तरह वह सबके सामने हंसती है। उसकी हंसी कभी नहीं चुकती। कभी न सूखने वाला यौवन।

जिस-जिसको जरूरत है, सभी वेल्लिला से पत्ते तोड़ जूड़े में लगाती हैं। पत्ते टूटते जाने पर भी लहलहाते रहने वाला पौधा।

उसे पत्नी बनाने की इच्छा ठीक नहीं, मल्लन ने सोचा। तिरुनेल्लि के सभी पुलय लड़कों में ऐसा एक मोह है, पर उसे दबाए रखना ही ठीक है। अपने भीतर जहर छिपाए कलिकारी के पौधे (एक औषधि) की तरह ही युवक उससे डरते हैं। कई विद्याएं मालूम हैं उसे।

सब्जी की समस्या लेकर चेम्मक्कारन आया। इतने लोगों को क्या देंगे? जो लोग वल्ली लेकर आए, पैसा लाए और जो दूसरे परिवारों से पुला देखने आए, सभी की दावत है न!

काक्कपुला की घोषणा करने वाले डमरू पक्षपात नहीं करते। पुत्तूर परिवार की पुला है तो उत्तर, दक्षिण और बीच के सभी परिवारों के लोग आ जाएंगे।

दावत में मांस या फिर मछली चाहिए। पहले तो दोनों ही होते थे। मांस की तो गंध ही विस्मृत हो गई है। पोट्टन शिकारी के मरने के बाद विरले ही ऐसी दावतें हुई हैं जिनमें मांस परोसा गया हो। खाली दिनों में जब काम न हो, दावत के लिए, पली मुर्गियों को सस्ते दामों में बेचना पड़ता है।

सेयतु की ही शरण जाना पड़ेगा। कल वह मानंतवाडी गया था। पुला की बात उसे भी पता है। नमकीन मछली ले आएगा।

जंगली बिल्ली दो-तीन मुर्गे पकड़ ले गई, याद आने पर वेल्ली को दुख हुआ। पिछले महीने सेयतु को एक बहुत बड़ा मुर्गा एक रुपए में दिया था। साढ़े बारह सेर धान एक बोरी में भर कंधे पर रखा। नमकीन मछली खरीदनी है, मसाले भी।

'मैं जाता हूं।' — मल्लन नींद से उठा। बूढ़ा आदमी बोझ न उठाए।

नमकीन मछली सब्जी बनाने के लिए काफी नहीं।

घुइयां के पत्ते के डंठल और कटहल की एक और सब्जी।

'मल्लन, जंगल से दो कटहल तोड़ ला,' वट्टा ने कहा।

मल्लन ने एक तेज धार वाला चाकू उठा लिया। उस पार के जंगल में बहुत कटहल हैं।

रास्ते में कुबारकुनी के घाट से घड़े और तांबे के कलश भरकर सिर पर लादे औरतें पहाड़ चढ़कर उसके पास से गुजर गईं।

सिर पर रखे बर्तन से गिरते पानी के छींटों से भीगे गाल, कंधे और वक्ष-स्थल। प्रभात ने उनके चेहरों पर सिंदूर लगा दिया था।

तीन युवतियां एक साथ आईं। पतली पगडंडी। झाड़ियों के बीच खड़े होकर उसने

रास्ता बनाया।

चौथी आने वाली कुरुमाट्टी है, कुछ पीछे। सिर पर सोने की तरह चमकता एक घड़ा। आंखों पर सूरज की लाल किरणें पड़ रही हैं। जैसे वह जलती हों। घड़े में उंगली डाल मल्लन के चहेरे पर छींटे छिड़क दिए। पूछा :

'जंगल जाता है?'

'हां।'

उसकी आंखें और अधिक चमक उठीं। आगे गई सखियों के पास पहुंचने की जरा भी जल्दी किए बिना वह धीरे-धीरे टीले पर चढ़ने लगी।

मल्लन ने नदी को उतरकर पार किया। कुंबारकुनी के घाट पर और भी पुलया स्त्रियां हैं। जानवरों के रास्ते से अकेला उसे वन की ओर जाते देख आश्चर्यचकित हो वे देखती रहीं। साथ के लिए किसी को ले लेता तो क्या हर्ज था?...

हरा-भरा वन एक किले के समान सामने खड़ा है। भीतर गूंजता कोलाहल। झींगुरों की अनवरत सिसियाहट। बीच-बीच में जंगली गिलहरी की आवाज वन-हृदय को गतिमान बनाती-सी आ रही है।

अव्यक्त ध्वनि की हजारों लहरें।

पशुओं का रास्ता वन की गहनता की ओर गोता लगाकर अप्रत्यक्ष हो जाता है।

मना के रसोईघर की ओर मुड़ते नाले के पास पहुंचने पर ठिठक गया।

मीठे करौंदे का पेड़ फलों से लदा खड़ा है। इन्हें तोड़कर तिरुवोलम्मा को नमक में डालने के लिए देता था। अभी पकने का समय नहीं हुआ। कुछ पानी में गिरकर फूल गए हैं।

पानी से एक करौंदा उठाकर मुंह में रखा। भात के साथ तिरुवोलम्मा जो करौंदे देती थी, वैसे नमकीन नहीं। एक कड़वाहट।

थूक दिया। नाले में जमा सूखे पत्तों और डालियों को निकाल दिया। तम्पुरान के समय कैसा साफ रहता था यह नाला। सुबह उठते ही तम्पुरान जाकर नाले का पानी देखते थे। एक भी पत्थर या कूड़े का कण उसमें पड़ने न देते।

सूखे गिरे पत्ते ओस से भीग गए थे। उन पर कदम रख चलने लगा। मलंकारी के मंडल के ठीक ऊपर पहुंच गया। कुरिच्चिन चंतु के मदिर में एक नारियल फोड़ना है।

अव्वा की मनौती है। अगली अमावस को ही जाना है। सेयतु की दुकान में मुट्ठी भर भात के बराबर छोटे नारियल के लिए बारह आना देना पड़ता है।

बांस के जंगल के पार झरने चट्टानों से फुसफुसाते हुए बह रहे हैं। जानवरों का तंग रास्ता। कपड़े से तंबाकू का एक टुकड़ा निकाल मुंह में डाल लिया और उसका रस शरीर में लगाया। जोंकों की भरमार है यहां, कभी भी बदन पर पड़ जाएंगी।

झरने के संगीत ने उसे जगाया। सुबह के कोहरे की-सी एक शिथिलता उसे घेरे हुई थी। वह कोहरा गलने लगा।

अब अकेले हाथी से डरने की आवश्यकता नहीं। केवल पुष्कुनि में चुंडली की फसल ही शेष है, बाकी सबकी कटाई हो चुकी। उसकी प्रतीक्षा में वह यहां बांस के जंगलों में बैठने वाला नहीं, अब तक दूर कहीं 'इस्टेट रोड' पर निकल गया होगा। उधर के जंगलों में मदमत्त घूम रहा होगा।

धुंधले घने वन ने जैसे उसे निगल लिया।

बांसुरी बजाते बांसों का जंगल। झरने के पास पहुंचने पर ठंड बढ़ गई। हवा की ठंडी, मोटी बांहों ने उसे घेर लिया। उस सर्दी ने जैसे उसमें एक खुमारी पैदा कर दी।

'आओ...मा...आ...मा!

उस पहाड़ पर चलें जहां आम और कटहल हैं।

रात आ गई बेंतों के जंगल में...'

कुरुमाट्टी की सितारों जैसी आंखें मन के अंधेरे कोने में चमक उठीं।

अरारोट का झुरमुट काटकर रास्ता बनाया।

शीशम के पेड़ों के बीच सिर ऊंचा किए खड़ा कटहल। बहुत-से फल। पर छोटे-छिलके और कांटे हटाने पर बाकी कुछ रहेगा नहीं। किसी के द्वारा कांटे-छांटे कटहल जंगल की काली मिट्टी में बिखरे पड़े हैं। कुरिच्चन कन्नामन के बच्चे होंगे। कटहल पकने के समय वे जंगल छोड़कर जाएंगे ही नहीं। कटहल के कई पेड़ दिखे, पर आंखों को कोई भाया नहीं।

निर्जन वन, एक युवती के मन-सा दुर्गम फैला पड़ा है।

मधुमक्खियों की भिनभिनाहट का कोलाहल। दूर कुरुवकोल्ली में चंपा मे फूल खिले होंगे।

वहीं जाना है। पुराने जमाने में तिरुनेल्लि पेरुमाल जब खेती करते थे, उस समय भूसा डालकर तैयार की गई भूमि। वही आज कोल्ली है। सब तरफ कटहल के पेड़ भरे हैं। काले-धुंधले आकार। निगूढ़ता तो ऐसी कि कन्नामन के बच्चे भी पहुंच न पाएं। साल-दर-साल पकते रहने वाले कटहल कुरुवकोल्ली में ही होंगे।

कटहल, शीशम और सागवान के पेड़ एक-दूसरे से उलझे खड़े हैं। लताए आपस में गुंथ गई हैं। रहस्यभरी अंधेरी जगह। ऐसा घना जंगल जहां घुसते हुए हवा का भी दिल धड़कता है।

एक बहुत बड़ा मचान। काठ के भीमाकार स्तंभ। घनी सर्दी जो सांस भी जमा दे। नीचे जोंकें और उलझे पड़े, भीगे हुए सूखे पत्तों का बिस्तर। जीर्णता की गंध।

चंपा के बीज पीसकर तेल में डाल रखे थे। उसे बदन में लगाना भूल गया। जोंकों से बचने का फिर क्या उपाय हो? तंबाकू का जो एक टुकड़ा बचा था उसे मुंह में डालकर

चबाया। उसका रस टांगों में लगा लिया। पहले का लगाया हुआ सूख गया था।

उतरते समय पैर धंस जाते हैं। सूखे पत्तों के नीचे दलदली भूमि। कांटों भरी झाड़ियों का झुरमुट रास्ता रोके खड़ा है। उसे साफ करता कटहल के पेड़ों तक पहुंचा।

ऊपर चढ़ना है। धोती को उलटाकर बांध लिया। दाएं हाथ में छुरी कसकर पकड़ ली। सीधे ऊपर की ओर जाते शाखाहीन तने में छुरी बल लगाकर भोंक दी। दाएं हाथ के बल चढ़ गया। चढ़ते-चढ़ते छुरी बदल-बदलकर भोंकता गया। वही पकड़ थी।

कटहल के फलों से भरी शाखा के पास पहुंचा। बहुत हैं, छोटे और बड़े। वहां छोड़कर जाने से कोई फायदा नहीं। जो-जो आंख के सामने पड़े और जहां तक हाथ जाता था, काटकर गिरा दिए। और कोई इनके लिए यहां नहीं आने वाला।

बहुत दिक्कत से नीचे उतरा। बदन भर में चींटियां रेंगने लगीं। तीन-चार बार कूदकर उन्हें झाड़ा। तीन बड़े कटहल के फल अलग करके रख दिए।

घुटने जलते हैं। कहीं रगड़ से छिल गया है। झुककर देख रहा था कि पीछे से कोई आवाज आई। चौंक उठा। किसी हिरन के दौड़ने की आवाज होगी। फिर भी एक तरह का भय हुआ।

एक सूखी डाली टूटी। हिरन है तो पल भर में दूर भाग जाएगा।

धीरे से मुड़कर देखा।

एक लालिमा। लाल रंग की साड़ी पहने कुरुमाट्टी। वह ऐसे स्तब्ध खड़ा रहा जैसे बिजली का झटका लग गया हो।

'आ गया मा...'

गीत सुनकर मलंकारी ने उसे यहां तक पहुंचा दिया? उस गीत की याद सांप की तरह उसके विचारों में कौंधती रही।

उसके गोल-गोल सुंदर ओठ। लालची आंखें।

मल्लन ने चात्तन को याद किया। मूप्पन लोग याद आए। काक्कपुला याद आया।

इसके मन में क्या है? क्या करने जा रही है यह? अभी पुला भी खत्म नहीं हुआ। मेरे पीछे यह क्यों निकल पड़ी है? उसी दिन, ठंड की रात में मुझे धोखा दिया था इसने।

सब कुछ नष्ट कर दिया।

पिशाच का प्रभाव है उस पर।

मंत्र जानने वाली काली की बेटी है यह। मैं भी इसकी पकड़ में हूं—मैं भी चात्तन की तरह हूं।

चात्तन कैसा जवान था काम करने की वह चुस्ती। अब बिना कुछ किए भटकता रहता है। जंगल हो या खाली भूमि, कहीं भी पड़कर सो जाएगा। एक सूखी लकड़ी की तरह हो गया है।

उसका भ्रम! जुर्माना अदा कर फिर से उसी से शादी करने जा रहा है। मूर्ख! बहुत बड़ा मूर्ख है!

पर मन से आवाज उठी कि वह मूर्ख नहीं है और सामने खड़ी इस लड़की को किसी ने चाहा नहीं। उसने फिर भी इसे अनसुना कर दिया।

आंखों की चमक को अनदेखा किया। वे आंखें अपना शिकार ढूंढने निकली जंगली बिल्ली की हैं।

गीली होकर शरीर से चिपकी पड़ी साड़ी के अंदर उठता-गिरता वक्ष-स्थल।

छिः

यह किसी और की पत्नी है।

वह सामने आकर खड़ी हो गई। आंखों की चमक अपनी ओर खींचती है।

एक बड़ा गड्ढा है। कगार पर मैं खड़ा हूं। गड्ढा जिससे चात्तन गिरा था और दूसरे अनेक युवक भी, मैं भी—

धीरे-धीरे उसके चेहरे की चमक धुंधली पड़कर मिट गई। चेहरा काला पड़ गया। काले बादलों से छाए सांझ के आकाश की तरह लालिमा लिए हुए। मल्लन को जरा डर लगा।

'आ जा...मा...' इसके लिए नहीं था। 'तू मेरे साथ चल वन में'— गीत गाते समय मारा मन में थी। उसे लगा कि अनाथों-सी उस गाने की पंक्तियां वहां भटक रही हैं।

अंधेरे जंगल का किला। सामने कुरुमाट्टी। वक्ष से चिपकी भीगी साड़ी। यह सपना नहीं। निरा यथार्थ। जमीन पर काटकर गिराए कटहल के फल।

तब उसे काक्कपुला की याद आई।

अभी पुला खत्म नहीं हुई।

उसकी ओर बढ़ी बांहों को हठात पीछे खींच लिया जैसे आग का स्पर्श कर लिया हो।

यह पिशाचिनी है।

गंधकशाला में सूअर घुसे।

उसी रात तम्पुरान मर गए।

एक साल तक काम करने के बाद भी कुंडल नहीं मिला—

इसी पिशाचिनी की आंखें आग की तरह जलती हैं। कभी न बुझने वाली, स्पर्श करने पर सबको जला देने वाली, नशीली गोली का-सा परिणाम देने वाली आग।

शिराओं में खून जो तपने लगा था, जम उठा। हाथ शिथिल पड़ गए।

कुछ बोले बिना ही उसने झुककर कटहल के फल उठा लिए।

हाथ कांपे।

तब उस आग से अंगारे बिखरे।

मधु की रंगत लिए वह चेहरा काला पड़ गया। लाल हो गया।

तूफान आने से पहले के आकाश की तरह।

कटहल कंधे पर रख, सूखे पत्तों में धंसते पैरों को निकालता वह जल्दी-जल्दी कोल्ली चढ़ने लगा। इच्छा दौड़ने की थी।

उन आंखों से निकलते नुकीले तीरों से भागकर बचना ही चाहिए।

पीछे छूटे रास्तों पर उसकी नजर ही नहीं गई। कटहल से रगड़ने के कारण कंधों में खून निकलने लगा था, पर उसे पता ही न चला।

पशुओं का रास्ता पारकर नदी के घाट पर पहुंचने पर ही वह रुका। हांफ रहा था। निर्जन। समतल चट्टान पर रखे पानी से भरे घड़े को देखा ही नहीं। पैर के झटके से वह पत्थर पर लुढ़का तो आवाज से चौंक गया।

चेम्मक्कारन की झोपड़ी में पहुंचते-पहुंचते वह पसीने से तर हो गया। कटहल के फल आंगन में डालकर मुड़ते समय गोरे चुंडली ने उसे बुलाया, पर उसने सुना नहीं।

बिना काम के बैठे युवक ढोल पर ताल लगाने लगे।

दोहपर बीतने को है। लोग पंक्तियों में नीचे खेत की मेंड़ से चढ़कर आ रहे हैं।

युवा एक साथ सुर में गा रहे हैं। मचान-गीत की अंतहीन पंक्तियां आकाश में लहरें उठाती हैं।

ढोल जोर से बज उठे तो सीटियों का गला रुंध-सा गया।

कड़ी धूप में मुरझा गए मचान के पत्तों पर नजर गड़ाए वह एक कोने में बैठा रहा।

वह हंसी उसी की है न?

मुझे सुनाने के लिए ही?

उसे प्रतीत हुआ जैसे दीवार के उस पार से अंगारे उगलती आंखें जला देने के भाव में उस पर धंस रही हैं।

फिर वहां ठहर नहीं सका।

टोलियां बनाए हंसी-मजाक करते पुरुषों की भीड़ को उसने देखा तक नहीं। मचान-नृत्य के समय पैरों में बांधने के लिए फर्श पर रखे घुंघरू सुन्न-से पड़े रहे।

पिशाच के विलाप जैसी सीटियों की आवाजें उसका पीछा करती रहीं।

7

राघवन नायर के मन में आया – फिर एक बड़ा फंदा। ध्यान से एक-एक को ढीला कर निकल जाना है। अगर धैर्य नहीं रखा तो फंदा और कस जाएगा। बिना बात के यह दुख क्यों उठाना? अंबलकुन्न के खलिहान में सावित्री वारस्यार की तरह कितने ही लोग बिना सहारे के भटकते हैं। मन में एक ममता जगने लगी है जो अब तक किसी के लिए न थी। अब तक मन खाली था। पहाड़ और जंगल पार किए। तब तक निरा कोरा था। किसी के लिए कोई कर्तव्य नहीं।

उस दिन यहां से विदा लेने को तैयार हुआ। गीला अंगोछा केलों के झुरमुट पर सूखने के लिए डालकर कारणवर की प्रतीक्षा में बैठ गया। विदाई लेनी है।

भीतर बेचैनी भरी पदचाप। सावित्री वारस्यार के इधर-उधर तेजी से चलने की आहट।

छोटी लड़की के रोने की आवाज।

ओखली वाले कमरे से चटाई बुनने की आती ध्वनि।

पत्तों के अग्रभाग से गिरती ओस की बूंदें। इन सबके ऊपर पदचाप की ऐसी व्याकुल आवाज जो बेचैन हृदय की धड़कन की तरह थी।

'कारणवर कब आएंगे?' अनसुना किया।

तब वे बाहर आकर देहली पर बैठ गईं। जीवन में पहली बार उस कहानी की गांठ खोली। अजनबीपन मिट गया। दुख भरे स्वर में वे बोलीं :

जिस जगह पैदा हुई, वहां जंगल है। घास के बीच फंसी बालू जैसा है यहां का जीवन। तिरुनेल्लि पेरुमाल की पाद-सेवा के लिए जीवन अर्पित किए हुए कोई वारियर नानी की नानी को किसी घाटी से, ब्याह कर इस वन में ले आया।

प्रांत के बारे में, पीढ़ियों के पहले की कहानियां रह जाती हैं। रोज की आम चीजें मिल जाती थीं। बड़ी नानी संस्कृत के पुराण-ग्रंथ पढ़कर व्याख्या कर सकती थी।

यहां एकांत की बेचैनी से पीड़ित वातावरण।

इड़वम (मई-जून) महीने की काली संध्या में ब्रह्मगिरि और नरिनिरङ्गिमला के ऊपर बादल छा जाते हैं। आकाश और धरती पर काली छाया का पर्दा पड़ जाता है। एकांत मन के समान जंगल, आकाश और क्षितिज देखते ही देखते काले पड़ जाते हैं। जंगल में और आकाश में – दोनों जगहों पर जंगली हाथी उछलते-कूदते चलने लगते हैं। पुलयनकोल्ली से अकेले घूमते हाथी की डरावनी चिंघाड़ आएगी। वर्षा-काल से डरकर मैसूर के जंगलों की शरण ढूंढते हाथी की परेशानी भरी चिंघाड़ वन भेदकर आएगी।

कौन-सी पीढ़ी में वह नानी होगी? पीढ़ियां बीत गईं। कहानियां नहीं बदलतीं। जीवन

भी नहीं बदलता।

उसके यौवन-काल से ही यहां वन था। मंदिर के गर्भगृह में—जिसके मध्य भाग में मिट्टी लगी रहती और छत पर भूसा बिछा होता— सुबह से शाम तक बैठकर ताकते रहना। बड़े भाई को और कोई काम नहीं, वह एक फूलों की डलिया लिए जंगल में भटकता रहता। एक डलिया भर मंदारम के फूल लेकर देवता के पास जाना है।

फिर प्रतीक्षा है पूजा के बाद प्रसाद में मिलने वाले भात की। भूख से रोते बच्चे के मुंह में मां दूधहीन, शुष्क स्तन रख देगी।

यह केवल सावित्री वारस्यार की कहानी नहीं। उसकी मां, नानी, उनके पूर्व की पीढ़ियों में—सभी का जीवन यही था।

कच्चे चावल के भात की प्रतीक्षा में बैठे-बैठे जंगल से आई आवाज सुनकर चौंकेगी और छोटे बच्चों को छाती से लगा लेगी, बड़ों को पास बिठाएगी।

परिवार बढ़ता गया। यहां तक कि मंदिर से मिलने वाले चावल से पूरा नहीं पड़ता। तिरुनेल्लि के पेरुमाल सबका पालन-पोषण करने में असमर्थ हो गए।

बच्चे जंगल के आम चूसकर पेट भरते रहे। आसामियों की झोंपड़ियों से सुनाई पड़ती ढोल की थाप और दावत की चहल-पहल उन्हें तरसाती रही। गीले कपड़े बदलने के लिए और कपड़े नहीं। खेत के कीचड़ जैसे रंग वाले कपड़े गीले ही पहनकर सुखाए। वे कपड़े भी फट गए। हालत आसामियों से भी गई-गुजरी हो गई। उनके पास पहनने को कपड़ा नहीं तो वह जंगल की ओट में चलेंगे। उनके तम्पुरान बने बैठे हम लोग कहां जाएं? नाना लोग जो ग्रंथ बांचते थे, उनके बच्चे एक अक्षर भी नहीं जानते। कहीं स्कूल नहीं, कोई गुरु नहीं। बस दूर-दूर तक विजन वन।

'एक पाठशाला खोल देने पर राघवन नायर को बहुत पुण्य मिलेगा।'

उनके चेहरे के भावों का वर्णन असंभव था। जैसे कह रही हों कि कम से कम मेरे बच्चों को इस अंधे कुएं से निकाल दो।

मानसिक और शारिरिक रूप से अतिसार रोग से पीड़ित लोगों के समूह के इस छोर की अंतिम कड़ी है सामने खड़ी यह वारस्यार। सच में क्या वे यहां से बचना चाहती हैं?

मान्तोप के खलिहान के सामने स्कूल खुल गया। गोरे, लंबे मलयाली मास्टर जी। कीचड़ के रंग वाले कपड़े नहीं, वरन साफ-सफेद कपड़े।

चारों ओर के खलिहानों के बच्चे पढ़ने आने लगे। तीन से अठारह साल तक के बच्चों को बिठाकर क, ख, ग, घ... की पढ़ाई शुरू हो गई।

जो पढ़ाने आया था, वह कार्यस्थ भी बन गया, कृषक भी बन गया। घर के कारणवर के सारे दायित्व उसके कंधे पर...

मान्तोप वाले अंबलकुन्न का घर और जमीन खाली कर देने को कहते हैं। वारस्यार

की आंखें रो-रोकर लाल हैं। नाक सुड़कती भीतर काम कर रही है। कुछ बोली नहीं, पर जैसे स्वभाव से ही विनती करती है :

'मुझे बचाओ, मेरे बच्चों को...'

उन लोगों की जमीन खाली कर दे सकते हैं क्या? कोल्लीमूला की जमीन उन लोगों की है। पट्टे पर ली गई थी। अनेक साल से पट्टा नहीं देते। बीज और वल्ली भी न मिलने वाली खेती है। यह जमीन जिसे जंगल निगलने को है, वापस करनी है। मंदिर भी उन्हीं लोगों का है। मंदिर के लिए मान्तोप में कोई नहीं।

वह भी वापस नहीं मांगा, भाग्य! बड़े भाई ऐसे जीवन बिताते हैं।

अब क्या करना होगा?

नीचे पुष्कुनि में चुंडली को हिस्सेदारी में दी गई जमीन वापस लौटा लेनी होगी। घाट पर एक खलिहान बनाना है।

उस दिन चुंडली से कहने गया था, पर बिना कहे ही लौट आया। बहुत दिन तक जमीन व्यर्थ पड़ी रही! गोल-गोल चट्टानों के बीच अनाथ-सी जमीन।

तृशिलेरी से आकर चुंडली ने जंगल और झाड़-झंखार साफ किया। नदी की बांहों में घिरी उस जमीन पर अब तक किसी आसामी या जमींदार ने ध्यान नहीं दिया था। अब सब ठीक हो जाने पर क्या उस पर नजर लगाना उचित है? कभी वारियम को गुजारे के लिए मिले पट्टे में जमीन का यह टुकड़ा भी सम्मिलित है। नियम तो नियम है। भलाई-बुराई सब उससे बाहर। अगर जमीन छिन गई तो भी चुंडली जी लेगा। जमीन रहने पर भी उसकी हालत बहुत बदलने वाली नहीं। पर मंदिर से मिलने वाले मुट्ठी भर चावल के सहारे वारियम का परिवार जी नहीं सकता।

दोनों जून बिना रोक-टोक के मंदिर में पूजा के लिए भात बनाकर देना है। गुजारे के लिए मिली भूमि के बदले एक छोटा उपहार। फिर, देने पर उसमें से आधा वापस लौट आता है।

जो कुछ ईश्वर का दिया है, मंदिर की संपत्ति है। उसे आसामी को तो नहीं दिया जा सकता।

विवरण, पुरालेखों की जांच, हिसाब की रेखाएं।

चुंडली को निकाल देना होगा।

उसकी फसल का हिसाब हो जाए, तब तक प्रतीक्षा करनी है। कुछ भी हो, यह बारिश तनिक थमने पर ही बीज बो सकते हैं।

चुंडली के हाथों से उस कच्ची मिट्टी को छीन लेना जरा भी उचित नहीं। सौ बार मन ने रोका। एक सौ एक बार, किंतु इसे सही ठहराया।

हाथी वाले इस जंगल में यह परिवार मेरे बिना भी आखिर जीवन बिताता ही?

भागते विचारों पर लगाम लगाई। सुभद्रा को गोद से उतार दिया। वह अपने छोटे बाएं पैर को घसीटती हुई चली गई।

उपजाऊ धरती। कोई भी झाड़ी यहां पनप उठेगी। यहां के बच्चे—

सुभद्रा पैर खींचते-खींचते दहलीज के अंधेरे में ओझल हो गई।

टीले पर से उतरा। अब उतरना-चढ़ना कोई समस्या नहीं। पहले तो एक-एक कदम बहुत सावधानी से रखना पड़ता था। कहा नहीं जा सकता कि पैरों तले कौन-सा पत्थर उखड़कर लुढ़काता हुआ नीचे घाट पर पहुंच जाएगा। एक ही पैर पर खड़े होकर तपस्या करके वर्षा को जीतने वाली बड़ी-बड़ी चट्टानें।

पुष्कुनि में नदी की दो धाराओं को पार करना होता है। जरा और आगे कालिन्दी की गहनता बढ़ जाती है। दोनों ओर के किनारों से सटकर खड़े गगनचुंबी वन।

उसे पार किया।

झोंपड़ी पर अभी छप्पर छाया नहीं गया है। चुंडली की झोंपड़ी की जैसे पसलियां उभरी हुई दिखाई पड़ती हैं। इन्हें तोड़ दिया जाएगा। पास के किसी टीले पर रहकर जीवन बिताएंगे।

चुंडली का धान अब काटने लायक हो गया है।

अचानक नजर पड़ी। जहां नदी धाराओं में बंटती है, वहां...

सब कुछ नष्ट कर दिया है। कल काक्कपुला थी। सूअर खाते हैं तो खाते रहें। काक्कपुला ही प्रमुख हैं। सुबह तक खाते रहे होंगे। शायद मेरी आहट पाकर ही भागे हैं।

ब्रह्मगिरि का चेहरा काला ही पड़ा रहा। बर्फ से ढकी, आलस में पड़ी प्रकृति।

सुन्न पड़ गई हथेलियों को परस्पर रगड़ा। पानी में पांव रखते ही बाहर खींच लिया जैसे आग में रखा हो।

सर्दी! जला देने वाली, सुन्न कर देने वाली सर्दी। ऐंठन सिर तक चढ़ गई।

नदी के पानी में और किनारे पर बिखरे पड़े फिसलन भरे, हरी काई चढ़े पत्थर, नदी की थपथपाहट से चिकनी हो गई शिलाएं।

इन शिलाओं को क्रम से रखकर पानी रोक दें तो ऊपर के खेत से फसल ले सकते हैं। बांध से मोड़े गए पानी को नीचे पनकुट्टी तक पहुंचा सकते हैं।

नदी के उस पार पाला (एक वृक्ष, मानते हैं कि आत्माएं इस पर निवास करती हैं) के पेड़ के नीचे पहुंचा जहां भगवती विराजमान हैं। सिल के लोढ़े जैसे छोटे पत्थर के रूप में भगवती की मूर्ति किसी जंगली चूहे ने गिरा दी है। उसे ठीक से खड़ा किया।

सबसे पहले गोपालन नाई चादर ओढ़े सोता मिलेगा। चुंडली से मिल लें। अरवनाषिकुन्न की तरफ तो चार गाड़ी भरकर धान मिलना चाहिए था। कच्ची मिट्टी। काली-काली कच्ची मिट्टी।

ब्रह्मगिरि से बहकर आती मिट्टी।

अब डेढ़ गाड़ी धान भी मिलना मुश्किल। बीज और वल्ली नष्ट हो गए। परिश्रम भी। दूर के अरिपू के जंगल को काट-छांट खाली कर लें तो सब्जी बो सकता है।

एक पंथ दो काज।

काक्कपुला समाप्त नहीं हुई। ढोल की थकी आवाजें टीलों को पार कर यहां पहुंच रही हैं। मल्लन को भी ढूंढ लूं। मानंतवाडी जाने के लिए उससे अच्छा साथी नहीं। पुला खत्म होने के बाद आसामी लोग सब तरफ जाएंगे। खेती का काम न होने वाले दिन। मंत्र वाले बर्तन में स्याही भर चेहरा तलाशें तो भी पाना मुश्किल है।

सेयतु की कही बात याद आई— 'झाड़ी-झुरमुट पार कर वे लोग कहीं मछली पकड़ने या सैर करने के लिए तृश्शिलेरी जाएंगे। ढूंढने पर फिर कहीं भी नहीं मिलेंगे।'

चुंडली को कह देना होगा। पर जमीन खाली करने को कैसे कहूं? सेयतु तो कहता था कि तुम्हें कहने की भी जरूरत नहीं। हल लेकर जोत लो। एक बार भी उधर नजर डाले बिना झोंपड़ी में जा बैठेगा।

एक दूसरा आदमी वहां खेती करता है। अपनी होने पर भी क्या खाली करवाना ठीक होगा?

कोहरे की चादर ने टीलों को ढंक रखा था। सफेद धुएं की एक दीवार सामने से खिसक रही है। आकाश को छूती दीवार। उधर का कुछ दिखता नहीं। ठीक सामने ओस की बूंदों से सजी झाड़ियों का झुरमुट। जंगल के बीच से निकल जाती सड़क।

कोहरे के पर्दे के पार से आता थके ढोलों का रुंधा नाद। थकी सीटियां रुंधे गले से बज रही हैं। घुंघरुओं की मर्मर।

होय-होय—होय—पैरों की ताल और गाने की आवाज कोहरे के पर्दे से क्रमपूर्वक आ रही है।

चलते-चलते रास्ते से हट जाता कोहरा।

गीली सड़क फिसलन से भर गई है। घास भरी भूमि पर जोर से पैर रखा। झाड़ियों से निकलते जंगली मुर्गे दूर उड़कर छिप गए।

ठीक बाईं ओर हिरन के रोने की आवाज।

नूपुरों की छन-छन, ढोल की थाप, सीटियों की आवाज थोड़ी और तेज हो गई। पर नींद और थकावट का आलस्य अभी भी झलक उठता है।

दबी बातचीत के स्वर।

दृढ़ आवाज में गाए जाते मचान गीत।

कुछ दिखाई नहीं पड़ता। चारों ओर कोहरे का पर्दा। अपने देश में घास की चटाई के पर्दे के पीछे अग्नि-कावटी[1] लेकर चलने की याद आई। मेरे सिर पर भी एक अग्नि-कावटी

---

1. कुछ मंदिरों की एक प्रकार की पूजा जिसमें भक्त अपने कंधे पर एक लकड़ी में हवन-सामग्री लेकर चलते हैं।

है। एक तपस्या ही कर रहा हूं। पर किसके लिए? जिसका किसी से कोई लेना-देना नहीं था और जिससे मां के मरने के बाद मान लिया था कि अब कुछ भी नहीं बचा है, वह किसलिए यह तपस्या कर रहा है?

दामू वारयर सोचता है कि घास की चटाई बुनने से परे कुछ नहीं। सावित्री वारस्यार खुद को अनाथ मानती है। कीचड़ में उगे बीजों की तरह भीगकर जीर्ण हुए-से कुछ लोग– मां के पापों को धोने पापनाशिनी की खोज में यहां आया था, मेरा यह जीवन – जैसा सोचा था उसके विपरीत समाप्त नहीं हुआ। देखें, कहां इसकी समाप्ति होगी।

अचानक झोंपड़ियां सामने आ गई। पीली-पीली धूप की लंबी बांहों ने कोहरे के पर्दे को चारों ओर से खींचकर छोटा कर दिया है। //

झोंपड़ियों के बरामदों में सोए पड़े लोगों के खर्राटे।

थके पैरों में, थके भुनभुनाते-से घुंघरू बांधकर नाचते पुरुष। नींद से घिरे मनुष्य मचान के चारों ओर ऐसे नाच रहे हैं जैसे कोई सपना हो। ऊपर उठे हाथों में पेड़ों की मुरझाई डालियां हिलती हैं। मंद हवा में मचान पर बाकी रह गई शाखाओं से भुनभुनाने का स्वर फूटता है।

अधसोई स्थिति में भी ढोल और सीटियों की ताल के अनुसार हो रहे मचान पर के नाच को देखकर केले के झुंड की ओट में खड़ा रहा। खड़े-खड़े चुंडली के लिए नजर दौड़ाई। मचान-नृत्य के लिए प्रसिद्ध मल्लन भी नहीं दिखा।

एक पुराने बोरे को कोरंब (नारियल के पत्तों से बनाया जाने वाला हैट) की तरह सिर पर डालकर मचान के खंभे से सटा बैठा चुंडली गा रहा है। नींद की थकावट में हिलता-डुलता शरीर...।

दो लड़कियां झोंपड़ी के अंदर से घड़े लेकर बाहर आईं। वेल्लिला के फूल की तरह पीले पड़े चेहरे। गालों पर काजल फैला हुआ।

गोरे तम्पुरान को केले के नीचे खड़े देख मारा चकित रह गई। एक खूंटी की तरह वह खड़ी रही। चिल्लाने के लिए मुंह जैसे खुला। आंखें निश्चल देखती रहीं।

राघवन नायर वहां से हटकर चेम्मक्कारन के आंगन में चला गया। मचान के खंभों की खूंटियों में दीये जलने के बाद पड़े काले धब्बे। ओस से भीगे भूसे के तिनके आंगन में बिखरे पड़े।

अचानक नाच रुक गया। ढोल चुप हो गए।

घुंघरू स्तब्ध हो गए।

गोरा तम्पुरान।

वे लोग बिना कुछ बोले, चकित, कुतूहल भरे, थके चेहरों के साथ उठ खड़े हुए और आंख फाड़-फाड़कर देखते रहे।

उन लोगों के बीच राघवन नायर को एक अजीब जीव जैसे खड़े होने में संकोच हुआ।

'गोरा चुंडली कहां है?'

मचान के खंभे से सटा ऊंघता चुंडली, कहीं छिप गया था।

सबने एक-दूसरे की ओर देखा।

'चुंडली...चुंडली?'

उत्तेजित-सा, लाल-लाल आंखें रगड़ता, कोयले और गोबर लगे कपड़ों में चुंडली सामने आया। उसके बालों और कुरते पर भूसे के तिनके बिखरे हुए थे।

'पुषकुनि के धान का क्या हुआ, पता है?'

बात समझे बिना वह चेहरे की ओर देखता रहा। लाल आंखें कई बार बंद कीं, खोलीं।

'अब धान काटने की जरूरत नहीं। सूअरों ने सब साफ कर दिया है।'

कुछ भी बोले बिना वह उतरकर भागा।

भीड़ में सहसा जग उठी मधुमक्खियों की भिनभिनाहट-सी फूटी। टीले से उतरकर बहुत मुश्किल से राघवन नायर उसे पकड़ पाया।

कुचले पड़े खेतों को देखकर वह ऐसे खड़ा रहा जैसे शरीर का स्पंदन ही रुक गया हो। आग में जले कागभगोड़े की तरह उसका चेहरा काला पड़ गया।

'आग जलाकर आया था।' कहता है कि शाम को एक-दो कोनों में लकड़ी जलाकर रख गया था। सोचा था, आग बुझने से पहले वे नहीं आएंगे। अलाव की सफेद राख उसे देखकर हंस पड़ी। आंखें भीग गईं। खाली खेत में कहीं-कहीं इक्का-दुक्का कागभगोड़े सिर उठाए खड़े रहे।

'आजकल में बाकी जो कुछ बचा है, काट ले। अब उन्हें और मत खिला।'

बिना कुछ बोले उसने सिर हिलाया।

अब जो कहना है—कह देना चाहिए। एक बेचैनी भरी चुप्पी — सांप-सी शरीर छूकर निकल जाती है। भीतर कहीं कुछ जाग उठता है। सांप की तड़पन की तरह एक लहर-सी उठनी है।

'वहां खलिहान में दाने-पानी का कोई सहारा नहीं! हिस्सेदारी के लिए कितने बीज और वल्ली खरीदी है तूने?'

बिना कुछ समझे आंख फाड़कर वह देखता रहा।

'अगली फसल खलिहान की होगी। खेत खाली कर दे।'

वह चकित रह गया। अविश्वास भरी आंखों से घूरता रहा। तम्पुरान को खेत ही खाली कराना है तो इतना ब्योरा किसलिए? पूंकुन्नम मना का खेत मानी ने हिस्सेदारी पर लिया था। एक फसल काट पाया। दूसरी के लिए हल लेकर जुताई करने पहुंचा तो मना के आसामी को खेत जोतते पाया। यह मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? सीधे जाकर जुताई करना काफी

है न?

'यह जमीन अंबलकुन्न की सीमा में आती है न?'

मन में शंका हुई।

ऐसे ही कह रहे हैं।

भाई लोग कहते थे कि यहां के तम्पुरानों का विश्वास मत करना, सच ही था? छोटे भाई करियन ने उसी दिन बोला था कि कोई आसामी यहां बहुत दिन तक खेत का मालिक नहीं रह सकता। वह गुलामी के लिए ही बना है।

उसने जरा हिलकर राघवन नायर की ओर देखा। राघवन नायर को लगा जैसे वह दृष्टि एक उल्का की तरह उड़कर भीतर कहीं आ गिरी हो।

पुष्कुनि साफ करवाके फिर वापस ले लेने की चाल थी यह। इसीलिए मुझे बीज और वल्ली दिया था। जब देखा कि जमीन अच्छी है तब वापस मांगने लगे। पालने के लिए दी गाय को प्रसव के बाद वापस ले लेते हैं, ठीक वैसे ही।

बिना कुछ बोले चुंडली मुड़कर चल दिया। टूटकर बिखरे पड़े खेत में मिट्टी के टीलों-सा उसका मन हो रहा था। बिना सिर उठाए, छोटी मेंड़ की घास और केकड़ों के छेद गिनता-सा वह चला गया।

'अब?' राघवन नायर ने सोचा।

हे ईश्वर! क्या-क्या देखना-सुनना अभी बाकी है!

अपना मन भी घाट पर पड़ी शिलाओं में से एक जैसा पक्का हो जाना चाहिए।

घाट के किनारे से चला। घाट को छोड़, भीतर तक विस्तार से खेत फैले पड़े हैं। लगता है, इस प्रदेश के सबसे चौड़े खेत यही हैं। कुछ दूर पर जंगल के एक ओर नदी के घाट से कुछ परे गोपालन को दी गई भूमि है। हिस्सेदारी पर लिए कई साल बीत गए। बंटाई में धान का एक दाना भी नहीं दिया है।

पके धान में अभी बाली नहीं आई। गोपालन को मचान बांधते दूर से ही देख लिया।

चौथे खंभे के लिए एक और बांस लाने जंगल जा रहा था। मुड़कर खड़ा हो गया।

'अभी रखवाली शुरू नहीं की?'

यहां आने के बाद मैं आड़े-तिरछे चलने लगा हूं, राघवन नायर ने सोचा। सीधे क्यों नहीं कह देता कि खेत खाली कर दे? वारियम के लिए और कोई चारा नहीं।

'इस जमीन पर कितने सालों से खेती कर रहा है, गोपालन?'

'तीन।'

'बटाई का हिस्सा दिया?'

उसका चेहरा काला पड़ गया।

'तुझे जो बीज और वल्ली दी गई थी, वापस की?'

मौन।

'ऐसा मान लें कि फसल अच्छी नहीं होती।'

ऐसा कैसे मान लें? कोल्लीमूला की इस भूमि पर बरसात में चारों ओर के जंगल से उपजाऊ मिट्टी लिए काला जल आकर भर जाता है। कीचड़ गहरा है तो क्या? इतनी उपजाऊ मिट्टी—फसल अच्छी नहीं?

'अगले साल, गोपालन, हल मत जोतना। तुझे यह बताने को मुझे कहा गया है।'

उसने सिर हिलाया।

'यहां इस जमीन में धान पकने में देर लगती है?'

'जी हां।'

बिना किसी भाव के उसने मचान बनाने का काम जारी रखा। चौथा खंभा उठा लाया। मचान के ऊपर भूस बिछाई। उसके ओठों के कोनों में असहायता की रेखाएं चमक उठीं।

'मैं जा रहा हूं।' लगा जैसे उसने सुना ही नहीं। मचान के ऊपर और अंदर वह भूसा बिछाने के काम में लगा रहा।

यहां की मिट्टी की खासियत। पश्चिम के पहाड़ों को पारकर, हाथी वाले घने जंगल और पुलयनकोल्ली पारकर यहां पहुंचने वाले लोगों को यहां की मिट्टी अपना गुलाम बना लेती है।

नाई, धोबी, सुनार, लोहार सब यहां खेती करते हैं। मैं भी इस मिट्टी के बस में हो गया। नहीं तो उन लोगों की ही तरह खाली हाथ यहां पहुंचकर कारिंदागिरी का यह काम क्यों सिर पर उठा लिया? चार-पांच बच्चों को पढ़ाकर मना से भोजन पाते हुए दिन बिता ही सकता था।

यहां की संपत्ति मिट्टी है। सोना उगलने वाली काली मिट्टी। घने जंगलों के सूखे पत्ते बरसात में बहकर, इसमें जमकर, इसे और उपजाऊ बना देते हैं। इस मिट्टी को वश में करके ही घाटियों से आने वाले लोग जी सकते हैं।

महीने में खाली पांच या आठ बार जमींदारों के सिर के बाल काटकर नाई कैसे जिएं? कभी एक हल या फावड़ा बनाकर लोहार क्या करेगा?

जिंदा रह पाने के लिए मिट्टी के साथ संघर्ष करते लोग। खलिहान की औरतें—झाड़ू लगाती, धान पीसती, चावल पकाती, इतने कामों के बीच गहना बनवाने के सपने को मन के भीतर ही छिपा लेती हैं। विस्मृति की धूल लगे बिना वह स्वप्न वहां हमेशा चमकता रहता है।

पुराने पड़ गए सिक्कों से पुलय-स्त्रियों को कभी माला बनाकर देने से मिलने वाली चवन्नी के बल पर बापू सुनार कैसे जिए?

बदरंग कपड़े जिनसे खेत की कीचड़ का दाग कभी नहीं छूटता, धोने के लिए कोई

धोबी की खोज में नहीं जाता।

गोपालन नाई, बापू सुनार, कृष्णन लोहार, राम्नन—सभी को यहां जीना है। जी भी रहे हैं। सब लोग उसी काली मिट्टी की शरण में जाते हैं। पर जंगल के सर्वाधिकार रखने वाले सूअर सबको हरा देते हैं। नौकरी छोड़के आए वे लोग फिर उसी की खोज में भटकते हैं। बहुत कुछ भटकने के बाद कुछ लोग जैसे आए थे, वैसे ही लौट जाते हैं। वहां उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं — गरीबी, बेकारी, जगह की तंगी, कृतघ्नता और परिहास।

अंत में बचते हैं मंदिर के आसरे रहने वाले लोग और ऊंची जाति वाले जो न इस जमीन को छोड़ पाते और न ही अपना पाते हैं। एक ही खूंटे में बंधे कई बैलों की तरह एक-दूसरे से उलझकर भटकते रहते हैं। इस मिट्टी की आकर्षण शक्ति अनोखी ही है।

8

कैसी बारिश है! संध्या से सुबह तक निरंतर झड़ी लगी रही। काले-काले बादल मस्त होकर आकाश में तैर चले। टीलों, पहाड़ों और खेतों के मुंह काले रंग से रंग गए।

ब्रह्मगिरि के शिखर पर इधर-उधर जो वृक्ष रखवाली के रूप में खड़े थे, उन्होंने राक्षसों का रूप धारण कर लिया। हवा के बांध से फूट पड़े। उसने बादलों को बिखेर दिया। फेंकी गई बालू की तरह बर्फ के टुकड़े सब ओर बिखर गए।

तरबूज और कद्दू की लताएं जिनमें फूल आ गए थे पूरी-की-पूरी तहस-नहस हो गई।

'अब तीन महीने तक कोई सब्जी नहीं।' वारस्यार रसोई से बड़बडाई।

वयनाड की यही हालत है। जब तक सब्जियों में फल आने शुरू होंगे, बारिश होगी, ओले पड़ेंगे और सब कुछ मिट्टी में मिल जाएगा। नहीं तो तेज हवा में। एक भी केले का पेड़ नहीं बचेगा।

जंगल के हृदय से बहकर आता उपजाऊ काला पानी अहातों से, खेतों से होकर बावली में पहुंचता है और बहकर देश से ही निकल जाता है।

उपजाऊ काला पानी। कीमती पानी, जिससे यहां का धान पकना था।

बिना जुते, छोड़ दिए गए खेतों ने स्याही की तरह काला पानी क्षण भर के लिए रुकता है। किसानों को मोहित करता है। फिर पकड़ में आए बिना, एक गर्वीली युवती की-सी चुस्ती से, खेतों की मेड़ों की दरारों से बहकर बावली के प्रवाह में अदृश्य हो जाता है।

सुबह बारिश थम गई। पेड़-पौधे और भूमि नहा-धोकर पवित्र हो गए।

बरामदे में बैठा राघवन नायर सोच रहा था।

सांसों से भी ज्यादा कीमती उपजाऊ जल पश्चिमी घाटों को पारकर पूरब के समतल मैदानों में पहुंच जाता है। सूखी बची मिट्टी में यहां के किसान खेती करते हैं। बह गई संपदा के अभाव को पूरा करने के लिए जंगल से हरे पत्ते तोड़कर जमीन पर डालते हैं। एक बारिश की झड़ी में ही जंगल से आती पानी की वेगवती धारा खेतों से सब कुछ बहा ले जाती है। फिर सही स्थिति।

क्या इसका कोई हल नहीं?

जुताई के लिए हल नहीं, वल्ली देने के लिए धान नहीं, बोने के लिए बीज नहीं— जब तक किसान प्रतीक्षा करते हैं, तब तक सारी खाद आंखों के सामने से बरसते पानी में बहकर किसी अज्ञात समतल में पहुंच जाती है।

नम खेतों पर दृष्टि डाल, राघवन नायर इधर-उधर घूमने लगा।

जुताई के लिए बैल नहीं है। कई बैलों के बिना काम नहीं चलने वाला है। इस बारिश पर विश्वास नहीं किया जा सकता। देखने वाले को व्यर्थ मोहित कर चली जाएगी। फिर कह नहीं सकते कि कब आएगी। अच्छी बारिश हुई है। मिट्टी खूब नम हो गई है। अभी ही जुताई कर लेनी है।

बरामदे में रखे कांसे के गिलास में कॉफी ठंडी पड़ गई। एक ही घूंट में खत्म करके रसोई की ओर देखकर कहा :

'मानंतवाड़ी जाना है।'

'अब क्यों —?'

'बैल नहीं खरीदने है?'

'मामाजी नहीं दे देंगे?'

'देंगे क्या?'

इस प्रश्न से वे कुंठित हुई। समय पर जुताई होनी है तो बैलों की जरूरत तो पड़ेगी ही। कम से कम एक जोड़ा तो चाहिए ही। तृश्शिलेरी में काम पूरा होने के बाद ही मामाजी से बैल मिल सकेंगे।

पर कब तक?

मामाजी की परछाई देखे भी कितने दिन हो गए। यहां की बातें ऐसी ही हैं। दूसरों का धान तैयार हो जाएगा तब यहां कटाई शुरू होगी। मकरम महीने का काम मीनम में पूरा होता है।

कंजी नहीं है, पुलया लड़कों से कटहल मंगाकर, पकाकर बच्चों को परोसने वाले उन दिनों को वारस्यार ने डरकर याद किया।

सब कुछ राघवन नायर के हाथों सौंप दिया। उसके बाद केवल एक ही बार मामाजी आए हैं।

मकरम की कटाई हो चुकी। धान से दाना निकाला जा चुका है। केवल बीज बाकी रह गया है। खर्च के लिए जरूरी धान सूद पर लिया था। एक पर दो। उसे भी लौटाना है। पुंजा की खेती नहीं हुई। घास-पात से भरे खेत पत्थर से कड़े हो उठे हैं। बारिश का पानी बह जाता है। वैसे पड़े रहने देने से काम नहीं चलेगा। राघवन नायर की अच्छी देख-रेख को देखकर ही सेयतु ने सूद पर धान दिया है।

'बैलों को खरीदने के लिए पैसा भी तो चाहिए?'

'लाऊंगा ही किसी तरह।'

'कहां से? प्रश्न अनुत्तरित रह गया। धान जो बेचा था, उसका पैसा गोपालन नाई के पास होगा। जहां पर वह खेती करता था, वहीं पर अगली फसल के लिए उससे ही पैसा सूद पर ले लेना चाहिए—अगली कटाई पर एक के डेढ़ के हिसाब से।

गोपालन कृतज्ञ है।

इस मिट्टी की ममता-हीनता के बारे में उसको शिकायत नहीं। ऐसे समय जब हम उसके बारे में सोचते ही न हों, नियंत्रण से छूट जाती है।

गोपालन सेयतु की दुकान में बैठकर ताश खेल रहा है।

असहमति बिलकुल नहीं। घर जाकर पैसा देते समय बोला :

'मानंतवाडी जाते समय जान की दुकान से एक उस्तरा और उस्तरा तेज करने वाला एक पत्थर खरीद लाना।'

'अच्छा।'

आश्चर्य और आदर से भरी आंखों से गोपालन को देखा। प्रसन्न मुख। वह दुकान के बरामदे में बिछी चटाई पर आ बैठा और फिर से खेलना शुरू कर दिया।

वारस्यार ने पूछा :

'अकेले ही जाएंगे?'

'आया भी तो अकेले था।'

कहां ब्रह्मगिरि के उस पार से, कुटक की सीमा पार कर, पहाड़ों को लांघ कर, हाथी भरे जंगलों से, नरिनिरङ्गि पहाड़ पार करके पैदल आया हुआ मैं। और ये मुझसे पूछ रही हैं!

अकेले ही मानंतवाडी जा सकने का धीरज रखने वाले इस देश में नहीं। एक साथ मंडली बनाकर जाएंगे। एक ही आदमी अकेले जाने को विवश है— नाणु डाकिया।

दो-तीन दिन की डाक एक साथ लाता है। एक-दो पोस्टकार्ड थमाने के लिए रोज-रोज हाथियों वाला जंगल नहीं पार किया जा सकता। किसी को शिकायत भी नहीं।

तीन दिन के अखबार एक साथ आने पर पहले आश्चर्य होता था। यहां दिनों के

बीच कोई सीमा नहीं। बहती बावली की तरह, हमेशा चलती ठंडी हवा की तरह, बीर-बहूटियों के संगीत की तरह अविराम गुजरते दिन।

पहले तो नाणु पर क्रोध आया था। फिर पुलयनकोल्ली की याद हो आई। हंसकर यही कहा था, 'तुम्हारे दर्शनों के लिए तपस्या करनी पड़ती है।'

पसीने से तर-ब-तर पहुंचकर कंधे पर पड़े अंगोछे से धीरे-धीरे हाथ-मुंह और पैर पोंछ कर सेयतु की दुकान में बेंच पर बैठ जाता है। बिना मांगे ही सामने आई चाय एक घूंट में पी लेगा। फिर पुलयनकोल्ली से वापस जाने की तैयारी। कुछ चिवड़ा, दो-तीन केले। फिर से चाय। पूवल्ली मना और राघवन नायर के लिए आए अखबारों को चारों ओर से घेरने वाले लोग फिर नाणु को देखते भी नहीं। दुकान में बांस की टटियों पर लगी डाक-पेटी खोल तीन दिन की डाक वह कब निकालता है, किसी को पता नहीं चलता। जिनको पोस्टकार्ड या अंतर्देशीय चाहिए, उन्हें देकर वह गायब हो जाता है...

सोचा था कि नाणु के साथ मानंतवाडी जाऊंगा। लेकिन...

जब तक गोपालन पैसा लेकर आया, नाणु जा चुका था। अब फिर वह कब आएगा? तब तक बिना बैलों के नहीं रह सकते। अब अकेले नहीं बनता। जीवन में बने नए संबंधों ने एक मृत्यु-भय पैदा कर दिया है। जंगली हाथी ने मार दिया तो भी शिनाख्त करने वाले तो चाहिए न?

कोई साथी हो तो बात करते हुए सफर पूरा हो जाएगा। समय भी कट जाएगा। चलने का कष्ट भी न पता चलेगा। बैलों को खरीद लें तो बिना किसी की सहायता के यहां पहुंच भी नहीं सकते।

कर्म के बंधन और भी दृढ़ हो गए हैं। आबादी से दूर इस जेल के कैदियों में से मैं भी एक हूं, जहां रखवाली का काम घने जंगल और पहाड़ों की चोटियां करती हैं। जेल, जिसको बंद करने का द्वार नहीं। फिर भी यहां आने वालों को यहीं बांध देने और कभी बाहर न जाने देने की एक मंत्रशक्ति इस मिट्टी में है। शायद दूसरों की तरह मैं भी यहां का एक स्थाई कैदी बन गया।

साथ के लिए मल्लन काफी है। कहां जाकर उसे ढूंढूं? काक्कपुला में जागते रहने से अब सो रहा हो तो झोंपड़ी में ही होगा। चार आदमियों के बराबर यह एक जंगली हाथी-मल्लन है। किसने यह नाम उसे दिया? मर गए मूसत तम्पुरान ने?

दूसरों की तरह अभी इसके खून में जहर नहीं घुसा है। आलस का जहर! पीढ़ियों के बीतने के साथ कम होने के बजाए और बढ़ता जहर। एक कीचड़ से भरे बंद तालाब-सा रुका हुआ जीवन। यहां फूटने वाले सभी अंकुर आलस के जहर से मुरझा जाते हैं, टूट जाते हैं।

मंदिर के पूरब की ओर की सीढ़ियां उतरा।

वारस्यार की आंखों में से एक संदेह झांकता है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते।

मानंतवाड़ी पहुंच गया तो—

क्या उसे शक है कि देश का मुंह फिर देखने पर , घाटियों में रहने वालों की गंध मिलने पर, मैं सब कुछ छोड़ जैसे आया था वैसे ही चला जाऊंगा? या फिर पुलयनकोल्ली में हाथी मार डालेगा मुझे?'

गीली हवा के साथ-साथ विचार बहते हैं। अधूरी विष्णुपाद शिला के पास पहुंचने पर देखा कि सुभद्रा पीछे से बुला रही है। हाथ में उसके केले के पत्ते की एक पुड़िया है। बाएं पैर जिसमें कुछ नुक्स है, उसे खींचते जल्दी-जल्दी उतरकर आ रही है।

पलट पड़ा। दोशा। रास्ते के लिए उन्होंने बना दिया है। जरूरत नहीं, फिर भी रख लें।

झोंपड़ी में खाली मल्लन है। उसकी अव्वा नई लाल साड़ी पहने, पानी भरा घड़ा लिए नदी से आ रही है। काक्कपुला के बाद फिर से घर से निकलना शुरू किया है तो तरुणी लगने लगी है।

मल्लन की झोंपड़ी के सामने जो ककड़ी की बेल लगी थी, अब फूल उठी है। पिछले दिनों ओले पड़ने से सब कुछ नष्ट हो गया। एक छोटा अनपका फल चबाते हुए मल्लन आंगन में खड़ा है।

यह मिल जाए और एक जोड़ी बैल हों तो वारस्यार और उनके बच्चों को भूखे नहीं रहना पड़ेगा।

मानंतवाडी जाने की खबर सुन मल्लन खुशी से भर गया। बच्चों की तरह हंस दिया। एक और ककड़ी का फल तोड़ मुंह में डाला और भीतर जाकर एक अंगोछा कंधे पर डाल आया।

बाईस मील का सफर। हाथी भरे जंगल। टीले, खेत।

चार-पांच लोगों की मंडली बनाए बिना कोई ऐसे नहीं जाता। पर साथ में यह हाथी—मल्लन है। चार पुलया लोगों के बराबर। वे लोग चार नहीं जितने भी हों, इसके जैसा तो धैर्य नहीं होगा।

'हाथ और मुंह जरा धो लें।'

तम्पुरान की बात सुनकर भी वह नाले के ठंडे पानी में उतरने में संकोच कर रहा था। फिर उतरा। बदन धोकर पोंछा। उसके सामने से निकलने पर मिट्टी की गंध आई। जंगल की गंध।

चट्टानों के बीच से सिर निकाले एक पौधे की ओर इशारा करके प्रसन्न भाव से वह बोला, 'कितना बढ़िया चीरा (एक तरह का साग)!'

'हां, वापस आने के बाद तोड़ेंगे।'

उसे पता है कि वापस आने तक वह जगह भी पहचान में नहीं आएगी। वह चुपचाप चलने लगा।

सेयतु की दुकान से कुछ सूखा तंबाकू, मुरझाए पान के पत्ते और थोड़ी सूखी सुपारी खरीदी। सुभद्रा की दी पुड़िया के साथ अब एक और हो गई।

मल्लन को कुछ खाने को देकर एक लंबी यात्रा के लिए तैयार करना है। कई दिनों का खाना एक साथ ही हड़प लेने वाले और फिर लगातार भूखे रह सकने वाले इस जवान को अपने वश में करना ही होगा।

कुछ देर और उसके साथ चलने पर उसके शरीर से निकलती वह विशेष मिट्‌टी की गंध परिचित-सी हो गई।

पूरे इलाके का एकमात्र होटल। कई तरह की चीजों की दुकान। फूस का छप्पर डली एक झोंपड़ी। तीन ओर बांस की टटिया, एक ओर टटिया से बांट दिया गया एक छोटा-सा कमरा। उस कमरे में खाली सेयतु ही जा सकता है। सेयतु के पास जो कुछ है, वहां रखा है। लोगों का यकीन है कि बारह साल की उम्र में तृश्शिलेरी से यहां आए सेयूतु के पास बहुत पैसा है।

लोग कहते हैं कि बहुत साल बीत जाने पर भी सेयतु की मैली पड़ी लुंगी, गंदी पगड़ी और पट्‌टीदार कमीज में कोई अंतर नहीं पड़ा है। कुछ भी हो, सेयतु तिरुनेल्लि के जमींदार घरानों के युवकों की न तो सुबह होगी और न ही रात।

एक काली चाय? सिगरेट चाहिए? ताश की गड्‌डी की जरूरत है? गरम मिर्च के झोल के साथ पुट्‌ट खाना है?— सेयतु की ही शरण। सेयतु जो भी दाम मांगे, कोई विवाद नहीं करता। ब्रह्मगिरि के पहाड़ों से रेंगते आते कोहरे से, त्वचा सुर्ख कर देने वाली ठंड से या कभी-कभी बंध्या-सी लगती जंगल की धरती से जैसे कोई शिकायत नहीं करता, वैसे ही सेयतु से भी नहीं।

सुबह का समय होने से दुकान में काली चाय और बिना नारियल का बना पुट्‌ट मौजूद है।

मल्लन को जो भी चाहिए, देने को बोल दिया।

'लगता है, तुम लोग तैयारी से निकले हो।'—सेयतु।

'हां, इरादा करके ही।'

पुट्‌ट के टुकड़े और एल्मुनियम का मग भरके चाय। क्षण भर में सब गायब। मल्लन का चेहरा अप्रसन्न बना रहा, जैसे कुछ खाया ही नहीं। अप्रसन्न मन। कपड़े ठीक करके उठा। बरतन धोकर औंधा रख, मैले-गंदे कपड़ों में हाथ पोंछ लिए।

उसकी आंखें और मन तंबाकू की पुड़िया के चारों ओर घूमते रहे।

तंबाकू का एक टुकड़ा काट दिया। सुपारी का एक टुकड़ा और पान का पत्ता। अभी

बाईस मील चलना है। पुड़िया उसे देने पर पांच मिनट के अंदर पूरी खत्म हो जाएगी। ये सब लोग ऐसे ही हैं। जंगल के बीच खेल-कूदकर पलने वाले, जो कुछ मिल जाए वो खाकर थकने पर कहीं भी पड़कर सो लेने वाले और जब मन करे तभी उठने वाले— बड़े शिशु।

जैसे सोचा था, उस तरह यात्रा अकेले नहीं। सेयतु का छोटा भाई मोयतीन तैयार होकर आया।

एक कनस्तर शहद। एक ढेर शकरकंदी। एक रुपए की एक बोतल। कभी अठन्नी पर, या तंगी के दिनों में एक गिलास चाय और तंबाकू के एक टुकड़े के लिए जो शहद मिलता है, उसे सेयतु यत्नपूर्वक संचित करता है।

रुपया, अठन्नी, चाय और तंबाकू के टुकड़े चार-चार रुपए बनकर मानंतवाडी से तिरुनेल्लि वापस लौटते हैं। एक बार जाने का ही खर्च है। शकरकंदी भी पैसा बनकर लौटती है। माल ढोने के लिए मोयतीन ने कुरुमकालन को मदद के लिए बुलाया। कालन को मानंतवाडी जाना पसंद है। होटल में मछली के साथ भोजन, दूध की चाय और एक बीड़ी। बस इतना ही भत्ता चाहिए।

अब जाने वाले चार हो गए।

मेड़ से होकर चले जो बहुत चौड़ी नहीं थी। प्रभात से ही हंसने लगी थी प्रकृति। जल्दी-जल्दी कदम रखे।

पुलयनकोल्ली की ऊंची सीमाओं को घेरे पुरानी फारेस्ट रोड के पास पहुंचकर सभी रुके। लंबी सांसें। यह सफर आखिरी भी साबित हो सकता है। कोल्ली की घनी ठंड में अकेला हाथी मदमत्त घूम रहा होगा।

जमीन पर गिरी पड़ी एक डाली पर बैठ गए। आराम से पान खाए। मन भरकर हंसा। कुछ बातें कीं।

'आजकल सोने का-सा दाम है सुपारी का।'

'लगता है, मना की जमीन गोपालन मूस ने अपने हाथों में ले ली।'

'शिकारी जोसेफ को सांप ने डस लिया।'

'कब?'

'कल। जंगली भैंसा ढूंढने गया था।'

'कहां है?'

'वेल्लरोडी में कुरिच्च्यन की झोंपड़ी में पड़ा है।'

'सुनते हैं, इस बार बहुत हाथी निकल पड़े हैं।'

भीतर के भय की आग से धुआं बाहर आ रहा है। बातों का आपस में कोई संबंध नहीं। शब्दों की छायाओं में छिपा खड़ा है जंगली हाथी का रूप। अकेला हाथी।

वह कभी भी उतरकर आ सकता है। किसी भी क्षण पुलयनकोल्ली के काले अंतरिक्ष से, घनी ठंड में से, अरारोट की झाड़ियों के पार से, बांस के वन के मध्य से, नाले के किनारे से वह प्रकट हो जाएगा।

बातचीत थम गई। कोल्ली की ओर जाती पगडंडी पर–

आगे राघवन नायर। पीछे मोयतीन। फिर मल्लन। अंत में कुरुमकालन। कुरुमन को हाथी से डर नहीं लगता, ऐसा कोई ख्याल नहीं उसका। राघवन नायर के पीछे-पीछे चलने का मन हुआ। लेकिन एक ही चाल में चलने के बीच बहुत कोशिश करने पर भी वह जगह नहीं मिली।

राघवन नायर ने सोचा, इस रास्ते से पहले कभी नहीं आए। सांस रोके-रोके इस तरह कब तक चलेंगे? इसका कोई अंत नहीं।

दाएं-बाएं अरारोट की घनी झाड़ियां। पिशाच की तरह पीले, हंसते पीले रंग के फूल। उधर किले की तरह खड़ा बांस का घना जंगल।

मध्यभाग में कोल्ली की मुख्य धमनी-सा बनकर बहता जंगली नाला। यह नाला पश्चिम की निगूढ़ता से झट प्रत्यक्ष हो जाता है और पूरब के कोहरे में फिर झट से गायब भी हो जाता है।

जोंकों की अंतहीन मर्मर ध्वनि। हजारों लट्टुओं के एक साथ चक्कर खाने की-सी आवाज। जैसे डर की काली छायाएं ओढ़े, चारों ओर अंधेरे का पर्दा लटकाए, एक बहुत बड़े मचान के भीतर घुस आए हों। मचान की अंतहीन विजनता। भयानक चुप्पी। अज्ञात कोनों से निकलकर, एक साथ मिलकर, तालक्रम में गूंज बनकर वन की सांस सा बन जाता है जोंकों का रुदन। क्षण भर में वह विलाप ध्वनि निःशब्द श्वास में बदल जाती है।

नीचे दलदल से भरा प्रदेश।

बड़े-बड़े पेड़ एक बहुत बड़े मचान के खंभे-से लग रहे हैं। वे काले पड़कर, मोटे होकर, राक्षस जैसे दाएं-बाएं, आगे-पीछे, दूर-दूर तक जहां दृष्टि पहुंचे, अंधकार की, दलदली भूमि की विजनता की रखवाली के लिए पहरा दे रहे हैं। लगता है जैसे वे भी जिंदा हैं और ओठों को दांतों में दबाए, बिना हिले, खड़ी क्रूर आकृतियां हैं।

दलदल से सफेद-गंदे झाग उठे। पैरों तले बुलबुले पट-पटकर फूट जाते हैं।

जीवित लाशों की तरह वे चल रहे हैं।

विस्फारित आंखें, गोल-गोल होकर चारों ओर की काली शून्यता में भटक रहीं हैं। कान सतर्क है। अंधकार के बीच से कहीं से भी वह प्रकट हो सकता है।

कहीं कच्चे बांस टूटने की आवाज है क्या? लंगूर या गिलहरी जरा भी डाली हिला दें तो...।

चुप्पी। भयानकता। चलने पर दलदल में गिरी सूखी डालियां टूटती हैं। दबी आवाज सुनकर वे चौंक गए। वह अदृश्य शत्रु पीछे आ रहा है?

रास्ता घेरे ठहरा गंदा पानी। कीचड़ से बचने के लिए बीच में पड़े बांस के टुकड़े पर पैर रखा।

धम्म...।

बांस का टुकडा कीचड़ में धंस गया। घुटने तक कीचड़ में। जल्दी से पैर बाहर खींचे। पहले से भी अधिक आवाज करता हुआ बांस का वह टुकड़ा ऊपर आया। आवाज सुनकर सब चौंक पड़े। जरा-से बांस के टुकड़े से इतनी ज्यादा आवाज आ सकती है?

वह अरारोट की झाड़ियां उखाड़ रहा होगा। बांस के अंखुए तोड़कर खा रहा होगा। झरने का पानी पीकर ठंड में मदमत्त खड़ा होगा। किसी भी क्षण बाहर आ सकता है।

पुलयनकोल्ली उसका प्रिय क्रीड़ास्थल है। इस स्वर्ग में आकर उसे बेचैन करने वालों को वह छोड़ेगा नहीं।

चलते-चलते इधर का जंगल खत्म हुआ। एक छोटा-सा चढ़ाव। जितना उतर के आए वैसी चढ़ाई नहीं।

एक दबा कंपन। पहाड़ों के बीच अगाध गर्त से उठी आवाज। ऐसी गूंज जिसका उत्पत्ति-स्थान न पहचाना जा सके। उस आवाज में एक अवर्णनीय विह्वलता भरी हुई थी।

निस्तब्ध अंतरिक्ष। राघवन नायर ने पीछे मुड़कर देखा। सबका मुंह खुला, फैली आंखों में शून्यता। घनीभूत भय। उस भयानक चुप्पी में फिर से एक गर्जन सुनाई दिया।

वज्रघोष की गंभीरता। नरक की भयानकता। हां, वही। पर पास नहीं है।

कहीं उत्तर में। नरिनिरङ्गिमला की बाई ढाल पर, पुलयनकोल्ली के मोड़ के पार।

खून जमा देने वाली चुप्पी।

अविराम चहक रही जोंकें चुप हो गई।

आंखें फाड़ सब एक-दूसरे को देखते रहे। आंख हटाने में भी डर था। आधे रह गए प्राणों को किसी तरह थामकर कोल्ली पार की। लंबी सांसें कोल्ली के गीले अंतरिक्ष में भटकती रहीं।

फिर चलना शुरू किया।...

सामने एक खेत हंस रहा है। खेत के कोने से सटकर आसामियों की चार-पांच झोंपड़ियां खड़ी हैं। झोंपड़ियों के सामने किनारे पर एक खलिहान है।

रेगिस्तान में कहीं हरियाली की तरह ही उस खलिहान पर सबकी नजरें टिक गई। निर्जनता का रेगिस्तान बढ़ता जाता है।

फिर से जंगल। बीच से टूटी-फूटी सड़क। कतारों में खड़े सागवान के पेड़ों ने खूब बढ़कर दोनों ओर ऊंची दीवार-सी खड़ी कर दी है।

हाथी के मल का अंत दिखने लगा। बीच-बीच में छोटे-छोटे खेत। फिर जंगल।

कुरुमकालन के गले की नसें फड़क उठीं। ठंडी हवा, पर वह पसीने से तर है।

'जरा आराम कर लें।'

वह रुका।

पुरानी सड़क। कांटे और पत्थर बिखरे हुए। अंग्रेजों की इस्टेट की ओर यह सड़क जाती है। कभी अंग्रेज यहां घुड़सवारी करते थे। आज जंगल ने इसे निगल लिया है। अब यह सड़क हाथियों का राज-पथ बन गई है।

भय अधिक होने पर मन सुन्न पड़ जाता है।

फिर भी चलना तो है ही । जरा और आगे बढ़ने पर ही सड़क जंगली हाथी के रास्ते से मिल जाती है। कुटक से तिरुनेल्लि जाने वाला रास्ता। हाथियों के चलने से बनी सड़क। आगे चौराहा, जहां मौत छिपकर बैठी हुई है।

'ऐसा कोई नहीं जिसने इस डेढ़ किलोमीटर की दूरी में हाथी को न देखा हो।'

'अगर हमें भी दिखा तो?'

'पहले दिख जाने पर हट जाने की कोशिश करनी है।'

'वही हमें देख ले तो?'

'तो फिर हमारे देखने की जरूरत नहीं पड़ेगी।'—कुरुमकालन बोला।

'सही है।'

चौराहे पर पहुंचने से पहले जरा आराम कर लें। शायद यह आखिरी विश्राम हो...

जैसे बिजली का झटका लगा।

एक पेड़ की ऊंची, टेढ़ी जड़ पर बैठ गए। पास ही लगे शीशम पर पीठ टिकाई। आश्वस्त हुए। एक लट्ठे पर कालन ने अपना बोझ उतार दिया। आराम से पान खाए गए। बिना तंबाकू खाए, पान की पीक गले की नीचे उतार ली। प्यास। मार देने वाली प्यास।

'एक बूंद पानी के लिए...'

'कुछ गरम चाहिए तो पेरिस पहुंचना होगा।'

जंगल के बीच से जाता वह रास्ता बाईं ओर मुड़कर संकरा होते-होते वन की गहराइयों में अप्रत्यक्ष हो जाता है।

'पेरिस?'

'जगहं का नाम है अप्पप्पारा। थोड़ा और आगे चलने पर चेट्टियों के कॉफी बागानों के आरंभ में चार-पांच दुकानें मिलेंगी।'

'वही पेरिस है?'

जन-पथ से अकेले पड़ गए लोगों का फैशन के प्रति प्रेम।

मल्लन की इच्छा हुई कि पेरिस जाकर एक प्याला चाय पी जाए। उसने और मोयतीन

ने एक-दूसरे को देखा। वहां पहुंचने के लिए साढ़े चार किलोमीटर तक सड़क छोड़कर दक्षिण की ओर चलना होगा।

नहीं। मानंतवाडी पहुंचना है, आज ही लौटना है। फिर से पुलयनकोल्ली पार करना है न?

इस बात की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

नहीं चाहिए चाय। कहीं एक किनारे पहुंच जाएं, वही काफी है।

मानंतवाडी पहुंचते-पहुचते दोपहर हो गई। सुबह से चल रहे थे। जरा बैठें। सांस लेनी है। भूख मिटानी है। आराम करना है। बैलों का इंतजाम पहले ही कर लिया था, इसलिए बात आसान हो गई।

मल्लन और कुरुमकालन के शरीर से आती गंध पहले ही सूंघकर होटल वाला बोल उठा, बाहर ही बैठें।'

सुभद्रा की दी पुड़िया खोली। दोशा। ठंडा है, फिर भी अच्छा स्वाद। चटनी में भीगा हुआ दोशा खा लिया।

'उन् लोगों को जो कुछ चाहिए, दे दिया?' राघवन नायर ने पूछा।

'किनको?' होटल वाले के मुख पर आश्चर्य था।

'मल्लन और कालन को?'

'भर पेट' चावल के साथ मुंह में गए कंकड़ों को टटोलते हुए मोयतीन ने कहा, 'ईश्वर भी इनका पेट नहीं भर सकते।'

दोशे के साथ दो केले। सूखे फल। घाटियों से, धूप में गाड़ियों में लदकर आए फल। दो गिलास सोंठ का पानी पिया। पेट ज्यादा भर गया। अब चलने की सोची।

भरपेट खाना खा चुके मल्लन को बहुत उत्साह था। मुंह पर अच्छी हंसी थी। एक नहीं, दस निरिनिरङ्मिला एक साथ पार करने का धैर्य। जंगली हाथी से सामना करने की ताकत भी होती तो—

चार मुट्ठी भर तंबाकू। पांच गांठ पान, सौ सुपारियां।

खेत की पहली जुताई शुरू होने पर रोज बहुत काम रहता है। अच्छी तरह काम करना है तो आसामियों को बीच-बीच में चबाने के लिए भी देना होगा।

आसामी और जमींदार दोनों के उत्साह का स्रोत तंबाकू है।

वारस्यार मौसम के दिनों में कॉफी के छिलके भून-पीसकर बांस की टोकरियों में रखती हैं। वारस्यार ही नहीं, सभी गृहिणी औरतें भी।

काली कॉफी मिलने पर भी आसामी संतुष्ट हो जाएंगे।

'इतने पान किसलिए?' मोयतीन को शंका हुई।

पाव भर धान देकर चार पान और दो सुपारी खरीदने मैं नहीं जाता।

लौटने के लिए दोगुना रास्ता तय करना है।

बैलों को लेकर निकले। बैल बुरे तो नहीं। वन पार कर लेने के बाद ये भी तिरुनेल्लि के बैलों जैसे हो जाएंगे।

चलें...आगे...और...और... बढ़ते गए।

सागवान के जंगल और हाथी का रास्ता पार हो गया। अप्पप्पारा भी पीछे छूट गया। शाम डराती हुई दूर से आ रही है। उसकी लाल दृष्टि। रात का काला हृदय।

कुछ भी हो, पुलयनकोल्ली होकर नहीं जाना। चार नाषिका (छः किलोमीटर) घूमकर जाना पड़े तो भी नरिनिरङ्मिला से होकर जाएंगे। बाईं ओर मुड़ गए।

जंगल की सघनता कम हो रही है। अधिक विस्तृत खेत। झाड़ियों के बीच से रास्ता। रास्ते पर पर झुक आए बड़े-बड़े जंगली अनन्नास के कांटे। कांटों की धार नहीं दिखाई पड़ती। दूर शाम के बड़े-बड़े लाल नाखून दिखाई दे रहे हैं।

रास्ता दो पहाड़ों के बीच से होकर जाता है। आगे-पीछे, दाएं-बाएं, घना झुरमुट। छोटे-छोटे पेड़।

अधिक दूर नहीं जा सके।

ऊपर कहीं से बांसों के टूटने से उठने वाली विलाप की आवाज। बांस टूट-टूटकर छितर रहे हैं।

हवा तेज हो गई।

बैलों ने कान लगाए। पूंछ खड़ी कर जोर से चिल्ला उठे।

वही! वही!

हे ईश्वर! लौटने में! यात्रा के अंत में!

हे मलंकारी, बचाओ!

अल्लाह!

हे ईश्वर!

हवा में हिलते वेल्लिला के पौधे की तरह कांपते रहे। कांपना भी नहीं, डर ने उन्हें शिलावत बना दिया। घूरती नजरें। रुका श्वास।

'कहां से?'

धुंधले अंधकार में कुछ भी स्पष्ट नहीं।

कुछ सुनाई भी नहीं देता।

एक बार और—

एक बार और वह शब्द सुनाई देता तो पहचान में आ जाता कि कहां से आ रहा है।

हे ईश्वर—

फिर से सुनाई पड़ा।

झाड़ियां टूटने की आवाज।

ठीक सामने!–

एक क्षण। पूरा एक क्षण।

याद नहीं, क्या हुआ।

बैल पूंछ उठाकर भागने लगे।

मल्लन के हाथ की सुपारी की पुड़िया नीचे गिरकर बिखर गई।

घबराहट में बैल की रस्सी छूट गई। मल्लन के हाथ से दूसरा बैल कभी का रस्सी खींच भाग चुका था।

भागो!

उंगलियां लहुलुहान हो गईं। बड़े जंगली अनन्नास के भाले की नोक जैसे कांटे शरीर में चुभ गए।

पहने हुए कपड़े छोड़ बाकी सब चीजें फेंक दीं। भागो!

शाम का समय। पुलयनकोल्ली की भयानकता। इससे बड़ी विपत्ति और क्या? मृत्यु! आगे और पीछे। वापस मानंतवाडी की ओर ही।

वह पीछा कर रहा है।

कोल्ली उतरकर पार की।

फारेस्ट रोड घने अंधेरे में डूबी पड़ी थी।

अंधेरे में हांफता खड़ा रहा। मनुष्यों के हांफने की आवाज ने जोंके की ध्वनि को दबा दिया। कोई किसी का चेहरा देखता नहीं। केवल मौत के कराल दांत।

वह! वह! केवल वह!

तीन सौ रुपए कहां? दोगुने सूद पर लिया गया अमूल्य धन? बैल कहां? मल्लन कहां? दोस्त कहां? अनिश्चित भविष्य। काली रात में तिरुनेल्लि खेतों के अंधकार में डूबी पड़ी है। पीछे साथियों की आहटें सुनाई देती हैं।

सिर्फ प्राण बच पाए हैं। क्या वे इतने मूल्यवान थे?

लंबी सांस। अंधेरे से झांकता एक चेहरा। कांसे के दीए की टिमटिमाती रोशनी में, उत्कंठा से झांकता वारस्यार का चेहरा।

9

गोरा चुंडली परेशान होकर बरामदे में आया। मां-बेटी साग साफ कर रही हैं। वह दिन याद ही नहीं आता जब हरी सब्जी देखी थी।

वर्षा जैसे आई थी वैसे ही चली गई। सूखकर भुरभुरा उठे खेत की मेड़ें। नदी किनारे सूखे कंटीले पौधों का जंगल। जंगल की आग में जलकर सूख गए पहाड़। सूखे खेत।

उसे ताज्जुब हुआ। अच्छा साग। हरा रंग। एक टोकरी भरके। औरतें सुबह से शाम तक सूखे खेत की मेड़ों पर कहीं न मिलते पत्तों के लिए भटकती हैं। हरे रंग से हीन, केवल थोड़ी नमी रह गई, ऐसे सूखते पत्तों को इकट्ठा करती हैं। कुछ खाली आंचल लिए ही लौट आती हैं। सिर से पैर तक धूल में लथपथ होकर झोंपड़ी में वापस। शाम की ठंडी हवा से डरकर घूमना छोड़कर वापस आकर जलते भाड़ के सामने फिर पैर पसार लेते हैं। नींद।

भूसा के अलावा गायों के खाने योग्य बाकी सब कुछ को आहार बना लेने वाले मनुष्य।

अगर पता होता कि तिरुनेल्लि में इतनी गरीबी है तो तृश्शिलेरी में ही रहता। भाइयों के साथ काम करता रहता। कम से कम वे कंद तो फेंक देते थे। उसे भून खाने से प्राण तो रुके रहते।

चुंडली ने मां-बेटी को बार-बार देखा। बेटी दुबली हो चली है। गोरा बदन काला पड़ गया। बालों में तेल नहीं। काले कंकड़ लगे हैं। साड़ी का रंग भी बदरंग हो गया है। हाथ-पांव, मुंह और गले में धूल। कुल मिलाकर खेत के कीचड़ का धुंधला रंग। वह सच में आसामियों की औरत-सी हो गई—यहां आसामियों की जन्मभूमि में आने के बाद से। तिरुनेल्ली ने एक और गुलाम बड़ा कर लिया है।

बेटी सूप से एक बड़ा पत्ता और खींचकर उसके डंठल चुनने लगी।

कद्दू के पत्ते।

'कहां से मिले?'

कहीं से भी हो, इतने ज्यादा पत्ते तोड़ लाना अच्छा नहीं हुआ। चुंडली ने सोचा। मिट्टी से मनुष्य के खाने लायक एक अंकुर उपजाने के लिए कितनी मेहनत चाहिए? यहां के आसामियों को अपने लिए परिश्रम करने का अभ्यास नहीं। दूसरों के लिए ही काम करते हैं। कभी भी भूख नहीं मिटती। वह दिन बीत गए जब सोचते थे कि कहीं कोई काक्कपुला या विवाहोत्सव हो तो भूख मिट जाए।

आजकल काक्कपुला और शादियों में बस कंजी मिलती है। दावतों का जमाना नहीं...

पता भर चल जाए कि कहीं केले की अच्छी घार है, या मुर्गी है तो खलिहान से बच्चे या तम्पुरान लोग खुद ढूंढते चले आएंगे।

साग-सब्जियां लगाने की आदत मनुष्य भूल ही गया।

तृश्शिलेरी से आते वक्त मुट्ठी भर कद्दू के बीज लाया था। छोटे भाई करियन ने सरकार से मिली कोल्ली को पेड़-पौधे काट-छांटकर, कूड़ा जलाकर साफ किया था। लाल मिट्टी। कुंकुम के चूर्ण-सी। गीली मिट्टी। पूरब से अच्छी तरह धूप आती है। कुछ बो सकते हैं। बोने की भी जरूरत नहीं, बीज छितराना भर काफी है। अंकुर फूट आएंगे। ढेर सारे निकलेंगे। घास-पात हटाते रहना ही बहुत है। सूअरों और जंगली चूहों को भगाते रहना होगा।

कद्दू हैं तो कद्दू। बोए। अंकुर फूटे। अपने हरे कल्ले बढ़ाकर, कोल्ली को भी पार कर, झोंपड़ियों के आंगन की ओर वे बढ़ चले।

मिट्टी की लालिमा दूर हो गई। हरे-भरे पत्ते। परस्पर प्रतिस्पर्धा करती बढ़ती लताएं। बावली के उस पार से कल्लिलम मन्ट के आसामी पता करने पहुंचे।

जो-जो आए सबको दो-चार पत्ते तोड़कर दिए। मलंकारी ने कृपा की है। नहीं देंगे तो पुरखों की आत्माएं क्रोध करेंगी। तिरुनेल्लि आसामियों का क्षेत्र है। इस मिट्टी में जो कुछ पैदा होता है, उस पर उनका भी अधिकार है। सिर्फ बोने वाले का नहीं। केवल इन खेतों पर उनका अधिकार कैसे समाप्त हो गया?

बस चार दिन। पत्ते नष्ट हो जाने पर लताएं पीली पड़ गईं। फूट आई कलियां धूप में सूख गईं।

चुंडली ने सोचा, यहां ये सब नहीं चलेगा। आसामी के भाग्य में केवल गुलामी का काम है। खेती। वल्ली से खरीदकर खा सकता है, जब मिलेगी तब। ठीक से खाए-पिए बहुत दिन हुए।

पुष्कुनी के धान की कटाई हो जाने और खेत खाली होने की ही प्रतीक्षा करते थे गोरे तम्पुरान। डरकर भाग गए बैलों को मानंतवाडी जाकर मैं और मल्लन खोज कर लाए। पुष्कुनी की जुताई भी मैंने ही की। दूसरी बार भी, पहले ही की तरह शिलाओं को धक्का दे-देकर नदी तट तक पहुंचाया। हां, कंटीली झाड़ियों को इस बार काटना नहीं पड़ा।

दस पोति (करीब साढ़े बाइस किलो) धान हिस्से में मिला। एक पोति काक्कपुला में दिया। कद्दू के पत्तों जैसी हालत धान की भी। एक माह भी नहीं बीत पाया। जिसके पास कुछ था और जो छूंछे हाथ था, फिर एक जैसे। मेहनती और आलसी, दोनों ही भूखे। धान रहने तक ईर्ष्या और आरोप-प्रत्यारोप। खत्म हो चुकने पर गरीबी। शून्यता, निस्संग भाव, पूर्ण उपवास, जन्मसिद्ध आलस्य।

चुंडली को कोई शिकायत नहीं है।

मीनम (मार्च) का महीना। भूख अचेतनता में बदल जाती है। भूख नहीं। वह भूख या विकार ग्रस्त होने वाला मनुष्य नहीं, दो पैरों पर चलने वाला एक कागभगोड़ा। एक मूर्ति है। धूल से सनी, काली, कर्कश मुख-भाव की जैसे शिला में खोदी गई, जैसे एक ही सांचे में ढाली गई आकृतियां।

टीलों में एक के बाद एक करके काक्कपुलाएं बीत गईं। किसी की भूख नहीं मिटी। कंजी पीने को मिली तो लालच और बढ़ गया। अभाव दोगुना होकर शेष रहा।

औरतें आकाश की ओर ताकती रहीं। बच्चे मुरझाकर गिरने वाले आम ढूंढते जंगल में भटकते रहे। पुरुषों ने नदी के घाट पर बैठकर ताश खेला। फिर उठकर पेड़ों तले लेट गए। जिनका लालच सीमा पार कर गया, वे मलंकारी का आंचल लूटने के लिए पहाड़ चढ़ गए। वह निर्दय भाव से, निर्ममता के साथ खड़ी रही। कार्तिक की धान-रोपाई से पहले उसने मधु मक्खियों के छत्ते नहीं बनाए। आम सब मुरझाकर गिर गए। एक भी नहीं पका। कंद-मूलों को उसने अपनी गहनता से छिपा लिया। उसके समक्ष याचना की, विनती की, रोए-गिड़गिड़ाए। कोई लाभ नहीं। अधिक कठोर, कटु, निस्संग और सुन्न हुए मन लेकर उसका आंचल छोड़कर लौटे। झोंपड़ियों के अंधेरे में घुटनों के बल बैठ गए। केवल दूसरों की हंसी उड़ाने के लिए, निकल पड़ी ठंड को भगाने के लिए भाड़ में लकड़ी के बड़े-बड़े ठूंठ जलाते रहे।

आम के डंठलों के रस लगे, धूल से लथपथ शरीर को चूल्हे के आगे टेढ़ा-मेढ़ा पसार दिया। अबोध बच्चे सोते रहे। उनके नग्न शरीरों पर जंगली चूहे दौड़-भाग करते रहे।

मिट्टी की दीवारों और फूस की छत ने जाड़े से उन्हें बचाने की कोशिश की। चूल्हे में जलती आग ने उन्हें थपथपाकर सुलाया। रात ने अपने उदार हाथों में नींद को रोके रखा।

लंबा दिन फिर से। जलता दिन। दिन की आंखों की धधकती आग से भयंकर असहनीय ताप।

तब भी आशा नहीं छूटी। रात की ठंड में भूल से, फिर से कभी न सूखने वाले आशा के अंकुर फूट आए...

आकाश की ओर देखा। औरतें फिर शिकार ढूंढने निकलीं। खेतों की मेड़ों पर, नदी के घाट पर, जंगल के किनारे अदृश्य घास के अंकुर ढूंढते, शुष्क आंखों के साथ वे चलती रहीं। कीचड़ सनी, काली बिंदियां बनकर, धधकती आग में वे धीरे-धीरे चलती रहीं।

खाली गोद, पसीने से तर शरीर से चिपकी पड़ी मैली साड़ी, आंखों में काले गड्ढे। कोरे मैल से काली। जलती आंखें...। वह खेत से आई।

मारा बोली—

कोई घास-पात नहीं है।

निकट वर्षा होने की संभावना नहीं है।

भीतर के अंधेरे की ओर ताकती हुई वह बरामदे में बुझे चूल्हे के सामने जा लेटी।

अनगिनत मक्खियों ने टिड्डियों की तरह आक्रमण शुरू किया।

लेटे-लेटे ऊब गई तो वह नदी में जा उतरी। नहाई। कच्चे पानी में धोई साड़ी धूप में जलती चट्टान पर सूखने के लिए बिछा दी। कच्चा पानी पीकर साड़ी पहन ली। जवनी को साथ लेकर खेत के पास खड़े आम की ओर चली गई।

धूप में भुरभुरे, फीके पड़े खेतों की मेड़ देख-देख मन ऊब गया।

बच्चे हाथ में सूखी अंबिया लेकर भाग गए। चूसकर फेंकी गई आमों की गुठलियां। सूखे पत्तों के बीच से उन्हें देखकर हंस पड़ीं।

वापस झोंपड़ियों में आईं।

चारों ओर झोंपड़ियों के बरामदों में बैठे बच्चों और पुरुष लोगों की आंखें आंगन की शून्यता की ओर गड़ी रहीं। नेत्रशोथ के रोगियों की आंखों के चारों ओर मक्खियां भनभनाती रहीं। मक्खियों को भगाते-भगाते उत्तेजित होकर वे घुटनों में मुंह डाल बैठ गया।

युवक जो बैठे-बैठे ऊब गए थे, जंगल जाकर लकड़ी काट लाए। सेयतु या कुंजालिकुट्टी को देने पर एक गांठ का चार आना मिलेगा। चवन्नी का मतलब एक गिलास काली चाय और पुट्ट (एक व्यंजन) का एक टुकड़ा। दुकान के सामने लकड़ी का ढेर इकट्ठा हो गया।

सेयतु बोला :

'बस इतनी काफी है। और क्या मुझे जलाना है?'

सेयतु ने मना किया तो चुंडली ने लकड़ी का वह ढेर अपनी झोंपड़ी के आंगन में डाल दिया। वह जंगल से जो खजूर के फल लाया था, उनके पीछे करियन के बेटे वड़ी और मारा में झगड़ा हो गया। सभी झोंपड़ियों से बच्चे दौड़ आए। जो कुछ फल हाथ में आए, सीधे मुंह में डाला। पके फल। केवल छिलका मीठा है। अंदर फल जैसा बड़ा कड़वा बीज था। उसे चूसकर चबाते हुए, उन्होंने घंटों बिता दिए।

सहन चुक जाने पर पेम्बी निकल पड़ी। साड़ी का पल्ला उलटकर कमर में कस लिया। बहुत कोशिश करने पर भी फटे भाग छिप नहीं पाते। आंचल बिना चूने वाली थैली की तरह मोड़, वह चली। आंखों में तब भी आशा के अंकुर जीवंत थे।

दाएं-बाएं जाल बिछाती चली। वही दृश्य। शून्यता, सूखापन। चल सके तो—

कोल्लीमूला में नाले के किनारे बड़े अनन्नासों के उस पार ऐंठे पत्तों वाला साग लगा होगा। कोई भी स्त्री आसामी अकेली उधर नहीं जाती। बवंडर। बवंडर के रूप में वहां पिशाच अपना निवास बनाता है— गर्मी के दिनों के आरंभ में। साथी हों तो भी, दोपहर को कोई झांककर भी न देखे—ऐसी जगह। गोपालन नाई जमीन खाली कर, वहां का वास छोड़कर कहीं चला गया। कभी-कभी शाम को या सुबह गोरे तम्पुरान बस वहां घूमते दिख

जाते हैं।

लालच बढ़ गया। पिशाच स्मरण से उतर गया।

नदी पार करते समय घाट को नजर से टटोल लिया। अंजीर के पेड़ के नीचे कुछ सूखी डालियां। आंखों के सामने पके अंजीर के फल पानी में जा गिरे। फल जो किसी को नहीं चाहिए, नदी में बह गए। रात में यहां से जंगली बकरे की आवाज सुनाई देती है।

नदी का ठंडा पानी अंजुलि में भरकर पी लिया।

कोल्लीमूला ही चलें। बेटी को साथ बुलाना चाहिए था। आंचल भरकर तोड़ लेना चाहिए। कोई नहीं देखेगा।

बड़े-बड़े खेत। लगता है कि यह यात्रा समाप्त नहीं होगी। जितना ही चलो उतनी ही यह मेड़ आगे बढ़ती जाती है।

अंत में—

पास पहुंचने पर आशा के अंकुर झुलस गए। सिर्फ अनन्नास के बड़े पेड़। घास का एक अंखुआ भी नहीं। पश्चिम की ओर हो जाती छाया। मुंह फाड़ हंसते खेत, भूमि में दरारें पड़ गई हैं। पिशाच का मुंह।

अंतहीन मोह की तरह फैले पड़े खेत— मूलप्पाटी के नीचे से लेकर दक्षिणी कोने तक, जहां दो वन आपस में मिलते हैं। जलती धूप। धान की सूखी ठूंठें।

देखकर मन ऊब गया। ऊब विद्वेष में बदल जाती है। बुढ़ापे का सताया खेत का चेहरा, जिसमें दरारें पड़ी हैं, रौद्र लग रहा है। वही भाव उसके चेहरे पर भी स्थायी रूप से फैल गया है। जैसे घृणा और रौद्र भाव को मिलाकर शिला में खुदा एक चेहरा।

लौटने का सफर। पैरों में थकावट नहीं। शिला जैसे बन गए मन में थकावट नहीं। एक पिशाच की तरह, एक भटकती आत्मा की तरह जिसे मुक्ति नहीं मिली, उस कड़ी दोपहरी में कोल्लीमूला के खेत की मेड़ पर एक बवंडर की तरह हवा बन, वह आगे बढ़ रही है।

वट्टकुनी के खलिहान के ठीक नीचे पहुंचते ही पक रही सब्जी की ललचाने वाली गंध आई।

रसोई के पीछे से एंब्रोशती[1] ने बुलाया—

'ए पेम्बी—ई! ए पेम्..बी...ई!'

ऊपर, नीचे और भीतर जलती आग। धुआं आंखों में भर रहा है।

एंब्रोशती का धान पीसना है।

---

1. मंदिर में काम करने वाले वारियर की पत्नी या मंदिर की सफाई करने वाली स्त्री को भी एंब्रोशती कहते हैं।

क्या एक-दो मानम वल्लि में अधिक ले लिए थे, यही संदेह है?

'पेम्बी!'

आवाज निकलती नहीं।

'कैसे कृतघ्न लोग हैं! बुलाने पर सुनते ही नहीं।'

—एंब्रोशती बड़बड़ाई। पेम्बी रसोई के पीछे जाकर चुपचाप खड़ी रही।

'आ गई? मना के अहाते से कुछ बकाइन के पत्ते तोड़ ला।'

पत्ते तोड़ने के लिए जिस राह से आई थी, उसी पर कुछ पीछे लौटना है। आग में तैरती-सी चली। बकाइन के पत्ते लेकर लौटी तो रसोई के बाहर कोई नहीं। गायों के बाड़े के ऊपर फैली कद्दू की लताएं फूलों से भरी लहलहा रही हैं।

एंब्रोशती का अहाता हमेशा हरा-भरा रहता है।

यहां की सब्जियों की सिंचाई के लिए कितना पानी भर-भर डाला है, कोई माप नहीं। अब जवनी यहां काम करती है।

भूख जलाती रही।

लालच से एक क्षण प्रतीक्षा की। बाहर कोई नहीं। दो पत्ते मांग लूं। मैंने भी इन्हें सींचा है। धान पीसकर, कंकड़ों से भरा चावल लेकर शाम को घर लौटने को होती तो एंब्रोशती बोल उठती—

'सब्जी की क्यारियों में पहले चार घड़े पानी डाल दे।'

सभी क्यारियां कुछ भीग जाएं, इसके लिए अंधेरा छा जाने तक पानी भरना होगा। जिस क्यारी पर नजर नहीं पड़ती, उसे जानबूझकर छोड़ देती थी।

पूछा नहीं। पता है, देगी नहीं।

'तिरुवोलम्मा।'

भीतर राई के तेल में भूनने की गंध।

एक क्षण सोचा।

दो काफी हैं। खाली दो। पानी में पकाकर मुंह में रखने के लिए।

नाले का पानी उबाल-उबालकर पीते कितने दिन जिंदा रह सकेंगे?

एक पत्ता तोड़ लिया। मुड़कर देखा। कोई बाहर नहीं आ रहा। देहली पर रखे पत्ते वह उठा ले गई?

मोटे पत्ते। सूप जितने बड़े-बड़े। और एक। यह काफी नहीं, नहीं...

पेट जल रहा है। और तोड़ ले।

भूखा मन।

लालच से, जल्दी-जल्दी, फिर और फिर... गोद में भर लिया।

कमरे में हलचल।

भीतर कद्दू के पत्ते की सब्जी को कोसते बच्चे।

'कोई फल नहीं फूटता तो व्यर्थ नहीं, एंब्रोशती!'

चौंक पड़ी। मुड़कर देखने में भय। भीतर से ही है? बिना मुड़कर देखे भाग चली।

मन में घबराहट, कोई पूछ ले—क्यों भागती है?

मन ने पैरों को थम जाने को कहा।

लेकिन पैर मन का अनुसरण नहीं करते। इसे पकाकर पेट में डालने पर ही शरीर में प्राण रहेंगे।

चुंडली आ गया। पेम्बी के हाथ यंत्र की तरह काम कर रहे थे। मन सौ गुना वेग में। पेम्बी मावो वाले मानी की कथा याद कर रही थी। मानी के बुखार की कथा। सिर्फ बुखार? मोच भी। चौथे दिन वह मर गया था।

पेम्बी सिहर उठी। संदेह से सिर उठाकर देखा कि उसका सिहरना पति या बेटी ने देखा क्या?

सुनते हैं कि गोरे तम्पुरान ने मानी को मंत्र विद्या से मार दिया।

गोरे तम्पुरान ने पुष्कुनी में कद्दू बोऐ थे। फूले-फले। फल पकने लगे। चार-पांच फल एक साथ पक गए।

'कद्दू के पत्ते कहां से मिले?' चुंडली ने फिर पूछा। उसने सुना नहीं।

भय के साथ ध्यान आया। मानी को तब पुष्कुनी में कद्दू का फल तोड़कर लाते हुए चांदनी रात में इन्हीं आंखों से देखा था।

एक बार ही नहीं।

आखिर में उसे जोरों से बुखार चढ़ आया। कद्दू तोड़े बिना ही वह लौट आया। किसी से न डरने वाला मानी। वह कांपता क्यों है?

कांपते ओठों से बोला : कद्दू की क्यारियों की ओर मारण-मंत्र चला दिया है।

चावल, फूल और दीए की बत्ती बिखरे पड़े हैं।

उस रात वह मर गया। उसका पेट कद्दू की तरह फूल गया था।

'अव्वा!' मारा अपनी मां को हिलाते हुए बोली।

पेम्बी का मुंह भाड़ की बुझी हुई राख जैसा सफेद पड़ गया था। पसीने से साड़ी गीली हो गई।

अव्वा बोलती नहीं।

आंखों के सामने मानी का फूला हुआ शरीर घूम रहा है। ये कद्दू के पत्ते किसी की नजर बचाकर तोड़े हैं...

मानी मर गया। टीले के सभी लोग भयभीत थे। बाहर बता नहीं सकते। कद्दू का एक भी टुकड़ा किसी ने खाया तो उसका सिर चकरा उठा। बुखार शुरू हुआ। पेट फूल

रहा है न? मंत्रवादी वेल्ली ने आकर पूजा-पाठ किया तब जाकर शांति हुई। भाग्य से मानी के बाद किसी को कोई विपत्ति नहीं आई।

इस बात को बहुत दिन नहीं बीते।

सूप में बिना डंठल वाले कद्दू के पत्ते देख, बिना हिले-डुले बैठी रही। चेहरे का भाव ऐसा है जैसे सूप में किसी सांप को देख लिया हो। बेटी मां को फिर हिलाते हुए बोली।

वह अधैर्य के साथ उठी और पत्ते धोकर एक बर्तन में डाल दिए।

पकने की गंध आने पर भाड़ के सामने से उठी। केले के पत्ते लेने चली गई।

चार झोंपड़ियों के पार, कुरुमाट्टी की झोंपड़ी के पीछे झाड़ियों में घिरा केलों का झुंड।

वह झोंपड़ी के पीछे से दवे पांव गई।

भीतर कुरुमाट्टी का ठहाका। झोंपड़ी और जंगल को भी हिला देने वाली हंसी। वह हमेशा इसी तरह क्यों हंसती है? इतने ऊंचे स्वर में? हरी स्याही गोदने के लिए आंचल में रखी सुई से भी अधिक नुकीली उसकी दृष्टि है।

मारा दबे पांव चलने लगी। टूटी दीवार पर लगी बांस की टटिया से उसने बरामदे में झांका।

बरामदे में बैठ बातें करने वाला—वह लाल कपड़?

मल्लन!

गांव के सब जवान कुरुमाट्टी के मित्र हैं। उसके पास फूलों वाली साड़ी है। पास से गुजरने पर साबुन की गमकती गंध आती है।

जल्दी-जल्दी चलते हुए भी, मल्लन को स्वर की गूंज सोख लेने का लालच हुआ। गोरे तम्पुरान से भी लंबा, सुदृढ़...

10

चेम्मक्कारन वेल्ली की झोंपड़ी के आंगन में मजमा इकट्ठा है। अरवनाषि, अंजुकुन्न, वट्टकुन्न, नटुवंतार और पनकुंट्टी से आसामी लोग आए हैं। जंगलों में जाने का उन लोगों ने निश्चय किया है।

नदी का पानी उबालकर पीते-पीते कितने दिन जिंदा रह सकते हैं?

मेड़ों पर पत्ते तोड़ने के लिए झाड़ियां नहीं।

बावली में मछली नहीं।

छेदों में केंकड़े नहीं।

शेष बची है ब्रह्मगिरि। ब्रह्मगिरि का नाम सुनते ही चेहरों पर विषाद और सुख के भाव अदल-बदलकर आते हैं।

ब्रह्मगिरि के बाईं ओर, पक्षी पाताल की चढ़ाई के किनारे एक छोटी चोटी सिर ऊंचा किए खड़ी है। लाल मिट्टी। शिलाएं। फफूंदी लगी फिसलती चट्टानें। पास कहीं भी बांस के जंगल नहीं। सूअरों को बहुत-से बच्चे पैदा करने की सुविधा कम है। पर कंद-मूल तो हैं वहां।

अरिकिषङ्ङ?

अरिकिषङ्ङ का ध्यान सबके मुंह में पानी भर देता है। बीतते सौभाग्य की याद। समृद्ध दिनों की यादों में एक। उन दिनों पूरे करिपनकुन्न भर में ताड़ के पेड़ सिर हिलाते खड़े थे। आसामी अपनी इच्छानुसार ताड़ के पेड़ों से मीठी ताड़ी पीते थे। अंकुर फूट आती कलियों में अरिकिषङ्ङ का स्वाद था।

खाते-खाते वह समय आ गया कि अंकुर फूटते ही नहीं। ताड़ के पेड़ बिना दूध वाली गायों की तरह हो गए। बूढ़े हो गए, मिट्टी में मिल गए। वंश नाश हो गया। उन बीते अच्छे दिनों की याद दिलाता पहाड़ वैसे ही, आज भी खड़ा है। वह भी एक सपना है। अरिकिषङ्ङ की तरह का एक सपना।

जंगल जाकर ढूंढें। खोदकर देखें। जो कुछ मिलेगा, वह अरिकिषङ्ङ नहीं होगा। एक-दो नूरान (एक प्रकार का कंद) या वह भी नहीं तो नारनकिषङ्ङ (कंद की एक और किस्म)। निरे रेशे। जड़ में खाने योग्य कुछ भी नहीं होगा। खैर, मुंह में डाल चबा लेंगे। रस पी लेंगे। नूरानकिषङ्ङ भी जल्दी मिट जाने वाला एक सौभाग्य है! बहुत कम बचा है...

ब्रह्गिरि के नीचे ओटि (खेत का एक अंश) पर चढ़ने की बात तय हुई। चमकती आंखें, गीले हो जाते मुंह। सूख गई आंखें स्निग्धता ढूंढती हैं। अपने साथी को तलाशती हैं।

ब्रह्मगिरि की ओर जाते समय मनचाहा साथी ढूंढ लें। लौटते समय जंगल से लकड़ी का एक ढेर इकट्ठा करके मनपसंद लड़की की झोंपड़ी में ले जाकर डाल दें तो, उसके बाप को एक सेर धान दे दें तो, उसका अर्थ है, शादी तय हो गई। आज इस चुनाव का भी दिन है।

युवा लोगों की आंखें चमक उठीं। उनके गले से बोल फूट पड़े। वे भूख भूल गए।

'आ जा रे... मेरे साथ आ जा रे...
रात आ गई, बेंत के वन में—
कटहल पक गए, आम पक गए...'

गाने ने जोर पकड़ा। बूढ़ों ने साथ में गाया। ठहाका मारकर हंस दिए। उनके गंदे

शरीर से मक्खियां नेत्र-शोथ रोग ग्रस्त आंखें छोड़कर उड़ चलीं। औरतें झोंपड़ियों की ओर भाग गईं।

मारा झाड़ू बुन रही थी। उसने खजूर के पत्ते की डंडी अव्वा के सामने सरका दी। नदी जाने का समय नहीं, उसने सोचा। घड़े के पानी से मुंह धोकर पोंछ लिया।

उसके थके किंतु चमकते चेहरे और उन्नत वक्ष को देख अव्वा के मन में आया, 'कल इस आंगन में भी लकड़ी और धान डालने के लिए कोई युवक आएगा। कौन होगा वह? ऐसा कौन युवक होगा जिसे मेरी बेटी पसंद न आए?'

रसोई में चूल्हे के ऊपर की छत में तूंबी के बर्तन में सिक्कों से बनी जो माला रखी थी, उसे मारा बाहर ले आई। एक आने के पुराने सिक्कों से बनाई गई माला। इस तरह की माला यहां किसी के पास नहीं। कुरुमाट्टी के पास चवन्नियों वाली माला है। पर उसको इन लोगों में गिनने की जरूरत नहीं।

धूल सनी उंगलियों से उसने माला के सिक्कों को चमकाया। कांसे की एक चमकती चूड़ी पहन ली। सिंदूर के डिब्बे में लगे दर्पण में चेहरा निहारा। एक मंद हास ओठों पर दौड़ गया। लज्जा के साथ फिर मां की ओर नजर डाली।

मां को याद आया, बेटी की साड़ी धुले बहुत दिन हो गए। एक टुकड़ा साबुन खरीदने के लिए भी पैसा नहीं। कटाई के एक माह पहले से सेयतु आसामियों को उधार देना शुरू कर देता है। जवनी का पति साबुन-फल[1] तोड़ने के लिए गया था। चट्टान पर गिरने से घुटने की हड्डी टूट गई।

उसने साड़ी को झटका। धूल। उलटा करके साफ भाग को ऊपर कर फिर साड़ी पहन ली। पेम्बी को लगा, बेटी का कद तेजी से बढ़ गया है। क्या मेरी आंखों में अब तक वह बात नहीं पड़ी, इसलिए? उस छोटी साड़ी से काम नहीं चलेगा। एक साल के अंदर लड़की कितनी बढ़ गई!

उसके भरे नितंब और उभरे वक्ष देखकर मां ने सोचा : मलंकारी ही रक्षा करे। कुरुमाट्टी की कुदृष्टि न पड़े।

मारा का माथा खिल गया। गाल लाल हो गए। गुदना गोदवाने में देरी हुई। जल्दी ही कुरुमाट्टी से मिलना है। यही एक कमी रह गई है बस, सजे-धजे चेहरे में। लंबी, टेढ़ी भृकुटियां हैं—अच्छे ढंग से गोदने के लिए। किनारे पर गोद दे वही काफी है।

आंगन लोगों से भर गया। पूरब की ओर की पहाड़ियों से जैसे बांध खोलकर निकाल दी गई हवा चोटियों को थपथपाती, वृक्षों का आलिंगन करती, तराई पर सीटी बजाती चक्कर काट रही थी। घाटी आह्लादित हो उठी। हवा के आलिंगन में रोमांचित हो गई। भूखे बच्चे

1. एक प्रकार का फल जिसे साबुन की तरह प्रयोग में लाते हैं।

ठंडी हवा में कांप उठे। उनकी ठोड़ी की हड्डियां जैसे बज उठीं।

गंदी आंखें झपका-झपकाकर वन जाने को तैयार बड़े लोगों को वे ईर्ष्या के साथ देखते रहे। फिर अरिपू (एक पौधा) के फल चुभला-चुभलाकर रस पीने लगे।

लालच से भरी दृष्टियां। आंखों के गड्ढों में दूर जल रही आशा की बत्तियां। भूरे बाल, नंगे शरीर। भन-भनकर चक्कर काटती मक्खियां। चिपकती मक्खियों ने जोंकों को भी मात दी।

कुछ समय के लिए सब से अलग होकर भाग छिप जाने की जल्दी युवाओं की तैयारी में दिखाई दे रही थी।

यात्रा शुरू हुई।

झाडू लगने से जमा कूड़े के ढेर में हलचल-सी हुई। ठंड में सुन्न पड़ा अंतरिक्ष हिल गया।

'कन्याओं ने जन्म लिए...मां
कन्याएं भूखी रह जाएं...
बहुत-सी समृद्धि के बीच भी कष्ट उठाएं...
बहुत-सी समृद्धि के बीच भूखे दिन आ गए...
आ...जा...रे...वन... चलें'

'कन्याएं कष्ट उठा रही हैं। बहुत-सी समृद्धि के बीच है यह भुखमरी। वन चलें तो कुछ न कुछ तो मिलेगा।...'

धान के प्रदेश में कंजी नसीब न होने के कारण जंगल जाते मनुष्य। उस गीत का बिना अर्थ जाने वे जोरों से गाते रहे। ठहाका मारकर हंसे। वन का घना काला अंदर का भाग कांप उठा।

'कारियाल मलै, कूडरंजी मलै, जाने के लिए उठे नहीं...
कटहल और आम वाले जंगल...जा...रहा
गोद में कंद मूल और घुइयां—
एक सूप भर के...'

उन लोगों की आहट पाकर जंगल चौंक उठा। 'आने वाले...मां...आ जा रे...मां'

युवा लोग युवतियों को आकृष्ट करने का प्रयास करने लगे।

आओ, वन चलो। मेरे साथ आओ। गोद भरके कंद-मूल और घुइयां लाएंगे।

ठीक सामने खड़े, ऊपर की ओर देख, डाल पर बैठी गिलहरी पर पत्थर फेंक ऊंचे स्वर में हंसते युवक को मारा ने ध्यान से देखा।

मल्लन! उसका नया रुमाल मैली कमीज के कॉलर के बीच गले को घेरे पड़ा है।

'झील के किनारे नए अंकुर फूटे हैं....

तकरा (एक पौधा) में भी अंकुर फूट आए
आ जा रे... मेरे साथ।'

वन चलो। वहां झील के किनारे नए अंकुर फुट आए हैं। तकरा के पौधों में भी अंखुआ आ गया। कटहल पक गए। आम भी। तू आ। इस तरह भुखमरी में क्यों पड़ी है?

लाल कुर्ता पहने पहाड़ी गिलहरी जैसा लग रहा मल्लन खिलखिला कर हंस पड़ा। पेड़ों की शाखाएं हिलाकर पत्तों के बीच अदृश्य हो गया।

क्षण भर के लिए मल्लन ने मुड़कर देखा। अपने सामने असमंजस में खड़ी लड़की की काली-काली निष्कलंक परेशान-सी आंखों में तीखी दृष्टि डाली। मैली साड़ी, नग्न कंधे, चलने के कारण लाल हो गए गाल। गले को घेरे पड़ी सिक्कों की माला के नीचे भरा यौवन। उसने आंखें नीचे कर लीं। ऊंची करके पहनी साड़ी के नीचे गोरे-गोरे झलकते पैर।

यह सुंदरी?

फूलों से भरे कनेर की तरह वह लाल पड़ गई।

उधर कुरुमाट्टी ने थैली में कंजुण्णी (एक झाड़ी) की कलियां भरते-भरते आंख के कोने से इस ओर देखा। मन की उर्वर मिट्टी में ईर्ष्या के बीज छिटक गए। उनसे अंकुर फूटने लगे।

'मारा...!' मारा ने मुड़कर देखा।

रुपए की थैली को मोड़कर बांधा था, गांठ खोलने के लिए उसने मारा को बुलाया। हथेली भरकर कञ्जुण्णी की कलियां।

कुरुमाट्टी लड़कियों के गालों और हाथों पर हरी स्याही गोदने के लिए औषधि इकट्ठा कर रही है।

मारा के मन में आया, 'देखने में बिलकुल नहीं लगता कि मैली-गंदी काक्का इसकी ही बेटी है। बाहर निकले दांतों वाली, ऐंची-तानी आंखें और सहजन के फल की-सी जटाओं में लटकते बालों वाली काक्का की ऐसी सुंदरी मां।

थैली का फीता खोलने के बीच उसकी कटार-सी तीखी आंखें अपनी दृष्टि से मिलीं तो मारा चौंक गई।

धीरे-धीरे वह अपनी सहेलियों के बीच आ मिली।

एक अव्यक्त भय ने उसे ग्रस लिया।

उन लोगों ने अपनी खोज जारी रखी।

गाने ने जोर पकड़ा। वन हिल गया। विजन वन में विहार कर रही जंगली गिलहरियां पेड़ों की डालों पर दौड़-भाग करती रहीं। झींगुरों के रुदन के ऊपर उनका कोलाहल वन की भित्तियों में गूंज उठ ।

उन लोगों ने सूखे पत्ते हटाए।

झाड़ू से इकट्ठा हुए कूड़े के ढेर हिल गए। जंगली मुर्गे और चूहे इधर-उधर दौड़ने लगे।

वन के किनारे इस तरह चलने से कोई काम नहीं बनेगा। वन के हृदय में जा घुसना है। हाथ से हाथ मिलाए खड़ी पेड़ों की कतारों को भेदकर टीले के उस पार की ढाल पर उतर जाना है।

इधर-उधर बिखर गए लोग इकट्ठा हो गए। वन की सीमा के किनारे एकत्र होकर वे खड़े रहे। आगे कौन?

बांस का वन। पहाड़ी सोता। आर्द्रता। जंगली हाथियों का स्थाई डेरा। पिछले धनु महीने में भी वे इसी ओर से ही केलन के खेत में उतर आए थे।

दलदल से भरी जमीन। गहरा जंगल। बांस के घने वन के बीच से ठंडी हवा तीखे अस्त्र की तरह प्रहार करती है। हर जगह ठंड जम गई है।

सोते के उद्गम तक बांस का यह वन फैला पड़ा है। कुछ भी हो, इस किले को भेदे बिना उस पार नहीं पहुंच सकते।

मन पक्का करके वे पहाड़ पर चढ़ने लगे। हरेक के पास बांस की एक लाठी थी। उसके बल चढ़ना शुरू किया। वैसे भी शरीर की रक्षा के लिए तो काम आती ही है।

चारों ओर आंख फाड़-फाड़कर देखते हुए, कान लगाकर सुनते हुए, वे लोग सोते के किनारे से चढ़ने लगे। ऊपर चढ़ते-चढ़ते बांस के वन का घनापन कम होने लगा। अंधेरा भी छंट चला। रोशनी की चांदी-सी सूइयां। चिड़ियों की चहचहाहट। जंगली जीवों की भाग-दौड़।

बांस का जंगल खत्म हुआ।

अब बिना कांटे वाले बांस का जंगल। पंख फैलाकर नाचते बांस के वन। हवा सीटी बजाती चल रही है।

अब छोटे बांस के जंगल में सफर। घासहीन दलदल में भी वे लोग नारनकिषङ्ङ की लताएं ढूंढते रहे। बांस की लकड़ी से सूखे पत्तों की जमी जीर्ण परत उलटाई।

छोटी झाड़ियों के झुरमुट में पहुंचकर उन लोगों ने विस्तार से अपनी खोज शुरू की। इतना घास-पात है कि पांव भी ठीक से रख नहीं पाते। घनी होकर बढ़ती घास।

कुरुमाट्टी की थैली भरकर फूल आई थी। अपनी आंखों के कोने से वह मारा का पीछा करती रही।

मारा के मन में आया, खुली जगह पर पहुंचने के बाद उसकी दृष्टि से खिसक जाना चाहिए। जरा ठीक से सांस लेनी है। अभी उसका श्वास जैसे रुक रहा हो। चाकू की धार जैसी चमकती उसकी आंखें मन में घर कर गईं।

पैसा है, इसीलिए घमंड करती है। वल्लियूरकाव के उत्सव का समय उसके पैसा कमाने

का वक्त है। कुंभ मास के बाद लड़कियां उसकी झोंपड़ी में पैसा ले-लेकर पहुंचेगी। धान की बालियां बीनकर, चिवड़ा पीसकर और खलिहानों में धान की कुटाई कर इकट्ठा किया गया पैसा। छोटे-छोटे सिक्के कुरुमाट्टी को पसंद नहीं। चांदी की चमकती चवन्नियां ही चाहिए। ये पैसे उसने कहां छिपा रखे हैं?

मैंने भी चार आने इकट्ठा कर लिए हैं। उत्सव के पहले ही गुदना हरी स्याही से गुदवाना है। तृश्शिलेरी से आते वक्त जो चार अंडे थे, उन्हें बेच दिया। जब यहां आए, उसी दिन मुर्गी को जंगली बिल्ला पकड़कर ले गया। इसी के पास जाना होगा गुदने के लिए।

मारा चौंक गई।

उसे चौंकते देख जवनी पास आई और कंधे पर हाथ रखकर पूछने लगी—

'मारा, डर लगता है?'

'नहीं।'

जवनी उसके साथ-साथ चलने लगी। आश्वासन दिया। पहाड़ के उस ढालू प्रदेश का उतार...।

झाड़ू लगाकर जमा हुए कूड़े के बड़े-बड़े ढेर। बाईं ओर बड़े-बड़े पेड़ सघनता में उगे खड़े रहे। कोल्ली की गहराइयों से ठंडी हवा बह चली। तब भी कोहरे ने पेड़ों के ऊपरी हिस्से को ढंक रखा था। खरोंच मारने वाली शीत। झरने का संगीत कोल्ली के श्वासों के रूप में छा रहा था। पर उन लोगों ने उस ओर ध्यान नहीं दिया।

कांटेदार जंगल में गले बढ़ाकर खड़ीं लताएं।

तब भी ध्यान उस अज्ञात शत्रु की कल्पना में ही लगा रहा। ठीक सामने दिखते लताकुंज के उस पार जंगली हाथी दबे पांव खड़ा होगा।

कोल्ली के पश्चिमी मोड़ पर हाथियों के झुंड-सी दिखती चट्टानें। वहां से किसी भी क्षण वह मृत्यु-दूत के रूप में आ सकता है। अपने बड़े कानों को घुमाता, तीखी दृष्टि डालते हुए सामने आ जाएगा।

सांस रुक गई। भूख चलने को विवश करती है। वही है इस समय की सबसे बड़ी शत्रु।

काली-काली चट्टानों पर चढ़ने के लिए प्रयत्न करते हुए, जंगली झाड़ियों में छिपी नारनकिषङ्ङ की लताओं के लिए उन्होंने खोज जारी रखी।

कोई भी पत्ता ऐसा न था जिस पर उनकी लालची दृष्टि न पड़ी हो।

अंत में वे लक्ष्य पर पहुंच गए।

आमने-सामने खड़ी दो चोटियां।

एक के ऊपर सभी जमा हैं। ठीक सामने गरुड़ की चट्टान सिर ऊंचा किए खड़ी है। पुराने जमाने में उस चट्टान के नीचे की गुफाओं में साधू तपस्या करते थे। यहां अब

भी तपस्या चल रही है। अंतहीन तप। मलंकारी प्रसन्न नहीं हुई। उसने अपनी निधि को, किषङ्ग को कहीं छिपा दिया है। भूखे रहकर की जाने वाली इस तपस्या के बल की वह परीक्षा ले रही है।

इस तपस्या का अंत आज ही होना है। पहाड़ की जिद्दी देवी को आज हराना ही होगा।

झाड़ियां, उसके बाद ढलान व बिखरे भूरी घास के मैदान। उसके पार बंजर पहाड़ियां। यहीं से शुरू करें। और आगे चलने से कोई लाभ नहीं।

बंजर पहाड़ियों पर नजर जाते ही बूढ़े बेचैन हो उठे। डांट-डांटकर कहने लगे—यह जगह नहीं। बाई ओर को जाओ। ठीक है?

हम जब छुटपन में नौकरी करते थे...

उन अच्छे दिनों की गाथा सुनने के लिए कान दिए बिना युवा लोग आगे बढ़ गए। उनकी चीख-चिल्लाहट बंद हो गई थी।

काई लगी तीन भूरी चट्टानें। टीले पर दबी पड़ी झोंपड़ियों की याद दिलाती-सी। उन बूढ़े सिरों पर चिड़ियां समय-समय पर अभिषेक करती रही हैं।

जरा रुककर हांफते शरीर को विश्राम देते समय भी उनकी आंखें भटकती रहीं। भूखा पेट चैन नहीं लेने देता।

वह स्थान जिसे पुराने बुजुर्ग लोग अरिकिङ्ग का डेरा कहते थे।

चार-पांच साल पहले— शिकारी पोट्टन जब जिंदा था, तब यहां आए थे। इसके चिह्न भी नहीं कि सूअर आए हों यहां।

सूखे पत्तों के झड़-झड़ गिरने और सड़ने से ठोस होकर पड़ी मिट्टी।

उन्होंने चट्टानों के किनारे छिपी झाड़ियों को हिलाया। पत्ते और जंगली लताएं खिलखिलाकर हंस पड़ीं। अरिकिषङ्ग की कौन कहे, एक नारनकिषङ्ग भी नहीं मिला।

वे अलग-अलग समूहों में बंट गए। न मिलने वाली चीज के लिए समय गंवाने पर खुद को कोसते रहे। पर तब भी निराशा उन्हें वापस न लौटा सकी।

वनों की पंक्ति के नीचे, दूर, दोहपर की धूप में, पिशाच की भांति हंसती, लज्जा से शरीर हिलाती, बहती बावलीपुषा दृष्टि में पड़ी। नदी के किनारे फैले पड़े खेत। एक बूंद पानी को तरसती, प्यास से सूखे ओंठ लिए, थकी पड़ी तिरुनेल्लि। उन लोगों के चेहरे क्रोध से कठिन हो गए।

किसी के काम न आने वाले जंगली सोते की झाड़ियों के बीच से नीचे बावली में जा गिरने की आती आवाज। उसने ओठों को दांतों तले दबाया। सहन किया...

नारनकिषङ्ग की एक छोटी लता। मारा देख संतोष से कूद पड़ी। चारों ओर दृष्टि डाली—

एक हल्का कंपन बिजली की तरह उसके शरीर में दौड़ गया।—कुरुमाट्टी। वह हमेशा

मेरी खुशी क्यों सुखा देती है? उसकी नीली आंखों में विष है?

मल्लन तथा एक और युवक खोदने लगे।

सभी मर्द-औरत उन्हें घेरकर खड़े हो गए। लालच से भरी आंखें बांस के डंडे से भी अधिक तेज।

युवतियों की नजरों का केंद्र बना मल्लन और अधिक उत्साह तथा शक्ति के साथ खोदता रहा। काले कंकड़ बिखर गए।

उत्साहातिरेक में भी, वे काले वन की ओर घूरते रहे।

गीली कच्ची मिट्टी को थपथपाती हुई वन से, काली चट्टानों के बीच की दरारों से जंगली हवा के झोंके बह चले।

बांस की लकड़ी की नोक घिसकर टूट गई। गड्ढे गहरे हो गए। उनकी संख्या बढ़ गई। पिछले साल जहां कंद-मूल थे, उसकी जगह फफूंदी लगे मिट्टी के टुकड़े। नई लताओं की जड़ें मोटी नहीं हुईं। गलत समय पर हुई वर्षा ऐसा धोखा देगी, यह सोचा भी न था।

लालच से छोटी जड़ें उखाड़ लीं। मिट्टी झाड़ने पर वे छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट गईं। उस कच्ची जड़ के टुकड़ों को ही चबाया। पसीने की एक बूंद का भी प्रतिफल नहीं मिला।

औरतों की आंखें भर आईं।

मारा ने नाराज होकर मल्लन को देखा।

उसके चेहरे में, छाती के बालों पर और गीले कुर्ते में मिट्टी लग गई थी। वह गड्ढे के ऊपर चढ़ आया। धूल झाड़ी। ऊंचे स्वर में ठहाका लगाया। हंसने वाला एकमात्र चेहरा उसका था।

वापसी।

उत्साह ठंडा पड़ गया। चल नहीं, रेंग रहे हैं। भूख के विचार को ही भुला दिया। भूख मिटाने का कोई उपाय न हो तो सोचने से क्या? समूह से अलग हो अपने साथी से बात करने का या झाड़ियां हिलाकर देखने का उत्साह मर गया।

वन और प्रांत सब जान-बूझकर धोखा दे रहे हैं। मलंकारी का कोप है।

'वे अच्छे दिन जब बावली के किनारे भी नारनकिषङ्ङ मिलता था।'

वेल्ली ने सोचा—उन दिनों जंगल जाने में कितना उत्साह होता था। कभी-कभी वापसी में समूह से छूटकर अलग हो जाते थे, वट्टा और मैं। फिर एक साथ मलंकारी के मंदिर के सामने किषङ्ङ भूनकर खाते थे।

युवतियों के साथ जंगल जाना अपने में एक अनुभव था। साल में एक या दो बार ही मिलने वाला अनुभव...

नीचे कोल्ली में सूखे पत्ते उड़े। बवंडर बनकर पिशाच आ रहे हैं। वे तेजी से चलने

लगे। नीचे विपरीत दिशा में किसी के द्वारा फेंके चिथड़े के टुकड़ों के समान तिरुनेल्लि के खेत बिखरे पड़े थे।

11

सुबह हो गई। कोहरे की चादर हटाकर कौन जगे, ऐसी मदालस ब्रह्मगिरि। मां को जगाने के लिए हलचल मचाते बच्चे की तरह बावली नदी खेल-कूद कर शोर मचा रही है।

पिछले दिन खूब बारिश हुई थी।

नदी के भरे मन की मर्मर ध्वनि।

जुताई के लिए खेत तैयार हो गए। गीली मिट्टी। अडा(आटे से बना एक मीठा केक) जैसी नरम मिट्टी। छूते ही चूर-चूर हो जाने वाली। पैर रखने पर फिसल जाता है।

चिकनी काली मिट्टी। यही है संपत्ति। इस पूंजी को ध्यान से खर्च करें तो अनेक मनुष्य जी सकते हैं।

बावली के किनारे टीले के चरणों पर फैली पड़ी भूमि हंसती है, रोती है, स्नेह प्रकट करती है। उसकी इच्छानुसार उसे तृप्त करना है। इसके लिए मनुष्य को तपस्या करनी होगी। पांचों इंद्रियों को सचेत होकर पहरा देना होगा। चारों ओर वन। भूमि को ग्रस लेने के भाव में मुंह फैलाए, हाथ बढ़ाकर घात लगाए-से वन। खेतों की छाती पर बहती नदी। केवल खेलना-कूदना जानने वाली एक नटखट शिशु-सी। उसे वश में कर लेना होगा। नहीं तो कोई लाभ नहीं। विवेकहीन बावली काली मिट्टी रूपी धन का अपहरण करके अन्य देशों में पहुंचा देती है।

कालिंदी और बावली के संगम पर मूलपाटी के नीचे एक बांध बनाने पर इसकी चालाकी पर अंकुश लगा सकते हैं।

राघवन नायर ने सोचा।

इसे ऐसे ही हमेशा छोड़ देना ठीक नहीं। इसी के द्वारा ही इस प्रांत में जीवन बिताया जा सकता है। यह नदी और यह वर्षा एक साथ मिलकर इस घर को विपन्न बना देंगी। तिरुनेल्लि का नाश होगा। जंगलों के बीच बहुत-से कष्ट उठाकर मनुष्य ने जो महल खड़ा किया, वह गिर जाएगा।

कड़ी गर्मी में प्यास से सूखी पड़ी मिट्टी ओठ खोलकर गला भिगोने के लिए वर्षा की प्रतीक्षा करती है। गहरी, तंग नदी में जंगल की बाढ़ का जल वेगपूर्वक दूर बह

जाता है।

बांध बन जाए तो निश्चित रूप से इस भूमि की प्यास कम हो सकती है। यह हंसेगी, खुश होकर वरदान देगी। उस वर के अवलंब पर ही यहां के लोगों का अस्तित्व निर्भर है।

यह अन्नदायिनी है।

ठंड में मंद पड़े यहां के लोगों में इसको वश में कर लेने का उत्साह नहीं है। शक्ति नहीं है।

कौन बनाएगा?

पर क्या चुंडली आलसी था?

पुषकुनि का द्वीप जोतते समय किसी भी किसान से अधिक उत्साहित था न वह?

उससे यह भूमि मैंने ही छीन ली न?

उसी पर आज वह गुलाम बनकर काम कर रहा है। वर्षों से नदी के मध्य में उस द्वीप पर अधिकार तो उसी का था, जिसने सबसे पहले जोता?

अब उसका उत्साह क्षीण पड़ चुका है। जोतते समय जल्दी चलने वाले बैल के मुंह पर वह चाबुक मारता है। जुताई की गहराई कम हो जाती है। उसकी सुस्ती उसके बैल में भी आ गई है। ऐसा नहीं कि वह काम नहीं करता। शाम होने तक बैलों के पीछे चलेगा। पर ऐसे ही चलेगा। हल पर जोर लगाना है तो कारिंदे को चिल्लाना होगा। मेड़ तोड़कर दूसरा खेत जोतना है तो कारिंदे को कहना होगा। नजर जरा चूकने पर हल पकड़े खड़ा रहेगा। खड़े-खड़े ही सो जाएगा। बैल भी सो जाएंगे। ऐसे ही यहां के नौकर हैं। बैल भी वैसे ही। केवल कारिंदे की देखरेख में चलने वाले गुड्डे, गुलाम।

हथेली से कानों को ढके, चुंडली इस तरह धीरे-धीरे चलकर आया जैसे उसे डर हो कि चलने से गीली मेंड़ों के शरीरों को कष्ट होगा। मल्लन नहीं आया।

सेयतु ने क्या कहा, नहीं?

सुबह से बस काली कॉफी पी है। भूख लगी है। दोशा खाने जाएं और मल्लन को न पाकर लौट जाए तो?

यह भी हो सकता है कि वह सेयतु की दुकान में आए ही न। उसे न मिला होगा। अगर कटार लेकर जंगल चला गया तो फिर उसका कोई पता न मिलेगा।

घाट पर कपड़े धोने की पट-पट।

मारा!

वहां उतरकर नीचे की ओर चला। गहराई है। काले जंगली बाढ़ के पानी का प्रवाह जारी है। चट्टानों में अटककर, बहने को उद्यत, रुका पड़ा है। दोपहर तक ऐसे ही रहेगा। यह इस काले पानी में ही क्यों कपड़े धोती है? दोपहर ढलने तक जल आंसू की तरह निर्मल

हो जाएगा।

नदी के उस पार पहुंचने पर उधर से उतरते मल्लन पर नजर गई।

उसके चेहरे पर हंसी की वर्षा छाई थी। प्रसन्न भाव। काले वन के मुख पर टकराई धूप जैसा।

इन लोगों को हंसते कम ही देखा है। कारिंदे के सामने इन लोगों की हंसी सूख जाती है।

ठंड से सुन्न पड़े चेहरे।

पपड़ियां खाए चेहरे।

काले चेहरे।

कांतिहीन आंखें।

सिकुड़े ओठ।

देखते-देखते मन ऊब गया था।

मल्लन के प्रसन्न मुख को देखने से एक प्रकार का सुख मिला। वर्षा में नहाए जंगल या भूमि की तरह, नदी की तरह उसका मुख स्वच्छ है।

उसे हाथ से पकड़कर वह जुताई चल रहे खेतों में ले गया। हल बांधा। दूसरे खेत तब भी काले मुख किए प्रतीक्षा कर रहे थे।

एंब्रोशन (मंदिर में पूजा का काम करने वाला) ने कहा—

'जुताई का क्या लाभ? इस बारिश का कोई भरोसा नहीं।'

मल्लन जुताई करता रहा। हल कसकर पकड़ने से हाथों की मछलियां तन गई। उसके द्वारा जोती भूमि पर चुंडली का हल धीरे-धीरे रेंगता-सा चलने लगा।

छेद हिल गए। केंकड़े डरकर इधर-उधर भागने लगे। उन छेदों की तलाश करने लगे जो हल से दूर हों। घास के बीच छिपकर गोल-गोल आंखों से घूरते रहे।

धूप कड़ी पड़ जाने पर मल्लन को वहीं छोड़ टीले पर चढ़ गया। उसकी भूख चरम सीमा पर पहुंच गई थी।

खलिहान में सूखने के लिए बिछाए गए भूसे पर वारस्यार कपड़े पसार रही है।

'आज दो और लोगों को भात देना है।'

'किनको?'

'मल्लन और चुंडली को।'

'क्या...?'

'आज पुष्कुनी में जुताई है।'

'आसामियों को भात देना है?' आश्चर्य से आंखें फाड़कर देखा।

'वल्ली नहीं देते?'

उस अविश्वास-भाव को देखकर राघवन नायर को हंसी आई।

'हमारे लिए अन्न उपजाने वाले को काम के दिनों में एक जून का खाना भी नहीं दे सकते?'

यह बात उन्हें अच्छी नहीं लगी।

कैसा आदमी है? अब तक कोई बात नहीं सीखी। उन लोगों को दोपहर के समय वल्ली और किसलिए देते हैं? पीसकर कंजी बनाने के लिए ही तो न? उसे खाने के बाद वे काम पर आ जाएंगे, है कि नहीं? नहीं तो वल्ली शाम को दे देना काफी है। यही व्यवस्था है न? पुराने जमाने से चली आ रही रस्म क्यों छोड़ दी जाए? अवसर मिले तो सिर पर चढ़ने में कोई संकोच न करे, ऐसे लोग। जान-बूझकर इनको अवसर देना...।

रात के पहरे के लिए एक दिन का बासी चावल या कंजी एक जून दे देते हैं तो ठीक है। आखिर धनु का जाड़ा है। धान की रखवाली कर रहा है। पूरे साल की संपत्ति है। तो भी खेतिहरों को रोज-रोज क्या खाना दिया जा सकता है?

कपड़े पसारकर वे रसोई की ओर चलीं। राघवन नायर को चावल परोसते समय भी वे यही सोच रही थीं।

राघवन नायर ने अनदेखा किया। कहना अपना कर्तव्य है। और फिर किसलिए? भूख मिट जाए तो वे लोग अच्छी तरह काम करेंगे। धान पीसकर कंजी बनाने तक का समय भी नष्ट नहीं होगा।

कसके भूख लगी थी। दोशा न खाकर भात खाया। बढ़िया छाछ थी। अच्छी तरह मिर्च लगा आम का अचार था।

ओखली वाले कमरे में दामु वारियर चटाई बुन रहे हैं। बरामदे में उस ताल को सुनते-सुनते आंखें झपक गईं।... दोपहरी का संगीत।

जग पड़ा।...

जाकर देखना है। आंखें मलते हुए उठा। लौटते समय सोने की बात मन में न थी।

वारस्यार ने उन लोगों को भात दिया होगा? काम खत्म कर वे खेतों से चले गए होंगे? दोपहर को वल्ली दी होगी? चार दिन पहले का अखबार फर्श पर गिरा पड़ा हुआ है। इस तरह खुद को भूलकर कभी नहीं सोता था। यह आलस मुझ पर भी छा गया है।

सिरहाने एक लोटा भर ठंडा पानी रखा था। मुंह धोया। कुछ पानी पीकर एक पान खा लिया।

फिर तौलिए को झटककर कंधे पर डाला और बाहर निकल आया।

'इस कड़ी धूप में कहां जाते हो?'

'यहां बैठे रहने पर वो लोग खड़े-खड़े ही झपकी लेते रहेंगे।'

'क्या भात देने पर भी आलस करेंगे?'

'देखें।'

'जाता हूं।'

'तौलिया सिर पर बांध लेते।'

'मुझे भी इस धूप को जानना चाहिए न?'

'अच्छा।'

आंगन में उतरकर देखा कि मारा जल्दी-जल्दी आ रही है। हमेशा की उसकी गंदी लाल साड़ी आज साफ है। संवारकर गूंथे जूड़े में हंसती वेल्लिला के फूलों की लड़ियां हैं। वह आंगन में चढ़ी तो गले में पत्थर की मालाएं और हाथों की अनगिनत चूड़ियां खनक उठीं।

तिरुनेल्लि आने के बाद लड़की बड़ी हो गई है।

उस दिन पुष़कुनि में पहली बार उसे देखने की बात याद आई।

उसके हाथ में केले के सूखे पत्तों की गांठ थी। कुछ क्षण आंगन में खड़ी रहने के बाद वह रसोई की ओर बढ़ी।

'कौन है रे तू? वारस्यार ने पूछा।

'चुंडली की बेटी है।'

'पुष़कुनि में...?'

'हां।'

बरामदे में गांठ रखकर वह अलग हट खड़ी रही।

'यह क्या है?'

'कपड़े।'

'कपड़े?'

'गोरे तम्पुरान[1] के'

वारस्यार ऊंचे स्वर में हंस पड़ी। मारा लज्जित हो गई। कुछ देर तक सब चुप रहे।

गांठ खोलकर धोया हुआ अंगोछा लेकर वारस्यार बरामदे में आईं।

द्रोणपुष्पि के जगमग सफेद फूलों जैसा रंग। यह? फिर याद आया।

पिछले दिन चुंडली की वल्ली दी थी।

अंगोछे का उजला रंग देखकर वे बोलीं, 'लड़की, कपड़े धोना जानती है।'

उसने शर्माकर सिर झुका लिया।

'ये लोग खुद अपने कपड़े क्यों नहीं धोकर सफाई से रहते?'

'साबुन हो तो किसके धोने पर कपड़ा साफ नहीं होगा?'

'यहां, मेरी मदद के लिए...'

---

1. एक श्रेष्ठ जाति।

ठीक भी है। सावित्री वारस्यार को बहुत काम है। बच्चों की देख-भाल का काम है। झाड़ू-बुहारी करनी है। अब तो आसामियों को खाना देने का काम भी सिर आन पड़ा।

दूसरे खलिहानों में झाड़ू देने, कपड़े धोने और धान पीसने का काम आसामियों की औरतें करती हैं। तनख्वाह का मतलब एक या दो जून का खाना—एक दिन का बासी या सड़ा हुआ—बहुत है। खेत में काम लगने पर घर का भी काम बीच में करा लेंगे। एक ही वल्ली से काम चल जाएगा, इस तरह। शायद वह यही सोच रही हैं कि पहले यह बुद्धि क्यों नहीं आई?

'मारा और किसी खलिहान में काम नहीं करती तो यहीं रहे।'

'हां।' उनका चेहरा खिल गया।

कंधे से मैला अंगोछा हटाकर मारा वाला धुला अंगोछा डाल लिया।

साबुन-फल की मधुर गंध।

मारा अंबलकुन्न खलिहान की नौकरानी हो गई। पहाड़ों से कोहरे की धुंध मिटने से पहले ही वह आ जाती है। घर वालों के जगने के पहले ही आंगन में झाड़ू लग जाती है।

आंगन से उठती चूड़ियों की खिलखिलाहट सुनकर जगती घरवाली आजकल अत्यंत तृप्त है। दोपहर के बाद आराम। कपड़ों से खेत के कीचड़ का मटमैला रंग जाता रहा।

नहाने, बाल संवारने, काली बिंदी लगाने या फिर छाछ बनाने में भी वे अब अधिक समय लगाती हैं।

अहाते में, खूंटे में बंधे बछड़ों के पीछे नहीं घूमना है। सब तरफ मारा है।

बावलीपुषा की मर्मर ध्वनि, पापनाशिनी के किनारे चिड़ियों के कलरव, मंदिर से आती ढोलों की ध्वनि, गायों के बाड़े पर छाई फूलों से भरी कद्दू की लताओं और बछड़ों के गले की मीठी बांय-बांय की ध्वनि की ही तरह मारा की चूड़ियों की खिलखिलाहट अंबलकुन्न के वातावरण का एक भाग बन गई। वह कब आती है, कब जाती है, किसी ने ध्यान नहीं दिया। ध्यान देने की जरूरत ही नहीं पड़ी। उसने ऐसा मौका ही नहीं आने दिया।

खेतों की गुड़ाई-जुताई हो चुकी। अब पानी बरसना चाहिए। घूम-फिरकर सब तरफ देखा। जहां कहीं मेंड़ों को ठीक करना है, ध्यान में रख लिया। चेट्टुविलयन की बुआई नहीं होनी है। गहरे दलदल वाले खेतों से पानी किस तरह नीचे लाया जा सकता है, मन में यही सोचते-सोचते संतोष मना घर की ओर चला। वर्षा के स्वागत की तैयारियां हो रही थीं। हर तरफ प्रतीक्षा हो रही थी। उत्कंठापूर्ण शामें थीं। दोहपर तक कड़ी गर्मी। दोपहर के बाद काले-काले बादलों से घिरता आकाश। बादलों की काली-काली छाया में काला-सा मुख लिए खड़ी चोटियों को देखता हुआ वह बरामदे में बैठ गया। दस दिन के अखबार के आखिरी पन्ने पर नजर दौड़ा रहा था कि वारस्यार कॉफी लेकर आई।

पहले शाम को सुभद्रा कॉफी लाती थी। खौलती कॉफी के कांसे के गिलास को बरामदे

के आधे रास्ते तक पहुंचते-पहुंचते वह नीचे रख देती। उसके फिर कोशिश करने से पहले ही जाकर गिलास उठा लेना पड़ता है। कॉफी इतनी गर्म होती कि फूंक-फूंककर ठंडी करके पीनी होती है।

अब वारस्यार ने खुद वह काम अपने सिर पर ले लिया है। अब उनको समय की कमी नहीं। दूध की कॉफी समुचित ठंडीकर बरामदे में रख दी। पानी भरा लोटा हटाकर राघवन नायर को देख वे हंसीं।

आज सावित्री वारस्यार गड्ढे में धंसी आंखों वाली, पीले चेहरे और दुबले-पतले शरीर वाली, मंदिर के आसरे पलने वाली नहीं रह गई है।

आंखों के नीचे जो कालापन था, दूर हो गया। पान से ओठ लाल हैं।

गायों के बाड़े के उस पार खिले गुलाब के फूलों से एक फूल तोड़कर जूड़े में लगाया। साफ धुले कपड़ों से आती बकुल के फूल की गंध।

कॉफी का गिलास वापस लेने के लिए वे वहीं खड़ी रहीं।

'अब, पानी कब तक बरसेगा?' स्वगत ही बोलीं।

'भंडार में धान तो है?'

'अब कौन अकाल है!'

'केवल हमारे लिए, है न?'

'फिर और किसका हमें ख्याल रखना है?'

'खुद का काम न जानने-समझने वाले लोगों का देश है न यह? भाग्य!'

'क्या?'

'अरे, ये अपना काम ही करना नहीं जानते।'

'पुंजा की कटाई तक ऐसे-वैसे चलेगा।'

'वही बहुत है।' छाए हुए बादल बिखरने लगे। आने वाले दिनों में बारिश की कोई संभावना नहीं। धूप फिर से निकल आई।...

अगले दिन भी जुताई का काम है। कुरुवा (धान की एक किस्म) की बुआई वाला खेत। चुंडली आया नहीं। हार मानता हूं मैं। इन लोगों की वजह से मैं बुरी तरह हार गया। जैसे सोचता हूं, वैसे हो नहीं पाता। आज मल्लन जल्दी आया तो चुंडली नहीं। कल चुंडली आया तो मल्लन नहीं।

अब उसे खोजकर ढूंढना होगा।

दोपहरी हो चली, अब सुबह कहां बची है?

धूप बिजली की तरह आंखों में पड़ रही है।

टीला चढ़ गया।

झोंपड़ियां सूनी पड़ी हैं।

धूल में खेल-कूद करते बच्चे। सिर से पांव तक सबका एक ही रंग।

करियन की झोंपड़ी के बरामदे में बैठकर एक बुढ़िया जमीन खोदकर बनाई हुई ओखली में धान कूट रही है। मूसल बार-बार खिसक जाता है।

वह अंदर सो रहा होगा।

आज उसे जरा डांटना है। आदमी को बेवकूफ बनाने की आखिर कोई सीमा होती है! आंगन में जाकर पैर जोर से फर्श पर पटककर आहट की। वही है। चूल्हे के सामने, बरामदे में लटकी बांस की टटिया की ओट में सिकुड़ा बैठा है।

पुष्कुनि की झोंपड़ी गिरा देने के बाद चुंडली फिर से करियन के साथ रहने लगा था। नई झोंपड़ी बनाने के लिए उसे भूसा देना होगा।

'भूख लगी है। काम नहीं कर पाऊंगा।'

'मारा वल्ली लेकर नहीं आई?'

उसकी आंखों में हैरानी।

'तुझे रोज काम नहीं' पर उसको तो है न। एक जून की कंजी का धान तो वह रोज लाती ही होगी। नहीं?'

उसकी आंखों में हैरानी बनी रही।

'तीन मानम वल्ली जो मारा लेकर आती है, उसका तू क्या करता है?'

'झाड़ू-बुहारी के काम के लिए वल्ली नहीं मिलती?' इस बार हैरानी की बारी चुंडली की न होकर राघवन नायर की थी।

सुबह से शाम तक काम करने के बाद वह क्या खाली हाथ ही लौटती है?

'कहां है मारा?'

'काम पर गई।'

उससे और क्या कहे? कुछ देर सोचता रहा। बिना उसे साथ लिए जुताई कैसे पूरी होगी?

पंद्रह मेड्डम (अप्रैल) तक खाद देने का काम पूरा कर लेना है।

मेड्डम माह की तीस तारीख तक जंगल में काम शुरू हो जाएगा। यहां की खेती का काम कुछ-कुछ पूरा हो ले, तभी ये लोग जंगल लकड़ी काटने जा सकते हैं।

लोहार को देने के लिए जो अठन्नी रखी थी, चुंडली को दे दी।

जा, 'मोयतीन की दुकान से' चाय पी आ। सेयतु के यहां जाने की मत सोचने लगना। नदी के उस पार अभी मत जा।'

उसने सिक्का लेकर आंखों में लगाया। माथे और सिर से लगाकर कसके पकड़ लिया। उरुवयल में मिले भोजन से भूख मिटाई थी, पिछले दिन, जब परसों खलिहान में काम था। तभी खाना नसीब हुआ था।'

हे ईश्वर!

ऐसे कितने दिन! कितने ऐसे लोग हैं! फिर काम कैसे करें? ताकत कहां से आए? आलस कैसे दूर हो?

रात, ऑक्टोपस की तरह मनुष्य का खून चूसने वाली ठंड थी। भयंकर गरीबी। बारिश के बाद साग-पात आदि की झाड़ियों में जो कल्ले फूटे थे, सब तोड़कर साफ कर दिए।

शाम को।

चुंडली को वल्ली दी। राघवन नायर आजकल वारस्यार से पूछता नहीं। भंडार-घर खोलकर खुद ले लेगा।

चुंडली को चार मानम वल्ली दी। यहां तीन मानम ही दिए जाते थे। एक मानम मैं ज्यादा देता हूं तो उतना काम भी करवाता हूं। चार मानम धान पीसकर चावल बनाने पर एक जून की कंजी हो जाएगी।

मारा को दो मानम। खेती के काम के लिए तीन मानम वल्ली दी जाती थी और घर के काम के लिए सिर्फ खाना। काम खेत के काम से अधिक है, फिर भी।

मैं एक नई शुरुआत कर रहा हूं।

तीन की जगह चार। जिसे वल्ली ही न मिलती थी उसे अब दो मानम।

झाड़ू-बुहार करने वाली के नाम से जिसे जाना जाए, उसे घर के सब काम करवाकर शाम को खाली हाथ लौटा दें? उसके लिए क्या दो मानम ज्यादा है? क्या यह स्थाई रहेगा?

मारा की वल्ली भंडार-घर में ही रखी। रसोई के काम करने वाली को जो कुछ देना है, घरवाली ही दे।

मारा, आंगन में मिट्टी की दीवार पर गोबर लगा रही है। धीरे-धीरे संध्या का साम्राज्य फैल रहा है। घाटियों में तो पहले ही उसका डेरा जम चुका है।

रात होने से पहले काम क्यों नहीं पूरा करती है यह?

आखिर कुछ दूरी पर है अरवनाषिकुन। अंधेरे में कैसे जाएगी?

'मारा, पूरा नहीं हुआ?' रसोई से आवाज आई।

'हां।'

'जाते समय गायों को सानी दे देना।'

'अच्छा।'

क्या वे ये भी नहीं सोच पातीं कि उसे अकेले टीला उतरकर नदी पार कर जाना है।? राघनव नायर ने सोचा।

यह घबराहट मुझे ही क्यों?

अंधेरा हो रहा है।

वह आंगन में टहलने लगा।

मिट्टी की दीवार पर लगे गोबर की गंध सब तरफ फैल आई है।

मारा ने काम खत्म किया। हाथ धोए। कमर में खुंसे आंचल से पोंछ लिए। धूल लगे कपड़ों पर ध्यान दिए बिना ही सीढ़ियां उतरने लगी।

'रुक, वल्ली ले जा—'

वह रुक गई। आंखों में अविश्वास था। हैरानी था।

जिस चीज की योग्यता नहीं, वह देकर फुसलाने वाले छोटे तम्पुरान लोगों में से कोई एक ही मुझे समझ रही है। उस भाव को अनदेखा किया।

'मारा खड़ी है। उसे वल्ली दे दें।'

'वल्ली? मारा को?'

'आज पूरे दिन वह गोबर से लिपाई में जुटी रही है। दो मानम दे दें।'

उन्होंने चुपचाप रसोई में जलते दीए को भंडार-घर के द्वार पर रख दिया।

पहले ही नपे रखे दो मानम धान बाहर कर दिया।

बरामदे में जल रहे दीपक को मारा के गालों पर सुंदर चित्र खींचते देख वारस्यार घबराई सी खड़ी रहीं।

बिना कुछ बोले हुए भी, खाली सूप लेकर अंदर जाते समय जैसे वे मारा के गंदे कपड़ों की शिकायत कर रही थीं।

'धूल-सने इन कपड़ों में ही सो जाएगी। गंदे लोगों के मुख पर जितनी भी श्री हो क्या, फर्क पड़ता है!'

'वे लोग हमारा घर साफ कर देते हैं, वही काफी है।' राघवन नायर ने कुछ कड़वाहट से ही कहा।

मन ही मन उसे हंसी आई। ये औरतें...

वह जब टीला उतरने लगी, तो पीछे गई। टार्च भी ले ली।

उसने नदी पार कर ली। इस पार से देखने पर अरवनाषिकुन्न की पहाड़ी पर काला मुंह लिए खड़ी झोंपड़ियों को स्पष्ट देख सकते हैं।

नदी का किनारा और बाद का रास्ता उतना अच्छा नहीं। चोरी-छिपे शराब का धंधा करने वाले माधवन के नौकर-चाकर वहां होंगे। दृष्टि मारा के पीछे गड़ी रही। उसे पता नहीं चला। वह बिना रुके दौड़ रही है। रसोई की खिड़की से दो काली आंखें उसे घूर रही हैं, इस बात पर राघवन नायर का ध्यान ही नहीं गया।

12

वल्लियूरकाव का उत्सव आज समाप्त हो रहा है। मीनम महीने की चौदहवीं तारीख। राघवन नायर ने जाने की तैयारी कर ली। नरिनिरङ्ङिमला के रास्ते से दस नाषिका (पंद्रह किलोमीटर) की दूरी तय करनी है। उत्सव शुरू होने के बाद हाथी वाले जंगल का मार्ग मनुष्यों का आम रास्ता बन जाता है।

सेयतु ने दो दिन पहले से ही तैयारी कर रखी थी। विक्री अच्छी होगी। पूरी तिरुनेल्लि घूम-फिरकर जितने भी केले मिल सकते थे, इकट्ठे कर लिए। एक बड़ा गड्ढा खोदकर पके, अनपके सभी केलों को धुआं लगाने के लिए रख दिया।

उसने एक दिन पहले ही शाम को विदा ले ली थी। अंतिम दिन के लिए यात्रा स्थगित करने पर केले पककर खराब हो जाने का भय है।

सेयतु चलते समय बोला, 'कल वल्लियूरकाव में मिलेंगे।

'हां।'

'यहां अकेले नहीं पड़ेंगे। सब लोग तो साथ होंगे।'

'सेयतु, तुम जाओ। अकेले ही आ जाऊंगा।'

'जंगल है।'

'हां, है तो।'

'यह भी मन में रखिए कि पहले कोई बात नहीं थी।'

'फिर आज क्या हुआ?'

'अब आप अकेले नहीं।'

'फिर?'

'अंबलकुन्न की देख-रेख भी करनी है न?'

वह हंसता है। हंसता रहे।

'बुरा न मानिएगा। मैंने तो ऐसे ही कहा।'

वह क्या सोच रहा है, इस ओर ध्यान ही नहीं दिया।

मल्लन को अगले साल की पेशगी दे देनी है। वरना कोई और दे देगा। कोई मनुष्य खरीदा न जाए—ऐसे सिद्धांत पर अड़े रहने का कोई लाभ नहीं। मल्लन नहीं हो तो मेरा दायां हाथ ही टूट जाएगा। सेयतु ने जो कहा, वह भी ठीक ही है।

सिर्फ अपने सिद्धांत को पालने से काम नहीं चलने वाला। खलिहान में बहुत कुछ ठीक करना है, मल्लन जैसे दो आसामी और दो जोड़ी बैल भी चाहिए।

कुरिच्चिन केलन की उम्र ढल गई है। वह भी इस बार आसामी की खोज में है। जीवन

में पहली बार जब उसने इस बारे में सोचा है, तब अच्छा ही आसामी ढूंढेगा। वह मल्लन के बिना और कोई नहीं होगा। उसके मिल जाने पर दो लोगों की वल्ली बचाई जा सकती है।

आज के दिन जमींदार लोग मुट्ठियों में पैसा भरे, आसामी तलाशते हैं। धान बेचकर या ठेके पर देकर काफी पैसा मिल चुका है। चारा खिलाए बिना तो मछली नहीं पकड़ी जाती।

जमींदार लोग एक साल के लिए मोल लिए जाने वाले आसामियों का हिसाब करते हैं। लगता है, यहां के किसानों का जीवन में अच्छी तरह सोच-समझकर किया जाने वाला बस यही गणित है। मनपंसद आसामियों पर नजर रखते हैं। कमर में रुपए बांध उत्सव की हाट में मंडराते रहते हैं।

'इसका दाम पंद्रह रुपया है। पैसा तो पूरा नहीं।'

अपनी घरवाली के लिए खरीदी साड़ी को आसामी निराशा के साथ लौटा देता है। उसी समय पूरी पेशगी अदा कर देता। आसामी संतुष्ट। दुकानदार को खुशी और जमींदार को तृप्ति।

दोपहर के पहले ही तिरुनेल्लि शून्य हो चली। खेतों में दाना चुगने वाले छोटे पक्षी इच्छानुसार उड़ते रहे। जानवर अहातों में घास चरते रहे। सूखकर दरारें पड़े खेतों में केंकड़े आंखें फाड़े आहार ढूंढते रहे।

सावित्री वारस्यार ने उत्सव का रहस्य बता दिया। कटाई के बाद ढाई सौ के धान के ठेके से सौ रुपया मिला। अब एक का ढाई सूद। उत्सव के एक दिन पहले पैसे की कीमत बढ़ जाती है।

चल पड़ा।

ओखली वाले कमरे में चटाई बुनते दामू वारियर काम पूरा करके नदी के घाट तक साथ आए। चटाई बुनने की घास जितने दिन की सोची थी, उससे पहले ही चुक जाएगी। जरा इकट्ठा रहे तो अच्छा। गीली भूमि की तलाश में वारियर निकले हैं। नदी सूख गई।

विदा ली।

'वारियर नहीं चलेंगे?'

'उंह, कितनी बार का देखा हुआ है।'

मनुष्यों का एक सागर। दोपहर की धूप में उस समुद्र में रंगों की लहरें जगमगा उठी हैं। मीनम की पहली तारीख तक जंगल से घिरी निर्जन पड़ी रहने वाली भूमि।

सदियों पहले, कोट्टियूर के मंदिर में दर्शन को गए दो भक्त वन में रास्ता भूलकर थके-हारे यहां पहुंच गए थे। उलझी लताओं की जटा बांधे एक वृक्ष के नीचे पड़कर सो गए। पता

नहीं कितनी देर तक सोते रहे। जंगली झरने से बहकर आता मलय-समीर।

जगने पर देखा कि सिरहाने गठरी के पास रखी तलवार गायब। आत्म-रक्षा की चीज खोने पर भय लगा। चारों ओर छान मारा। नहीं मिली। परेशानी बढ़ गई। हवा चली। पेड़ों के पत्ते खड़के। ऊपर की ओर नजर गई तो आंखें विस्मय से फैल गईं। पेड़ की उलझी लताओं में तलवार झूल रही है।

'देवी, महामाया, वल्ली ऊरम्मे (लताओं के घर की मां)— उन लोगों ने हृदय से प्रार्थना की। इसका फल मिला।

लता के साथ तलवार नीचे आ गई। उन लोगों ने उसी पेड़ के नीचे नदी से एक पत्थर लाकर स्थापित किया और पूजा की।

इस प्रकार जिस देवी ने लताओं से तलवार निकाल दी वहीं 'वल्लियूर अम्मा' के नाम से यहां विराजमान हैं। ऐसी किंवदंती है।

राघवन नायर ने सोचा, 'ठीक ही है। जंगल में फंसे इन लोगों के मनों को कहीं एक खुली जगह भी तो चाहिए।'

पांच पहाड़ जहां आपस में मिलते हैं, वहीं देवी का डेरा है।

खुली जगह। फैला मैदान विविध रंगों का एक समुद्र बन जाता है। मीनम महीने की पहली तारीख से लोगों का प्रवाह इस ओर शुरू हो जाता है। चौदह दिन तक यह ज्वार जारी रहता है। आज चौदहवां दिन है।

हजारों मनुष्यों की लहरों की ठाठें मारता समुद्र।

आकर्षक कागज की झंडियों और कपड़ों से सजी हाट। गली-गली में बवंडर की तरह चकराते फिरते आदमी।

राघवन नायर भौंचक्का रह गया पहले। कमर में टटोलकर देख लिया कि पैसे तो सुरक्षित हैं।

गुरुवायूर में वैशाख का उत्सव और त्रिशूर के पूरम का उत्सव देखा हुआ है। उसी तरह का जनारण्य है; इन पहाड़ियों, जंगलों के बीच इतने अधिक लोग रहते हैं?

फिर समझ में आया कि बाहर से, और शहरों से भी लोग आ जाते हैं।

जंगल के पानी की बाढ़ की तरह वे लोग वेग से बह आते हैं। साथ में माल भी आता है। कई आकार की पेटियां, गांठें और गठरियां। जंगल का रास्ता अच्छी सड़क जैसा हो जाता है। पीछे आने वाले लोग उस नए रास्ते पर गाड़ियां चलाते हैं।

दरार पड़े खेत पैरों तले कुचले जा रहे हैं। धूल का एक बहुत बड़ा तालाब सा दिखता है।

उस रात घना कोहरा गिर रहा था।

ओस और मिट्टी के आपस में मिलने से धूल के एक मायापूर्ण वृत्त की सृष्टि हो

रही है।

कोहरे के बीच से हाट की सैकड़ों बत्तियां तारों की तरह जगमगाती हैं।

ऊपर के कावु में ढोल बजना बंद हुआ। नीचे के कावु के चारों ओर बनाए गए मचानों के भीतर-बाहर बस भंवरें।

काले बुलबुले।

वे धूप में चमक उठते हैं।

चकराते हैं। अविराम घूमते हैं।

राघवन नायर जिज्ञासा के साथ लहरों को चीरता अंत में किनारे जा खड़ा हुआ। ओह, कैसी शक्ति! भीड़, कोलाहल, कानों को छेदने वाली आवाजें!

भीड़ के सागर में जहां सबसे बड़ी भंवर उठ रही है, वहां दावत का प्रबंध है। बढ़िया दावत!

मूपिल नायर की ओर से है। उत्सव के चौदहवें दिन की बढ़िया दावत। यह दावत सारी दिशाओं में बताएगी कि मूपिल नायर के नाम का यश अब भी बना हुआ है। ऐसा कोई जमींदार, आसामी या दुकानदार नहीं, जो आज के दिन यहां न आता हो। मुसलमान, चेट्टी लोग और कर्नाटक से आए लोग भी हैं।

मूपिल नायर की दावत शानदार होनी चाहिए। पहले के तेरहो दिनों की दावत को मात देनी है।

दावत बढ़िया ही चल रही है।

भीड़ में से दो सिपाही लहरों और भंवरों को चीरते मचान के भीतर घुस आए।

मिट्टी के दो छोटे-से टीले बने हैं।

पुलिस वालों ने लाठी से उन टीलों को जरा झटका दिया। पीले रंग की खेत की धूल उठी। दो-तीन बार और उसी प्रकार लाठी से झटक दिया तो मिट्टी का पर्दा टूटकर गिरा। गीली मिट्टी के टुकड़े। नीचे नए धान का भात।

राघवन नायर आश्चर्यचकित-सा खड़ा रहा।

मिट्टी से ढंके चावल के टीले।

'ऐसा क्यों है, रे?' एक पुलिस वाले ने पूछा। हाथ में पतीली लेकर मचान के भीतर खड़े एक नंबूदरी ब्राह्मण ने जवाब दिया :

'और क्या करें हुजूर?' उसने अनजाने भाव में ही हाथ दिखाए। जलने के कारण हथेली पर फफोले पड़ गए थे।

'यह मिट्टी ही दूसरों को खिलाता है?'

'अभी ही मांड़ हटाई है।'

'ढंककर नहीं रख सकते?'

'कैसे ढंकूं?'

पुलिस वाले ने ढेर से ऊपर लगी मिट्टी को लाठी से गिरा दिया। अब यथार्थ रंग प्रत्यक्ष हुआ। हजारों नजरें चावल के उस ढेर पर हैं।

'शुरू करो। अब और मिट्टी के गिरने के पहले ही।' पुलिस वाला बाहर आ गया।

परोसने वाले हजारों गलों की समवेत पुकार जैसी ऊंची आवाज में चिल्लाए—'बैठो, बैठो—'

धक्का-मुक्की, लात-घूंसे, गालियां, कोसने। उत्साहपूर्वक एक-दूसरे की खैरियत पूछने की हलचल। ऊपर-नीचे गिरते-पड़ते लोग। मचान के बाहर और भीतर सब तरफ कोलाहल।

खाने के लिए रखे गए केले के पत्तों पर मचान की छत से सूखे पत्ते झड़ पड़े। जो नहीं गिरे, वे हवा में झूलकर खड़-खड़ करने लगे। मचान के खंभे हिल-हिलकर गिरने के इंतजार में खड़े रहे।

बाहर दोपहर की धूप है। अंगारे बरस रहे हैं।

साल में एक बार मुफ्त मिलता चावल।

भोजन के अंतहीन लालच के रूप में साकार हुए मनुष्य। जो कुछ हाथ लगा, निगल लिया।

'ऐसा कोई न कहे कि काफी नहीं मिला। कहवाए भी नहीं।' मूपिल नायर का यह नियम है।

परोसने वाले थक गए।

चावल और साथ की चीजों के बीच किसी संबंध की कल्पना किए बिना ही जो कुछ पत्ते में गिरे उसे निगल जाते लोग, कोलाहल, प्रतीक्षा, चिल्लाहटें...अंतहीन हलचल जारी है। अनगिनत परोसने वाले घोष यात्रा की तरह अंतहीन पंक्तियों में रखे गए पत्तों पर पांव रखते चल रहे हैं। उनके पैरों के निशान पत्तों पर पड़-पड़कर मिटते रहे। उनके बदन से गंदी, काली पसीने की बूंदें पत्तों में गिरती रहीं।

यहां के बागानों के मालिक और जमींदार जितना धन इकट्ठा करते हैं, उसका एक कण मात्र ही इस दावत में खर्च होता है। बड़े-बड़े हिसाब दिखाकर वे लोग तृप्त भी हो जाते हैं।

'कनियांपुरत्तु नायर की दावत तो इससे भी अच्छी थी।' बातचीत का अंत डकार लेने से होता है।

'उत्सव का पहला दिन है न?'

'भीड़ भी कम होगी।'

'परसों दो तरह की उप्पेरी (चिप्स) थीं।'

'आज की दावत में तो कोई नहीं छूटा।'

'कवलधारा वालों ने तो इस साल नाम उजागर कर दिया।'

सुनते-सुनते परोसने वाले ऊब गए। वे अब आंखें चढ़ाने लगे।

मनुष्यों के बड़े-बड़े दल जिन्हें अभी खाने के लिए पत्ते नहीं मिले, खेतों में खड़े-खड़े बेचैन हो रहे हैं।

उनके भी पीछे जमींदारों की दावत पूरी होने की प्रतीक्षा में लालच के साथ कोसते हुए खड़े आसामी।

भोजन के लिए इतना बड़ा युद्ध जीवन में पहली बार देख रहा हूं।

मन ऊब गया। किसी तरह भीड़ से बचना चाहिए। प्रवाह में जैसे बहने लगा।

बाजार की गली में कैसे पहुंच पाया, पता नहीं। गला पत्थर की तरह हो रहा है।

परिचित चेहरे दिखते हैं। कुशल पूछने के पहले ही ओझल हो जाते हैं।

गली में भी बचत नहीं।

भोजन लेकर आए लोग, झूलते कड़ों वाले बर्तनों में, कड़ाहियों में, एल्युमिनियम के बर्तनों में—हर जगह चावल।

जूठन के पत्तों के ढेर और मनुष्यों की गंध खेतों में भर गई है। रास्ते भर गिरे पड़े चावल। जूठे पत्ते।

धूप ढल गई। बारिश के बाद जंगली नाले की बाढ़ की तरह लोगों का प्रवाह। कभी न रुकने वाला प्रवाह। खेत गायब-से हो गए। शाम को भी मनुष्यों का तांता कम नहीं हुआ। दावत की हलचल कुछ थमी। तोरण आदि गिर गए थे।

कोहरे और धूल के पर्दे ने सारे प्रदेश को ढंक लिया।

बाजार में लाउडस्पीकर लगातार चिल्लाता रहा। उसकी तुलना में मनुष्यों के महासमुद्र का शोर बहुत छोटा जान पड़ा।

ऊपर के कावु (मंदिर) में बड़े बर्तन में रखी खीर खत्म हो गई थी।

शाम की पूजा हो चुकी। राघवन नायर आंगन में लगे बरगद के चबूतरे पर बैठ उस हलचल और धक्का-मुक्की को नीचे के कावु की ओर और वहां से बाजार की ओर जाते हुए देखता रहा।

कावु की ओर से सबका ध्यान हट गया था। जूठन के बीच देवी मौन बैठी रही। सभी लोग बाजार में। कुछ भक्त फिर से कावु में आ जाते। दर्शन करके फिर चले जाते। बहुतेरे ऐसे जो अधिक खाने के कारण आराम की खोज में आए थे। वे मंदिर के सामने और चबूतरों पर चटाई बिछाकर लेट गए।

बाजार कोलाहल का केंद्र-बिंदु है।

दुकानों में भटकते लोगों का समूह।

वह भी बाजार की ओर चला।

जिन लोगों की खोज है, कैसे पाऊं उन्हें? हरेक समूह में ढूंढा। मल्लन और चुंडली, कोई भी न दिखा। पूरे इलाके भर के आसामी हैं। दल से अलग न होने की कोशिश में ठीक सामने चलने वाले का कपड़ा पकड़े— मनुष्यों की शृंखलाएं। रंग-बिरंगी हिलती शृंखलाएं। कोई भी कड़ी परिचित नहीं।

पुरुष-स्त्रियां—सभी दुकानों पर दृष्टि फेंकते चल रहे हैं।

सुंदर साड़ियां, कपड़े, कुर्ते, सुनहले रंग के बालों में गूंथने वाले फूल, चमकती चूड़ियां, दर्पण, एल्मुनियम के बर्तन...

आशा जगी, अगर सेयतु मिल जाता। वह आज बोरी भर तरबूज लेकर आया है।

लगा कि ढूंढना बेकार है।

ऐसे ही चलता रहा।

परिचितों से बात करने की कोशिश बेकार जाती है। हंसा, पर आधे रास्ते में ही हंसी रुक गई। वे बिना देखे गुजर जाते हैं। शेष बची हंसी पीछे आने वालों के लिए। यहां कुशल-क्षेम का कोई स्थान नहीं।

आखिर में बोर्ड देखकर पहचान लिया। चाय की मेज के ऊपर सफेद चूने से लिखा हुआ था—बस आठ आने।

तिरुनेल्लि के घाट पर खाली पड़ी भूमि में बोए गए तरबूज। एक का आठ आना मिले तो फायदा ही है।

लकड़ी के तख्त पर बिछे तरबूजों में लाल चाशनी, सेयतु बैठकर लगा रहा था।

'बस आठ आने' के ऊपर यह भी जोड़ दिया था कि 'एक टुकड़े के लिए'।

कटते-कटते खत्म हो जाता है।

एक तरबूज के बीस-बीस टुकड़े।

ऊपर आधी चम्मच चाशनी।

उस मिठास के कारण मक्खियों की तरह मनुष्य उन्हें ढंक लेते हैं।

मिठाई के हाट की भीड़ सबसे आश्चर्यजनक है।

बिक्री की बातों से अपना ध्यान हटाने के लिए वह बोला :

'इस बार के उत्सव में चार हाथी हैं।

'मूप्पिल नायर की ओर से एक हाथी है, एक दांत वाला।'

बिक्री भी लगातार चलती रही। उसकी पैसे वाली थैली पूरी भर गई थी। खादी के कपड़े से सिली हुई थैली। आसामी औरतों की थैली की तरह।

सेयतु की बातें उत्सव के मैदान की गूंज में द्रवीभूत हो गईं। ढोल बजना शुरू हो गया था। सामने से बहते जनसमूह को राघवन नायर देखते रहे।

कई लोग दिखे।

पर मल्लन कहीं नहीं।

कपड़े में खुंसा नोट अपनी जगह पर ही है न?

इस जन-समुद्र में रेत के एक विशेष कण को ढूंढने की मैं मूर्खता कर रहा हूं।

जहां सर्कस, नाचने वाले और साइकिल पर करतब दिखाने वालों का डेरा है, उसी गली में खोजना शुरू किया।

लाउडस्पीकर की प्रतिध्वनि। पास खड़े होकर भी बात करना मुश्किल। इशारों से एक-दूसरे को समझा सकते हैं। विज्ञापनों की स्पर्धा।

'रेशमी और ऊनी कपड़े धोने के लिए...'

किससे कहा जा रहा है? साल भर में एक बार वल्लियूरकाव से एक मात्र कपड़े धोए या अनधोए ही लेकर आने वाले आसामियों से?

खेत के कीचड़ के दाग न छूटने वाली धोती पहनने वाले जमींदारों से? मानंतवाडी की यह वाशिंग कम्पनी किसको यह संदेश दे रही है?

'पूरी दुनिया घूम-फिरकर आई सरकस कम्पनी...'

'विशिष्ट पकवान खाइए...'

'सुंदर गहने पहनिए...'

'हमेशा बनी रहने वाली एल्मुनियम के...'

'...का नाच....'

पुरुष-स्त्रियां लाउडस्पीकर के सामने मुंह फाड़े खड़े ध्यान से सुन रहे हैं। साल भर में एक ही बार दिखाई पड़ने वाली माया-नगरी।

चुंडली—वह जाता है। रुक रहा है। बुलाया। पर कौन सुनता है? क्षण भर में गायब हो गया।

इस गली में मचे प्रलय के बीच एक सूखे पत्ते को ढूंढने की कोशिश करने वाला मूर्ख हूं मैं।

भीड़ से मुक्ति चाहिए। खुलकर सांस लेने के लिए, हाथ-पांव सीधे करके चल पाने के लिए हाट की गलियों के पीछे की तरफ चलना शुरू किया।

वहां एक अनदेखा संसार।

दुकानों के पीछे आसामी, पुरुष-स्त्रियां, गोलाई में बैठकर चना चबाते बातें कर रहे हैं। तेल से चिकने काले-गोरे चेहरे।

सुंदर, सस्ती साड़ियां।

जिसको नई साड़ी मिली है, वह तुरंत बदलने के लिए आड़ में जाती है।

अक्लमंद दुकानदार गली के दीयों और लाउडस्पीकर का मोह तज, मिट्टी के तेल वाला लैंप जलाए टोकरियों और बोरियों में भरा माल लेकर पीछे की ओर आते हैं।

सच्ची बिक्री यहां ही है।

टोकरियां और बोरियां क्षण भर में खाली हो जाती हैं। छोटे-छोटे टुकड़े भी खत्म हो जाते हैं।

चुंडली मल्लन के साथ ऐसे ही एक समूह में बैठा था। मारा, पेम्बी, वट्टा और अरवनाषि़कुन्न की दूसरी सभी औरतें भी हैं।

'अव्वा, तुझे साड़ी नहीं चाहिए?' चुंडली बोला।

वे एक साथ उठे।

कपड़े बेचने वाले को ढूंढने के लिए।

यही मौका है। कमर में खुंसी नोटों की गड्डी। उधार का पैसा।

'इस साल रेशमी कपड़े कुछ नहीं?'

मोटा, बौना तमिल दुकानदार घास की चटाई पर मक्के से भरी बोरी की तरह लुढ़का-सा वैठा हुआ है।

''यह?''

'कन्नूर से आई उत्तर की साड़ी। दाम कुछ ज्यादा लगेगा।'

उसने साड़ी के छोर को नीचे चटाई पर झटक दिया।

मर्द लोग दुकान के सामने धूल में गली के किनारे आधी गोलाई में बैठ गए।

चुंडली ने एक लाल साड़ी उठाई।

अब कमर में बंधे नोट बाहर निकाले जा सकते हैं। निकाल लिए।

'पैंतीस रुपए।' तमिल दुकानदार पूरे दांत निकालकर बोला। राघवन नायर चौंक गया, पर खरीदने वाला नहीं।

चुंडली ने आड़ में जाकर थैली खींची। नोट गिने। आड़े हाथों तमिल दुकानदार को सौंप दिए।

दुकानदार ने गिनकर देखा।

'चौदह रुपए। फू!' चुंडली चुपचाप झेंपकर खड़ा रहा।

'इतने वाली ही चाहिए।' चुंडली ने कहा।

पंद्रह रुपए तक ही काफी है।

यही अवसर है।

'तू साड़ी खरीद ले रे!'

चुंडली ने मुड़कर देखा। आश्चर्य, आश्वासन, संतोष। कितने मुषम* की है?

'बारह।'

---

* एक मुषम–दो बीते

'बारह?'

'देखोगे?'

उसने कपड़ा नापने का गज उठाया।

एक...दो...तीन...दस...ग्यारह...बारह।

राघवन नायर ने ध्यान से देखा। दस पर पहुंचते ही साड़ी की लंबाई खत्म। ग्यारह और बारह चौड़ाई है। अच्छा फायदा है।

पेंबी को विश्वास नहीं हुआ। वहीं खड़े होकर, साड़ी की चार तहें बनाकर शरीर पर डाल कर देखा। बारह तो नहीं हैं। शंका भरी अनेक दृष्टियां दुकानदार की ओर उठीं।

उसने एक और उठाई।

नापा।

एक..दो...तीन... सत्रह रुपए। दस मुषम की है।

पेम्बी का बहुत पहले का सपना है— बीस रुपए वाली साड़ी। सत्रह वाली से सपना कैसे पूरा होगा?

लंबाई कुछ कम है तो कम ही सही। उसने बारह मुषम तक तो नापा था।

उसने पहले वाली साड़ी ही ली। मारा की आंखें चमक उठीं।

उसे छोड़ देने का पेम्बी का मन नहीं करता। अच्छा रंग। खूब चौड़ी। अच्छा किनारा। कैसी चमक है! खाली वही एक खरीद ली।

अपने लिए या बेटी के लिए? उसने बेटी के चेहरे के भाव पर ध्यान दिया। चुंडली और मल्लन पर बारी-बारी से नजर दौड़ाई।

एक साड़ी और खरीदनी है। मर्दों को गहरे रंग के कुर्ते चाहिए।

पत्थर की मालाएं, चूड़ियां, जूड़े के क्लिप और अंगूठियां चाहिए, पर पैसा कहां है?

मल्लन ने मुड़कर देखा। उसकी दृष्टि में याचना का भाव है न? अगले साल भी गुलाम बनकर मजदूरी करूंगा—ऐसा ही भाव उसके चेहरे पर उठा।

कमर में जो तीस रुपए बचे थे, मल्लन को दे दिए। वहां से पलट पड़ा। कितनी आसानी से मैंने दो लोगों को मोल ले लिया, यह सोचकर आश्चर्य हुआ। यह होशियारी कहां से आई? इस इलाके ने सिखा दिया? आजादी से जहां मनुष्य अपना जीवन न बिता पाए यह ऐसा प्रदेश है?

सरकस के तंबू के आगे तब भी अंतहीन पंक्ति; जंगल के निवासियों को, पिंजरे में बंद बंदरों, जंगली मुर्गों और जंगली बकरी को देखने का कुतूहल!

लोगों का कोलाहल और लाउडस्पीकर की चिल्लाहट सुनकर तंबू के भीतर जानवर गुर्राते रहे।

रात ओस से भिगती रही। मनुष्यों के शरीर से ऊष्मा उठते रहे।

बाजार की गली नदी के घाट पर खत्म होती है। माल लेकर आती गाड़ियों और लोगों के आने-जाने के लिए नाले के आर-पार लकड़ी के लट्ठे रख दिए गए हैं। नीचे जाकर नाला नदी से मिल जाता है।

ठंडी हवा। शरीर में रोमांच-सा हुआ। मंदिर, बाजार और गलियां रात की अनंतता में द्वीपों में बदल जाते हैं। दूर से देखने पर लगता है कि एक नया संसार है। आवाजों की दुनिया। रोशनी और कोलाहल की दुनिया।

अंधेरे में, खेत के उस पार, जहां सड़क खत्म होती है, वहां रात की आंखों-सी जगमगाती रोशनी। अकेली पड़ी एक दुकान। चाय की दुकान होगी। कुछ खाए बिना घंटों बीत गए।

क्रम से एक के ऊपर एक करके रखे बलुआ पर टिके लकड़ी के तख्त, कम चौड़ाई की बेंच। उस पर ढेरों लोग बैठे हैं। बैठने वाले, खड़े रहने वाले और प्रतीक्षा करने वाले।

केलों के गुच्छे, अभी हरा रंग दूर नहीं हुआ है, बांस के खंभों में लटक रहे हैं। मचान पर बिछी डालियों के सूखे पत्ते हवा से बातें कर रहे हैं। ओस की छोटी-छोटी बूंदें उनके बीच से गिर पड़ती हैं।

सिर पर गिरी बूंदों को हाथ से पोंछकर एक खाली कोने में जाकर खड़ा रहा।

केले के पत्तों में अधपके पुट्ट खाते लोग। काली चाय और कॉफी। धान और कंकड़ भरा चिवड़ा।...

एक कोने में बिना कटे कच्चे नारियल।

अपने क्षेत्र से आए उन अतिथियों को देखकर मन रोमांचित हो उठा। मुंह में पानी भर आया। उबलती कॉफी का बर्तन चूल्हे से उतारते हुए दुकानदार कोया लड़के से बोला : 'देवी की घोषयात्रा ऊपर के कावु से निकलने जा रही है। एक बर्तन पानी चूल्हे पर और चढ़ा दे।'

लड़के ने घड़े से कॉफी के बर्तन में पानी उंड़ेल दिया। छाछ के रंग जैसा पानी। खेत के गड्ढे से ले आया सफेद, गाढ़ा, गंदा पानी।

उलटी-सी होने को हुई।

पुट्ट और चिवड़ा खाने वालों के मुंह से कंकड़ कटकटाने की गंदी आवाज आती है।

कच्चा नारियल ठीक रहेगा। एक दिन की कड़ी धूप सहकर, बस के ऊपर लदकर घाटियों से पहुंचे कच्चे नारियल। फीका पानी। प्यास नहीं बुझी। एक और। गला सूखा ही बना रहा।

डेढ़ रुपया गिनकर दिया। वहां से निकला। आए हैं तो घोषयात्रा भी देख लें। फिर से भीड़ के प्रवाह में। महासमुद्र में एक बूंद।

13

आधी रात बीत गई। सजा-धजा जोर-जोर से हंस रहा बाजार कुछ थक गया। घोष यात्रा समाप्त हो गई। उत्साह मंद हो गया। निद्रा और उत्साह की कमी की मंत्र-शक्ति ने चेतना को बहुत कुछ शिथिल कर दिया।

खरीदी चीजों के ढेर को छाती से लगाए, सिर पर ढोते वे लोग सोने की जगह ढूंढते चले। कपड़े, साड़ियां, मालाएं, बालों में गूंथने के फूल, थालियां, शीशी लगे डिब्बे, टिन के दीए, कागज के फूल, प्लास्टिक के गुड्डे, चाकू, सुंदर रंगीन थैलियां बाजार में जो कुछ था सब, मिली पेशगी की रकम खत्म होने तक खरीद लिया।

उन निधियों को छाती से लगाकर वे सो गए। एक साल की प्रतीक्षा की व्याकुलता के समाप्त हो जाने के बाद आलसी मन सब भूलकर विश्राम करने लगा। अब तीन सौ चौंसठ लंबे दिन। भूख, मेहनत, गरीबी और गंदगी के दिन। यह सब याद करके वे जरा भी दुखी नहीं हैं फिलहाल।

बाजार की बत्तियां नींद से बोझिल अपनी आंखें झपकती रहीं। कुछ की आंखें बंद ही हो गईं। विस्तृत खेतों के बीच के अंधकार में सितारों के समान शेष बत्तियां चमक रही हैं। एक दिन टिमटिमाने के बाद नष्ट हो जाने वाले तारे।

बहुत-से लोग तब भी बाजार में भटक रहे थे। संध्या समय का महासमुद्र अब सूख गया है। रुकी पड़ी छोटी-छोटी धाराओं से समूह—द्वीप!

चलते-चलते सोने वाले!

नींद न आने के कारण चलने वाले!

इच्छानुसार न पा सकने वालों की संख्या बहुत कम थी।

युवक जिनको बार-बार देखने पर भी तृप्ति नहीं, वैसा अद्भुत संसार।

कहीं भी वे चैन से नहीं बैठे। सरकस तब भी चल रहा था। सामने हो रही धक्का-मुक्की सहते रहे। तंबू के भीतर से आ रही जानवरों की गुर्राहटें।

खूब ऊंचे, बांस के स्टेज पर रंग-बिरंगे कपड़े पहने, रंगे चेहरे और भूरे बाल वाली नाचती हुई औरतों को वे आश्चर्य और आदर के साथ आंखें फाड़े देखते रहे। नीचे की धूल भरी गली में निकृष्ट जीव बनकर खड़े रहे। नगर रूपी मंदिर से आई स्त्रियां! अपने मचान-नृत्य से भी कितना विचित्र है यह नाच!

दुकानों के पीछे ठंड में सुन्न पड़े खेतों की धूल भरी छाती में शिशुओं के समान सोने वाले—

मंदिर से आती ढोलों की थकी थाप।

भूरे आकाश को चुपचाप ताकती मारा पड़ी रही। अप्पा और अव्वा दोनों ओर पड़े सो रहे हैं। उनके बिना रुके खर्राटे।

पास ही गठरियां रखी हैं।

मल्लन के हाथ से मिली साड़ी। वह पुलकित हो गई।

विश्वास नहीं आता। मल्लन ने अपनी पेशगी की रकम से मुझे साड़ी खरीद दी है। किसलिए? कुरुमाटी को भी दी होगी। भीतर जो फूल खिला था तुरंत झुलस गया।

दृढ़, गोल-गोल, लंबे बदन और चौड़े कंधे वाले इस जवान को उसने भूलने की कोशिश की। सो रहे अप्पा के चेहरे पर नजर टिकाए पड़ी रही।

अप्पा आज इतने खुश क्यों हैं?

भीतर एक नया जागरण!

सच!

साड़ी के नएपन की गंध का आस्वादन करती हुई वह भूरे आकाश के तारों को देखती रही। उसे लगा कि नंगे कंधों पर खेत की धूल से सूक्ष्म जीव रेंग रहे हैं।

उठ बैठी।

बांह से घिरी साड़ी का अगला हिस्सा खींचकर कंधे ढंक लिए। अप्पा ने एक रुपया की जो पुरानी बोरी खरीदी थी, उसे पिंडलियों पर,बदन पर डाल लिया।

ठंड नसों में घुस रही है। वह उठ बैठी। नई साड़ी को छाती से लगा लिया। उसके पीले रंग के चमकते किनारे पर ओंठ दबा दिए। रोशनी के अभाव में काली-सी दिखती साड़ी के यथार्थ लाल रंग को एक बार और देखने की इच्छा जगी।

वह उठ बैठी।

गली की दुकानों के सामने से जाती पतली भीड़ में कहीं मल्लन होगा। बाजार के पीछे, इधर-उधर अबोध पड़े सोने वालों में निश्चय ही नहीं है।

बाजार की तरह युवकों को भी नींद नहीं है। वे बाजार के साथी बनकर थकी आंखें मूंदे बिना, साल भर में बस एक बार आडंबर से आते उस मित्र के साथ सुबह तक बैठे रहे।

प्रभात विरह के दुख के साथ आता है। अब अगली मीनम की चौदहवीं को।

दुकानदार बार-बार बंद होती पलकों को खोलने की कोशिश करते हुए बाकी बचे माल को गांठों में बांधते हैं। उत्सव के टूटे पंखों को सहानुभूति के साथ देखते हुए लोग इधर-उधर सिकुड़े खड़े हैं।

अपनी भी आशा का पंख टूटने जा रहा है।

गली से अकेले निकलकर आती आकृतियां। खेत के मैदान में सोने वालों के बीच से धीरे-धीरे उठती एक स्त्री की आकृति। जोड़े। वे अंधेरे में लुप्त हो जाते हैं, जहां गली

की आंखें नहीं पहुंच पातीं। खेत के मैदान से अंधेरे की ओर बढ़ते ऐसे अनेक जोड़े। वह निराशा के साथ प्रतीक्षा करती रही।

लो, यह रात अभी खत्म हो जाएगी।

स्वतंत्रता की एकमात्र रात।

मल्लन कहां है?

एक बार मिलना है।

मिल ही लेना है।

सुबह होने को है। नींद से मुंदती आंखों और सूजे चेहरे, आजादी बेचकर खरीदी कुछ गांठें लेकर वापसी हुई है। काट्टिकुलम, नरिनिरङ्गि और कुतिरकोड पार कर सरकते-सरकते-से दोपहर ढले तिरुनेल्लि में अपने-अपने नीड़ों में वापसी।

दोनों ओर अप्पा और अव्वा खरटि भर रहे हैं। थोड़ी ईर्ष्या के साथ उसने उन दोनों को देखा। अव्वा नई साड़ी से बदन ढके सो रही है। उसके बालों में चमकती क्लिपें।

फिर आंखों के सामने अकेले और जोड़े में आती परछाइयां। जिसका इंतजार है, वही तो नहीं।

आंखें थक गईं। उसे लगा, देखते ही देखते गली शून्य हो गई है।

मंदिर से आते ढोल की आवाज सिसकी जैसी लग रही है।

देवी के स्नान का समय निकट है।

फिर से भीड़। आखिरी बार का शोर। अब मल्लन से मिल नहीं पाऊंगी।

प्रतीक्षा में बैठी रही। निराशा बढ़ती गई। मोहभंग नींद के रूप में आकर उसे पराजित करने की प्रतीक्षा में खड़ा रहा। लेटने का मन नहीं किया।

आएगा। आए बिना वह रह नहीं सकता।

लाउडस्पीकरों का गला बैठ गया था।

थक जाने पर भी अविराम धड़कती गली की नाड़ियां।

फिर से परछाइयां।

हाथ में हाथ गूंथे, कमर में हाथ डाले वे दूर निकल जाती हैं। पुरुष अपनी स्त्री को चूड़ियां, क्लिपें और पत्थर की मालाएं भेंट करेगा। जेब का आखिरी पैसा भी दुकानदार के पास चला जाएगा।

यहां मैं खरटि सुनती पड़ी हूं, आकाश ताक रही हूं।

अंत में...!

उसे यकीन नहीं पड़ा।

जल्दी से उठी। जैसे अचेतन स्थिति में दो कदम आगे रखे।

सामने मल्लन ही खड़ा है।

अंधेरे में उसकी आंखें अंजनकल्ल* की तरह चमक उठीं। साड़ी का आंचल कंधों से गिर गया।

उसकी दृढ़ बांहें उसके गले में, नग्न कंधों पर, छाती को घेरे साड़ी के किनारे पर...

अंजनकल्ल पर सूर्य की किरण के समान चमकती उसकी आंखों में उसकी दृष्टि गड़ी रही। एक क्षण उसने सिर झुका लिया।

'चूड़ियां पहनेगी न, मा?' बावली की मर्मर ध्वनि-सा चिरपरिचित उसका स्वर लगा।

'चूड़ियां चाहिए। चाहिए! चाहिए!'

आवाज बाहर नहीं आई। ओठ हिलकर रह गए।

'तो आ।'

उसने उसका कोमल दुबला हाथ पकड़ लिया।

वह चौंक पड़ी।

छिपी पड़ी परछाइयों में कहीं कुरुमाटी होगी? तीर की तरह बींध देती उसकी दृष्टि पीछा करेगी?

चार कदम ही चली थी कि आगे हिल न सकी।

'क्या हुआ, मा?'

बताने को शब्द नहीं मिले।

कुरुमाटी देख ले तो क्या?

वह चात्तन की पत्नी है। यह रात कन्याओं के लिए–

उसने कोशिश की कि मल्लन की दृढ़ मुट्ठी में उसकी उंगलियां कांप न उठें। गली में पहुंच गए। भीड़ में छिपा जा सकता है। भीड़ की आड़। इस विचार ने उसमें उत्साह भर दिया। भीड़ से भरी गली।

देवी स्नान के पहले की घोष यात्रा दाएं-बाएं मुड़ने भी न देती। मनुष्यों की लहरों के बीच सिर्फ मैं और मल्लन था।

उंगलियां परस्पर कसकर पकड़ लीं। उसे लगा कि हृदय से घने अंधेरे के अनंत टुकड़े एक साथ उड़ते हैं, फिर चकराकर बवंडर बनकर नीचे आते हैं और फिर से उड़ जाते हैं। एक शिशु की तरह वह असमंजस में पड़ी रही। लोगों के बीच खुद को सहारा देकर आगे ले चलने वाली वही दृढ़ मुट्ठी दिखाई पड़ती है।

प्रवाह में एक तिनके की तरह वह भी विलीन हो गई। बह चली।

आखिरकार बाजार के अंत में एक दुकान के सामने रुके।

घोष यात्रा देखने जाने वालों की पंक्ति दाईं ओर घाट की ओर मुड़ गई।

---

*एक चमकने वाली शिला।

लहरों से मुक्ति मिली।

कागज में बंधी क्रम से रखी चूड़ियां... चूड़ियां...चूड़ियां।

रंगों की, रोशनी की दुनिया। आंखों में चौंध हुई। एक मायावी गोला है। मैं उसमें फंस गई हूं।

सुंदर चूड़ियों के घेरे में, आग से जल गए कागभगोड़े की तरह घुटने टेककर मुसलमान दुकानदार बैठा हुआ है। मुंहासे भरे उस चेहरे की ओर देखने में उसे डर लगा। उसकी खुरदरी मुट्ठी में चूड़ियां पहनने के लिए छोटी बत्तख की तरह उसकी हथेलियां सिमटकर पड़ी रहीं।

पीतल की चूड़ियां। काली, लाल, पीली— पत्थर की चूड़ियां। बीच-बीच में मोती। अंत में एक मोटा सुनहला कंगन। हाथ चूड़ियों से भर गए। अपने सामने वाका* की एक डाली झूल रही है। मल्लन उसे एकटक देखता रहा। उसकी आंखें चमक उठीं। एक बारीक मीठी हंसी उसके ओठों पर ठहरी रही।

हाथ में हाथ डालकर चले।

चलते-चलते गली बढ़ जाती है। बरगद के चबूतरे से एक पगडंडी ऊपर के कावु की ओर जाती है।

सड़क आगे बढ़ी। पशुओं की हाट।

मालाओं की दुकान के सामने रुके।

'माला चाहिए?'

'हां।'

'कौन-सी?'

'कोई भी।' दुकानदार की उंगलियों में अनेक रंग बदल-बदलकर आए। कौन-सी खरीदे? पसंद की कोई भी खरीदने को मल्लन तैयार है।

जिन-जिन चीजों पर उसकी आंखें रुकीं, सब उसने खरीद लीं।

दुकानदार बोला, 'चौदह रुपए।'

वह चौंक पड़ी।

किसी प्रकार बिना उद्वेग के मल्लन ने बचे नोट दुकानदार के सामने तख्त पर रख दिए।

उसने नोट गिने। 'सत्रह हैं ये।' उसने एक विशेष प्रकार की पत्थर की माला घुमाई। उड़ती हुई तितलियां।

उसकी आंखों में खिले आश्चर्य को देखकर उसने कहा, 'बाकी की माला।'

---

* वाका—लाल फूलों वाला एक पेड़

इसी तरह एक लाल पत्थर की माला भी खरीदी गई। सत्रह रुपए पूरे करके वे आगे बढ़े।

'शर्बत पिओगी?'

'हां।'

अपने गांव वाले सेयतु को ढूंढने आगे बढ़ा। दो रुपया उधार लेना है। पहले ही ले लेने चाहिए थे। बाद में सेयतु के लिए दस गांठ लकड़ी पहुंचा दूंगा। बस तिरुनेल्लि पहुंच जाऊं।

तरबूज काटकर रखे हुए मेज से तब भी पानी टपक रहा था।

पेट्रोमैक्स की रोशनी धुंधली पड़ गई थी।

पास गया—

गोरे तम्पुरान।

पेटी पर बैठे पान चबा रहे हैं। पचास रुपए दिए थे। अंधेरे की ओर जरा खिसका। नहीं, देख लिया है।

उसको असमंजस में खड़े देख राघवन नायर ने पूछा, 'जेब खाली हो गई क्या?'

कुछ नहीं बोला। मारा उसकी आड़ में खड़ी रही। उस छाया को देखकर गोरे तम्पुरान के मुख पर हंसी आई।

'ओहो—मारा है। अच्छा हुआ।'

वह एक शर्मीली लड़की में बदल गया। सिर झुकाया। दांतों से नाखून काटने लगा।

राघवन नायर जब थूकने के लिए बाहर गए तब उसने बात बताई।

'जरा रुको! पहले जरा मैं यहां का हिसाब देख लूं।'

मेज पर रखी चीजें खत्म हो गई थीं। उसका मन निराश हो गया।

मारा की ओर देखने में उसे लज्जा लगी। कैसी शर्म की बात है! शरबत पिलाने का वादा करके लाया था—

सिक्कों की माला के बिना और कितनी भी चीजें हो तो क्या— साड़ी, माला, चूड़ियां—कुछ भी काफी नहीं। मंगलसूत्र के लिए मंगलसूत्र ही चाहिए। उसकी सहेलियां हंसी उड़ाएंगी—

'वल्ली और कोल* लाते समय मल्लन सिक्के वाला मंगलसूत्र नहीं लाएगा?'

वह क्या जवाब देगी?

उसके गोरे गोल-गोल गले में काली पत्थर की माला में गुंथा सिक्कों का मंगलसूत्र कितना सुंदर लगेगा!

---

*लकड़ी का गट्ठर

गोरे तम्पुरान के सामने सेयतु से पैसा मांगने में उसे डर लगा। सबकी लगाम पकड़ लेने जैसा कुछ उस दृष्टि में है। उन पतले ओठों पर है। लंबी, टेढ़ी बीच में मोटी भौंहों पर है।

'कहता है, पांच रुपए चाहिए।' सेयतु।

'किसलिए रे?' पुराने स्थान पर आ बैठते हुए राघवन नायर ने पूछा।'

'इससे शादी करेगा।'

'सिक्के का मंगलसूत्र...'

'किसे? इसको?' मारा डर से कांप उठी। अंधेरे की ओट से गोरे तम्पुरान के मुख की ओर उसने कनखियों से देखा।

'पांच रुपए चाहिए एक मंगलसूत्र के लिए?'

'क्या पता!'

'बस एक रुपए का, बाकी चार रुपए बंधवाने के लिए। ऐसे पांच! ह! ह! ह...'

वह आश्चर्यचकित खड़ा रहा।

'इधर आ।'

वह गया। इसकी आशा नहीं थी। राघवन नायर की लंबी छाया के पीछे वे दबे पांव चले। एक दुकान के सामने जा खड़े हुए।

दुकानदार ने मंगलसूत्र उठाकर दिखाया। एक रुपए का चमकता सिक्का। दोनों ओर गुंथे काले मोती। सुंदर काम हुआ है, राघवन नायर को भी लगा।

'मैं—जिसने जीवन में एक बार भी गहना खरीदने को नहीं सोचा।'

कमर से तीन रुपए निकालकर दे दिए।

मारा की भौंहों के नीचे आंखें अंजनकल्ल की तरह चमक उठीं।

उनको घाट की सड़क पर जाते देख राघवन नायर ने हिसाब लगाया। मल्लन और उसकी स्त्री मारा एक साथ चार लोगों का काम कर लेंगे। जिस शाखा को मैंने पकड़ा, उसमें जितना सोचा था उससे भी ज्यादा बल है।

मंदिर की ओर...

मल्लन का उछलने का मन हुआ। चामुंडी आज मेरे पक्ष में है। जब क्रोध करेंगे तो सभी देवता एक साथ। खुश होने के समय भी यही बात रहती है।

पशुओं का बाजार लगभग खाली हो गया। सड़े फूस और पशुओं के मल-मूत्र की गंध शेष बची है।

कुछ बैल जिनके मालिक अभी नहीं गए, जुगाली करते हुए प्रतीक्षा कर रहे थे।

बिलकुल निर्जन। चांदनी में खींचे गए एक काले चित्र-सा नदी का घाट। पशुओं के गले की घंटियों की टन-टन। नदी की मर्मर ध्वनि। नदी के किनारे आट्टुवंजी के पौधों

का रहस्य भरा वार्तालाप। कोलाहल, बाजार और उत्सव दूर...

उसके भीतर संगीत गूंज उठा। तनकर कसे गए तार।

दूर-दूर नदी के घाट पर परछाइयां हिलती हैं। फैला हुआ आम का एक बड़ा पेड़। पत्तों का समूह, एक अति विस्तृत काली छतरी-सा। नीचे चट्टान। चारों ओर झाड़ियां जिनके पास जाने में संकोच होता है।

घाट पर मेंढक ढोल का नाद और लोगों की आवाजें सुनकर लगातार टर्राते रहे। जलमुर्गियां जागकर चिल्लाईं। जोंकें किलक उठीं। ठंड में अकेली पड़ी चिड़िया आम के पेड़ पर चहचहा उठीं।

उन्होंने कुछ भी नहीं सुना। एक अव्यक्त संगीत धारा। उसके नशे में वे डूबे गए। खुमारी-सी छा गई।

धुंधली चांदनी में सामने बैठी लड़की की आंखों में देख उसने पुकारा—मारा!...

वक्ष-स्थल पर घिरी पड़ी साड़ी के चमकते किनारे पर उंगलियां फेरते हुए उसने पूछा,

'नई साड़ी अच्छी है न?'

'हां।'

'कहां है?'

उसने उधर इशारा किया जिधर अप्पा सो रहे हैं। मल्लन ने जेब से मंगलसूत्र निकाला। धुंधली चांदनी में काले मोतियों के बीच में पड़े मंगलसूत्र ने उन्हें देखकर हंसने की कोशिश की।

'मेरी जान, मैं तुझसे शादी करूंगा।'

'अव्वा?'

'अव्वा को झोंपड़ी में रहने दो। तुझसे मैं अभी शादी करूंगा।'

वह चौंक गई। काली निर्जनता में कुरुमाटी की आंखें चमक उठती हैं। नदी की लहरों में, आकाश में जगमगाते तारों में, पेड़ों के ऊपर के जुगनुओं में—हर जगह उसकी विष भरी नीली आंखें। वह विश्वास नहीं कर सकी कि यह मात्र कल्पना है।

कुरुमाटी को चाहिए, मल्लन। तभी तो वह चात्तन को स्वीकार नहीं करती। वह जुरमाना देने को तैयार था, पर उसने मूप्पन लोगों को लेने नहीं दिया। अधिक पैसा उन्हें दे दिया। अपनी सहेलियों को बता दिया है उसने कि अब शादी करेगी तो मल्लन से ही।

मलंकारी!

काली चिंताओं की गहनता से उठी एक सिसक। होठ कांप उठे। थककर उसके वक्ष पर गिरकर ऊंचे स्वर में रो उठी।

उस रुदन से, वातावरण को घेरे संगीत का सूक्ष्म पर्दा टूटकर बिखर गया। नदी की रहस्यमयी मर्मर ध्वनि, बाजार से आते थके स्वर और ऊपर के कावु से आते ढोल का

पतला नाद उसके रुदन में लीन हो गया।

मल्लन चौंक गया। उसने उसे आलिंगन में ले लिया। मोटी कांपती उंगलियों से उसके आंसू पोंछने की कोशिश की। अनभ्यस्त तरीके से सांत्वना देने का प्रयत्न करता रहा।

'क्यों रोती है?' उत्कंठापूर्वक बार-बार पूछा। रुदन थमा नहीं। कुरुमाटी की नजरें चारों ओर से डरा रही हैं। वह पुलची काली की बेटी है, यह बात याद आने पर बार-बार शरीर में कंपन हुआ। अपनी दुर्बल, ठंडी बांहों से उसे घेर लेने की कोशिश की। अपने से छीन लिए जाने वाली एक प्रिय वस्तु के प्रति जो अत्यधिक आसक्ति होती है, वह उसकी प्रत्येक भाव-भंगिमा में दिखाई दे रही थी।

'रो मत।' मल्लन ने उसके माथे, आंखों और जूड़े को बार-बार चूमा। वह डर गई। एक खरगोश के बच्चे की तरह वह उसके बांहों के घेरे में सिमटकर कांपती रही।

रोकने का निष्फल प्रयत्न रुलाई।

सशक्त प्रतिद्वंद्वी

उसके हाथ में अनेक हथियार हैं। कई प्रदेशों में घूम-फिर, तरह-तरह के अनुभव हासिल कर क्या मुझे मार देने के लिए ही तिरुनेल्लि लौटी है?

'क्यों रोती है?'

'कुरुमाट्टी!'

वह चौंक पड़ा। बाहें ढीली हो गईं। आलिंगन शिथिल पड़ गया। घबराहट से सामने बैठी लड़की के मुख को घूरता रहा।

यह वह बातें जान गई?

पहरे के समय कुरुमाटी का मचान पर आना। अब भी एक अदृश्य जाल बिछाए मुझे फंसाने की प्रतीक्षा में खड़ी है।

वह चात्तन से शादी करेगी।

मन को शांत करने का प्रयास किया।

गोद में पड़ी इस थकी लड़की को छूने में भी डर लगता है। कुरुमाटी सचमुच चुड़ैल है।

मलंकारी को भी शांत करना जानती है वह। मेरे और मारा के बीच के संबंधों का जब उसे पता चलेगा!

उसके गले में मंगलसूत्र की चमक आंखों में पड़ी। जैसे वह परिहास की दृष्टि से देख रहा हो।

ऊपर के कावु में पल्लिवेट्टा* का आरंभ। ढोल का नाद तेज हो गया। वह हिली नहीं।

---

*स्नान के पश्चात देवी पुनः सो जाती हैं। उन्हें नींद से जगाने के लिए जपा जाने वाला स्तोत्र।

पूर्व दिशा से अंधकार दूर हो गया। झीना अंधेरा पश्चिम के जंगल में सिमट रहा है। सिर के ऊपर पक्षी चहक-चहककर उड़ने लगे। ओस की बूंदें सब तरफ गिर पड़ीं। रोते हुए-से पेड़ों की छांह में से होकर उनकी काली परछाइयां हाथ में हाथ डाले वापस चलीं। एक-दूसरे को देखने में डर लगा।

14.

वल्लियूरकाव का उत्सव समाप्त हो गया। मन में जो उत्साह उछल रहा था, थम गया। ठहरे पानी पर पड़ी झिल्ली के समान निरुत्साह और आलस सभी चेहरों पर झलक पड़े।

बरखा ऋतु से पहले कुछ नहीं करना है।

कुंडल के धान को रखने वाली टोकरियां झोंपड़ियों के कोनों में पड़ी थीं।

इस बात ने आसामियों को और उद्विग्न कर दिया कि अगले साल के काम का कुंडल भी पेशगी मिल चुका। और अधिक आलसी हो गया जीवन।

जमींदार लोग वर्षा की प्रतीक्षा में बैठे रहे। खेत के काम-काज के लिए नौकर लोग निश्चिंत हुए। अब काम करवा लेना ही काफी है। भंडार बीज से भरा हुआ है, बाहर बारिश की प्रतीक्षा करती मिट्टी है। शाम होने पर आकाश में बादलों ने डकार ली, गुर्राए, दांत और नाखून दिखाए।

गोशाला के पीछे एक साल का गोबर धूप और ओस में पड़ा हुआ है।

राघवन नायर ने सोचा :

'इस खाद की कीमत नहीं समझते ये लोग। इस तरह साल-दर-साल धूप और बरसात में पड़े रहने पर गोबर का कौन गुण बचेगा?' गोबर वाले गड्ढे के ऊपर एक छप्पर छवाना है। इस साल की खाद बरसात से पहले ही डाल देनी है।

पेम्बी को बुलाना चाहिए। मारा को भी। कॉफी पिए बिना चुपचाप निकल पड़ी। नहीं तो, रुकना पड़ेगा। अभी जाकर बुलाएं तभी धूप निकलने के पहले वे लोग आ पाएंगे।

उत्सव से लौटने के बाद से पेम्बी बीमार होकर पड़ी है।

अव्वा पेट की भयंकर तकलीफ से तड़प उठती है। बिना कुछ कर पाए मारा खड़ी रही। मन और बेचैन हो गया। आने के बाद से मल्लन से मिल ही न पाई। अव्वा के पेट के दर्द के कारण बाहर निकली ही नहीं।

मंदिर में भात खाया था। उसके बाद एक दिन और बीत गया। अव्वा का दर्द दूर नहीं हुआ। उसे भूख लगी है। अप्पा को भी भूख लगती होगी। धान का एक दाना भी

नहीं।

तीसरे दिन भूख सह न सकी। चूल्हे में पानी उबालती रही। अप्पा ओझा बुलाने गया था, लौटकर आया नहीं।

अव्वा ने बरामदे के किनारे आंगन में ही कै कर दी। काला, जमा पानी। उसमें भुने मक्के के दाने पड़े हैं। वल्लियूरकाव में खरीदकर खाया था। असह्य दुर्गंध। उसने कुछ मिट्टी बटोरकर कै पर डाल दी। पेम्बी बार-बार उलटी करने लगी जैसे आंतें उखड़ रही हों। बरामदे में थककर पड़ गई। हाथ-पैर ठंडे पड़ गए। चेहरा बेल्लिला के पौधे की तरह पीला। तब भी उलटी करती रही। एक प्रकार का काला पानी।

मारा घबरा गई। अप्पा आए नहीं। उसने भूसी गर्मकर, थैली बनाकर मां की लगातार मालिश की। ठंडी उंगलियां क्षण भर के लिए गर्म होकर फिर ठंडी पड़ जाती हैं।

आखिरकार ओझा आया। उसके हाथ में जंगल की कुछ जड़ी-बूटियां थीं। पत्ते निचोड़कर रस निकाला, उसमें काला जीरा पीसकर मिलाया। पेम्बी के टेढ़े पड़े ओठों को खोल उंड़ेल दिया।

जितना गया उसकी दोगुनी उल्टी।

राघवन नायर के टीले पर चढ़ आने तक वह मां की भूसी की थैली से मालिश कर रही थी।

'क्या हुआ?'

'पेट में दर्द।'

उसे याद आया, गोरे तम्पुरान के पास दवा होगी। तम्पुरान लोगों के बच्चों के बीमार पड़ने पर गोरे तम्पुरान ही दवा देते हैं।

'लगता है, बीमारी ज्यादा बढ़ गई है। मानंतवाडी ले जाना ही अच्छा है।'

मानंतवाडी की बात सुनकर वह घबरा गई। यहां रोगी जब मरने को होता है, तभी मानंतवाडी जाने की बात उठती है। क्या मां मरने को है? साढ़े सैंतीस किलोमीटर की दूरी है। हाथी के जंगल से, नरिनिरङ्गिमला पारकर वहां पहुंचते-पहुंचते शाम हो जाएगी।

राघवन नायर को लगा कि यह औरत बच नहीं पाएगी। अचानक आई विपत्ति ने मौन बना दिया।

एक अनियंत्रित सिसकी बेटी के भीतर से उठी। उसकी समस्या घनीभूत होती गई।

बार-बार वह भूसी की थैली गर्म करती रही। पेम्बी ने फिर उलटी नहीं की। हाथ-पांव ठंडे पड़ गए। पीला चेहरा और भी पीला हो गया। होठ नीले पड़ गए। एक बार चौंक कर तड़प उठी। आंखें फट गईं। मुंह खुला ही रह गया।

राघवन नायर चुपचाप आंगन में खड़े-खड़े देखता रहा।

दो रात सो न पाने के कारण गड्ढे में धंसी आंखें सूख गई थीं। बेटी की उन सूखी

आंखों की लक्ष्यहीन भटकती दृष्टि अव्वा के मृत शरीर पर कुछ देर गड़ी रही। एक बूंद आंसू भी आंख में नहीं आया। पत्नी के शव पर गोरा चुंडली गिर पड़ा। वहीं पड़ा विलाप करता रहा। उसके बालों की लटें पेम्बी के निर्जीव मुख पर रेंगती रहीं।

टीलों पर उसका विलाप प्रतिध्वनित हुआ। क्षण भर में वह जगह लोगों से खचाखच भर गई।

दिशाओं को गुंजाते उसके विलाप ने और तेजी पकड़ ली।

उनके बीच राघवन नायर एक अपरिचित विदेशी-सा खड़ा था।

चुंडली को अलग करो।

वे लोग चुंडली को बलपूर्वक पकड़कर उत्तरी दिशा में आंगन में केलों की ठंडी छाया की ओर ले गए।

कै पर मक्खियां भिनकेंगी। सबके आने से पहले ही औरतें कुछ मिट्टी लाकर डाल दें।

वट्टा और जवनी बाहर निकलीं। मिट्टी कहां है? खुरपी से खोदनी होगी। दो दिन पहले पेम्बी ने जो क्यारी की मिट्टी खोदी थी, उन लोगों ने बटोरकर पड़ी कै पर डाल दी। राघवन नायर वहां से निकल पड़ा। शव पर डालने के लिए नया कफन खरीदना है। चुंडली को कुछ पैसे देने होंगे। यहां कुछ नहीं होगा।

राघवन नायर को लगा कि उसके वहां खड़े रहने से उन लोगों का कष्ट और बढ़ेगा। जोर से विलाप करने में भी डरेंगे। नजरें शंका से घूरने लगीं।

टीला उतर चुका तो पीछे से सब मिलकर विलाप करने लगे।

केले के नीचे चुंडली शांत नहीं हुआ। किसी की परवाह किए बिना उठकर बाहर आया। बिना किसी चेतावनी के अचानक अपने से छूट गई उस औरत पर एक बार और दृष्टि डाली। वह जब छोटी-सी लड़की थी तब कुडक से ब्याहकर लाया था।

बरसों पहले का एक विशु[1]। विशुक्कणी[2] देखने के लिए ब्रह्मगिरि की सबसे ऊंची चोटियों को पार करके कुडक से जो लोग आए थे, उनके साथ पेम्बी और उसके मां-बाप थे।

कहते हैं, कुडक की स्त्रियां देवकन्याएं हैं। चुंडली को लगा कि वहां की आसामी औरतें भी देवकन्याएं हैं। उसके बाप को भी ऐसा ही लगा। हर हफ्ते उसके घर वल्ली और कोल डालने के लिए ब्रह्मगिरि का दक्षिणी भाग पार किया। अंत में वह रजस्वला हुई। बड़ी औरत बन गई। यहां ले आया। आज तक अलग नहीं हुए। मां की ही तरह सुंदर बेटी। उसके

---

1. मार्च महीने में मनाया जाने वाला एक त्यौहार।
2. विशु के दिन सुबह में स्त्रियां फूल आदि सजा कर रखती हैं। सबसे पहले इसका दर्शन पूरे वर्ष के लिए शुभ माना जाता है।

चेहरे को देखने की हिम्मत नहीं हुई। वह मुड़कर चल दिया। इस बिन मां की बेटी की शादी करनी है। तृश्शिलेरी से यहां आने का हठ पेम्बी ने इसीलिए तो किया था।

आंसू से भीगे चेहरे को पोंछे बिना चुंडली टीला उतरकर उरुवयल की ओर चला। आए हुए लोगों को पान तक देने को नहीं था। हाथ में एक पैसा भी नहीं।

आए हुए लोगों ने इधर-उधर इकट्ठे होकर अपनी थैलियां खोल पान निकाले। बांट कर खाते रहे।

अप्पा के लौटने की प्रतीक्षा में बेटी भीतर के अंधेरे में निश्चल, चुपचाप बैठी रही।

औरतों के बीच से कुरुमाटी की आवाज आई। वह चौंक पड़ी। उसे पता चल गया होगा कि वल्लियूरकाव के घाट पर मैं मल्लन के साथ थी। मारा को लगा, उसकी विष भरी दृष्टि वहां मंडरा रही है।

इसी के कारण मां की मौत हुई। पिशाच की उपासना करती है वह। इससे परे मारा सोच नहीं पाई। कानों में उंगलियां डाल, घुटनों के बीच मुंह छिपाकर बैठी रही। रुलाई का बांध टूट गया। अब मेरा कोई नहीं, कोई संबंधी भी नहीं। इस अनजाने प्रदेश में असहाय मैं। रुलाई का बांध टूट गया। 'मां के मर जाने पर भी एक बूंद आंसू न बहाने वाली!' बाहर से कुरुमाटी की आवाज आई।

पानी गरम कर, हल्दी लगाकर मां को अंतिम बार नहलाती कुरुमाटी को उसने चिक के छेद से देखा। मां और बेटी की नई साड़ियां खूंटी पर लटकी हैं। मल्लन ने उसे जो लाल साड़ी दी थी, उसे ही ले जाकर कुरुमाटी ने अव्वा के शव पर डाल दिया।

वह चौंक पड़ी। कैसा अपशकुन है! ये चुड़ैल मुझे भी मार डालेगी। उसने होंठ काट लिए।

अप्पा चावल लेकर आए। मैंने और अव्वा ने अंबलकुन्न में मिलकर साफ किए थे।

सारा काम कुरुमाट्टी ने अपने ऊपर ले लिया। मारा अपनी जगह से हिली नहीं। अव्वा के शव पर पड़ी लाल साड़ी पर उसकी आंखें टिकी रहीं। कुरुमाटी ने भात तैयार किया। केले के पत्ते में थोड़ा डाल चेम्मक्कारन के सामने रखा। चेम्मक्कारन ने उसे गोल-गोल कर उस पर एक बत्ती जलाकर रखी। नहलाकर लिटाए हुए शव को उन लोगों ने तुरंत बनाई बांस की अर्थी पर रखा।

वह चुपचाप रोई। आंसू गालों पर बह-बह गोद में टपकते रहे। पहनी हुई साड़ी भीग गई।

कालिन्दी के किनारे श्मशान पर वे लोग अव्वा का दाह-संस्कार करेंगे। परलोक में अव्वा को खाने को मिलेगा, कुरुमाटी का रखा भात। उसके शरीर में कंपन दौड़ गया।

पहले से ही बोई गई पुंजा।

गोपालन नाई को जो खेत दिए थे, उस पर राघवन नायर की बोई पुंजा की कटाई का समय आ गया। आकाश में बादल उमड़ने लगे। एक-दूसरे को काटते-खरोंचते, गुर्राते रहे। बरसात से पहले ही फसल काटकर खलिहान में पहुंचानी है।

उससे पहले छत पर बिछाने के लिए कुछ नहीं मिलेगा। पुंजा की कटाई, फटकने और दाना निकालने का काम हो जाए तो राघवन नायर फूस दे देंगे। गोरे तम्पुरान दयालु हैं।

चुंडली बिना कुछ सोचे-जाने बरामदे में घुटनों के बल बैठा रहा। ऊसर हो चुकी पुषकुनि। तब जो झोंपड़ी बनाई थी, वैसे ही पड़ी है। बारिश होगी तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा।

जंगल की सीमा पर बने घर में अब तक छप्पर छाया नहीं गया। अप्पा को इसकी कोई चिंता नहीं।

मारा ने पूछा, 'छप्पर छाना है न?'

बरामदे में बैठ चुंडली ने खाली मुड़कर देख लिया।

जिस दिन अव्वा मरी, उसी दिन अप्पा के बाल और दाढ़ी मूंड दिए गए थे। अगली काक्कपुला ओणम के बाद जाकर कुंभ मास में होगी कहीं। करीब एक साल है!

बेटी क्या कहती रही, चुंडली ने कुछ नहीं सुना। पैर के अंगूठे के घिसे लोहे के छल्ले को घूरता वैसे ही बैठा रहा।

आज पुंजा की कटाई का काम शुरू होगा। दूसरों की पुंजा खाली की खाली। वल्ली मिलने पर ही कंजी खा सकते हैं। छप्पर के लिए फूस चाहिए।

वह भीतर गई। थैली से मल्लन की भेंट की गई डिबिया निकाली। मन तड़प उठा। डिबिया के छोटे शीशे में देर तक देखती रही। अव्वा के मरने के बाद से बाहर नहीं निकली। तेरहवीं तीप्पुला कल थी। पीले पड़ गए गाल, खाली गला कान, जूड़ा और हाथ भी खाली। कुछ भी पहनने की किस्मत नहीं। वल्लियूरकाव के उत्सव में दूसरों से भी अधिक गहने खरीदे थे न? मल्लन ने भेंटें दी थीं न? उन सबसे एक भी पहनकर सहेलियों के बीच सिर ऊंचाकर चलने का भाग्य नहीं। साल भर ऐसे ही रहना होगा।

पर इन सबसे बड़ी न थी अव्वा? उसकी सांसों से दर्पण धुंधला गया। खाली गले को टटोला, जहां मल्लन ने सिक्कों का मंगलसूत्र बांध दिया था।

अव्वा के लिए खरीदी गई नीली वाली साड़ी पहन ली। मेरे लिए जो मल्लन ने खरीदी थी, उसे चुड़ैल ने ले जाकर शव पर डाल दिया।

एक अच्छा दिन। पुंजा की कटाई शुरू होने वाला दिन। फसल काटने आने वाली सभी आसामी औरतें फूल, मालाएं पहनकर आएंगी। चूड़ियां और झुमके पहनेंगी। खाली मैं— ।

अव्वा की याद ने उसकी आंखों को गीला कर दिया। कागज से ढंकी, बांस के खंभे पर रखी चूड़ियों और मालाओं को उसने कई बार प्यार से सहलाया। रुपए के मंगलसूत्र

को छाती और आंखों पर लगाया।

सबको फिर से अपनी जगह रख दिया। टोकरी में कपड़े ठूंसकर भीतर अलगनी में लटका दिया।

बांस के खंभे से लटक रही छोटी शीशी का ढक्कन खोला। भुनी रेंडी के फलों की सुगंध। केवड़े के फूल डालकर तैयार किया गया तेल। खुशबूदार तेल। कुछ बूंदें हथेली में लेकर बालों में लगाईं। हथेलियों से गाल रगड़ लिए।

डिबिया के धुंधले दर्पण में पुनः चेहरा देखा।

'मारा...ए...मारा!...'

जवनी द्वार पर प्रतीक्षा कर रही है।

'आती हूं...।'

जवनी ने अपनी सहेली को सिर से पांव तक देखा।

'पहनने के लिए कुछ नहीं है क्या?'

उसने हंसने की कोशिश की।

अप्पा से विदा लेकर चल पड़ी।

निकलते समय हवा ने केलों के झुंड में हलचल मचाई। वह स्तब्ध खड़ी रही। पिशाच है? भय की छाया उसके पीले चेहरे पर दौड़ गई।

कुछ देर खड़ी रही। हवा के कुछ शांत होने पर फिर खेत की ओर चलने लगी।

धान का पहला गुच्छा कटते-कटते ही भयंकर धूप।

खेत के बीच एक बवंडर उठा। जले फूस के टुकड़े और सूखे पत्ते चकराते हुए आकाश की ओर उठे।

बवंडर के शांत पड़ने तक सब काम रोककर भय के साथ देखते रहे...कटे धान के गुच्छे खेतों में पंक्तियों में पड़े रहे।

दाएं-बाएं देखे बिना मारा कटाई करती चली गई। उसके काटे गए गुच्छों की पंक्ति लंबी होती गई।

कुछ देर बाद जरा कमर सीधी की। वे लोग तब भी फुसफुसा रहे थे। गोरे तम्पुरान की नजर चूक जाए तो ऐसे ही होता है। इनके पास ऐसा कौन-सा रहस्य है कहने के लिए? उसके पास जाने पर उन लोगों ने बातें बंद कर काम शुरू कर दिया।

तीन दिन के अंदर कोल्लिमूला की कटाई हो गई। अंगारे बरसाती धूप। जब तक कटाई पूरी हो, पहले के गुच्छे सूख गए।

उस दिन धान के गट्ठे बंधने थे। मल्लन, कुरुमन, चात्तन और करियन खेत में गट्ठे बांधते रहे। मल्लन ने मजाक किया, 'मेरे बांधे गट्ठे कौन ढोएगा?' कुरुमन और चात्तन शादीशुदा हैं। करियन की घरवाली है जवनी। मल्लन से शादी की बात टूट जाने पर मारा

उसके गट्ठे ढोएगी?

'शादी टूट गई!' कटे गुच्छे मारा के हाथ से खेत में बिखर पड़े।

अव्वा के मरने पर शादी टूट जाएगी? उसके भीतर से आग की ज्वाला उठी। हाथ से गिरे गुच्छे चारों ओर बिखर पड़े। वट्टा के बच्चों ने दौड़कर उठा लिए। उसने कुछ नहीं देखा, कुछ नहीं सुना।

शादी टूट गई। वल्लियूरकाव में निश्चित किया गया विवाह। जिसके लिए अव्वा ने भी अनुमति दे दी थी। मर गई तो क्या?

मीनम महीने में अप्रत्याशित ही आ गई बिजली की गरज की तरह यह बात उसके भीतर दौड़ गई। उसे लगा कि सिर चकरा रहा है। चारों ओर धूप है। आग है। वह भभक उठी। इस आग में क्या मैं जीते जी जला दी जाऊंगी?

अनजानी बातें प्रकट हो रही हैं। कुरुमाटी बिना किसी संकोच के बता रही है।

वल्ली और कोल देने के निश्चित समय के छिपे बड़े रहस्य को कुरुमाटी बताने लगी।

वल्लियूरकाव से उसे पता चला।

कुडक के कुल से कुछ लोग आए थे। मल्लन और मारा एक ही कुल के हैं। मल्लन की अव्वा और मारा की अव्वा पुत्तूरमंट की रहने वाली हैं। कहें तो भाई और बहन। लोगों के अपनी जगह छोड़ देने पर क्या खून के रिश्ते बदल जाएंगे? कुडक में खोजने पर सच पता चल जाएगा। यह झूठ है कि मल्लन इडमलामंट से है। यह शादी नहीं हो सकती। यह ऐसी भूल होगी जिसकी कोई माफी नहीं।

एक पैशाचिक हंसी के साथ कुरुमाटी ने कथा समाप्त की। कथा नहीं, बल्कि सत्य!

कुरुमाटी ने एक ही हाथ से गट्ठा उठाने की कोशिश की। वह नहीं उठा। गट्ठे बांध रहे कुरुनरिक्कालन को आदेश दिया :

'गट्ठे को छोटा कर दे।'

'अब क्या इसे छोटा बनाऊं! 'इससे भी छोटा? तम्पुरान गुस्सा होंगे।'

'तू मेरा कहना नहीं मानता? तो जाकर अपनी घरवाली को बुला ले।'

तीर निशाने पर लगा। गट्ठे को छोटा नहीं कर सकता तो ढोने के लिए अपनी औरत बुला ला, ऐसा कहती है।

छि...उसने कोसा।

मेरी राटी वल्लियूरकाव से कुतिरकोट के एक आसामी के साथ भाग गई तो उस कहानी को यह क्यों गाती फिरती है? कुरुमाटी की जीभ विष-बुझी है।

चुपचाप दयनीय भाव से गट्ठे ढोती मारा को उसने सहानभूति से देखा। इसकी जली जीभ के कारण ही बेचारी की शादी टूट गई।

बंधे गट्ठे से उसने धान के गुच्छे खींच लिए। सूखे धान जमीन पर झड़कर गिरे।

गट्ठे को छोटाकर फिर से बांधा। फिर उसने छोटे गट्ठे ही बनाए। कुछ भी हो, उसे रूठने मत दो। वह कुरुमाटी है। तीखी जबान वाली और फिर मंत्र-विद्या जानने वाली। पुलची काली की बेटी कुरुमाटी!...

राघवन नायर खेत की ओर नजर किए खलिहान के सामने ही खड़ा रहा। जलती धूप। गोरा चेहरा लाल पड़ गया। काला हो गया। थोड़े और बड़े गट्ठे बना लें तो इन्हें क्या तकलीफ है? इस तरह के छः गट्ठे एक साथ उठाते हैं घाटी के लोग! हंसते-खेलते लोटपोट हो झूमते आ रहे हैं। इन्हें कैसे वश में किया जाए?

खलिहान पहुंचकर बातें बंद हो जाती हैं। काली परछाइयां, सामने आती हुई। गट्ठे खलिहान में डाल, सांस रोककर फिर से खेत की ओर जाते हैं।

दोपहर हो गई। खलिहान में गट्ठों का ढेर दो लोगों की ऊंचाई का हो गया। उसके ऊपर से चात्तन और कुरियन उतर आए।

वल्ली लेकर झोंपड़ी में पहुंचने की सबको जल्दी थी। एक दिन पहले, दोपहर में कंजी पी थी।

उन्हें जल्दी बल्ली दे दें। भंडार-घर के सामने आंचल पसारे खड़ी औरतों पर राघवन नायर ने नजर दौड़ाई।

मारा कहां है?

राघवन नायर को लगा कि दोपहर में वल्ली देने की प्रथा खत्म करना ही अच्छा है। कच्चा धान ले जाकर, उसकी कुटाई कर, बने चावल की कंजी पी लेने के बाद ही दोपहर ढलने पर काम पर वापस आएंगे। दिन की बजाए कंजी बनाने के लिए यह वल्ली सुबह ही दे दें तो कैसा रहे?

'ऐसा होने पर देख लेना, काम पर ही नहीं आएंगे।'

ठीक है। पुरानी व्यवस्था के अनुसार ही चला। मर्द लोग वल्ली की प्रतीक्षा किए बिना सीधे लकड़ी काटने जंगल चले। औरतें जब वल्ली लेकर घर पहुंचेंगी तब लकड़ी चाहिए।

मारा कहां है?

वह खलिहान में एक रेंडी के पेड़ के नीचे ऐसे ही खड़ी है।

उस बिन मां की लड़की के लिए मन में सहानभूति हुई। कैसी हो गई है लड़की! बिलकुल पीली पड़ गई। वल्ली नापने लगा तो उसने सिर हिलाया :

'नहीं।'

'नहीं चाहिए?'

'शाम को।'

'दोपहर को क्या करेगी?'

'दोपहर में अप्पा कंजी नहीं पिएंगे।'

राघवन नायर को आश्चर्य और दुख हुआ।

'तू कुछ नहीं खाएगी?'

उसने सिर हिलाया।

'घर में आ जा।'

'नहीं, भूख नहीं।'

उसे धूप में, खेत की मेंड़ से घाट की ओर जाते देखकर राघवन नायर खाने के लिए हाथ धोकर बरामदे में गए।

पुषकुनि में अंजीर तले मिलने का मल्लन ने इशारा किया था।

इस विचार ने कि मल्लन के पास जा रही है, रोमांचित किया। खेत के बीच पहुंचने पर एक-दो बार मुड़कर देखा। कहीं कोई नहीं था। सिर्फ झोंपड़ियों में धान की कुटाई की आवाज थी। वहां से उठता धुआं था।

धूप में जलते खेतों से डरी छायाएं बावली के किनारे के पेड़ों के नीचे सहमी पड़ी रहीं। हवा में कांप उठीं।

मल्लन की दी मालाएं और चूड़ियां न पहन सकने के कारण उसे क्षोभ हुआ।

उत्सव के बाद आज जाकर मल्लन से मिलने का मौका मिला है। धूप में भी वह रोमांच से कांप उठी।

वेल्ला की बेटी काली, केंकड़े के बिल में तिनका डाल मेंड़ पर घुटनों के बल ऐसे बैठी हुई है जैसे चांदनी रात हो।

वह सीधे घाट की ओर चली। जहां रोज नहाते हैं, उधर नहीं। निर्जन प्रदेश की ओर। घाट पर खड़े पेड़ नदी के खिलखिलाते बहते पानी से बातें करते रहे।

सुनसान स्थल। जंगली लताएं, झाड़ियां फैली पड़ी थीं।

मल्लन आएगा न?

आएगा!

इसी जगह आने को कहा था न?

पानी में कुछ गिरा। उसने मुड़कर देखा। चेहरे पर खुशी का एक फूल खिल गया। उसकी साड़ी से हिल-डुल रहे पानी में गुदगुदी हुई।

'यहां आ जा।' नदी के बीच की काली चट्टान के पार से मल्लन का भीगा सिर उठा। चेहरे से बह आए पानी से गीले हो गए हाथ के रोम चिपक गए। बालों की लटें माथे पर बिखरी हुई। धूप में गरम हो गए गोल-गोल पत्थर। उन पर पांव रखकर किनारे पर खड़ी माग़ा को ठंडे जंगली झरने ने इशारे से बुलाया।

वह धीरे से गुनगुनाया— 'आ जा रे...'

उसके हृदय की धड़कन तेज हो गई। डालियों पर चिड़िया चहचहा रही थीं। दूर टीले

की ढाल पर किसी झोंपड़ी से बांसुरी का स्वर आया। मावोवाला करियन बांसुरी बजा रहा है, मल्लन का दोस्त।

वह सीधे उसकी ओर नहीं देख सकी। मल्लन की दृष्टि उस पर निर्बंध होकर घूम रही है। पैरों के बीच पत्थर की दरारों के पानी में छोटे-छोटे जल-जीव खेल-कूद करते रहे।

बिना चूड़ियों के हाथ को गीली, दृढ़ बांहों ने पकड़ लिया।

उसे रोमांच हुआ।

'नहाएगी, मा?'

'नहीं, नहीं।'

'झोंपड़ी में जाएगी? नहा ले मा?'

उसने एक क्षण सोचा। जलती धूप। मरुभूमि में हरे द्वीप की तरह ठंडे सोते का पानी। जरा डुबकी लगा ले। जब तक आसामी औरतें कटाई करके, कंजी बनाकर, पीकर वापस आएंगी तब तक पहुंचा जा सकता है।

पहनी साड़ी भिगोए बिना डुबकी कैसे लगाए? उसी दिन पहनी नई साड़ी को भिगोने में संकोच हुआ। मल्लन ने हाथ की पकड़ ढीली नहीं की। काली चट्टान की ढाल की ओर कमर तक पानी में उसे ले गया। उसने उस हाथ को कसके थाम लिया। वही है अवलंब। मल्लन ने उसके लाल पैरों में चिपके कीचड़ को बावली के पानी से धो दिया। अंजीर के पत्तों से छन-छनकर आती सूरज की किरणें उसके शरीर पर चित्र रचती रहीं।

जो कुछ कहना था, जो कुछ जानना था, वह सब एक अव्यक्त घबराहट में डूब गया। शब्द भीतर कहीं फंसे रहे।

शादी टूट गई? टूट जाएगी? अनकहे शब्दों को उसने पहचाना।

'हमारी शादी टूट जाएगी?'

'जुरमाना दे देंगे। जुरमाना देने से शादी नहीं टूटेगी।'

उसे सांत्वना हुई।

'शादी टूट जाएगी?'

'नहीं।'

'क्या सचमुच इसका जुरमाना है?' उसकी शंका दूर नहीं हुई। जुरमाना देने पर भी यह अपराध नहीं मिटेगा, ऐसा कुरुमाटी ने कहा था न?

मल्लन ने उत्तर नहीं दिया। फिर और पूछने भी नहीं दिया। उसे कसकर आलिंगन में जकड़ लिया। पिंजरे में बंद चिड़िया की तरह मारा की छाती के पंखों को फड़फड़ाते हुए उसने अनुभव किया।

भय के काले-काले पंख उसकी नीली आंखों में और फैलते रहे।

देवी क्षमा कर देगी? मलंकारी क्षमा करेगी? यह जो कर रहा है, अपराध है, जिसकी

कोई माफी नहीं। पुत्तूर परिवार की सब मृतात्माएं दोनों पर साथ हमला करेंगी। कुरुमाटी ने जो कहा था, उसमें सत्य का कोई कण तो होगा न? प्रेतात्मा का शाप जंगली कुत्तों की तरह हमारा पीछा करता रहेगा।

मल्लन की सबल पकड़ में बंधी उसने सैकड़ों बातें डर के साथ सोच लीं। विचारों की चुभन ने उसे व्याकुल कर दिया...

गीली साड़ी को बदन पर ही सूखने देने के लिए वह काली चट्टान पर बैठी सोच में मग्न रही। आस-पास के संसार का बोध ही नहीं हुआ।

नहीं, इसका हल नहीं है। मल्लन और मैं आज पति-पत्नी बन गए। एक ही कुल के हों या न हों, अपराध हो गया। वह विषाद से भर, दयनीय-सी, उस दुपहरी में ठंडे जल के बीच घुटनों के बल बैठ, मल्लन के ठंडे वक्ष पर जलते गाल दबाकर सिसक पड़ी।

इस तरह रोना ही था मुझे तो क्यों आई? धीरे-धीरे वह शांत हो गई। धूप की किरणें तिरछी हो गई। वह उठी। पानी में फिसलते गोल पत्थरों पर ध्यान दिए बिना, निश्चिंत चुपचाप चली गई। वह वहीं बैठा रहा। एक क्षण उसकी ओर देखा। पानी में आवाज करता उसके पास पहुंचने के लिए आगे बढ़ा। तब तक वह नदी के पार खेत में पहुंच गई थी।

खलिहान से राघवन नायर का ऊंचा स्वर सुनाई पड़ा।

मल्लन लौट आया। चट्टान पर सूखने के लिए डाला कुर्ता पहनकर दूर तक उस पर दृष्टि दौड़ाई। तब तक वह एक नीला बिंदु बनकर आंवले के पेड़ के पार पहुंच चुकी थी।

15

झोंपड़ी की मिट्टी की नई दीवार पर उसने बहुत साफ ढंग से गोबर लगाया। जलाए गए फूस के कोयले से उसे चमकाया। कुछ दूरी पर खड़े होकर दीवार की सुंदरता निहारती रही। एक ही ढंग से चलती उंगलियों की अर्ध-वृत्ताकार सुंदरता। वारयम की तिरुवोलम्मा कहा करती थी :

'तुझमें तेरी मां की आधी ताकत भी नहीं।'

जब उसे लगा कि कोई कमी नहीं रह गई है तब साबुन-फल के झाग से हाथ साफ किए। वल्लियूरकाव के बाजार से एक खुशबूदार साबुन खरीदना चाहिए था।

आज मल्लन आएगा—वल्ली और कोल देने। एक अच्छे दिन की प्रतीक्षा है।

आएगा न?

मूप्पन लोगों ने मना नहीं किया है।

एक ही कुल के लोगों को मलंकारी एक साथ रहने देगी? देवी क्या मनुष्य का रक्त नहीं पहचान सकती? अगर पहचान सकती है तो मल्लन और मेरे बीच यह मोह कैसे उत्पन्न हुआ?

अप्पा कुछ नहीं बोला। ऐसा नहीं कि पता नहीं चला। अव्वा के मरने के बाद किसी भी बात में उसका मन नहीं। कंजी है तो भी समय पर पीने के लिए नहीं।

किसी काम पर नहीं जाता। सुबह से शाम तक जंगल के किनारे पशुओं के रास्ते पर भटकता रहेगा। जब मन होगा झोंपड़ी में आ जाएगा। सामने जो कुछ रख दो, लालच से खाएगा, पर यह नहीं देखेगा कि है क्या। कोई सवाल नहीं, कोई जवाब नहीं। खुशी नहीं, दुख भी नहीं। हफ्तों पहले जो धोती पहनी थी, वह अब तक धुली नहीं। जिनकी पत्नियां मर जाएं, उन्हें इतना कड़ा दंड?

मैं पहले मर जाऊं तो मल्लन भी ऐसे व्याकुल होकर चलेगा?

सुनसान झोंपड़ी। चींटियों द्वारा छोड़ी गई बांबियों के समान शांत। आवाज नहीं। गति नहीं। झोंपड़ी जिसमें नारी का सजीव स्पर्श नहीं।

गोबर लगाया तो जैसे नए ढंग से जीवित हो उठी हो। उसने एक लंबी सांस छोड़ी।

पड़ोस में बच्चे शोर मचा रहे थे। लड़के ढोल बजाना सीखते रहे। छोटे बच्चों को दूध पिलाती माओं ने कुछ देर चैन पाने के लिए बड़ों को भगा दिया। वे झाड़ियों में कहीं न मिलने वाले फल ढूंढने लगे। आमों के नीचे पहरा देते रहे। बूढ़ी औरतें चूल्हे के सामने सिकुड़कर बैठी रहीं।

गरीबी से शुरू होकर गरीबी में ही खत्म होने वाला जीवन। और कुछ न कर पाने के कारण वे एक-दूसरे को उलाहना देते, दोष निकालते, रोते और हलचल मचाते रहे।

मारा की झोंपड़ी में उलाहने नहीं, हलचल नहीं। बारिश, धूप, कोहरे और हवा में गिरकर जीर्ण होती जा रही सिर्फ एक दीमक की बांबी हो जैसे।

मल्लन आएगा, यह विचार झोपड़ी को जगाता है। उसमें आशाओं के अंकुर फूट उठते हैं। जाग गई झोंपड़ी में उन्मेषपूर्वक रक्त-प्रवाह। जवनी के छोटे भाई की सहायता से बरामदे में टूटकर लटकती चिक को ठीक कर लटका दिया। खाली मेहमानों के लिए अव्वा जिन कांसे की थालियों को निकालती थी, उन्हें चूल्हे की छत के ऊपर से निकाला। तिरुनेल्लि आने के बाद एक बार भी इन थालियों का उपयोग नहीं हुआ था।

खलिहान से मिले दो इमली के फलों को थैली में सहेज रखा था। एक को अलग किया। चटनी बनानी है। दूसरी चबाकर रस पी लिया। बची इमली और राख मिलाकर

कांसे की थालियां साफ कीं।

भात बनाना है। सफेद चावल का नहीं, उबले धान का।

रसोई का काम करके वह बरामदे में आ बैठी। बालों को संवार कर जूड़ा बनाया। केवड़े की गंध मिला भुनी रेंडी के तेल को कुछ हथेली में लेकर बालों में लगाया। हाथों से चेहरा दबाकर पोंछ लिया।

बालों में फूल न गूंथ पाने का दुख हुआ। अव्वा की पुला तो खत्म होने दो।

नग्न गले में निराशा से हाथ फेर लिया। लगा जैसे बिना कंगन वाले हाथ अधिक लंबे हो गए हैं।

खाली बैठे मन में शंका की छाया पड़ी : मल्लन मेरे परिवार का ही होगा। सुनते हैं, कुरुमाटी कुटक में जाकर छोटे भाई से मिलकर आई है। बात का प्रमाण भी लाई है। सच होगा?

झूठ, सफेद झूठ। ईर्ष्यालु औरत का भयंकर झूठ।

मल्लन तो उसकी मां को तिरुनेल्लि आने के बाद ही मिले। अप्पन ने यहीं जन्म लिया, बड़े हुए। मल्लन की मां को वह बचपन से जानते हैं।

इलाके का मूप्पन जवर पेरुमन कई पीढ़ियों को अच्छी तरह जानता है।

पर अगर सच का कोई अंश इसमें हुआ हो तो? वह चौंक गई। मलंकारी सारी प्रेतात्माओं को भेजेगी। मेरे साथ मल्लन भी उसके क्रोध का पात्र बन जाएगा।

पूंकुन्नम मना की दुर्घटना उसने चौंककर याद की। कुंवारी तिरुवोलम्मा और उसके दो युवा भाई। एक छोटी तम्पुराटी के साथ भाग गया। भाई बहन को...।

मलंकारी!

परदेस में सोने की काया वाली तिरुवोलम्मा महारोग से मरी। भाई भी मर गया होगा। उस साल बिजली गिरने से मना की पत्थर की बड़ी दीवार बीच से टूट गई। बारिश में छत ढह गई। उस इलाके का एकमात्र महल। खपरैल से छाया गया महल।

दूसरा भाई भी शादी के बाद जल्दी ही मर गया। उसकी पत्नी आज भी मना के पांचवें घर में अकेले जीवन बिताती है। सारी जमीन हिस्सेदारी पर दे दी।

टूटी-फूटी पुरानी मना के पास से कोई भी आसामी अकेले नहीं गुजरता। उस तम्पुराटी को कभी किसी ने बाहर भी नहीं देखा। बाहर की दुनिया से अनजान अकेले टीले पर, जटाएं बनाए कॉफी के पौधों के झाड़-झंखाड़ में वह क्या करती रहती है?

याद आया तो कांप उठी।

मल्लन से शादी करने पर मुझे भी—

एक अकारण भय। उसकी पकड़ से इस शुभ घड़ी में मुक्ति पाने के लिए उसने सारी शक्ति संचित की।

'मलंकारी, धोखा मत देना।'

पुंजा धान की कटाई हो गई। दाने भी अलग कर लिए गए। कोल्लीमूला का धान भंडार-घर में पहुंच गया। मल्लन आएगा।

वल्ली लाएगा। लकड़ी भी। कोई भी चेम्मक्कारन यह नहीं कह सकता कि वल्ली और लकड़ी लाने वाले युवक से संबंध न स्वीकारे। इलाके का कोई भी मूप्पन उसके विरुद्ध कुछ नहीं बोलेगा।

दुश्चिंताओं को दूर कर उसने प्रसन्नता का भाव ओढ़ लिया।

अतिथि के लिए खाना तैयार किया। सब्जी बनाने के लिए कुछ भी नहीं था।

नांस के खंभे पर से इमली उठाकर चटनी बनाई। बर्तनों को अच्छी तरह ढंककर प्रतीक्षा करती रही।

हवा में जब-जब पत्ते खड़कते, उठकर देखती।

भाड़ के सामने बैठा तापता अप्पन ऊंघने लगा। दाढ़ी और सिर के बालों में सफेदी आ गई है। अप्पन जल्दी बूढ़ा हो गया।

जब यहां आए थे, तब अप्पन की खोदी पुषकुनि अब सूखी पड़ी है। कटाई के बाद जल गई ठूंठें।

जंगल लाल हो गया। फिर काला पड़ गया। मल्लन नहीं आया। जंगल की काली छाया ने खेतों को निगल लिया। केले के झुंड में पत्ते जोर-जोर से खड़कने लगे।

वह आंगन में उतर आई। जंगल के किनारे के पशुओं के रास्ते की ओर झांककर देखा। सब तरफ निर्जन।

पास के टीले की किसी झोंपड़ी से ढोल के स्वर उठते हैं। किसी युवक के मन में आने वाली काक्कपुला और मचान-नृत्य की मधुर प्रतीक्षा में उठती उमंग।

उसे याद आया।

उस दिन मल्लन सुबह तक नाचा था। नाचना बंद किया तो ढोल बजाता रहा। मल्लन की सानी रखने वाला कोई नहीं।

झोंपड़ियां जाग उठीं। दिन भर सोकर शाम को जगने वाली झोंपड़ियों में नई हलचल। मुट्ठी भर धान जो गट्ठे उठाने पर मिला था, इसकी कुटाई कर चावल बना लें तो घड़े भर पानी में उबाल कर पी सकते हैं। पुंजा की वल्ली बहुत कम मिली। किसी और खलिहान में पुंजा की कटाई नहीं हुई। केवल गोरे तम्पुरान ने पहले ही बुआई कर दी थी, इसलिए कटाई पहले हुई।

कंजी देखने को भी न मिले, ऐसे अनेक दिन बीत गए। वल्लियूरकाव की दावत का स्वाद एक सपना बनकर भूख के नीचे दबा पड़ा है।

मल्लन का मचान-नृत्य। उसकी आंखें चमक उठीं।

अगले साल मकरम मास की कटाई से पहले तक उसका नाच देखने का भाग्य नहीं।

एलुतपोटन जल्दी-जल्दी आंगन से निकल गया। उसने अपने हाथ में कुछ छिपाया हुआ है।

'चाचा!'

'क्या है, बेटी?'

'हाथ में क्या है?'

'मिर्च। कहना मत। मना से तोड़ लाया हूं।'

उसने हाथ खोले बिना उंगलियों के बीच से दो-तीन हरी मिर्चें उसकी ओर फेंक दीं।

हरी मिर्च की चटनी का स्वाद बढ़िया है।

वह प्रतीक्षा करती रही।

भूख भूल गई थी।

अंत में मल्लन आया। अंधेरा खूब छा गया था। जब छोटी बोरी धान बरामदे में रखी तभी वह उसे देख पाया। चौंक गया।

अंधेरा हुए कितना समय हो गया, इसका उसे कुछ पता नहीं।

दाएं हाथ में कटहल का एक फल।

उसे गर्व हुआ। मल्लन को भात बना देना चाहिए। कटहल की सब्जी भी।

उसने अप्पा की ओर दृष्टि की।

अच्छी नींद में है। सिर ताल के अनुसार झुकता जाता है। चूल्हे के सामने सिकुड़ा बैठा है।

मल्लन के साथ वह अकेली है, इस विचार ने उसे रोमांचित किया। उसने तर्जनी उठाकर मारा के गाल को दबाया।

'अप्पा?'

'सोता है।'

'कटार दे।'

'किसलिए?'

'लकड़ी नहीं चाहिए?'

इस अंधेरी रात में लकड़ी?

'नहीं।' उसने कहा : 'लकड़ी है। वंडी ले आया।'

'कौन वंडी?'

'जवनी का छोटा भाई।'

जवनी के छोटे भाई से लकड़ी क्यों मगवाई? क्या उसने सोचा कि मैं नहीं आऊंगा?

दूसरों की बातों पर उसने भी विश्वास किया? मल्लन पर इतना भी भरोसा नहीं!

उसके चेहरे का विषाद भाव देखकर मारा की आंखों में फूलों का बाग खिल गया।

मल्लन धान की बोरी अंदर ले गया। तलपोति धान।[1]

इस धान को मूप्पन लोगों को देना है। इलाके का मूप्पन, टीले का मूप्पन और पुरोहित लोग इसे बांट लेंगे। धान के एक दाने की भी टालमटोल करने पर वे झगड़ा करेंगे।

धान जब उनके घर पहुंच जाएगा तभी संबंध स्वीकारेंगे। उनकी अनुमति के बिना शादी भी नहीं। शादी के पहले परिवार की सारी काक्कपुलाएं भी समाप्त करनी हैं।

मूप्पन लोगों को धान बांट देने पर काम हो जाएगा। मारा को खुशी हुई। जरा रुकें। अभी खुश होने का समय नहीं आया, मन ने कहा।

वह मुरझाया चेहरा लेकर बोली :

'सब लोग...'

'क्या है? सब लोग क्या कहते हैं?'

'एक ही कुल के दोनों।'

'कौन कहता है, मा?'

'कुरुमाट्टी।'

वह स्तंभित खड़ा रहा। कुरुमाटी कुछ भी कह सकती है। एक लंबी सांस। झूठ। धोखा। उसकी चालाकी। यही कारण है। वह मुझे छोड़ेगी नहीं, यही भाव है।

अंधेरे में उसके दांत कटकटा उठे। आंखें चमक उठीं। क्या मैं उसकी लगाम नहीं बांध सकता? इस देश का कोई भी आसामी यह काम नहीं कर सकता?

सारे टीलों के लोगों ने इसकी झूठी कहानी सुनी होगी न?

चिंता के काले बादलों को वह उसकी आंखों में, चेहरे पर छाते उत्कंठापूर्वक देखती रहीं।

'मेरे मल्ला...!' वह एक विलाप था।

भयंकर वन की गहनता से उठता, कांपता, थर्राता स्वर। असह्य वेदना का अति करुण स्वर। मल्लन घबरा गया।

'मेरी मारे...!'

बूढ़ा तब भी खर्राटे भर रहा था। मल्लन के वक्ष से सटकर उसने अपनी सिसक दबा ली। उसके सिर पर मल्लन की गर्म सांसें पड़ती रहीं।

वह मातृहीन लड़की।

बहुत देर हो गई। झोंपड़ियां सो गईं। निशब्द रात में आवाज की एक-एक बूंद गिरती

---

1. सगाई के लिए वर द्वारा लाया जाने वाला धान।

रही। कहीं से हिरन की चीत्कार आई।

खाना नहीं खाया। चावल ठंडे हो गए। अब कटहल बनाने का भी समय नहीं। कितना कष्ट उठाकर लाया होगा। कैसी लड़की हूं मैं!

चाकू टटोलकर जब कटहल काटने को हुई, मल्लन ने हाथ से रोक लिया :

'नहीं, कटहल कल।'

मल्लन ने बूढ़े को जगाया। खाने के लिए। अचानक बूढ़े हो गए उस मनुष्य के विकृत रूप को देखकर उसे पीड़ा हुई।

बूढ़ा सिर उठाए बिना खाना खाता रहा।

'बस, बस।' मल्लन ने हाथ पकड़कर रोका तो मारा ने मुड़कर देखा। बगल में अप्पन है। अप्पन ने उधर देखा भी नहीं।

मल्लन के लाए तंबाकू ने चुंडली को संतुष्ट किया। झुर्रियां पड़ा काला चेहरा, जटा हो गई दाढ़ी के बीच मंद स्मित रेखा। बेटी ने जो तंबाकू का टुकड़ा काट दिया था, उससे चुंडली का मुंह कुछ देर महकता रहा।

मारा ने बर्तन धोकर औंधे रखे।

भीतर का द्वार बंद कर लिया।

अब अप्पन शादी की बात कहेंगे। उसने मलंकारी का नाम लिया।

भूख मिट चुकी। कोई साथी मिल जाए और खाने को तंबाकू हो तो अप्पा बोलेंगे।

उसने सीने को दोनों हाथों से दबा लिया जिससे दिल की धड़कन कोई सुन न ले।

आंगन में जोर से खंखारकर थूक के बूढ़ा अंधेरे में दीवार टटोलने लगा।

मल्लन जल्दी से उठा। पकड़कर दीवार से सटाकर बिठाया।

'तुझे मारा से शादी करनी है?' तुरंत बूढ़े ने पूछा।

प्रतीक्षा थी, फिर भी वर्षाकाल के पहले मेघगर्जन की तरह उस सवाल ने चौंका दिया। 'हां। इसीलिए तो तलपोति धान लेके आया हूं।'

'नहीं! ऐसा मत करना।' वह एक कड़वी आज्ञा थी। 'हे मलंकारी!' दोनों एक स्वर में बोल उठे।

मल्लन के चेहरे की पेशियां तनी हुई थीं। वह चकित रह गई। उसने उस चेहरे से दृष्टि नहीं हटाई जैसे डर था कि आंख हटाते ही कुछ अपरिचित-सा वहां आ जाएगा।

'तुम दोनों एक ही परिवार के हो।'

'किसने कहा?'

'मूप्पन ने।'

'झूठ। मूप्पन रिश्वत लेकर ऐसे ही कह रहा है।'

'सगाई के पहले तो मूप्पन ने ऐसा नहीं कहा।'

'हां। अब याद आया।'

मूप्पन ने पहले ही विरोध प्रकट किया। बूढ़ा जो कहता है कि अब याद आया, इसका कोई अर्थ नहीं।

इसके पीछे वही कुरुमाट्टी है!

उसने मूप्पन लोगों को तंबाकू भेंट में दी होगी। उसने कहा नहीं। बूढ़े को व्यर्थ शंका होगी। इस मामले में कुरुमाटी की क्या बात?

अपने अपराध के लिए मलंकारी का दंड।

'मुझे मारा से शादी करनी है।'

'नहीं, तुझे कोई और लड़की मिल जाएगी।'

मल्लन ने होठों को दांतों से दबा लिया। वह सह नहीं पाई।

'अप्पा!'

'नहीं।'

'मल्लन जुरमाना दे देगा।'

जुरमाना। एक ही परिवार के लड़के-लड़की के ब्याह का कोई जुरमाना नहीं, यह ऐसा अपराध है जिसकी कोई क्षमा नहीं।

'कौन-सा जुरमाना? इसमें जुरमाना की बात नहीं। जुरमाना देने से क्या खानदान बदला जा सकता है?' मारा जवाब नहीं दे सकी।

मल्लन स्तब्ध खड़ा था।

ठंडी चेतनाहीन हवा सूखे खेतों, सूखे केले के पत्तों और छत पर बिछे फूस को कंपकंपाती गुजर गई।

बूढ़े का पेट ज्यादा भर गया था। वह चूल्हे के सामने पड़कर सो गया। झोंपड़ियों का प्रकाश बुझने लगा। चूल्हे की आग ठंडी पड़ गई।

मारा के माथे पर पसीने की बूंदें चुहचुहा उठीं। तब भी ठंडी हवा चाबुक की तरह तीखी थी। उसे लगा जैसे उसका शरीर धुआं उगलता एक भाड़ है।

वह पास गई तो भी मल्लन नहीं हिला। चुंडली के खर्राटे जैसे दूर से आते उन्हें सुनाई दिए।

'मल्ला...' लगा कि दूर ब्रह्मगिरि की छाती की गहराई से वह स्वर गूंज रहा है। मारा नहीं, साक्षात मलंकारी देवी खड़ी है।

'मुझसे शादी करो।'

'कैसे?'

'कुरुमाट्टी झूट बकती है।'

कुरुमाट्टी ने इसको भी वह रहस्य बताया होगा जो सारे पुरुष करते हैं। इसका कोई

हल नहीं? केवल मुझे ही दंड क्यों देती है? उसके भीतर यह विचार गुर्राता रहा कि यह मलंकारी का कोप नहीं कुरुमाट्टी की शैतानी है।

एक पुरुष के ऐसे एक अपराध के लिए मूप्पन लोगों का दंड तीस चूड़ियां[1] है। मुझे सजा देने के लिए नहीं, मारा का नाश करने के लिए वह निकली है।

कोई उपाय नहीं सूझा। अंधेरे की ओर ताकता हुआ घुटनों के बल बैठा रहा। मारा की लंबी सांस उसे कानों में पड़ी। वल्ली और कोल लेकर मैं आया हूं। ठहर सकता हूं। मारा को अपना बना सकता हूं। विवाह का आचार साल भर में हो तो भी ठीक। उसके लिए मूप्पन लोगों की हां जरूरी है। समर्थ बनकर तो दिखा सकता हूं। मलंकारी के कोप के सामने एक पुरुष का, एक आसामी का धैर्य हवा में उड़ते सूखे पत्ते के समान है। अंधेरे में कुरुमाटी की विषैली आंखों का रंग मिला हुआ है।

आज मैं एक लड़की के साथ अपराध करूं तो कल शायद सारे आसामियों को मलंकारी का दंड भुगतना पड़े। अगर यह मेरे परिवार की है, अगर इस बात में सत्य का एक कण भी हो तो—

घाटियों में विष-ज्वर फैल जाएंगे।

खेतों में बवंडर उठेंगे।

रात को कंपा देने वाली जंगली मुर्गों की चिल्लाहट उठी। भविष्य के बारे में सोचने पर कांप उठा।

दूर किसी पहाड़ी दर्रे से जंगली कुत्तों की भौंक सुनाई पड़ी। वे एक साथ, एक स्वर में बहुत क्रूर आवाज में किसी लक्ष्य पर भौंक रहे हैं। उसे लगा जैसे जोंकों की अनवरत आवाज भी बंद हो गई।

दूर से मुर्गे की बांग[2] आई। चौंक कर उठा।

'मैं जा रहा हूं।'

उसने यह बात सुनी ही नहीं।

---

1. पहले सिक्कों की जगह कांसे की चूड़ियों का भी आदान-प्रदान होता था। एक चूड़ी पंद्रह पैसे के बराबर मानी जाती थी।
2. आधी रात को बांग देने वाले मुर्गों को यमदूत समझा जाता है।

16

मल्लन की लाई वल्ली का क्या होगा? रात भर यह विचार उसे सताता रहा।

चटाई दिखते ही पड़कर सो जाने वाली लड़की। उस दिन वह सोई नहीं। तुरंत वह जैसे बड़ी हो गई। नारी हो गई। मां के मरने पर गृहिणी बन गई। एक जून के भोजन के प्रबंध करने का कष्ट। निद्राविहीन रात।

मां थी तो कुछ पता ही न था।

अप्पन रात में कई बार जागा। उठ बैठा। थैली से तंबाकू निकालकर चबाता रहा। आंगन में थूकने की आवाज कई बार उसने सुनी।

हर बार सोचा :

अभी सुबह हो जाएगी।

सुबह नहीं हुई। अप्पन के चलने की आवाज बंद हो गई और फिर से उसके खराटे वीरबहूटियों के रुदन में विलीन होने लगे।

दूर, पुंजा के खेतों से जहां अभी कटाई शुरू नहीं हुई थी, मचान गीत हवा में तिरता चला आ रहा था।

ठंडी हवा के साथ बहकर आते गीत से मल्लन के स्वर को अलग करने की उसने व्यर्थ कोशिश की। क्या मल्लन को इसका पता है? बिना नींद की रात। हमेशा के लिए नष्ट हो गए नींद के माधुर्य को, चैन को उसने स्मरण किया।

भीतर मल्लन का मेहनत से लाकर रखा हुआ धान था। गोरे तम्पुरान की दी वल्ली थी। उसने सोने नहीं दिया। कल सुबह मूप्पन और पुरोहित लोग इसे नापने आएंगे न?

लगातार अनेक दिन जब धान का एक दाना भी नसीब न था, उन दिनों भी ऐसी बेचैनी नहीं थी।

कल की चिंता से मुक्त जीवन। कौन-सा सुख चाहिए, पता नहीं। सोते-सोते तृप्ति न मिलने वाले दिन।

सूरज के ब्रह्मगिरि के ऊपर पहुंचकर हंसने पर भी चढ़ाई छोड़ न उठने वाली सुबहें।

दूल्हे की 'तलपोति' धान लाने की बात पता है मूप्पन को। मालूम होने पर आएगा ही। मूप्पन और चेम्मक्कारन के आने से पहले उस धान का एक हिस्सा गायब कर देंगी यहां की औरतें— ।

मूप्पन नहीं आया तो? उन लोगों ने वल्ली नहीं नापी तो? वह शादी नहीं मानी जाएगी।

कुरुमाटी कुटक से जो खबर लेकर आई वह हरेक टीले में दावाग्नि की तरह फैल गई है।

कुंवारकुनी, फ्नवल्ली, कोल्लिमूला, तलमला, पनकुंट्टी...

सभी दिशाओं को इस अपकीर्ति के बारे में पता है। भाई बहन से शादी कर रहा है। पुतूरमंट के मल्लन और मारा...

पुंकुन्नम मना की डरावनी कथा दसवीं बार उसे याद हो आई। चौंक गई। गोबर लगी चिकनी दीवार उसे देख काला चेहरा लिए चुपचाप खड़ी रही।

प्रदेश का मूप्पन शादी टूटने की घोषणा कर देगा। चेम्मक्कारन को भी पता चलेगा। फिर 'तलपोति' की आवश्यकता नहीं। मल्लन मुझसे ब्याह न कर पाएगा। मूप्पन लोग न करने देंगे।

दूर कोई सूअर भगा रहा है। पटाखे फूटने से रात की निस्तब्धता टूट रही है।

सुबह हो गई।

मचानों पर रखवाले ही नहीं, खेत के मालिक को भी सुला दे, ऐसी सर्दी। हवा। उसने चिक के बीच के छेद से मशालों को जल उठते देखा। काले अंतरिक्ष में भय रूपी बिजली की तलवार फैलाते मशालें आगे बढ़ती गईं।

आजकल हाथी का आतंक बढ़ गया है। घाटी के लोगों ने आकर सारे बांस काट लिए।

हाथी बांस के नए जंगलों की खोज में इधर घुस आए हैं। उनकी दृष्टि अब धान पर है...

दो ही दिन पहले कुरिच्चन केलन की झोंपड़ी के पीछे तक आकर बांस तोड़कर खाए हैं।

मारा ने डरकर करवट ली। दूसरी झोंपड़ियों के पीछे जंगल से लगी झोंपड़ी। मदद के लिए कोई आदमी नहीं। अप्पा को मर्द के रूप में नहीं गिना जा सकता। किसी भी बात पर ध्यान नहीं।

झोंपड़ी के पीछे सूखी डालियां टूटकर गिरीं। पुलयनकोल्ली से और पास ही जंगल वाले टूटे-फूटे बंगले के पास से दोपहर में भी उसकी चिंघाड़ सुनी थी।

मल्लन हाथी की पहरेदारी के लिए गया होगा। गोरे तम्पुरान ने वेल्लरोडी के पास जो पुंजा बोई है, उसकी कटाई नहीं हुई है। वह लेट न सकी। उठ बैठी। चूल्हे में और लकड़ियां ठूंस दीं।

हाथों को झाड़कर जलते चूल्हे के सामने जा बैठी। लकड़ियों को धीरे-धीरे निगलती ज्वाला की ओर घूरती रही। गड्ढे में धंसी आंखों में आग का प्रतिबिंब चमक उठा।

वेल्लरोडी में चार आदमी की ऊंचाई पर मल्लन पहरा दे रहा है। वह एक अव्यक्त डर से तड़पती रही।

पिछली रात चेट्टी के खलिहान में हाथी घुस गया था। अकेला हाथी। खूब ताकतवर।

खेत में पहरे पर बैठे बेटों ने दीवार के पास से एक काली आकृति गुजरते देखी।

सोचा कि कुरिच्चिन केलन की काली गाय है। वह धान नहीं खाती। रात-दिन उसके आवारा घूमने से किसी को तकलीफ नहीं। उसकी नजर खाली सब्जी की क्यारियों पर रहती है। कुरिच्चिन केलन और चेट्टी के यहां सब्जी का कोई बाग नहीं।

बेटे आग जलाकर फिर सोने लगे।

ठीक पीछे बैलों की चिल्लाहट। उनके खुरों की आवाज लगातार सुनाई देती रही। आवाज सुनकर वे जग उठे। भीतर जैसे आग लग गई हो, वे प्राण-भय से दौड़े। हाथी कहीं पास ही है। जंगली हाथी!

वे नीचे की ओर दौड़ पड़े। खेतों की ओर। चेट्टी और एक आसामी वहां सूअरों से खेत बचाने आए थे। मारा को लगा कि सांस रोककर दौड़ते लड़के उसके सामने हैं। उसकी सांसें तेज हो गई।

उस दिन लड़कों ने जिस हाथी को देखा था वह खूब चालाक था। उसके आने का किसी को पता न चला। बांस के टूटने की आवाज नहीं। बेंत का वन हिला नहीं। एक सूखा पत्ता तक न खड़का। वह कैसे आया?

खाली चेट्टी ही नहीं, कोई भी यकीन नहीं कर सका। खलिहान में जंगली हाथी के घुसने की अविश्वसनीय कहानी। जंगल की सीमा पर अनेक सालों से रहते आए लोगों ने अपनी लंबी उम्रों में कभी ऐसी बात नहीं सुनी थी।

वेल्लरोडी के खेतों में फसल पकते ही वह जंगल से निकल आता है। वेल्लरोडी में तीन जंगल मिलते हैं। त्रिकोण के आकार का एक खेत, सीढ़ियों में बंटा। चौड़ाई जरा कम है। उसके वहां न आने पर ही ताज्जुब। वह आएगा ही। कुछ फसल पैरों से कुचलकर, जितना खाना है खाकर फिर जंगल में लौट जाएगा। कोई भी उसे नहीं भगा सकता। मल्लन भी नहीं। मल्लन के सिवा अब तक कोई भी वेल्लरोडी में हाथी के पहरे पर नहीं बैठा है, उसे याद हो आया।

तहस-नहस हुए खलिहान को देखकर चेट्टी बेहोश हो गया। तभी मर जाना चाहिए। एक साल की जिंदगी नष्ट हो गई, मेहनत का फल। एक मात्र जीविका।

लोग चिंतातुर हैं। अब यहां कैसे रहें? हाथी आकर बीज भी खा लेगा तो?

पहरा देने वालों को भी जान प्यारी है। फूस की छत वाले, मिट्टी से बने घर के भीतर सोने वाले क्या सुरक्षित हैं?

मल्लन आज कहां है?

मारा फिर लेटी नहीं। अंबलकुन्न की मां ने कॉफी के पिसे छिलके दिए थे। थोड़ा बांस के डिब्बे में बचा है। खाली कॉफी। छिलका पीसकर बनाई गई कॉफी। पानी उबालकर कुछ उसमें डाल दिया। मिठास के लिए कुछ नहीं। मीठी कॉफी पीने के दिन गिने-चुने होते

हैं। वल्लियूरकाव के उत्सव में और दंपट्टतिरा में। उस दिन दुकान में पैसा देकर खरीद कर पी जानी वाली कॉफी कुछ मीठी होती है। ऊरुवयल में तो खाली कॉफी ही मिलेगी।

उसने कॉफी का एक घूंट भरा। अप्पा के लिए गर्म चूल्हे पर बर्तन ढंक के रख दिया।

अप्पन गहरी नींद सो रहा है।

वारयम की ओर उठकर चली। सुबह नहीं हुई। ओस में भीगी मेंड़। सूअरों की खेत में घुसने की कहानी सुनाने वालों के अलावा कोई नहीं मिला।

अब तिरुवोलम्मा यह नहीं कह सकेगी कि 'दोपहर तक पड़ी सोती रही न?' कभी नहीं।

गोबर के गड्ढे के किनारे झाड़ियों के बीच खिले गुलाब के फूलों पर उस दिन नजर ही नहीं गई। कुछ आगे निकल जाने पर याद आया कि तम्पुराटी को फूल बहुत पसंद हैं। रोज पूछती है कि खिले या नहीं। वापस आकर खिले फूल तोड़ लिए।...

'कितनी बार कहा, फिर भी—' बड़बड़ाती हुई वारस्यार धोने के लिए बर्तन डाल रही थी कि उस पर नजर गई...

उनका चेहरा प्रसन्न हो गया। फूल देख और भी खुश।

'आज तुझे किस सांप ने सूंघ लिया?'

उसके चेहरे पर नीरसता का भाव छाया रहा। 'फूल सामने के बरामदे में रख दे।'

सुबह के कारण बांस की नली से पानी की बूंदें वेग से टपक रही थीं।

पहले पानी नदी से ढोकर लाना पड़ता था। गोरे तम्पुरान के किए सुधारों में एक यह भी है। मंदिर के पास पापनाशिनी का जल लेकर मुड़कर इधर आने वाला जंगली सोता। सुबह उसका उन्मेष अधिक होता है।

पानी की बूंदें मारा के चेहरे पर टपक पड़ीं। ठठाकर हंस पड़ी।

तिरुवोलम्मा ने द्वार पर आके दूध दुहने का लोटा मांगा तो उसने सुना ही नहीं।

'आज तुझे क्या हुआ?'

वह चौंक पड़ी। हाथ से कांसे का बर्तन लुढ़ककर टन-टन करता पत्थर पर गिरा। उसके ओठों की हंसी मुरझा गई, फिर खिलने को तैयार नहीं हुई। उसने जल्दी ही लोटा साफ करके पानी भरकर दे दिया।

फिर से काम शुरू किया।...

इलाके के मूप्पन से सीधे जाकर मिलूं तो?

क्या एक लड़की मूप्पन से अकेले मिल सकती है? वह भी शादी की बात के लिए और मां की पुला खत्म होने से पहले? वल्ली देनी ही होगी। कुरुमाटी की दाल नहीं गलने पाएगी।

बर्तन धोकर चौके में औंधे रख दिए। आंगन में आई। खलिहान और आंगन में

झाड़ू-बुहार करने तक घास से ओस की बूंदें सूख गई थीं।

अब क्या करना है? क्या धोने के कपड़े हैं? नहीं तो जल्दी ही काम पूरा करके जा सकूंगी। उसने इंतजार किया।

रसोई में से दोशे की सुगंध आ रही है। उबलती कॉफी की महक। मीठी कॉफी की सुगंध ने इस समय आकर्षित नहीं किया।

वह वहीं खड़ी रही। किसी भी क्षण तम्पुराटी कोई काम बता देगी। मन दूर भटक रहा था। ओखली वाले कमरे से गोबर निकालने वाली खुरपी लेने आए गोरे तम्पुरान ने उसे देखकर रसोई की ओर मुड़के कहा :

'मारा खड़ी है।'

'आती हूं।'

कुछ देर बाद वे आईं। छोटे बरामदे से पिछले दिन धुली थाली लेकर चली गईं। भात परस दिया। केवल भात।

'सब्जी कुछ नहीं।'

'दो मिर्च तोड़ ले।' चुटकी भर नमक थाली में डाल दिया।

बर्फ हो गए भात में वह उंगली डालकर ऐसे ही बैठी रही।

मिर्च नहीं तोड़ी। मुट्ठी भर चावल खाकर उठ गई। चारों ओर नजर डालकर थाली उठा ली। गोशाला के पास रखी सानी में सब कुछ पलट दिया।

भात बिना खाए सानी में डाल देने पर तम्पुराटी खुश ही होगी। दूध ज्यादा मिलेगा, यही मन में आएगा। पर ऊपर से डांटेगी, 'इतनी हिम्मत पड़ी तुझे? अगर चावल का दाना भी नसीब नहीं होता तो गलत नहीं है।

बर्तन धोकर औंधे रखे। फिर भीतर की ओर देख के बुलाया—

'तिरुवो—'

'इतनी जल्दी खा चुकी। क्या निगल रही थी?'

वह चुप रही।

'कुछ चावल साफ करना है।'

वह फिर भी नहीं बोली।

'क्या हुआ है तुझे? दूसरी आसामी औरतों की तरह तू भी हो गई।'

वह रुंधा गला लिए खड़ी रही।

मन किया कि सब कुछ बता दे। तम्पुराटी दयालु है। बहुत-सी बातें पूछा भी करती हैं। कितना अनकहा रह गया है। शादी टूटना, कुरुमाटी की झूठी अफवाहें, मां न होने का दुख। शब्द गले में ही फंस गए।

नहीं, नहीं कहना है। कहने से क्या?

'चावल कल साफ कर दूंगी।'

'ठीक है, कल ही कर लेना।'

'पर रुक। दो एक कपड़े धोकर जाना।'

मैले कपड़ों की गांठ बनाकर, साबुन लेकर वह घाट की ओर चली।

कोल्लीमूला की ओर पानी मोड़ने के लिए पुष्कुनि में घाट पर बांध बना रहे हैं।

शिलाओं की एक बड़ी दीवार। दीवार के पीछे एक आदमी की ऊंचाई तक पानी। नदी किनारे से एक लंबा नाला खेतों की ओर निकाला गया है। नाले के पास मिट्टी खोदते लोगों के पास गोरे तम्पुरान खड़े हैं।

मल्लन भी साथ होगा। मन उबल पड़ा। बांध के पार गहरे नाले में खड़े लोग दिखाई नहीं पड़ते।

नीचे घाट पर कपड़े धोने की जगह वह ऊपर की ओर चली। वहां अच्छे बड़े पत्थर हैं।

साफ पानी। पशुओं ने यहां गंदगी नहीं की है। झाड़ियों के बीच लुकाछिपी खेलती, चट्टानों पर सिर मारकर हंसती, बहती बावली नदी।

यहां तिरुवेलम्मा नहाने आती है। उसने नीचे की ओर देखा। मुंह मुरझा गया। मल्लन नहीं है। केवल चात्तन और कुरुमन। काम एक का ही हो तो भी तम्पुरान बस मल्लन को ही बुलाते हैं। आज मल्लन कहां है?

नीचे घाट पर बच्चे चिल्ला रहे थे।

कपड़े धुल गए। सबको लेकर बांधा। गांठ बांध फिर से देखा। नहीं, दो बड़ी धोतियां कहां गईं? घबराहट। पत्थरों के बीच देखा। नदी की धारा में देखा। पाया, धीरे-धीरे बहते जा रहे हैं। बांध के पास नदी गहरी हो जाती है। चलकर पकड़ लेना आसान नहीं है। तैरना आता नहीं। तृश्शिलेरी वाली हूं, तभी तैरना भी नहीं आता। धोती छोड़ नहीं सकते। वह उस पर नजर गड़ाए पानी में चल पड़ी। किनारे कंटीली झाड़ियां और गोल-गोल पत्थर।

उसकी चाल से तेज पानी का बहाव। कपड़े दूर निकल गए। बांध का काम खत्म कर मजदूर जा चुके थे। कोई नदी के बीचोंबीच नहा रहा था। वह वहीं खड़ी रही—जरा कहने पर कोई भी हो, कपड़े उठा देगा।

नहाने वाले के पास कपड़े पहुंच गए। वह देखकर मुड़ा। गोरे तम्पुरान। मारा घबरा गई। नदी के बीच खड़ी कांप उठी। गोरे तम्पुरान की बनियान नदी के बीच एक चट्टान पर रखी थी। वह तभी दिखाई दी।

'क्या ढूंढ रही है, मारा?'

'कपड़े।'

'कहां?'

'देखिए, बहते जा रहे हैं।' गोरे तम्पुरान को छूकर वे कुछ और दूर बह गए थे। तब लगा था कि गोरे तम्पुरान ने देख लिया। कपड़े कुछ दूरी पर कंटीली झाड़ियों में फंस गए थे।

देखते-देखते बांध में पानी बढ़ गया। तम्पुरान के गले तक पानी। किनारे पर एड़ी तक आने वाला पानी अब कमर की ऊंचाई पर बह रहा था। घेर कर गिराने की कोशिश करते पानी की बांहों से डरकर वह किनारे की ओर चली। कंटीली झाड़ियों के बीच पत्थरों पर पांव टिकाए।

तम्पुरान नहाना पूराकर तैरकर झाड़ियों की ओर गए। कपड़े छुड़ाकर निचोड़े और उसकी ओर फेंक दिए।

चलने को होकर वह रुकी। शिला पर रखी बनियान को इंगित कर बोली :

'धो दूं?'

'नहीं। इधर साबुन नहीं। तुम्हारे पास हो तो देकर जाओ।'

उसने फिर नहीं कहा। तम्पुरान जो कहे वही आखिरी होता है।

खलिहान में काम करते कितने साल हो गए! अभी तक एक अंगोछा भी तम्पुरान ने धोने को नहीं कहा। कभी नहीं।

उसने साबुन लाकर दिया। तम्पुरान के नहाकर जाने तक वह ऊपर कंटीली झाड़ियों के बीच खड़ी देखती रही।

फिर पहनी साड़ी का एक हिस्सा धोया। गीले हिस्से को पहनकर दूसरा हिस्सा भी साफ किया। नहाई। कपड़े सुखाने के लिए नदी के बीच की चट्टान पर खड़ी रही। दोनों हिस्से बार-बार सुखाए। साड़ी पहन, धोए कपड़ों की गांठ बनाकर फिर खलिहान की ओर चली।

खलिहान में फैला पड़ा फूस। उस पर सूखने के लिए कपड़े बिछा दिए। खाने की प्रतीक्षा नहीं थी। आज वल्ली मिलने लायक कोई काम किया भी नहीं।

आंगन में खड़े-खड़े ही बोली, 'मैं जा रही हूं।'

'जा, चावल कल साफ कर लेना।'

मन में मूप्पन की झोंपड़ी को जाने वाला रास्ता घूम रहा था। आज तक देखा नहीं, सुना ही है। एक दिन अप्पन ने दूर से मूप्पन की झोंपड़ी दिखाई थी। रास्ते में खिले गुलाबों में उसका मन नहीं गया। बालों को ऐसे ही बांध लिया।

17

वह केले के झुंड से होकर चली। खेत में खड़े आंवले के पेड़ के नीचे कुछ देर ठहर गई। गर्मी। भयंकर गर्मी। जंगल से आती ठंडी हवा भी खेत में पहुंचते-पहुंचते धूप में जलने लगती है।

कल बादल थे। रात में कड़ाके की ठंड। दिन में जलती धूप। दरारें पड़े, सूखे ओठ जैसे खेत। बारिश नहीं होती। होगी भी नहीं। जहां कुरुमाटी जैसी चुड़ैलें हों वहां बारिश कैसे होगी?

नीचे खेतों की ओर चल पड़ी। मूप्पन से मिलना है। चारों ओर नजर घुमाई। कोई देख तो नहीं रहा है?

बावली का पानी सूख गया है। गोल-गोल पत्थरों के तीन-चौथाई हिस्से पानी के ऊपर हैं। बांध में थोड़ा-सा पानी रुका हुआ है।

धूप में जैसे गर्म हो आए बादल सिर के ऊपर से निकलते रहे।

ब्रह्मगिरि के माथे पर दिख रहे काले बादल शाम होने तक चारों तरफ छा जाएंगे। क्या शाम को पानी बरसेगा? नदी से ठंडी हवा बह चली। उधर आग उगलती धूप। नदी के उस पार विशाल फैले पड़े खेत। उन्हें पारकर तलमला पहुंचना है। वहीं मूप्पन रहता है। तृश्शिलेरी और तिरुनेल्लि के लिए एक ही मूप्पन है– जवर पेरुमन। घर में होगा भी? जरूर होगा। हे मलंकारी...!

जलती धूप में बाहर निकलने में संकोच हुआ। शाम तक तो प्रतीक्षा नहीं की जा सकती। दोहपर के बाद हो सकता है, आकाश बादलों से काला पड़ जाए। टीले काला कंबल ओढ़ लें। उसके पहले ही लौट आना है।

तलमला अरवानाषिकुन्न जैसा नहीं। कुछ साफ-सुथरा है। बिना पेड़-पौधों के पहाड़। जंगल से हटकर खेतों की ओर झुका एक टीला। टीले पर खुली धूप। झोंपड़ियां थकी, अलसाई-सी पड़ी हैं। उसे लगा जैसे उनकी सांसें महीन धुएं के रूप में ब्रह्मगिरि के शिखर पर छाए सफेद बादलों पर चिपकती जा रही हैं।

मूप्पन से जो कुछ कहने को सोचा है, उससे अभी मन हटाने की इच्छा हुई।

पर मन नहीं माना। पिंजरे से बाहर निकलने को आतुर एक पक्षी की भांति वह पंख फड़फड़ाता रहा।

मूप्पन मुझे पहचान लेंगे? तृश्शिलेरी काक्कपुला में आए थे। तभी दो-तीन बार देखने का परिचय भर है। लंबा, कुबड़ा बूढ़ा। तब आंखों से ठीक तरह दिखाई देता था। पर अब? पहचाना नहीं। तो क्या बताऊंगी? गोरे चुंडली की बेटी मारा।

पुत्तूरमंट का गोरा चुंडली।

अप्पन बहुत मेहनत से काम करते थे।

तृश्शिलेरी के जंगल को समतल बनाकर, कंद बोकर जीवन बिताने वाले बड़े भाइयों के साथ तब रहते थे। यहां आने के बाद ही आसामी बने। पुराने दिन याद तो आते होंगे।

कुरिच्चन केलन के खेत के किनारे दुपहरी के समय भी बच्चे मछली पकड़ रहे थे। छाई हुई निस्तब्धता को उनकी हंसी बार-बार भंग कर देती।

नदी में डुबकी लगाकर फिर घाट की चट्टानों पर चित्त होकर या औंधे पड़कर लेट जाते। खाल जलने लगती तो फिर नदी में कूद जाते।

पेड़ों की छाया से होकर जाने का खयाल छोड़ दिया। उधर जवनी या वट्टा के बच्चे होंगे।

घर पहुंचते ही बताएंगे—

'मारा कहीं जा रही थी।'

आंचल से सिर ढककर वह खेत के बीचोबीच मेंड़ पर चली। चलते-चलते रास्ता और भी लंबा हो जाता है।

पांवों को वह ऐसे उठा-उठाकर रख रही थी जैसे आग पर चल रही हो।

ऊपर-नीचे सब तरफ भयंकर गर्मी। नदी से आती हवा भी बन्द थी।

उसने थैली टटोल कर देखी। तंबाकू का टुकड़ा वहीं है न? हाथ से छूकर देख लिया। मूप्पन को भेंट करना है। बस एक टुकड़ा तंबाकू ही है। धान का एक दाना भी नहीं है झोंपड़ी में। बस 'तलपोति' धान है। उसके दावेदार मूप्पन लोग हैं। वे खुद आकर नाप-तौल कर लेंगे। फिर थोड़ी-सी कॉफी पड़ी है। जवर पेरुमन वो तो लेंगे नहीं।

टीले के पास पहुंचते-पहुंचते मन को काली शंकाओं ने घेर लिया। मूप्पन से मिलने जाती एक अकेली लड़की।

उसे आश्चर्य हुआ अपनी हिम्मत पर। 'तलपोति' धान आकर ले लें, क्या यह कहना एक लड़की के लिए उचित है?

मां नहीं। चाचा या चाची नहीं। घर में कोई छोटा-बड़ा और नहीं। एक अप्पन है तो वह खुद में मगन है। उससे अब कुछ नहीं होगा।

गोरे तम्पुरान ने झाड़ू-बुहारी का काम अंबलकुन्न में दिलवाया था। वही एकमात्र सहायक है। तम्पुरान के कहने से ही कभी-कभी शाम को वल्लो मिल जाती है।

उसकी आंखें भर आईं। गरम आंसू की बूंदें धूप में कुम्हलाए गालों पर टपक पड़ीं। नाले से चुल्लू भर पानी लेकर मुंह पर छिड़का।

'क्यों रोती है?' ऐसा पूछने वाला मल्लन पास नहीं। उस दिन वल्लियूरकाव के घाट पर मल्लन ने इन आंसुओं को अपने ओठों से सुखा दिया था।

अब?

साड़ी के आंचल से मुंह पोंछा। बार-बार रोकने पर भी बहते जा रहे आंसू। दुख की छायाएं आंखों के गड्ढों में बादलों की तरह घनी हो रही थीं। उस वर्षा को वह रोक नहीं पाई।

ओठों कौ दातों में दबा लिया।

नाले के किनारे-किनारे पशुओं के रास्ते से होकर वह उस टीले तक पहुंच गई जहां मूप्पन की झोंपड़ी थी।

एंब्रोशन* का खलिहान। धान से दाने निकालती आसामी औरतों की नजर से बचने के लिए वह दाई ओर मुड़ गई।

ठीक पीछे घना जंगल। टूटे-फूटे फारेस्ट बंगले को घेरे खड़ा घना वन। उस जंगल से होकर अकेले ही आई, इस बात से वह भयभीत नहीं थी। मूप्पन के पास कैसे जाएगी, यही चिंता सताती रही।

खड़ी-खड़ी हांफती रही। गाल तमतमा उठे। भीतर एक पक्षी जैसे पंख फड़फड़ा रहा था।

आम के नीचे कुछ देर खड़ी रही। आम के तने से चूते रस की गंध लिए हवा आई। शाखाओं से टकराकर मुरझाए आम इधर-उधर गिर पड़े। अभी बच्चे दौड़ आएंगे। वह फिर से चल पड़ी। टीले पर कड़वे नीम के पेड पर पक्षियों के एक जोड़े ने पंख फड़फड़ाए। गोलाई में घूमकर खूब ऊंचे उड़े और फिर डालियों पर बैठ गए। वह झोंपड़ियों की ओर देखकर चली।

नलमला में कुछ झोंपड़ियां सरकार ने बनवाई हैं। खुली हवा और रोशनी में चलने वाले लोगों के लिए वे पिंजरे जैसी हैं। एक चौकोर कमरा। छत का तीन-चौथाई खपरैल गायब। उनकी जगह पर फूस बिछा हुआ।

झोंपड़ियों के चारों ओर कोई बरामदा नहीं। बगल में छोटा कमरा बनाकर उसके ऊपर फूस बिछा दिया गया था। छप्पर बनाकर पिंजरे को ही झोंपड़ी की शक्ल दे दी गई थी। मजबूत दरवाजे वाले चौकोर कमरे में पुराने घड़े क्रम से रखे हुए थे। छप्पर में ही सोते हैं। चावल हो तो वहीं पकाएंगे। वही आग तापेंगे। कभी न खुलने वाले कमरे में देवी-देवताओं की मूर्ति की तरह सिकुड़े खड़े उपयोगहीन घड़े।

निर्जन घर। औरतें साग-पात की तलाश में गई होंगी। कुछ लोग पुंजा की कटाई कर रहे होंगे। पुरुष कच्ची लकड़ियां तोड़ने और गट्ठर बांधने गए होंगे। अच्छे वक्त पर आई।

मूप्पन की झोंपड़ी को उसने झट पहचान लिया। बिना औरत का घर। बिना गोबर

---

*मंदिर के पुरुष सेवक

लिपी दीवारें, बिना पानी छिड़की जमीन, मिट्टी के टूट पड़ने से दांत दिखलाती-सी बांस की चिक।

जल्दी से बरामदे में जाकर खड़ी हो गई। चारों ओर देख लिया।

अकेले एक लड़की का मूप्पन की खोज में आना—देखने वाले कहेंगे—

बिना पति के बच्चे से होगी।

दूसरे के भर्तार से शादी करना चाहती होगी।

तम्पुरान की रखैल।

पति ने छोड़ दिया है।

अगर इनमें से कोई भी वजह नहीं तो मूप्पन से मिलने एक लड़की अकेले क्यों आएगी?

क्या करूं? किसी की नजर पड़ने से पहले लौट जाऊं?

बरामदे के एक कोने में, बूढ़ा रुपए वाली थैली में कुछ टटोल रहा है।

पुलयनकोल्ली के ऊपर, टूटकर गिरने का इंतजार करती चट्टानों के समूह की याद दिलाता है उसका चौड़ा माथा। जटा बन गए बाल माथे पर बिखरे पड़े हैं।

गहरी धंसी, छोटी-छोटी आंखें। मोतियाबिंद से जकड़ी आंखों के चारों ओर मक्खियां भिनभिना रही हैं। आंखों से मक्खियों को हटाता बूढ़ा बरामदे के किनारे पर सरक आया। कमजोर आंखों पर हथेलियों की आड़ करके पूछा :

'कौन है?'

तब बात की गंभीरता उसे समझ में आई। बूढ़ा देख नहीं पाता। अपना नाम-पता समझा देना होगा।

'गोरे चुंडली की लड़की मारा यहां कैसे?'

इस ढंग से बात अगर शुरू होती तो आसानी से काम बन जाता।

खड़े-खड़े दुखी होने की जरूरत नहीं। एक और आदमी आ गया। उसके आते ही सांसें ठीक से चलने लगीं। जोगी। जवर के बाद वही इलाके का मूप्पन बनेगा।

उसकी भी उम्र कम नहीं। धूप से आया है। कई बार आंखें घुमाईं। पलकें झपकाता रहा।

अपनी ढेरों प्रजा में से भी सुंदरी मारा को जोगी चट पहचान गया। जिज्ञासा जबान फैलाती है। आखिरकार यह भी तेरे पास आ गई है! अकेले! उसके जीवन की संभावित विपत्तियों की सूची जोगी के मन में लंबी होती गई। उसकी कमर में लाल फीते से बंधी लटक रही थैली पर जोगी की नजर मंडराती रही। केले के गुच्छे के चारों ओर मंडराती काली मधुमक्खियां उसे याद हो आईं!

जोगी ने दिमाग पर जोर डाला, एलुत पोट्टन नहीं, वेल्ली भी नहीं, किसी और ने ही वह खबर उस तक पहुंचाई थी।

इटमलामंट के—

नहीं, नहीं, कोई लड़की थी। नीले रंग की नई साड़ी पहने थी। घमंडी-सी लड़की। उसने जो तंबाकू भेंट किया था, उसका एक टुकड़ा अब भी थैली में है। नाम याद नहीं आ रहा। शायद अरवनाषि़ की थी। एक बार जब वहां मनौती का मंत्र पढ़ने आदि के लिए गया था तब—

जवर पेरुमन ने कान लगाया। कोई कुछ बोलता क्यों नहीं?

'तू कौन है?' जवर ने पूछा।

'पुष़कुनि के चुंडली की बेटी—'

'मारा?'

वह चौंक गई। मूप्पन् को मेरा नाम कैसे याद है? इस पहाड़ पर कितनी ही झोंपड़ियां हैं। कितनी ही औरतें हैं। उनके बीच सिर्फ मेरा नाम ही क्यों याद है? कुरुमाटी की...

'चुंडली की बेटी मारा?'

'हां, वही।'

'क्यों आई है?'

उसे आश्वासन मिला। सीधी बात बताकर जल्दी ही इस भट्ठी से निकलूं।

छाती से एक अदृश्य चट्टान का बोझ अपने आप हट गया। आश्वासन की सांस।

सारे दुख का बोझ यहीं उतार दूं।

'तलपोति आकर ले लें, यही कहने आई।'

जोगी की मक्खियां भिनकती आंखों ने एक बार और उसे देखा। कई बार वे उसकी थैली पर भी गई।

मारा ने देख लिया। कांपती उंगलियों से थैली खोली। घबराहट में फंस गए फीते को अलग कर तंबाकू का टुकड़ा निकाला। इलाके का मूप्पन जवर है। जोगी मूप्पन बनने वाला है। एक क्षण सोचती रही। फिर तंबाकू का टुकड़ा जवर की गोद में डाल दिया।

चार लालची आंखें उस टुकड़े पर टिक गई।

जोगी ने छीनने के ढंग से झपटकर उठा लिया। जवर को झेंपकर अपनी बंद आंखें टिमटिमाते देख उसे दुख हुआ—बेचारा बूढ़ा। मैं तो गरीब हूं। पूरा तंबाकू लाना चाहिए था।

जोगी ने एक छोटा टुकड़ा— बहुत छोटा-सा काटकर बूढ़े की उंगलियों के बीच रख दिया। एक और टुकड़ा अपने मुंह में डालकर बाकी थैली में डाल लिया। थैली खुलने पर सड़ी सुपारी की गंध आई।

मारा ने मुख फेर लिया।

विषय पर आए भी तो बात वहीं खत्म हो गई।

जोगी जैसे समाधि में हो, कुछ देर तक हिला भी नहीं।

फिर उठकर अंदर गया। चीजें हटाने की आवाज। एक सूप में कुछ दागदार घंटियां लेकर वापस आया। पुरानी जगह पर फट गई चटाई पर आकर बैठ गया। सूप गोद में रख कर आंखें बंद कर लीं। हथेलियों को गूंथ गले के पीछे बांध दाएं-बाएं हिलने लगा। जवरन बिना कुछ जाने तंबाकू गुलगुलाता रहा।

वह उत्कंठा से देख रही थी। सब कुछ पता चल गया है उन्हें। मलंकारी को बुलाकर दोष-परिहार की याचना कर रहे हैं। दुख एक शिला की तरह फिर से उसकी छाती पर जम गया।

जोगी ने सोचा। इस दोष का क्या निवारण है? आखिर मूप्पन हूं मैं या होने वाला हूं। बूढ़े जवर से अब कुछ नहीं होता।

तंबाकू का एक और टुकड़ा मुंह में रखकर मजे में चबाने लगा।

इसे जरा विदा कर दें? बात गुरुतर है। शादी टूट जाने के बाद भी एक आसामी 'वल्ली और कोल' लेकर लड़की के घर गया। जिनके बारे में सब कहते हैं कि एक ही परिवार के हैं।

मैं शास्त्रज्ञ हूं। शास्त्रानुसार इसे व्यवहार में लाने पर विवश हूं। कल को मूप्पन बनने वाला मैं क्या करूं? आवश्यक परिहार क्या है?

जुरमाना। यहां तक आकर सोच थमा। तंबाकू का दाग पड़ी जोंक की तरह वह ठिठक गया।

इस अपराध के लिए जुरमाना है? कैसा जुरमाना?

बहुत पहले के समय से, वन के राजा के राजकाल के समय से आज तक ऐसी बात सुनाई नहीं पड़ी।

कुछ भी हो, शरण में आई, फिर इतनी अच्छी तंबाकू भेंट में लेकर आई इस सुंदरी की आशाओं को पैरों तले नहीं कुचलना है।

आंखें खोलीं।

मारा का दिल कांप उठा।

क्या है?

जोगी ने गोद में रखे सूप को कई बार हिलाया। मरी पड़ी घंटियों से आवाज का खून बहने लगा।

वह उत्कंठित होकर, स्थिर आंखों से मूप्पन की एक-एक गतिविधि देखती रही।

अपनी उभरी, आपस में उलझी नसों वाली हथेली को ध्यान से देखता हुआ जोगी बोला :

'इसका परिहार है।'

उन शब्दों को मारा ने पी लिया।

'जुरमाना अदा करना होगा।'

'कितना?'

'हजार चूड़ियां।'

हजार चूड़ियां! उसका मुंह खुला ही रह गया। हजार चूड़ियां! सौ भी सोच में नहीं आतीं। बिना व्याह के लड़की को गर्भवती बना देना यहां सबसे बड़ा अपराध माना जाता है। उसका जुरमाना तो तीस चूड़ियां है, बस। वह सीसे की तरह जमकर खड़ी रही। कोई मार्ग नहीं। सर्वांग फटा जा रहा है।

सिर घूम रहा है।

हे भगवती! मारियम्मे!

क्या इसीलिए कल मलंकारी के सामने नारियल चढ़ाया था? तीन मानम वल्ली दी तो मोयतीन ने भात के एक कौर जितना बड़ा नारियल दिया था। अगर सेयतु होता तो चार मानम देने पड़ते।

रोना भी नहीं आया। जम गए दुख से जैसे छाती फट रही है।

मल्लन से नहीं हो सकेगा। हजार चूड़ियां। मतलब सौ रुपए। कहां से आएंगे?

जुरमाना अदा न कर पाने का मतलब है, मल्लन की कहीं और शादी।

उसको स्तब्ध देखकर जोगी को दया आई। अच्छे चुंडली की बेटी।

पुलयन की पोती। वह भी इस इलाके का मूप्पन था। उसने ऐसे कहा जैसे बड़ी उदारता दिखा रहा हो :

'जुरमाना देने के लिए मल्लन कोई न कोई रास्ता ढूंढ निकालेगा।'

दूर, नरिनिरङ्गिमला के पहाड़ों पर काम करने के लिए मजदूर चाहिए। कड़ी मेहनत कर सकने वाले मल्लन जैसे लोग। बांस के जंगलों को काटना है जहां हाथी नहीं जाता।

'उसे काम करके पैसा अदा करने दे।'

मारा घबरा गई। मजदूरी करके पैसा लाने के लिए मल्लन को तिरुनेल्लि से जंगल में भेज दे?

चाय के बागानों में जहां पणिय* औरतें काम करती हैं। वहां जाने पर क्या मल्लन वापस मिलेगा? उससे तो अच्छा कुटक चला जाए। खानदान के बहुत-से लोग हैं वहां। पुत्तूरमंट के, कल्लिलममंट के और वटुकमंट के।

जुरमाना कुछ कम नहीं हो सकता। उसने दयनीय ढंग से मूप्पन की ओर देखा—भिक्षुणी के रूप में—

---

*एक जनजाति

मुझे बचा लो।

जवर की बंद आंखों को कुछ दिखाई नहीं पड़ा।

जोगी पहले की तरह बांहें गले के पीछे बांधकर बिना हिले-डुले बैठा रहा। हजार चूड़ियों के लिए, मलंकारी को, चामुंडी को जरा याद तो करना ही चाहिए।

'दादा अगर जिंदा होते, प्रदेश के मूप्पन होते तो मुझे क्या दंड देते?' मारा ने सोचा।

शायद मल्लन के हजार चूड़ियां देने को तैयार हो जाने पर भी मुझसे उसकी शादी नहीं होने देते।

'आज ही तलपोति धान नाप लीजिए?'

'मल्लन जुरमाना भर दे। उसके बाद ही चाहिए न?'

'धान रखा हुआ है।'

'हम कल आ जाएंगे, अच्छा।'

दोपहर का समय। जिस रास्ते से आई, उसी से नहीं लौट सकती। जंगल के किनारे पशुओं के रास्ते से वह चलने लगी।

प्यास।

जंगल सोते में हाथ धोए। कुछ पानी हथेली पर लेकर पी लिया।

अंधेरे, वन के हृदय से आता बर्फ-सा ठंडा पानी। तल में सूखे पत्ते हिलते हैं। धूल नीचे जम जाए, इतना इंतजार बर्दाश्त नहीं। पानी पिया। धूल मिला पानी। बार-बार चुल्लू से पिया। न मिटती प्यास।

पास कहीं मक्खियां लगातार भिनभिना रही हैं।

कुरिच्य जाति की स्त्री माधवी की झोंपड़ी के पीछे चंपा फूली होगी। महीन, बिंध जाने वाली सुगंध। ठीक ऊपर पेड़ की डाली पर जंगली गिलहरी किटकिटाई। क्षण भर में पत्तों के बीच ओझल हो गई।

उसका चेहरा वेल्लिला के पौधे की तरह पीला पड़ गया। कैसा अपशकुन?

सोते के किनार से चली। नदी में उल्लासपूर्वक नहाते बच्चे होंगे। कभी न मिलने वाले शाक-पत्तों की खोज में किनारे औरतें भटकती होंगी।

गोपालन नायर की झोंपड़ी के पीछे नाला और पशुओं का रास्ता समाप्त हो जाता है। नीचे उतरना है। बड़ी तोंद वाले गोपालन नायर की सुंदर पत्नी आसामी स्त्री है। गोपालन नायर की ब्याहता हो जाने के बाद पेम्बी अब आसामियों की झोंपड़ियों में नहीं जाती।

रोज की तरह दीवार पर खड़े होकर पेम्बी से बात करने का मन नहीं। प्रार्थना की, वह आज न मिले। दाएं-बाएं देखे बिना पहाड़ से उतर, टीले का उतार पारकर खेत पर पहुंच गई। एक भी जीव इस आग उगलती धूप में बाहर नहीं निकलता। उसने झोंपड़ी की ओर देखा। अप्पन बाहर कहीं नहीं। झोंपड़ी की छोटी-सी छाया, किसी घाव के निशान

की तरह आंगन के पूरब में पड़ रही है।

18

सुबह मूप्पन आया। साथ में पुरोहित भी था। उसने तलपोति का धान एक टोकरी में भरकर रखा हुआ था। एक दाना भी अलग नहीं किया।

रात में कंजी बनाने के लिए चावल नहीं था। फिर भी उस धान की ओर देखा तक नहीं।

सिर से एक बोझ उतर गया।

सचमुच? शंकाएं उत्कंठाओं के छेदों से सिर बाहर निकाले दबी बैठी रहीं। मल्लन हजार चूड़ियां कैसे लाएगा?

मूप्पन से मिलने की बात मल्लन को पता नहीं। उससे मिलना होगा। कैसे? कहां? वेल्लरोडी के नीचे पहरा खत्म होने तक मचान पर ही होगा।

अकेले मल्लन से जाकर मिलना, रात में मचान पर जाकर। उसका चेहरा लाल पड़ गया। रोमांचित हो उठी।

हजार चूड़ियां—पहले तो हजार आने देने पड़ते। अब एक चूड़ी के लिए दस पैसा।

'चांदी के सौ रुपए चाहिए।' हिसाब लगाकर तिरुवोलम्मा ने बताया।

'मेरी मारा, सुन। सौ नहीं' चांदी के दो सौ रुपए भी दे सकता है वह। ऐसा योग्य है। उसने सांत्वना भी दी। उसे लगा कि मल्लन उससे कहीं बड़ा है।

आसामी को सबसे अधिक पैसा मिलता है। वल्लियूरकाव के उत्सव के दिन। क्षण भर में वह पैसा दुकानदारों की थैलियों में विश्राम करने लगता है। लक्ष्मी से आसामियों की शत्रुता है।

'क्यों नहीं? क्या ये लोग साफ-सुथरे हैं? स्वच्छता है? ईमानदारी है?'

'जमींदार लोग जो कहते हैं क्या सच ही है?

अब तक हरी स्याही के गुदने के लिए चवन्नी के अलावा कुछ भी नहीं बचा पाई मैं। आज-कल में वह भी हाथ से निकल जाएगी।

मल्लन ने गोरे तम्पुरान से पैसे पेशगी लेकर खर्च किए, मेरे लिए। उत्सव के वैसे दिन अब नहीं आएंगे? काम के दिनों में चार मानम वल्ली मिल जाती है। वह भी अगर गोरे तम्पुरान के खलिहान में हो तो ही। नहीं तो तीन मानम। उसमें से एक मानम की नमक-मिर्च। नमकीन सूखी मछली के लिए भी पैसा नहीं जुटता। दो मानम धान का चावल बनाएं तो

कंजी के लिए भी काफी नहीं पड़ता। बाकी उधार चुकाने पर ही होगा। जुरमाना अदा करने के लिए कहां से पैसा लाएं?

मल्लन बागानों में मजदूरी करे तो– जंगल में काम पर जाए तो–

फिर दिखने को भी नहीं मिलेगा।

वह प्रतीक्षा में बैठी रही। क्षण-क्षण गिनती रही। घास-पात तोड़ने के लिए जंगल किनारे गई तो मलंकारी देवी से प्रार्थना करती रही। तिरुवोलम्मा को अहाते में जो भी पके केले मिले थे, देवी की भेंट चढ़ा दी।

बादलों का कंबल ओढ़े दिन किसी बूढ़े की तरह धीरे-धीरे चलता चला गया।

चांदनी रात। वेल्लरोडी के नीचे पहरा अभी चल रहा है। कल खत्म होगा।

उसके बाद?

मूप्पन लोग जुरमाना अदा करने को बोलेंगे।

दिन की भयंकर गर्मी के बाद रात में कड़ी ठंड। ठंडी हवा। खूब सुलाने वाली। अब क्या मुझे कभी नहीं नींद आएगी?

मचान पर मल्लन ने करवट ली। लोगों के वास-स्थल से दूर जंगल के अंदर की ओर फैला खेत–संकरा-सा।

ठीक बगल में एक नाले के रूप में बावली शुरू होती है। वही इस निर्जन क्षेत्र को तिरुनेल्लि के दूसरे चहल-पहल वाले इलाकों से बांधे हुए है।

खाली मैं ही था जो यहां अकेले पहरा देने को तैयार हुआ?

निर्जन प्रदेश ने उसे बेचैन कर दिया। वेल्लरोडी में खड़ी फसल को देखने में डर लग रहा था।

शाम होने के बाद गोरे तम्पुरान कई बार आते हैं। टार्च की बड़ी आंखें विजन क्षेत्र के अंधेरे कोनों की ओर बढ़ जाएंगी। चिन्नडी के खेत से ही उन आंखों की चमक दिखाई पड़ने लगती है। देखने पर आश्वासन मिलता है। डर भागकर छिप जाता है।

उनको नींद नहीं। कब सोते हैं, कब जगते हैं, कोई ध्यान भी नहीं देता।

वारयम की तिरुवोलम्मा बस खाने को पूछ लेंगी। तम्पुरान इतनी तकलीफ क्यों उठाते हैं?

मना के तम्पुरान ने भी कितना कष्ट सहा! पर अंत में हुआ क्या?...

चार आदमियों की ऊंचाई पर लेटा हूं। चार बड़े-बड़े बांस के खंभों पर बना मचान। आग, पटाखे, हंटर–सब पास ही हैं।

बहुत ऊंचाई पर इस फैले निर्जन इलाके के राजा की तरह विराज रहा हूं।

बांध के उस पार मारार की जमीन। पहरा देने के लिए काला चुंडली नियुक्त है। वह लकड़ी का एक खंभा मचान पर खड़ा कर देगा। पहनी धोती उतारकर उसे उठाके

अपनी झोंपड़ी में सोने चला जाएगा। शाम के बाद फिर वह खेत में नहीं झांकता।

मैं अकेला हूं।

लगता है कि कुछ दूरी के एक मचान पर चात्तन है। इस लगने को वह धैर्य से पकड़े हुए है।

मुंह में आए गीत को उसने निगल लिया। गाने का उत्साह नहीं हुआ।

बैठे-बैठे ऊबकर लेट गया। पैर बाहर हवा की ओर बढ़ा लिए। अकेला हाथी फारेस्ट बंगले और पुलयनकोल्ली के आस-पास घूमता रहता है। बारिश होने तक यहीं ठहरेगा। लोगों को डराता रहेगा। बारिश शुरू होने के बाद मैसूर के जंगलों की ओर बढ़ जाएगा।

पैरों पर कुछ रेंगा। वह डर से कांप उठा। ठंडी हवा?

नहीं, सांप? एक पुरानी याद आई।

सिर से पैर तक सुन्न पड़ गया। इसी जगह पर शिकारी ज़ोसफ को सांप ने डंसा था। कुरिच्चन रामन की झोंपड़ी में एक महीना तड़पता रहा था। पैरों में मोच आ गई थी। सूजकर ओखली जैसे हो गए थे।

कांपते पैरों को कपड़े के भीतर खींच लिया।

फिर से वह स्पर्श!

कुरुमाटी की उंगलियां।

वह चौंक पड़ा।

हे मलंकारी!

क्या इस जन्म में उससे पीछा नहीं छूटेगा?

चांदनी फीकी पड़ रही थी।

चांद की ओर पीठ किए होने से उसका चेहरा वह देख नहीं सका।

कैसे ऊपर चढ़ी?

चार आदमी की ऊंचाई के उस मचान से सटी एक बांस की सीढ़ी रखी है। वह उसी पर खड़ी है।

यह कुरुमाटी नहीं!

नई जानकारी ने और डराया। जंगल के इस कोने में आधी रात को अकेले निकलना! कुरुमाटी से भी ज्यादा हिम्मत रखने वाली यह लड़की कौन है?

'मल्ला...!' दबा स्वर आधे में टूट गया।

वह चौंक पड़ा। यह तो कभी भी नहीं सोचा था।

'मेरी मारा!'

उसने दोनों बांहों से उसे घेर लिया। किसी भी क्षण उसका पैर फिसल जाएगा। उसने घबराकर, जैसे मौत के मुंह से निकाल रहा हो, उसे उठाकर अपने बदन से लगा लिया।

क्षण भर के लिए बावली के किनारे चट्टानों पर गिरने से सिर खुली आकृति उसके मन में घूम गई। कुरिच्चन कन्नामन गिरने से मर गया था।

मारा गिरेगी नहीं। गिरने नहीं दूंगा। मन का उन्मेष शांत पड़ने पर वह धीरे-धीरे उतरने लगी। वह भी उतरा, उसके हाथ को पकड़े हुए। कोई कुछ बोला नहीं। उसकी पकड़ में कुछ खुरदरापन था। इसे ऐसा नहीं करना चाहिए था।

विवेकहीन लड़की!

काली, ठंडी, निश्चल रात में उन दोनों को घेर लिया।

फैले सन्नाटे के बारे में उसने सोचा नहीं। उसके शरीर की गंध भी महसूस नहीं हुई।

उठते-गिरते वक्षस्थल के भीतर वह क्या सोच रही है, इसका अंदाज भी नहीं हो पाया।

मन भर की आफत के बोझ का डर।

नीचे पहुंचे।

उसे पकड़के सामने खड़ा किया और पूछा :

'रात में यहां क्यों आई?'

उसकी शुष्क आवाज से मारा की आंखों में आंसू आ गए।

आंखों में काली छायाएं हिल पड़ीं।

काली रात निश्चिंत होकर उन्हें देखती रही।

'मुझे भगा ले जा...' वह एक विलाप था। चारों तरफ फैल गया।

जंगली झरने के रुदन के समान, तीर लगी हिरनी की चीत्कार की तरह, गुलेल का पत्थर खाई गिलहरी की चीख जैसा वह विलाप उसके भीतर जाकर बिंध गया। किसी अदृश्य असह्य वेदना से मुक्ति पाने की याचना थी वह।

'मूप्पन लोगों का क्या करें, मारा?'

'पोत्तकालन[1] ने भी तो ऐसा किया था?'

कालन!

क्या मैं कालन जैसा बन जाऊं?

कालन ने अपनी भांजी से ही ब्याह किया। लंबी और ऊंची नाक वाले कालन को सब लोग 'बड़ी नाक वाला कालन' कहते थे। भांजी से शादी कर लेने पर उसका नाम 'पोत्तकालन' पड़ गया। सभी मूप्पन लोगों के बैठकर विचार-विमर्ष के बाद कल्लिलम्मंट घराने के कालन को वटक्कुमंट घराने में गोद लिए जाने की रस्म पूरी की गई। जुरमाना अदा करने के बाद अब वह अपनी स्त्री के साथ सुखपूर्वक रहता है।

लेकिन उसी तरह जंगली हाथी के नाम से मशहूर मल्लन फिर 'पोत्तमल्लन' बन जाएगा।

---

1. पोत्त भैंस को कहते हैं। अपमानजनक नाम।

'छि!'

उसके मन की बात भांपकर मारा बोली :

'मैं पुत्तूरमंट की हूं। ये सब कुरुमाटी की फैलाई अफवाहें हैं न?'

मल्लन का चेहरा प्रसन्न हो गया। जो मैंने सोचा था वही बात निकली। यह झूठ है। बनावटी झूठ। वह चात्तन के पास क्यों नहीं जाती? मूप्पन लोगों की बात क्यों नहीं मानती?

'वह मुझे चैन से रहने नहीं देगी।'

दोनों धुंधली चांदनी में आमने-सामने खड़े रहे। पत्तों के नीचे की ठंडी मिट्टी ने बेचैन किया। जंगल के किनारे नाले के पास कुछ हिल रहा है। वे चकित हो गए। सांस रोक, एक कदम बढ़ाकर सीढ़ी पर रख दिया। कुछ देर प्रतीक्षा की पर कुछ नहीं हुआ।

दूर एक पटाखा फटा।

कुरुवकोल्ली के पास।

पटाखे की आवाज रात की भयानकता में लीन हो गई। उसकी जलती सांसें मल्लन के वक्ष को तपाने लगीं। जंगल में एक पिशाच के रोने जैसी डरावनी आवाज आई—

'हू...हा...हा...हा....हू....हू!'

वह चौंककर कांप उठी। बर्फ की तरह बदन सर्द पड़ गया। दुबली बांहों से मल्लन के गले को कसकर जकड़ लिया। बिना कुछ बोले खड़ी रही। बाहर न निकल पाई एक सिसकी उसके भीतर घुमड़ती रही।

हे मलंकारी!

देवी इधर देखती नहीं।

मल्लन ने उसे अपनी दृढ़ बांहों के घेरे में जकड़ लिया।

मारा को याद आया, आते समय जवनी का अंडा सेने के लिए रखा घड़ा देखा था। अब काल-मुर्गे की बांग। अपशकुन पर अपशकुन। जाने कौन-कौन आफत आने वाली है। भीतर के पंख की फड़फड़ाहट रोक नहीं पाई।

'तू जा।

'कब आएगा?'

'पहरा पूरा हो जाए। गंधकशाला की कटाई हो जाने दे।'

'सच?'

'सच!'

'अप्पन?'

'चेम्मक्कारन देख लेगा।'

'ठीक है, जल्दी जा।'

आधी रात। वह साथ गया। खेत की संपदा पककर तैयार खड़ी है। मेरी निधि यह

है। अरवनाषिकुन के नीचे तक गया। टार्च जलाने का साहस नहीं हुआ। अपनी टार्च की रोशनी कहीं भी दिखे, गोरे तम्पुरान पहचान लेंगे। हाथी के लिए पहरा देने वाला कहां घूमता है—

धुंधली चांदनी में झोंपड़ियों के बीच उसकी काली साड़ी अदृश्य होने तक वह नीचे खड़ा रहा। फिर लौट पड़ा।

आकर खेत देखा। नहीं, 'उसे' पता नहीं चला। जंगल में मजे में बांस खाता होगा।

बेल्लरोडी में पुंजा की कटाई। दस-पंद्रह दिन अभी और हैं। पलकें नहीं बंद कीं। ठंड में कांपते, बिना सोए पहरा देता रहा।

बांस के जंगल में झाड़ियों में हलचल मचाते सूअरों को खेत में घुसने से पहले ही भगा दिया। बीच-बीच में यह काम भी मुश्किल पड़ जाता है।

सूअर की बुद्धि आदमी से अधिक है। बार-बार बच्चे पैदा करते हैं। इस तरह होते-होते जंगल भर जाता है। पहले तो जहां आदमी की गंध हो, वहां झांकते भी नहीं थे ये। अब मनुष्य से भी अधिक संख्या में बढ़ गए हैं। जब लोग बढ़े, जंगल कटे, खेत बने, घर बने तो जंगल का घनत्व कम हो गया। बावली का शरीर नग्न हो गया।

जंगल में जानवर बढ़ जाने पर क्या करें? कंदफल खत्म हुए तो जड़ें खाने लगे। जड़ भी न हो तो मिट्टी तो नहीं खा सकते। वे मनुष्य की मेहनत से तैयार की फसल को ही निशाना बनाने लगे।

इस लड़ाई में किसकी जीत होगी?

मल्लन को गोरे तम्पुरान के शब्द याद आए। मनुष्य का मन ईर्ष्या से भरा हुआ है। छल-कपट करके ही जीवन बिताता है वह। पशु तो केवल भोजन के लिए, वह भी विवश होकर ही मनुष्य को कष्ट देते हैं।

'अरे मेहनत करके जीवन बिताना सीख ले।'

'हूं...'

'बिना मेहनत के जानवरों को भी खाना नहीं मिलता। कोशिश करने पर भी भूख बनी रहती है।'

वेल्लरोडी की पुंजा की कटाई हो गई। राघवन नायर खुश। जिस पर भरोसा किया, वह बेकार नहीं गया। मल्लन भी एक कमाई है। उसको पहरे के लिए भी वल्ली दी। उसे आश्चर्य हुआ, आसामी को पहरे की वल्ली नहीं मिलती। पहरा देना तो उसकी जिम्मेदारी है। बदले में ओढ़ने को एक काला कंबल मिल जाता है। गोरे तम्पुरान नई व्यवस्थाएं लागू कर रहे हैं।

वल्ली के अलावा दो रुपए भी राघवन नायर ने दिए। मल्लन को एक धान का गट्ठर

फालतू भी मिला। पहले वह सूअर या हाथी के ही पेट में जाता था।

कटाई होने के बाद पुंजा खलिहान में पहुंच गया। उसी दिन मल्लन निकला।

शाम हो गई। अंधेरे के गहरे होने तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। तलमला में काक्कपुला थी। ढोल लगातार बजते रहे। टीले, सभी दिशाएं जग पड़ीं।

अंजीर के नीचे कोने में खड़ा होकर मल्लन सब लोगों को तलमला जाते देखता रहा। उसे किसी ने नहीं देखा। न ही किसी ने ध्यान दिया।

मारा ने उसे देखा।

उसकी प्रसन्नताहीन आंखों से मल्लन को कष्ट हुआ।

जैसा सोचा था, वैसा कुछ भी नहीं।

चादर ओढ़े सोता चुंडली।

अप्पन की धीरे-धीरे उठती-गिरती छाती को वह एक क्षण देखती रही। मल्लन को अच्छा नहीं लगा।

वह आंगन में उतरी। मुड़कर देखा। अंधेरे में खड़े होकर आंखें पोछीं। मल्लन के फैले हाथ को पकड़ लिया।

यहां मां के साथ आई थी। मां गई। मैं भी जाती हूं। अप्पन सोया पड़ा है। अब अप्पन को कौन देखेगा? कैसा कठिन अपराध है यह? उसे आशा हुई, एक दिन मल्लन की पत्नी बनकर यहीं लौट आएगी। मूप्पन लोगों को मंजूर होता तो इस तरह भागना न पड़ता। अप्पन को छोड़ना नहीं पड़ता।

अंधेरे में उसने फिर से मुड़कर देखा। उसकी गीली आंखों में चूल्हे की रोशनी चमक उठी।

आगे बढ़ाने वाले उस हाथ को उसने कसकर थाम लिया।

'मारा...!'

मल्लन बेबस-सा हो गया।

चुंडली काक्कपुला में जाएगा। मारा अकेली होगी। अगर चुंडली नहीं गया तो?

वह सीधे रास्ते से नहीं गया।

जंगल में जानवरों की बनाई पगडंडी से होकर चला।

झोंपड़ियों की ओर जाती पीछे की सड़क जंगल की ओर जरा खिसक जाती है। दोपहर के बाद कोई आदमी उधर झांकता भी नहीं।

अरविनाषिकुन्न की झोंपड़ियों के सामने पहुंचने पर वह केले की छाया की ओर हट गया। ठीक सामने मना के केले का झुंड अंधेरे में डूबा खड़ा था।

चुंडली की झोंपड़ी। छप्पर पूरी तरह छाया नहीं गया है। फूस बिछी उस झोंपड़ी के

भीतर वह मेरी प्रतीक्षा कर रही है।

आमने-सामने और पीठ करके गुस्साई झोंपड़ियां खड़ी हैं। शून्यता! रोशनी नहीं, आवाज नहीं, गति नहीं।

अंधेरा जरा और गहरा हो जाए। अंधकार सब कुछ निगल ले। अजगर की तरह आलस में पड़ा धीरे-धीरे बीतता समय। वह बेचैन हो उठा।

केले के पत्ते हवा में खड़के। चुंडली की झोंपड़ी के ऊपर धुआं आलस में चकराता रहा। आंगन में उतरकर सिर झुकाकर भीतर की ओर देखा।

चुंडली!

चूल्हे के सामने चादर ओढ़े लेटा पड़ा है।

मारा ने बरामदे में आकर अंधेरे की ओर झांका। उसे देख नहीं पाई। वह बिना हिले-डुले खड़ा रहा।

यह सुंदरी।

यह मेरी है।

उसका चेहरा रोते रहने से लाल पड़ गया था। लाल-लाल आंखों में चमक नहीं। धुली साड़ी का पीला किनारा चूल्हे में जलती आग की रोशनी में उसे घेरे हुए है—मन के मोह की भांति।

उसके बारीक ओठ कसे हुए थे। चूल्हे पर एल्मुनियम के छोटे बर्तन में उबल रही कंजी धीरे-धीरे सांस लेती रही।

उसने चेहरा उठाया। उसकी आंखें चांदनी में वर्षा की बूंदों की तरह चमक रही थीं।

'अप्पन काक्कपुला में नहीं गया?'

अप्पन काक्कपुला में क्यों नहीं गया? दस्त हो रहे हैं, बेहद थकावट। उठकर खड़ा भी नहीं हो सकता। उस अप्पन को—

वह बोली—

'अप्पन अब बहुत दिन नहीं रहेगा।'

कहते-कहते उभर आई सिसकी को उसने दबा लिया। अप्पन अब अधिक दिन नहीं रहेगा।

फिर उसने कुछ नहीं पूछा। बहुत रात होने के पहले ही अंबलकुन्न पहुंचना है। गोरे तम्पुरान को बताना होगा कि मैं एक लड़की भगा लाया हूं। खलिहान का काम करने के लिए एक आसामी स्त्री को।

रात बिताने के लिए जगह चाहिए।

ऐसा कोई तम्पुरान नहीं जो एक निर्धन आसामी के कहने पर जगह न दे। घबराहट कुछ भी नहीं। पर जरा पहले ही गोरे तम्पुरान से बता देता तो अच्छा रहता।

ऊरुवयल में ओखली वाले कमरे की छत तक लकड़ियां भरी हुई हैं। कोई खाली जगह नहीं।

वेल्लरोडी में जहां अदरख बोया गया है, वहां तंपुरान की झोपड़ी है।

किसलिए?

अदरख की रखवाली के लिए—

वहां—

चिंता से मग्न उसका हाथ पकड़कर अंधेरे में डूबी खेत की मेड़ पर से होकर चलने लगा।

सारे टीले खाली पड़े हैं।

तलमला से ढोल की आवाज आ रही है। युवकों का शोर भी। यहां से तलमला बहुत दूर है। बिना ढोल-बाजे के मैं अपनी मनपसंद लड़की को लिए जा रहा हूं।

अंधकार का कंबल ओढ़े अंबलकुन्न की ओर जाते हुए मन रूपी पक्षी ने पंख फड़फड़ाए। गोरे तम्पुरान को अच्छा न लगे तो? रात के इस समय फिर कहां जाएंगे? कोई भी आसामी रात बिताने को जगह नहीं देगा। मूप्पन को जुरमाना देने पर ही वे बिरादरी में मिलाएंगे। आखिर जो भूल है, जुरमाना अदा करने से ही ठीक होगी।

हवा में पंख फड़फड़ाते-से केलों का झुंड। सामने बरामदे में तड़पती-सी दीए की बत्ती।

बाहर कोई नहीं दिखा। कोई आश्वासन नहीं मिला। भगवती का स्मरण किया। मन जरा तैयार हो जाए।

मारा ने कांपती, ठंडी उंगलियों से उसके हाथ को कसकर पकड़ लिया।

'तिरुवोलम्मे—' आवाज को केले के झुंड ने निगल लिया। पूर्ववत सन्नाटा बना रहा। कोई बाहर नहीं आया।

पीछे आहट हुई। वे केलों की छाया में हट गए।

गोरे तम्पुरान।

छाती को हाथ से दबाया।

बिना हिले-डुले खड़ा रहा। चारों ओर छायाएं। बीच में सफेद धोती-बंजी पहने गोरे तम्पुरान खड़े हैं।

'कौन है?'

'मल्ला—'

'काक्कपुला में नहीं गया?'

'नहीं।'

'वहां क्यों छिपा खड़ा है?'

'.....'

'रोशनी में आ।'

वह सकपका गया। अंधेरा गल जाता तो—

तम्पुरान आगे बढ़े।

'यहां रोशनी में आकर बता, क्या चाहिए?'

'मैं...'

'क्या हुआ?'

'मेरे साथ एक लड़की है।'

'क्या—?'

'लड़की को—?'

'कौन लड़की?'

'गोरी चुंडली की बेटी मारा।'

गोरे तम्पुरान को स्तब्ध देख वह घबरा गया।...

राघवन नायर अपना आश्चर्य दबा नहीं पाया। लड़की लाया है। रात में। मुझे क्यों बताता है? उसके पीछे लड़की की परछाई देख और भी आश्चर्य हुआ।

इसे अपनी झोंपड़ी में न ले जाकर यहां क्यों लाया?

'कौन है वहां?'— अंदर से वारस्यार की आवाज आई।

मल्लन को आश्वासन मिला। तम्पुरान को तो कुछ नहीं पता। उसे याद आया कि तम्पुरान से मन खोलकर कुछ कहा ही नहीं है।

ऐसा कुछ उन बारीक होठों, ऊंची नाक और चमकती तीखी दृष्टि में है जो सब को एक दूरी पर रखता है।

'मल्लन, इस वक्त कैसे?'

'मैं मारा को भगा लाया, मां!' उसने सिर झुका लिया।

'यह तो अच्छा हुआ। इसी खलिहान में उसे नौकरी दिलाना चाहता था न तू?'

राघवन नायर घरवाली की प्रतिक्रिया ध्यान से सुन रहा था। वह इस सोच में था कि वारस्यार को जलन होगी।

वे हंस रही हैं। ताज्जुब हुआ।

'यहां तो रात बिताने की जगह नहीं, मल्ला! ओखली वाले कमरे में तूने ही लकड़ियां भरी थीं न?'

गहन सन्नाटा छा गया। ठंडी हवा केलों के पत्तों पर कट-कट आवाज बनाती रही।

'मैं जा रहा हूं।' वह मारा का हाथ पकड़कर छायाओं के बीच ओझल हो गया।

जाने से पहले एक क्षण ठहरा थ । मुड़कर तम्पुरान को देख फिर चला गया। उन काली छायाओं को राघवन नायर बिना हिले-डुले रात की गहनता में डूबते देखता रहा।

बात समझ में आने से पहले ही वह चला गया। वारस्यार ऐसे खड़ी हैं जैसे मुंह पर तमाचा पड़ा हो। पूछने को मन हुआ, पर चुप रहा।

'खलिहान का आसामी कोई लड़की लाए तो उसे तीन दिन तक जगह देना हमारी जिम्मेदारी है।'

'चोरी से भगा लाने पर?'

'मूप्पन लोगों को मंजूर नहीं तो वे क्या करें?

'पर यह पाप क्यों?'

'ब्याह में बहुत खर्च लगता है। देने को पैसा नहीं, तो–'

'फिर उसे भेज क्यों दिया?'

'भेजने का विचार नहीं था।'

'हूं।'

'आज वे लोग कहां जाएंगे?'

'पता नहीं।'

'फिर।'

'किसी और खलिहान में?'

'मगर वे यहां के आसामी हैं।'

'मल्लन को पाने वाला फिर छोड़ेगा नहीं।'

'क्या?'

'वह कहीं और ठहर जाएगा।'

'और हम?'

'क्या पता–'

'और जो पैसा पहले ही दे दिया गया?'

वे ऐसे खड़ी थीं जैसे कोई मूल्यवान चीज हाथ से निकल गई। जैसे कोई निधि लुट गई हो।

चुप खड़े राघवन नायर से फिर बोलीं :

'वह है न, इसलिए शायद पैसा लौटा दे।'

'कैसे?'

'केलन से मांगकर।'

'केलन?'

कुछ समय पहले केलन इसके लिए ही जाल बिछा रहा था।

'हे ईश्वर...!'

राघवन नायर को जैसे बिजली का झटका लगा हो। मल्लन कुरिच्चन केलन का आसामी

बने! पैसा तो दे देगा। पर मल्लन को नहीं देगा।

मुझे तो मल्लन ही चाहिए।

अब? वह क्या कर रहा होगा? रात तो बितानी होगी। लड़की को कहां रखेगा? चारों ओर जानवरों से भरा जंगल।

राघवन नायर बरामदे में लंबे डग भरकर चक्कर लगाने लगा। वारस्यार बरामदे में एक खंभे की तरह निश्चल खड़ी अंधेरे को घूर रही थीं।

दीए में तेल खत्म हो गया। बुझ गया। सूखी बत्ती के जलने की गंध। राघवन नायर फिर भी चक्कर लगाता रहा।

19

उस दिन पुषकुनि में चुंडली ने जो झोंपड़ी बनाई थी, उसे खुद ही तोड़कर गिरा दिया। बड़े-बड़े बांस जमीन पर गिर सिर धुनते रहे। राघवन नायर को याद हो आया, वह दृश्य देख उसे भी दुख हुआ था।

नदी के पार, ठीक सामने अपने खलिहान के फाटक पर खड़ा कुरिच्चन केलन भी वह दृश्य देख रहा था।

पुषकुनि की खबर केलन भी रखता है। उसके ठीक दक्षिण की ओर की भूमि उसी की है। आसामी को तो फसल कटने से पहले ही जमीन से हाथ धोना पड़ता है। क्षण भर में गोरे चुंडली की झोंपड़ी धराशाई हो गई। भूमि समतल हो गई। झाडू लगने से कड़ा पड़ा बरामदे का भाग कुछ दिन के लिए, बारिश आने तक वैसे ही रहेगा।

कुरिच्चन केलन?

सदियों से जुताई कर-कर के तैयार की गई उसकी जमीन। उसकी संपत्ति, उसका संचित धन, उसकी संतान, सब कुछ— उसकी ये भूमि ही है।

सुनते हैं, पुषकुनि छोड़कर आए चुंडली को केलन ने जी भरके गालियां दीं। खुद अपनी जमीन की देख-रेख न कर पाने वाले लोग। अपनी भोज्यसामग्री स्वयं एकत्र करने वाले कुरिच्चन केलन का गांव भर में बहुत सम्मान है। उसके समान ही उसके बैल भी मेहनती हैं।

उस दिन पुषकुनि जोतने के लिए केलन के एक जोड़ी बैल लिए थे। दो वल्ली के हिसाब से। सुबह आधी वल्ली तौल लेने के बाद ही उसने बैल दिए।

कुरिच्चन केलन के बैल जैसे बैल पूरे गांव में नहीं। उनकी गर्वीली चाल और शरीर की शक्ति और किसी बैल को छू तक नहीं पाई।

दूसरा जोड़ा मानंतवाडी से नया-नया खरीदा गया है।

नए जोड़े को बहुत उत्साह है। जोश से आगे बढ़कर कुरिच्चन केलन के बैलों के समीप तक पहुंच जाते हैं। हल को करियन पकड़े हुए था। उत्साह के साथ सिर हिलाते, चलते बैलों के मुंह पर ही उसने चाबुक दे मारा। हैरानी और घबराहट दोनों हुई। ऐसा भी आलस है आदमी का। बैलों ने मुंह टेढ़ा करके चाल मंद कर दी।

'यहां के आसामी और बैल एक ही जैसे हैं।' वारस्यार के शब्द।

राघवन नायर के मन में आया, उनकी नस-नस में आलस भरा हुआ है। उच्च वर्ग की दशा? दोपहर तक सोते रहने वाले—मंजन, नहाना-धोना और दोपहर का खाना एक साथ कर लेने वाले किट्टुमारार के बेटे की याद आई। खाली पद्मनाभन ही नहीं, सभी छोटे तम्पुरान लोग ऐसे ही हैं। कुरिच्चन केलन ही बस जिम्मेदार किसान हैं। उसके बैलों को देखने से ही पता चल जाता है।

ठंड का मौसम। सुबह बिस्तर से उठते ही, चटाई लपेटे लोग खेतों में आ जाते हैं। काम करने का उत्साह कहां से आए? खाली पेट, ठंडी हवा। बर्फ का कंबल ओढ़े, नींद में मदमाती, अलसाई-सी पड़ी प्रकृति। बिना पता चले ही आलस बदन में घर कर जाता है।

कुरिच्चन केलन अपनी भूमि को प्यार करने वाला है। उसके पास जाना हो तो सावधानी रखनी होगी।

विचार आते ही पुषकुनि की भूमि चुंडली से छुड़ा ली थी।

एक दिन की वल्ली में एक मानम अधिक दे दें, तो चुंडली को उसमें कोई चाल ही लगती है। केलन उसे एक मानम वल्ली देकर तृप्त नहीं कर सकता।

मल्लन ने भी उससे क्या कुछ लिया होगा? वल्लियूरकाव में उस दिन जितना दिया था, क्या थोड़ा था? जो पेशगी दी उसका कोई मूल्य नहीं? केलन उस ऋण को चुकाने की प्रतीक्षा कर रहा था? उस दिन चुंडली ने शंका भरी निगाहों से देखा था।

झोंपड़ी अपने हाथों से तोड़कर अरवनाषी की ओर जाते चुंडली को वारस्यार के आंगन से खड़े होकर देखा। चुंडली वल्ली लेने नहीं आया।

'चुंडली ने वल्ली नहीं ली।' बरामदे में जाकर वारस्यार से कहा।

'आज खाने को कुछ मिल गया होगा। चाहिए तो सौ बार आने वाले लोग हैं।'

'कुछ ही। क्या मिल गया होगा?'

'केंकड़ा या मछली, दस दिन कंजी न मिलने पर भी इन लोगों को कुछ नहीं होता।'

'उसकी वल्ली मुझे दें। मैं नदी के उस पार जाता हूं।'

सावित्री वारस्यार अंदर से आई। चौखट पर आकर पूछा, 'तीन मानम वल्ली भंडार घर से तौलने में क्या अभी छूत की समस्या है?' 'अभी? मतलब?' पूछा नहीं। तीन मानम तो क्या, भंडार में जितना हो ले सकता हूं। चाहिए तो बेच भी सकता हूं। सूद पर धान लिया गया है। एक का दो देना होगा। खर्च चलना है, चलाना है। अब तो मेरी ही जिम्मेदारी है। अनजाने ही आ पड़ी जिम्मेदारी।

भंडार-घर खोला। तीन मानम धान तौला। एक मानम और। चार। दो-तीन वल्ली का हिसाब किस जमाने में शुरू हुआ होगा। वक्त बदल गया है। एक बोझ धान का जो दाम ढाई सौ रुपए था अब पांच सौ हो गया है। वल्ली लेकिन अब भी तीन ही मानम।

बावली का जल काला पड़ गया था। अंधेरे में वह हलचल मचाती बहती चली जा रही थी। उस दिन—

धान तौलिए के अगले हिस्से में बांध, कंधे पर रख अरवनाषी की ओर गया था।

अंधेरा मार्ग।...

उस दिन शाम के वक्त टीले पर चढ़कर जाते हुए वे घूरती नजरें दिखीं। मनुष्य मनुष्य पर इतना अविश्वास क्यों करता है? वे लोग झोंपड़ियों में छिप गए थे। छेदों से बाहर झांकती काली आंखें। डर, घबराहट, कौतूहल और संदेह भरी नजरें।

चार मानम धान लेकर नहीं जाना था। बेवकूफ हूं मैं।

चुंडली की झोंपड़ी के सामने जा खड़ा हुआ। उसे देखते ही एक-एक कदम पीछे रखने लगा वह।

गठरी खोल धान देने की क्षमता चुक गई। बरामदे में ऐसे ही रख लौट चला।

जल्दी-जल्दी डग भरते हुए चला। पहाड़ से उतरते समय अंधेरे में वृक्ष के ठूंठ से टकराकर गिरने को हुआ। उंगलियों में चोट आई। आड़ में छिपा पेड़ का ठूंठ।

नदी के घाट पर पहुंचने पर पीछे से रोशनी दिखाई दी।

चुंडली! वह एक मशाल लेकर आया। उस समय उसके चेहरे से शंका के विष के चिह्न मिट चुके थे।

वैसे ही केलन भी है— एक आदमी दूसरे का मन ताड़ सकता है। ये सब याद हो आया। केलन से मिलना चाहिए।

नदी पार की। अभी सुबह नहीं हुई। मल्लन को वापस ले आने के बाद ही सारी बातें। वहां, लोमड़ी जैसे दो बड़े-बड़े कुत्ते हैं।

मन में आया कि क्या सुबह-सुबह ही कुत्तों से कटवाना पड़ेगा। सुन रखा है कि वे कुत्ते कुरिच्चन केलन और उसकी फसल के अंगरक्षक हैं।

उस दिन देखा भी था।—

आसामी लड़के 'पोलयन' ने एक छोटा-सा कड़वा नींबू तोड़ लिया था। बस, दोनों कुत्तों ने काट-काटकर उसे लुढ़का दिया। नदी पारकर लेने के बाद ही कुरिच्चन केलन झोंपड़ी से बाहर निकला।

उसने कुत्तों को वापस बुला लिया। छोकरे को गंदी गाली देकर चुराई चीज के साथ ही पकड़ लिया। उसके हाथ से गिर गए नींबू को ढूंढकर उठा लिया। उलट-पुलटकर देखा। सूंघकर अपने पास रख लिया।

मुझे अनदेखा करके सीढ़ियां चढ़ने लगा।

'बड़े बहादुर हैं ये, है न?'

गंभीर दिखते उस आदमी ने पीछे मुड़कर देखा। सिर से पैर तक जैसे अपनी नजर से नाप लिया।

'हां।'

'इस साल पुंजा कैसी रही?'

'लो, सामने देख लो। तिरुनेल्लि के लोग कहते हैं कि केलन के पास गड़ा हुआ बहुत धन है। देखो, सामने जो फसल दिख रही है, उससे कितना पैसा बनेगा, तुम्हीं देख लो।' उसने दाएं-बाएं हाथ से इशारा किया।

किसी से संपर्क न रखने वाला शुद्ध जंगली आदमी। यही धारणा थी। न तो कभी किसी जमींदार को उसके यहां जाते देखा, न ही कोई आसामी उसके खेतों में काम करता है। सभी कामों के लिए अप्पन, अम्मां और बच्चे।

हवा में हिलते धान के पत्तों पर जंगल की कालिमा की छाया पड़ रही है।

केलन की पुंजा की अधिकतर कटाई शेष है। टूटी पड़ी मेड़ को हाथ के फावड़े से ठीक करके वह सीधा खड़ा हो गया।

यकीन नहीं पड़ता कि नब्बे साल की उम्र का आदमी सामने खड़ा है। इसकी आयु के बारे में अगर थोड़ा-बहुत पता है तो खाली गोपालन नायर को।

अच्छा स्वास्थ्य! सीधी, तनी रीढ़ की हड्डी। उलझे बेंतों की तरह दृढ़ लंबी बांहें। नब्बे साल का यह जवान हल जोतता है। यही बांहें इन सारे खेतों की जुताई कर लेती हैं।

काले चेहरे पर रोशनी की एक किरण फूट पड़ी। तंबाकू के दाग हैं, फिर भी पंक्ति में दृढ़ खड़े दांत। मुड़कर फिर वह चलने लगा।

'चात्ता, कंरुबी आ...आ...' भेड़िए जैसे वे कुत्ते उसके पीछे हो लिए।

'घर नहीं चलोगे?' मन में था कि वह इतना तो पूछेगा ही। किंतु कुछ भी नहीं हुआ। कुत्तों को बुलाकर केलन चला गया। झाड़ियों और केलों के झुंड के बीच से उसकी झोपड़ी की खाली घास बिछी छत दिखाई दी। वह लौट पड़ा।

वारस्यार आश्चर्य के साथ देखती रही। किसी से भी न बोलने वाला केलन।

'छोकरे को कुत्तों ने चीर-फाड़कर खतम नहीं कर दिया, किस्मत की बात है।'

कड़वे नींबू की कहानी बता दी।

'दो दिन तक उस नींबू को नमक के साथ चाटकर फिर उससे कंजी के लिए सब्जी बनाएगा।'

केले तो वह सभी सेयतु को बेच देता है। कंजी के साथ सब्जी के लिए ही द्वार पर उसने मिर्च के दो पौधे लगाए हैं। केलन खाली कंजी ही पीता है। साल भर में एक बार उबले धान का भात बनाएगा। संदूक भरके पैसा है। छिपाकर गाड़ रखा है।

ऐसे कंजूस केलन के पास जा रहा हूं। कोई ऐसी-वैसी बात के लिए नहीं। मल्लन को वापस लाना है। जब वह लड़की भगा लाया, तब केलन ने ही उसे शरण दी थी। इस साल केलन को एक कामगार की जरूरत है। अब तक हाथ बंटाते आ रहे भतीजे की आंखों में मोतियाबिंद उतर आया है। दोनों आंखें खराब! हल नहीं जोत सकता। केलन एक को वल्ली देकर उससे दो लोगों का काम करवा लेना चाहता है।

तीसरे दिन मल्लन अपने डेरे से बाहर आ जाएगा। सब मूप्पन लोग मिलकर उसे खलिहान से बाहर ले आएंगे। इसके पहले ही जाकर उससे मिल लेना है। क्या वह मल्लन को छोड़ देगा? मेरी हंसी ही उड़ाएगा। कैसे जाऊं?

जिन खेतों में कटाई पूरी हो गई, उन्हें फिर से जोतकर तैयार कर लिया गया है। जंगल की सीमा पर नाले के पास एक कतार में पुंजा के खेतों की अभी कटाई नहीं हुई। कुत्ते दौड़ पड़ेंगे न? चात्तन और करुंबी। और भी हैं, कई। कोई बात नहीं। आसामियों से बेहतर इनको खाना देना है। यह केलन का सिद्धांत है। इसका एकमात्र अपवाद फिलहाल मल्लन है!

हाथ में पकड़ी लाठी को घुमाते हुए राघवन नायर मेड़ से होकर चला। कुत्ते जैसे तुरंत प्रत्यक्ष आसमान से टूट पड़े हों।

बांस के खंभे पर तानकर बांधे गए 'वेंड़ा' पेड़ के रेशों से केलन रस्सी बुन रहा है। बिनी रस्सी को तानके बांधकर फिर खोला और गोल लच्छा बनाकर बरामदे की छत पर ठूंस दिया। फिर मुड़कर देखा।

कुत्तों को नजर से ओझल किए बिना वह आगे बढ़ा। कानों को बहराकर देने वाली आवाज में भौंकते हुए वे कूदकर आगे आए, पर लाठी देखकर कुछ दूरी पर ठिठक गए। भौंकना बंद नहीं किया।

फाटक पर पहुंच गया। मन में था कि केलन के चेहरे पर कम से कम एक प्रश्न भरी दृष्टि जरूर फूटेगी। पर कुछ नहीं। एक तरह का खुरदुरापन। जानता है कि मैं किसलिए आया हूं।

कुछ सुनने की प्रतीक्षा में खड़े रहना मूर्खता है। इस आदमी के साथ 'सीधे आ, सीधे जा' जैसा रास्ता ही अपनाना होगा।

'मुझे पता चला कि मल्लन यहां है, इसीलिए आया हूं।'

'मैं भी यही सोच रहा था।'

'मल्लन को मुझे साथ ले जाने दो।'

वह तीक्ष्ण दृष्टि।

'इस गांव में कुछ नियम-कायदे हैं।'

'जानता हूं। तैयार होकर ही आया हूं।'

'काम के लिए एक आदमी की मुझको भी जरूरत है।'

'केलन को आसामी की क्या जरूरत? बेटों, भानजों से भरा-पूरा परिवार है।'

'जरूरत है। केलु अंधा हो गया, और हैं कुछ भतीजे, खाली खाना जानते हैं। जड़हन की रोपाई करने वाले खेत में बार-बार आलस करने वाली बेटियां भी हैं।'

कहीं जंगल निगल न लें, भूमि को बचाने की मुसीबत। सौ साल की उम्र में भी हल जोतने की मजबूरी। दुख हुआ। उस खुरदरे चेहरे के बीच छिपा एक अच्छा आदमी।

यह सोचकर कि मल्लन को हाथ से नहीं जाने देना है, एक लड़ाई की तैयारी करके ही निकला था।

बीस रुपए गिनकर केलन के सामने रख दिए। वह सोच में पड़ गया। उस रुपए की ओर देखा। फिर भानजे को बुलाया :

'मल्लन से इधर आने को कह दे।'

मल्लन आया। उसके चेहरे पर घबराहट की छाया थी। पीछे मारा भी आई। वह कुछ अलग हटकर खड़ी रही।

'मल्लन, चलेगा मेरे साथ? केलन को मंजूर है।'

उसने सिर हिलाया। थोड़ा और विनीत होने के भाव में खड़ा रहा।

दोनों को साथ लिए बाहर निकला। लगा कि बीस की जगह दो सौ भी देने पड़ते तो नुकसान न था। केलन की दी तंबाकू चबाते हुए भविष्य के कार्यक्रम सोचने लगा।

'फिलहाल तू अदरख वाले खेत में बनी झोंपड़ी में रहने के लिए चला जा।'

मल्लन के चेहरे पर न खुशी थी और न ही दुख। मुझे ले जाने के लिए प्रदेश के मूप्पन या चेम्मक्कारन नहीं आए। आशा भी न थी। मैंने पाप किया है, उसका कोई परिहार नहीं है। वे लोग क्या मुझे निर्वासित किए दे रहे हैं? काक्कपुला, तिरा या शादी किसी में भी मुझे भाग न लेने देंगे?

मल्लन को रहने की जगह दे देने पर राघवन नायर को संतोष हुआ। कोल्लीमूला की एक झोंपड़ी से तो काम नहीं चलेगा। जगह बहुत थोड़ी है। एक झोंपड़ी भर बना सकने

का स्थान। वहां रहने में मल्लन जैसे धैर्यशाली भी संकोच करेंगे।

वेल्लरोडीमूला की जमीन फिर से खाली कर देनी चाहिए। झाड़-झंखड़ से भरी पड़ी है। कभी वारियम को जीविका में मिली भूमि। तिरुनेल्लि के देवता की दोनों जून चावल की पूजा करनी है। कच्चे चावल का भात फिर वापस ला सकते हैं— बच्चों के खाने के लिए।

काम में रुकावट न आए, इसलिए मंदिर ने आठ एकड़ भूमि दे दी है। तीन-चौथाई तो खाली वन है। लंबाई में फैला पड़ा खेत जिसकी चौड़ाई बहुत कम है। खेत के एक ओर मूलप्पाटी से बहकर आती बावली नदी।

इस साल करीब आधी एकड़ भूमि और तैयार की। इस बार मल्लन ने ही खाली उसकी रक्षा की।

राघवन नायर मल्लन को साथ लेकर वेल्लरोडी गया। मारा को अंबलकुन्न भेज दिया।

दोपहर के समय भी नम पड़ा रहने वाला वेल्लरोडी का खेत। खाली खेत में खूब झाड़ियां, झाड़-झंखाड़ उग आए हैं। यहां बावली उछल-कूदकर हलचल मचाती, चट्टानों के बीच लुकाछिपी कर बहती चलती है।

पानी कम है। जितना भी हो, पर कैसा वेग!

यहां बुआई करनी है तो अच्छा पहरा चाहिए। आधे नाषि (पाव) चावल की पूजा करने के प्रतिफल में मिली भूमि। देख-रेख के लिए कोई नहीं, इसलिए बहुत समय से खाली पड़ी हुई है। कच्ची मिट्टी। सब वहां जाने में डरते हैं। सलीम सेठ नाम के आदमी ने यहां कुछ जमीन हिस्सेदारी पर ली थी।

उसकी वल्ली, बीज-सब नष्ट हो गए। बैल जंगल भाग गए। भेड़ियों ने आकर शिकार कर डाला। वेल्लरोडी छोड़कर उसे खाली हाथ लौटना पड़ा था।

गोपाल वारियर की देख-रेख में बोए नींबू झाड़ियों में उलझे पड़े, जटा जैसे बनकर पड़े हुए हैं।

मिट्टी, जिसकी कभी गुड़ाई नहीं हुई है। सूअरों का क्रीड़ा-स्थल। हवा, जो मनुष्य के स्पर्श से अछूती है।

एक विचित्र निर्जनता वहां छाई हुई थी। उसने आगुंतकों को भयभीत कर दिया।

मल्लन हाथ में बड़े छुरे से रास्ते का झाड़-झंखाड़ काटता चला। मार्ग बन गया। बगल में पशुओं के चलने से बन गई ऊबड़-खाबड़ पगडंडी। नदी में जहां जानवर पैर रखकर उतरते हैं, शिलाएं चिकनी हो गई हैं।

चलते-चलते वेल्लरोडीमूला के अंत तक पहुंच गए। सीढ़ीदार ऊंची जमीन जैसे वन के चरणों में सिर टेक दीर्घ निद्रा में मग्न है।

राघवन नायर ने एक ऊंचे टीले पर चढ़कर देखा।

जितना सोचा था, उससे भी ऊंची भूमि। वहां से देखने पर पांच मील के पार कुंबारकुनी तक एक ही नजर में दिखाई पड़ रही थी।

यहां एक झोंपड़ी बना लेनी चाहिए। तीन ओर आसामियों की झोंपड़ी हों। ऊंचे खेतों पर नदी के आर-पार एक बांध बन जाए तो इस पूरे आठ एकड़ खेत से दो पूवल[1] की फसल मिल सकती है। पानी व्यर्थ बह जाता है।

अनाथ पड़े नींबुओं की रक्षा हो जाएगी। मेहनत करने पर चाहे कुछ देरी से ही सही, लाभ अवश्य मिलेगा।

सबसे कठिन काम रखवाली है। तीनों ओर के जंगल से जानवर अबाध निकल आ सकते हैं। सेठ ने जब फसल बोई थी तब दोपहर के समय भी जंगली हाथी खेत में निकल आते थे।

यहां रहने की हिम्मत रखने वाले आसामी बहुत कम हैं। मल्लन तो है ही। और आसामियों के न मिलने पर कुरिच्चन रामन को बुला सकते हैं। तविंजाल की जमीन नष्ट हो जाने के बाद से वह ऐसे ही भटक रहा है।

'मल्लन, हमें यहां एक झोंपड़ी बना लेनी है।' मल्लन को डर लगा। क्या यहीं रहना पड़ेगा मुझे और मारा को? इस घने जंगल के मुंह में?

पेड़ों के शिखरों को झुलाती ठंडी हवा घूमती रही।

खेत के दक्षिणी कोने की चौड़ाई जरा कम है। वहां दो पहाड़ों के बीच तिकोने आकार में आर्द्र दलदली क्षेत्र हैं

सफेद-सफेद गंदे झाग उस दलदल में हमेशा उठते रहते हैं।

उर्वरता कम। जंगल की मिट्टी कम उपजाऊ है। झाग मिट्टी की सतह पर जम जाता है।

हल से जुताई नहीं हो सकती। खोदकर गुड़ाई करनी होगी। चेट्टुविलियन[2] ही बोना चाहिए। नीचे कहीं भी तरल भंवर हो सकती है। मिट्टी ऐसी है जिसे सावधानी से ठीक करना होगा।

अगले दिन से वहां तीन झोंपड़ियां बनाने का राघवन नायर ने आदेश दिया। चूल्हे के पत्थर की तरह तीन झोपड़ियां। अब वन के केंद्रबिंदु से पहरा दिया जा सकता है। वहां से देखने पर खेत पर बैठने वाला एक जंगली मुर्गा भी दिखाई पड़ जाएगा।

---

1. एक किस्म का धान
2. गहरी जड़ वाली धान की किस्म

20

पास की झोंपड़ियों में लोग बिना सोए बातें करते रहे। सोने में डर था। हाथी वाले जंगल के मुंह के भीतर झोंपड़ियां बनी हैं। शुरू के दिनों में बातें कर-करके उन लोगों ने रातें बिताईं।

झोंपड़ियों के पीछे से मुड़कर जाती जंगल की सीमा के शुरू से अंत तक लकड़ियां इकट्ठा कर, सूखे पत्तों के ढेर बनाकर उन्होंने आग जलाई। आग से धुआं निकलता रहा। अर्धवृत्ताकार बने आग के घेरे के पार भयभीत, बंदर और जंगली गिलहरियां दूर भाग गए। दूर, ब्रह्मगिरि की गोद में बैठे छोटे-छोटे पहाड़ों में जाकर छिप गए।

गीला वातावरण। धुएं की पर्त कुछ देर तक वहां घूमती रही।

अब डरने की कोई बात नहीं।

चात्तन, कुरुमन और चुंडली वहां आकर रहने लगे।

पहलेपहल मल्लन और मारा ही आए थे।

मल्लन से किसी ने भी शादी की बात नहीं पूछी। मल्लन ने भी कुछ नहीं कहा। इस निर्जन प्रदेश में कुछ समय तक तो मूप्पन लोग आते नहीं। वे इस पहाड़ पर चढ़ नहीं पाएंगे। फिर भी उस कर्जे की याद तो होगी ही। जुर्माने की चूड़ियों का प्रबंध कैसे करूं, यह विचार घायल सूअर की तरह उसका पीछा कर रहा था। जब तक जुर्माना न अदा हो जाए, वे लोग आपस में मिलाएंगे नहीं। विवाह के उत्सव, तिरा या काक्क पुला—किसी भी अवसर पर नहीं बुलाएंगे।

औरतें सज-धज कर काक्कपुला पर जाएंगी और मेरी स्त्री उन्हें देखती हुई चूल्हे के सामने बैठी रहेगी।

नई झोंपड़ी। नई-नवेली पत्नी। नए फूस और कच्चे बांस की गंध वहां सब तरफ फैली हुई थी। इन सबसे उसे कुछ भी सांत्वना नहीं मिली।

एक हजार चूड़ियां! सौ रुपए!

कम से कम आधा तो अभी ही देना पड़ेगा।

पहाड़ चढ़कर चाहे वेल्लीरोडीमूला में वे लोग न आ पाएं, पर नीचे उतरने पर सब जगह जोगी घूमता मिल जाएगा। फिर चाहे सेयतु की दुकान हो, कुंबारकुनी हो, घाट हो या फिर खेत हो।

जंगल में बांस काटने का काम शुरू हो रहा है। मेडम महीने के तीसवें दिन वन की भूमि को गोड़कर बुआई शुरू कर देनी चाहिए। खोदकर गुड़ाई ही हो सकती है। जोत नहीं सकते। उसके पहले सौ और काम पड़े हैं।

जंगल खाली कर देना है। झाड़-झंखाड़ में आग लगानी है। खोदी गई मिट्टी का चूरा बनाना है।

राघवन नायर ने कहा था :

'अगर कार्तिक में बीज बोने हैं तो अभी ही काम शुरू करने का वक्त हो गया।'

गोरा तम्पुरान है इसीलिए। और किसी खलिहान का काम होता तो इटवम महीने की पहली जुताई के इंतजार तक यहीं रुकना पड़ता। तब तक खाने के लिए कुछ है, या कोई काम है, इस बात का सवाल ही पैदा नहीं होता।

आखिर वल्लियूरकाव में पेशगी पैसा लिया था। तो बुलाते समय यही ही होना चाहिए।

गोरे तम्पुरान ने जंगल में बांस काटने के काम पर जाने की अनुमति दे दी है।

ऐसी उदारता और कोई भी जमींदार नहीं दिखाता।

मारा रोई नहीं। हंस भी न सकी। थोड़ी कमाई के लिए ऊरुवयल में झाड़ू-बुहारू का काम है। मल्लन के बागानों में जाकर पणिचियों[1] के बीच फंस जाने से अच्छा है कि वह दूर कुटक चला जाए। कभी-कभी ही आ पाएगा। वही अच्छा है।

वन में लकड़ी काटने के लिए कुरुमन[2] लोगों की ही जरूरत पड़ती है। उन लोगों का यकीन है कि आसामियों को जिनके हाथों में फावड़ा और हल पकड़ते-पकड़ते गट्ठे पड़ गए हैं, लकड़ी काटना नहीं आता।

बांस काटने के लिए आसामियों को बुलाया जाता है।

जाना है न?

यहां कोई काम नहीं। सुबह से शाम तक आकाश ताकते रहो, फिर सुबह होने तक आग तापते-तापते पड़कर सो रहो। अगर भूख सहन हो सकती है तो ही।

ऊरुवयल में झाड़ू-बुहार करके दोपहर तक मारा वापस आ गई। धान का चावल बनाना है। एक पोति धान। आधा पिछले दिन लाई थी। द्रोणपुष्पी के फूल की तरह चावलों को सफेद तैयार करना है। दो दिन की मेहनत। इस काम से दो मानम वल्ली मिल जाएगी। नाषि (एक पाव) चावल भी– कंकड़ों से भरा हुआ।

मल्लन आंगन में बैठा कोरंब[3] ठीक कर रहा था।

वह आते ही धान की कुटाई करने लगी। आज यह पूरा हो जाए तो रात में कंजी बन सकती है।

कोरंब का काम पूरा हो जाने पर मल्लन सामने के बरामदे में आया। धान की कुटाई

---

1. आदिवासियों की एक जाति का नाम
2. आदिवासी जाति
3. फूस या नारियल के पत्तों की छतरी जैसी टोपी। बारिश में खेत में काम करते आसामी इसे पहनते हैं।

में मग्न नई वधू के गले में हिल रहे मंगलसूत्र को मजे में देखता रहा। उसकी साड़ी पर चोकर लग गया था। वह कुछ देर वैसे ही बैठ उसकी उठती-गिरती छाती की ओर देखता रहा। फिर पास जाकर पुकारा :

'मारा!'

वह सिर उठाकर जरा हंसी। काम बंद नहीं किया। मल्लन जरा उसके और निकट खिसक आया।

'मैं कल जाऊंगा।'

उसके चेहरे की खुशी दूर हो गई। दुख के धुएं से भरी आंखों को उससे बचाने के लिए उसने दूसरी तरफ पीठ कर ली। पिट गए धान को ओसना शुरू कर दिया।

'डर लगता हो तो जवनी को बुला लेना।'

'डर कुछ भी नहीं।'

चावल एक छोटी बोरी में भरकर वह ऊरुवयल की ओर चल पड़ी। शाम होने से पहले ही दो मानम कच्चा धान और एक नाषि कंकड़ों से भरा चावल ले आई।

धान कूटकर कंजी तैयार की।

कल इस समय कंजी पीने के लिए मल्लन यहां नहीं होगा।

बावली और संकरे खेतों के उस पार ब्रह्मगिरि और नारिनिरङ्गिमला के बीच सांस रोके खड़ी पहाड़ियों में चार दिन पहले से ही धुआं निकलने लगा था। जाना है, जाना है, ऐसा सोचते-सोचते आलस भरे दिन बीतते चले गए। कोई चीज मुझे यहां बलपूर्वक बांधे हुए है। क्या वह यहां की काली मिट्टी है? झोंपड़ी की नई दीवारों पर गोबर लगाने वाली नई वधू है? मल्लन को लगा कि खाली मारा के लिए जाता हूं, वरना हजार रुपए पर भी तिरुनेल्ली नहीं छोड़ता।

कोई भी आसामी यहां से जड़ से उखड़ जाना पसंद नहीं करेगा।

तिरुवोलम्मा के यहां गिरवी रखी पीतल की थाली उसने दो दिन पहले छुड़ा ली थी।

गोरे तम्पुरान ने शादी के उपहार में पांच रुपए का नोट दिया था। तिरुवोलम्मा के हाथ में वह नोट रखते ही पीतल की थाली में खाना खाने की इच्छा प्रबल हो उठी थी।

'कहां से मिला पांच रुपया?' तिरुवोलम्मा ने पूछा।

उसने बता दिया। लगा कि तिरुवोलम्मा को पसंद नहीं आया। कुछ बोली नहीं।

एक निधि की तरह उस थाली को सहेजकर वह ले आई।

रगड़-रगड़कर इतना साफ किया कि थाली सोने की तरह दप-दप कर उठी।

कंजी पीते समय मल्लन ने कहा :

'अब फिर कब इस तरह कंजी पिएंगे?'

अब वह कब जंगल से लौटेगा?

'लौटकर आने पर मछली तैयार कर रखूंगी।'

आने पर मछली और भात बनाएगी।

चूल्हे की रोशनी में सोने से चमकते उसके गालों पर उसने एक चिकोटी भर दी।

'भूख मिट जाने के बाद?'

वह हंस पड़ी। लाल हो गई। उसके मुंह को हाथ से बंद कर दिया।

'सोया जाए।'

बिना चूड़ी वाले उसके हाथों को सहलाता हुआ वह लेटा रहा। नींद नहीं आई।

कल कहां होगा?

उसके बालों में खुंसे चंपे की फूल की सुगंध अंधेरे में महकती रही।

मारा को अकेले छोड़कर जाना होगा, यह विचार उसे बेचैन करता रहा। अगल-बगल पड़ोसी हैं। फिर भी काली पोरियाटी को साथ रहने के लिए कहकर जाऊंगा। उसका कोई अपना नहीं। न ही घर-बार है। पहाड़ से पहाड़ भटकती रहती है। जिन स्त्रियों का प्रसवकाल निकट है उनके पास ठहर जाती है।

और कोई नाम याद में नहीं आया।

सुबह मल्लन ने विदा ली। मारा शिलावत हो गई। तमतमाए गालों पर टपक पड़ी बूंदें जम गईं।

मल्लन जब आंगन में उतर गया तो अपने झुंड से बिछुड़ गई एक कूरि (एक पक्षी) आंगन में नींबू की शाखा पर आ बैठी। वह पूंछ हिलाती, पंख फड़फड़ाती कर-कर-कर की अपशकुन की आवाज में चहचहाती रही।

मारा चौंक पड़ी। कानों पर हाथ रख लिए। जब तक जाने के लिए मना करे-करे, मल्लन पहाड़ उतरकर खेतों में पहुंच गया था। उसका खुला मुंह खुला ही रह गया। कुछ बोल नहीं सकी। दूर होते जा रहे पति को कुंबरकुनी की कंटीली झाड़ियों के पार ओझल हो जाने तक वह निश्चल खड़ी देखती रही...

मल्लन अंबलकुन्न में घुसा।

'आज वन में मजदूरी करने जा रहा हूं।'

गोरा तम्पुरान गाय दूह लेने के बाद अहाते में लिए जा रहा था। मुड़कर खड़ा हो गया।

'यहां के काम में मजा नहीं आता?'

'नहीं, जुरमाना भरने के लिए पैसा चाहिए।'

इतनी जमीन होने पर भी उसे स्थाई काम नहीं दे सकता। पहली जुताई शुरू करनी है तो बरसात तक प्रतीक्षा करनी होगी। तब तक?

यहां से उखाड़ फेंकने पर भी यहीं आकर गिरने की इच्छा रखने वाले लोग।
जुरमाना अदा करने का और क्या उपाय है?

मल्लन जंगल में मजदूरी करने जा रहा है, वह समाचार युवकों में बहुत जल्दी फैल गया।

यहां की खेती से जितना मिलता है उससे भी अधिक तनख्वाह चाहिए। दो-तीन मानम कच्चा धान भी यहां रोज नसीब नहीं होता है।

वहां—

वहां तीन रुपए और चाय— सुख ही सुख।

चूल्हे के सामने सिकुड़े बैठे जंगल का मुंह देखते-देखते दिन नहीं बिताना होगा।

पैसा मिले तो बहुत लोग जाने को तैयार हैं। जंगल के पार क्या है, यह भी तो पता चलेगा। जो लोग जंगल चले गए हैं, उनमें गोपालन नायर भी हैं इस समाचार ने उन्हें उत्तेजित किया। बहुत नशे वाली शराब। ठेकेदार अच्छी चाय देगा। तेज पत्ती की चाय। दूध और चीनी नहीं भी हो तो क्या?

मल्लन जा रहा है, इसी कारण से बहुत लोग निकल पड़े। कइयों ने अपने जमींदारों को भी न बताया। पेशगी पैसा लिया है, कहने पर जाने न देंगे।

वे सभी काम पर जा रहे हैं, जो जमींदार के बताए सारे काम पूरा करके फिर खाली दिनों में खेत तकते और केंकड़े पकड़ते भूखे बैठे रहते हैं। जमींदारों को अच्छा नहीं लगता।

राघवन नायर को लगा कि मल्लन के साथ केवल पनवल्ली का पेम्बी करियन है। करियन जो पेम्बी का पति था, आसामियों का काम करने में सकुचाता है। उसने पांचवां दर्जा पास किया है। उसका दृढ़ विश्वास है कि हाथी वाले जंगल के पार जरूर ऐसी कोई चीज है जिसे न तो वह जानता है, न ही कभी उसका अनुभव किया है। प्रदेश के मूप्पन की बेटी हैं पेम्बी। वह उसे छोड़ किसी और के साथ भाग गई। सिर्फ उसका नाम सदा करियन का पीछा करता है। इस बात ने भी उसे गांव छोड़ने को प्रेरित किया हैं।

अगर ऐसा कोई कारण नहीं तो जहां जन्म लेकर बड़े हुए, वह हवा जहां सांस ली, वह आलस जो एक आदत बन गया है, इन सबको छोड़कर जाने का किसी आसामी का मन नहीं होगा। आसामी की जड़ें यहां ही हैं। यहां से उखाड़े जाने पर वह मुरझा जाता है, गिर जाता है, सड़ जाता है। उसका नामोनिशान मिट जाता है।

कैसी दुख की बात है!

नदी पार कर पुलयनकोल्ली के लक्ष्य की ओर बढ़ते उस जवान की ओर देख राघवन नायर ने दीर्घ श्वास ली।

पुलयनकोल्ली के ऊपर खेत के पास, जहां सड़क आकर खत्म होती है, दूसरे युवक मल्लन की प्रतीक्षा में बैठे थे। वहां से देखने पर तिरुनेल्ली की जरा-सी हलचल भी साफ

दिखाई पड़ती है। ठीक सामने पाला (एक वृक्ष) के नीचे कुतिरकोट भगवती तिरुनेल्ली की रखवाली करती विराजमान हैं।

पुलयनकोल्ली के दलदल में वे सांस रोककर चले। सदियों पहले उस खेती की भूमि को छोड़कर चले गए पुलय लोगों के आंसुओं का गीलापन और पसीने की गंध वहां अटकी हुई है।

पुलयनकोल्ली का पहाड़ उतरने के बाद उस पार के वन में पहुंचने के लिए फिर दो मील की दूरी तय करनी है। कोल्ली के दक्षिणी कोने में तीन पहाड़ आपस में मिलते हैं। उन्होंने कोल्ली के सब तरफ जैसे एक किला बना दिया है।

गीली हवा की अदृश्य जीभ ने उन्हें लालच से भर जैसे चाट लिया। सूरज के निकलने का पता नहीं चला। बदन के रोंगटे खड़े हो गए।

उस दिन कोल्ली की पगडंडी पर किसी के चलने का निशान नहीं था। पिछली रात की ओस के धूल में लगे दाग अभी नहीं मिटे थे। फतिंगों के चलने से झड़ते पत्तों की आवाज भी उन्हें चौंकाती रही।

रुकी पड़ी नमी से मन को उबा देने वाली जीर्णता की गंध।

ठंडी हवा नाक के भीतर घुसती जाने का अनुभव उन्हें हुआ। राक्षसों-सी आकृति वाले बड़े-बड़े वृक्ष कोल्ली का पहरा देते रहे। आर-पार जाती पगडंडी के कीचड़ पर किसी ने लकड़ियां डाल दी थीं। उन पर पैर रखते हुए वे आगे बढ़े।

पांवों पर जम गई चिकनी मिट्टी से थप-थप की रुलाई-सी आती आवाज सुनकर वे चौंक पड़े। मुड़कर देखा।

रास्ते भर झुके खड़े, टूटकर गिरे पड़े कच्चे बांस।

भाप उठते हाथी के मल को वे ऐसे देख रहे थे मानो जंगली भयानक जानवर हो।

कोल्ली समाप्त होने पर एक चढ़ाई। वह एक खेत में खुलती है। दो पहाड़ों के बीच संकरी भूमि। कोल्ली की भूमि जो रात में जंगली जानवरों से डरकर कांपती, रोती है, सूरज निकलने पर हंसने लगती है। यात्रियों को सांत्वना की शीतलता देती है। पुलयनकोल्ली पार कर आए मुसाफिरों को उसे देखने पर स्वर्ग का-सा अनुभव मिलता है।

अचानक काले मुख पीले पड़ गए।

'वह।'

दबी चिंघाड़।

कोल्ली से आने वाले किसी का भी स्वागत करने को तत्पर ध्वनि उन लोगों के लिए हमेशा नई, डराने वाली रही है।

दूर से आती चिंघाड़।

वे सांस लेना भी भूल गए। मिट्टी में धंस-धंस जाते पांवों को उखाड़ते वे भाग चले।

खुले खेत के बीचो-बीच पहुंचने पर भी रुकने को मन नहीं किया। रुक नहीं पाए।

दूर अपने मुंड़े सिर उठाए खड़े खुले जंगल दिखाई पड़े। दौड़ना बंद किया। रुकी सांसें फिर सामान्य हुईं।

आकाश को चूमते खड़े मुंड़े सिर वाले वन पर मस्सों की तरह चट्टानों का समूह। जंगल में कभी बोई गई रागी की फसल की रखवाली के लिए बनाए गए मचान की बची-खुची हड्डियां उभरी खड़ी हैं।

मनुष्य द्वारा लगाया गया विकसित वन। पहाड़ दर पहाड़ पंक्ति में खड़े अंतहीन सागवान के जंगल। अर्धमुंडित सिर लिए अक्षम खड़े प्रतीक्षारत पहाड़।

अंत में मनुष्यों की आवाज सुनाई पड़ने लगी। उस मस्से तक वे लोग पहुंच गए। घाटियों से आए कुछ मजदूर। काटे गए झाड़-झंखाड़ को आग लगा रहे हैं।

मल्लन और बाकी लोग कुछ दूरी पर खड़े रहे।

अनिमंत्रित अतिथि की तरह।

सर्वाणी* की प्रतीक्षा करो। आएगी, अभी आएगी अपनी बारी।

हरी झाड़ियों में भी आग लगा दी गई।

सिर पर सूरज का प्रखर ताप।

मल्लन और उसके साथी वैसे ही खड़े रहे।

अधजली लकड़ियों के समान, पहाड़ों के सिर पर खड़ी चट्टानों के समान, आकाश में विलीन होते जाते धुएं की तरह, आए आगुंतकों को भी वहां के लोगों ने अनदेखा कर दिया।

अंत में दोहपर की धूप असहनीय हो चली। मल्लन ने गला खंखारकर साफ किया।

पेम्बी करियन ने एक कदम आगे बढ़ाया। उसने एक बार कोषिकोड (कालीकट) देखा है। शहर। शहर के लोग। मानंतवाडी भी कई बार घूम आया है। परिष्कृत आदमी। गांव में कारिकन कहलाने वाले मोटे कपड़े के बदले सबसे पहले उसने ही धोती पहनी थी, लुंगी का चलन शुरू किया था, सिगरेटें पी थीं। मुंह पर पाउडर लगाया था। उसने नेता बनकर पूछा :

'यहां काम है, ऐसा सुनकर आए हैं।'

'कहां से?'

'तिरुनेल्ली से।'

'यह काम तुम लोग नहीं कर पाओगे।'

उसने अपने सिर को जरा भी झुकने न दिया।

---

*गांव भर के लोगों को दी जाने वाली दावत

'कर सकेंगे।'

'क्या? लकड़ी काटने का काम? सागवान की कटाई? यह बांस काटने जैसा काम नहीं है।'

'पता है।'

'खेतों में मुरदे बैलों के पीछे चलने जैसा काम नहीं है यह।'

पेम्बी करियन का चेहरा काला पड़ गया। आंखें चमक उठीं। होठ कांप गए। कांपते होठों को दबाए खड़ा रहा। एक अक्षर भी न बोला।

'अच्छे मजदूरों को हम तविंजाल से लाए हैं।'

इस बात ने उन्हें चौंका दिया। जो कुछ हाथ में आने वाला था, छिना जाता है।

वे स्तब्ध खड़े रहे। कुछ बोले नहीं। ऐसा नहीं सोचा था। जंगल में भी काम नहीं मिलेगा। सोचा था कि तिरुनेल्ली से बाहर निकलते ही काम मिल जाएगा। तिरुनेल्ली के जंगल की सीमा और घाटियों से आए लोग। आस-पास के इलाकों से आए लोग।

अब कैसे लौट जाएं?

उनके चेहरे सुन्न पड़ गए।

हाथ कमजोर पड़ झूलते रहे।

ठेकेदार मुड़कर खड़ा हो गया। लंबा, दुबला-पतला हंसिया जैसा टेढ़ा मनुष्य, जिसके बारे में गोपालन नायर ने पहले ही बता दिया था।

दक्षिणी कोने में रखवाली वाले मचान के पीछे एल्मुनियम के लोटे से चाय सुड़कते आदमी से उसने कहा :

'दक्खिनी कोने के बेंत वाले जंगल की सफाई का काम करने को कहो, जल्दी। इंतजार का बखत नहीं। धूप ढलने तक इस भाग का काम पूरा हो जाना चाहिए।'

तब भी मल्लन और उसके साथी वैसे ही खड़े रहे। कुछ पूछने की हिम्मत नहीं। धीरे-धीरे पीछे खिसकने लगे। धुआं निकलती लकड़ियों के ढेर के पास जा खड़े हुए।

धूप तिरछी हो चली।

ठेकेदार जरा रहम करें तो काम मिल जाएगा। मिले बिना न रहेगा। ऐसा कभी नहीं सुना कि जंगल में मजदूरी न मिले। बहुत से लोग काम न कर पाने की वजह से ही लौटे हैं। काम न मिले, ऐसा कभी नहीं हुआ।

पहाड़ की ढाल पर भरा-पूरा बांस का जंगल है, जिसकी कटाई नहीं हुई है। सागवान की तो तीन-चौथाई कटाई हो चुकी। अब जो कुछ बचा है, कोई भी आसामी कर सकता है। बांस काट सकता है, झाड़-झंखाड़ साफ कर आग लगा सकता है।

ठेकेदार मुड़कर खड़ा हो गया।

पीछे की ओर खिसकते पैरों पर वे वैसे ही खड़े रहे।

उसने उन लोगों की ओर ध्यान से देखा। उसके हाथ की घड़ी में सूरज झलक उठता है। लाल चेहरा। अभी रात हो जाएगी। कुछ फैसला...

हाथ उठाकर मूंछें पोंछ, ऐंठकर उसने कहा :

'जरूरत तो नहीं। फिर भी दो लोग रुक जाएं।

जरूरत न होने पर भी किन-किन को रखना है, उसकी अनुभवी आंखों ने क्षण भर में ताड़ लिया।

मल्लन जरा सकुचा गया। बिना जरूरत के लेना। ऐसी उदारता। रुकना चाहिए?

मारा को स्मरण किया। जुरमाने की बड़ी रकम से भयभीत हुआ चेहरा। मूप्पन लोगों की लालची, गहरी, झुर्रियां पड़ीं, अवहेलना करती नजरें।–

रहूंगा। उन लोगों को जरूरत न हो पर खुद की तो जरूरत है।

'तू कौन है?'

'मल्लन।'

'और तू?'

'करियन।'

दूसरे लोग अपनी बारी का इंतजार करते रहे। नहीं। पूरा हो गया। अंत में आशा की आंखें फूट गईं।

मल्लन और पेम्बी करियन पर दस-बारह जोड़ी आंखें ईर्ष्या के विष-बुझे तीर छोड़ती रहीं।

'दो लोगों के लिए कोई काम ढूंढ दूंगा।'

कोई भी काम तो नहीं चाहिए। अपनी शक्ति से कर सकने वाला काम हो तो कोई बात है।

मल्लन कुछ नहीं बोला।

'बाकी सब जाओ।'

पालतू पशुओं-से एक-दूसरे के पीछे वे लोग मुड़ गए। पुलयनकोल्ली को एक बार फिर पार करना है। निगल लेने को तैयार खड़े जंगल के खुले मुंह पर डर से कांपती प्रकाश की किरणें फिसलकर गिर रही हैं।

वापसी में मल्लन साथ नहीं।

इस विचार ने उन्हें और डरा दिया। कोल्ली से होकर नहीं जाएंगे। दस मील ज्यादा भी चलना पड़े तो भी फारेस्ट रोड से लना चाहिए। अधिक दूरी ने उन्हें नहीं डराया। धीरे-धीरे पास आ रही रात। वह बिना देरी किए सभी कुछ को अपनी लंबी, काली अंतहीन बांहों में कस लेगी।

जिसे तिरुनेल्ली में काम करने का अभ्यास है, उसके लिए जंगल का काम मुश्किल ही है। बहुत मेहनत पड़ती है। कटारी मिस्तरी नीचे न रखने देगा। बांस की कटाई, झाड़-झंखाड़ की सफाई, आग लगाना, लकड़ी का ढेर बनाना...

जिनको खलिहान और खेत के काम का अभ्यास है उनकी ताकत से परे। ऐसे देखा जाए तो तिरुनेल्ली के खेतों का काम कोई काम ही नहीं है। सुबह खेत में जाना। बस हल पकड़े भर रहना चाहिए। उत्साहहीन बैल जितना बन पड़े धीमे चलते रहेंगे। हल पकड़े-पकड़े एक झपकी लेने में भी कोई हानि नहीं। दोपहर को वल्ली में कच्चा धान लेकर झोंपड़ी की ओर। जब तक औरतें धान की कुटाई कर चावल या कंजी न तैयार कर लें, तब तक आराम! फिर धूप के तिरछे पड़ने तक खेत में पहुंचना है।

यहां रुपया ही स्वामी है। तीन मानम कच्चे धान की जगह तीन रुपए। दोपहर को कंजी। सुबह बिना चीनी की खाली चाय। रात को लंबे शेडों के नीचे सोना।

बस यह सोने का काम मल्लन से नहीं हो सका। बड़े शेडों में गायों की तरह पड़ रहना। एक तरह का दर्द भरा स्पंदन। गर्मी। असह्य। घाटियों से आए लोग चादर ओढ़कर सो गए। सुबह तक उनके खर्राटे चले। नींद में बगल में सोने वाले की तड़बड़ाहट सुनता हुआ मल्लन शेड की छत तकता लेटा रहा।

अगले दिन जगह बदली।

खुली चांदनी में आंखें खोले लेटा रहा। मुंह पर पानी की बूंदों की तरह ओस बरसती रही।

आधी रात बीतने पर टीले के ढाल पर की पहाड़ियों से आती आवाज बंद हो जाती है। नई आवाजें। डराने वाली। नींद आते समय मन में आता है कि भीतर जाकर सो लें तो क्या? कट रहे जंगल से भाग गए जानवर रात की विजनता में वापस आ जाएंगे न? चारों ओर हाथियों से भरा जंगल। सागवान का वन। बीच-बीच में जटाएं बनाए खड़ा बूढ़ा जंगल।

कट गए वन से भगा दिए गए पशु अपरिचित परिस्थिति में गुर्राते हैं, गरजते हैं। निकाले जाने का विरोध प्रकट करते हैं।

मैं मनुष्य, इन सबका साक्षी बन बिना सोए रात बिता रहा हूं।

सुबह उठकर देखने पर ओस में भीगे गीले कपड़े पहने प्रभात। छींक, जुकाम, बुखार। कोई भी न बच सका। जंगल के मध्य से आती ठंडी हवा की आक्टोपस की कठिन पकड़ से, रोग के जाल से कोई भी न बचा। भीतर और बाहर दोनों जगह सोए लोगों की समान

दशा। बुखार में तपते लकड़ी काटते रहे। बांस काटे। लकड़ियां खींचकर ढेर बनाए...

इस जंगल के बीच तक आए हैं तो बीमार बनकर पड़े रहने के लिए नहीं।

फिर से निद्राहीन रातें। कोहरा बरसते पहाड़ों पर लेटे-लेटे झोंपड़ी के गरम बरामदे का सपना देखते रहे।

दबे पांव आने वाले जानवारों को भगा देना चाहिए।

आग, धुआं, गोली की मार।

सुनते हुए जागकर लेटा रहा। मारा याद आई। जुरमाना अदा करने के लिए पैसा कमाने गए पति की प्रतीक्षा कर रही नई वधू। कच्ची मिट्‌टी और गोबर से महकती झोंपड़ी में ठहरी गर्मी—मात्र स्वप्न!

मारा नई झोंपड़ी में अकेले रात-दिन बिताती रही। खलिहान का झाड़ू-बुहारू का काम चलता रहा। किनारे की गोल शिलाओं से बातें करती, उछल-कूदकर बह जाती बावली का स्वर सुनती लेटी रही। नदी, जिसे नींद नहीं आती। जंगल, जो सोता नहीं। ठंड, जिसे नींद नहीं। और यहां नींद के बिना ठंडा हो गया मन।

ब्रह्मगिरि की ठंड में सुन्न पड़ गए गालों को कब प्रभात आकर सहलाए और वे गर्म हो जाएं, इस प्रतीक्षा में वह सामने के बरामदे में चूल्हे के सामने घुटनों के बल बैठी रही।

उठी। साड़ी झटककर पहन ली। मल्लन की दी साड़ी। उसमें धूल लगे, ऐसी इच्छा नहीं। उसके चमकते पीले किनारे की ओर वह घूरती रही। हवा में हिल-हिलकर बावली की याद दिलाती साड़ी। उसने एक लंबी सांस भरी। बिना नींद की एक और रात।

पिछले दिन जवनी का बेटा पुलयन जो घास का गट्‌ठर लाया था, वह आंगन में ओस में भीगा पड़ा है। उसने उससे झाड़ू बनाया। खलिहान की ओर चली गई।

मल्लन के जाने के बाद से वह सुबह-सुबह काम पर आ जाती है। वारस्यार का चेहरा खिला रहता है। झाड़ू बुहार, बर्तन मांजना...जले फूस का कोयला और गोबर एक बर्तन में मिलाकर उसने दक्षिण वाले कमरे में पैर रखा। खाली कमरे का काम पहले ही हो जाए। पर अंदर घुसते ही उसने पैर ऐसे पीछे की ओर खींचे जैसे आग में पैर पड़ गया हो।

तम्पुराटी का बड़ा बेटा कृष्णनुण्णि तम्पुरान। ननिहाल में रहकर पढ़ाई करने गया था। कब आया? पड़कर सो रहा है। दोहपर होने को आई।

खेत से राघवन नायर सामने के बरामदे में आया। गीले पांव फर्श पर पड़ी बोरी पर पोंछ लिए। उसको ऐसे खड़ा देखकर पूछा :

'क्या हुआ?'

वह कुछ बोली नहीं। दूसरे कमरे में चली गई। दो कमरों और बरसाती में गोबर लीप चुकने तक छोटा तम्पुरान नहीं उठा था।

'तुम सबको इसी तिरुनेल्लि में पूरा जीवन सड़ते रहना है न? दोपहर तक ऐसे सोते रहोगे तो यही होगा।' गोरे तम्पुरान का गूंजता स्वर।

'मैं सो नहीं रहा था।'

'फिर?'

'ऐसे ही लेटा था।'

'ऐसे ही लेटे थे?' गोरे तम्पुरान का स्वर ऊंचा उठा।

'यहां के आसामी भी ऐसे ही हैं। पर किसी को दोष देने से फायदा नहीं।'

'अच्छा-अच्छा।' उण्णि तम्पुरान का गंभीर स्वर। वह बड़ा हो गया है। उसे लगा : आवाज ही बदल गई। बड़ा हो गया।

गोरे तम्पुरान की बात काटने वाला कोई इस गांव में नहीं है। फिर भी छोटा तम्पुरान—

आखिर उस कमरे की सफाई करते समय छोटा तम्पुरान बाहर से फिर भीतर आया।

'ओ! मारा अब भी यहीं है?'

वह हंस पड़ी। मोती चमक उठे।

एक बार और मुड़कर उसने देखा। बाहर चला गया। उस दृष्टि को देखकर वह चौंक गई। उण्णि तम्पुरान अब उण्णि नहीं, बालक नहीं। एक बड़ा मर्द है। यहां के जमींदारों की वह अजीब नजर। अकेले में आसामी स्त्री के मिलने पर देखने वाली खास दृष्टि। यह कहां से इसे मिली? कब? पेम्बी, काली और जवनी—सब ऐसी नजरों से पराजित हुई हैं।...

शाम को काम खत्मकर घर लौटते समय उसने निश्चय किया — तिरुवोलम्मा से चवन्नी मांगनी है। अधिकतर दिन वल्ली नहीं मिलती। केवल अपने लिए खाना यहां से मिल जाता है। मलंकारी की जो मनौती मांगी थी, उसका समय बीत गया होगा। अमावसी बीत चुकी है।

हे भगवती! मल्लन पर कोई विपत्ति न आए।

मलंकारी को पुकारते वक्त बांस की नली से गिरते पानी के स्वर में क्या कुछ बदलाहट आई?

भगवती के चरणों को धोकर आता जंगली सोते का पानी।

दोपहर को नदी में कपड़े धोने के समय ठीक सामने के खेत के बीच बवंडर उठा। घास-फूस और सूखे पत्ते घूम-घूमकर बहुत ऊंचे उड़ते गए। जैसे कोई गायब करके लिए जा रहा हो। प्रेतात्माएं क्रुद्ध हो गई हैं। आज ही मलंकारी की पूजा करनी चाहिए।

दक्षिण से आती हवा से बांस की नली में गिरती पानी की बूंदें बिखर कर उसके मुंह और थाली पर गिर पड़ीं। असमय ठंडी हवा।

उसने खाना खत्म किया। भूख नहीं मिटी। चावल सानी में मिलाकर बछड़े के सामने

रख दिया।

तिरुवोलम्मा का इंतजार है।

वह अस्वस्थ ढंग में खड़ी रही। मृत मन। थका शरीर। चवन्नी मांगनी है।

सूप लेकर कुटाई करने वाले घर की ओर बढ़ी।

अहाते में झुक आए केले में सहारा लगाते गोरे तम्पुरान ने पूछा :

'मल्लन नहीं आया, है न?'

'नहीं।'

'कहता था कि दस दिन बाद आ जाएगा।'

वह संतुष्ट हो गई। चेहरे पर धन्यवाद का भाव आया। आखिर, किसी ने तो मल्लन के बारे में पूछा।

चावल रुई की तरह सफेद करना है। चेट्टुविलियन का लाल चावल। खीर बनाने के लिए। 'पाललोंड़ी' चावल तो खत्म हो गया।

'कल उण्णि का जन्म-दिन है। सवेरे ही आना।

उण्णि तम्पुरान कितने बरस के हो जाएंगे? तिरुवोलम्मा के हंसते चेहरे को देख उसे संकोच हुआ।

'तिरुवोलम्मा!'

'क्या है?'

'चार आने चाहिए।'

'दो नाषि चावल साफ करने के अब तू पैसा मांगेगी?'

उसका चेहरा तन गया। जैसे अचानक पत्थर से ठोकर लगी हो, अभिमान पर लगी ठोकर।

चुप खड़ी रही।

पूछना न चाहिए था। सुबह जो बढ़नी बुनी थी, वैसी ही चार और बुनकर सेयतु को दे देती तो केले का एक गुच्छा मिल जाता।

वारस्यार को लगा कि जो लड़की 'मुझसे नहीं होगा' यह कहना ही न जाने, उसे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए थी। बाहर अहाते में खड़े राघवन नायर ने सुन लिया क्या? क्या नीचे झुककर उन्होंने देखा? नहीं।

'चार आने का क्या करना है?'

'........'

'चूड़ियां खरीदनी हैं? मल्लन के आने पर पहनने के लिए?'

'मलंकारी की पूजा के लिए।'

'कल दूंगी।'

वह निराश होकर लौट चली। और दिन बीतने पर मलंकारी का कोप बढ़ जाएगा। वह प्रेतात्मा भेज देगी। कैसे-कैसे अनर्थ!

'हे भगवती, मल्लन को कुछ न हो।'

'तू अभी मत जा। कल के लिए कॉफी नहीं। बीज भुने रखे हैं।'

धूप छिप चुकी है। कब—

वह यह न कह पाई कि मुझसे न होगा। कल चवन्नी मिलनी है।

उसने पत्थर की ओखली साफ की । अच्छी तरह भुने कॉफी के बीजों को पीस दिया। कॉफी की गंध का मजा लिया। जंगल से आते वक्त मल्लन अच्छी चाय की पत्ती लेकर आएगा।...

पिसी कॉफी को मिट्टी के एक बर्तन में पलटकर दरवाजे के सामने रख लौट पड़ी। घाटियां काली पड़ गई थीं। सोचा नहीं था कि इतनी देर हो जाएगी। पहाड़ उतर, नदी पारकर खेतों से होते हुए उस पार के टीले पर पहुंचना है। शाम के बाद उस रास्ते पर एक आदमी भी दिखाई नहीं पड़ता।

वह दौड़कर अंबलकुन्न उतर गई। मंदिर में जोर-जोर से ढोल बज रहे हैं। पूजा के बाद कांसे का बर्तन लेकर अपने निवास की ओर लौटते एंब्रोशन।

निर्जन नदी तट। ताश खेलने वालों की मंडलियां उठकर जा चुकीं। गीली होती जा रही खेत की मेंड़ पर वह जल्दी-जल्दी कदम रखते चली। दूर, काला चेहरा लिए खड़ी वेल्लरोडीमूला। अरवनाषि में रहते समय इतना डरने की बात नहीं थी। जंगल से अंधकार की बोहें बढ़ रही हैं।

ठंडी हवा में भी माथे पर पसीना आ गया। मलंकारी के मंदिर के सामने पहुंचने पर डर लगने लगा। काले बड़े-बड़े पेड़ जैसे झाड़ियों के बीच से उठ खड़े होकर झांक रहे हैं।

वह रुक गई। दीर्घ सांस ली। चारों ओर देखा। यहां से रास्ता और काला है। जंगल की काली छाया ने पूरे खेतों को निगल लिया है।

तविंजाल गए कुरिच्चन रामन या उसकी स्त्री आ रही होगी। आने का समय है।

अप्पपारा में राशन खरीदने गया कोई आ रहा है? उसने मुड़कर देखा।

एक परछाई!

दूर से आ रही है। कुरिच्चन रामन नहीं। उसकी स्त्री भी नहीं। न ही कोई आसामी। वह जल्दी-जल्दी चली। रात वाली खास सैर पर निकला कोई तम्पुरान होगा। सफेद धोती।

चलने की गति बढ़ा दी। प्रतीक्षा करने से कोई लाभ नहीं।

धीरे-धीरे मेड़ भी अदृश्य होने लगी।

ठंडी हवा ने पसीने से तर शरीर का आलिंगन किया। उसे रोमांच हो गया। डर अंदर से एक बवंडर की तरह उठा।

'डरती हो तो मैं पहुंचा दूं।' पीछे से आवाज जैसी महसूस हुई। वह जैसे बवंडर में पड़ चकराने लगी।

'ऐसे डरकर भागेगी तो कैसे चलेगा? मुझे भी पास आने दे।'

वह रुकी नहीं। छोटे तम्पुरान की आवाज में उसे एक अपरिचित स्वर सुनाइ पड़ा। फिर से वह सुनाई दे, इसके पहले ही वह दौड़ पड़ी।

'दौड़ मत। यह ले जा।'

'क्या?'

'चार आने। तू मां से कहती थी न?'

मां ने भेजे हैं? पूछने का मन किया। लेकिन रुकने का समय नहीं। अवसर नहीं।

'ले, चाहिए तो ले ले? मैं कोई बाघ या शेर हूं क्या?'

आवाज सुनाने के भाव में फेंक दिया गया सिक्का।

एक क्षण वह संदेह से रुकी। फिर चल पड़ी।

'इतना घमंड हो गया है तुझे?'

उसने ध्यान नहीं किया। चार आना देने वाले एक उदार-हृदय वाले मनुष्य का स्वर नहीं है यह।

चार आने। छोटे तम्पुरान की चवन्नी। चवन्नी नहीं, वह विष है।

एक प्रकार की अव्यक्त वेदना उसके भीतर उमड़ पड़ी।

मलंकारी, विपत्ति में न डाल दे।

मल्लन यहां होता, तो।

मल्लन आ जाए, बस। जुरमाना अदा नहीं होता तो न हो। बिरादरी में नहीं लेते तो न ले। आसामी नहीं बनाते तो न बनाएं। बसवन की तरह भटक-भटककर भीख मांग गुजारा कर लेंगे। कुछ मिल गया तो खा लेंगे। अपना अभिमान नहीं छोड़ेंगे।

लंबा, मोटा बसवन दाढ़ी-बाल बढ़ाए यहीं कहीं भटकता रहता है, उसे लगा।

बहुत दिन पहले—

अव्वा के बचपन में—

वेल्लरोडी के इस खेत में गोपाल वारियर खेती करता था। हाथियों से रखवाली के लिए बसवन ने मचान बनाया। बसवन जब तम्पुरान के धान का पहरा देने लगा तब तम्पुरान ने बसवन की पत्नी का पहरा देना शुरू कर दिया। जहां मल्लन की झोंपड़ी बनी है, वहीं थी उसकी झोंपड़ी।

दूसरे दिन से धान की कटाई शुरू हो गई। बसवन नहीं आया। गोपाल वारियर ने उसकी गांव भर में खोज करवाई। मुहूर्त पर कटाई के लिए वह नहीं पहुंचा। खलिहान का सबसे बलवान आसामी गैरहाजिर। वह कहीं नहीं दिखा।

बसवन की वह झोंपड़ी फिर सदा के लिए खाली पड़ी रही। हवा और बारिश में आखिरकार गिर गई।

अनेक 'पुत्तरी' और 'विशु' के उत्सव बीत गए।

लोग बसवन को भूल गए।

पर गोपाल वारियर कैसे भूल सके? या भुला दिया? फिर खोज की?

घाटियों से मुसलमान वन में चीनिक्का[1] के काम के लिए आए। पेड़ों पर चढ़ने के लिए उन्होंने कुरुमर[2] लोगों को ढूंढ लिया। बड़े-बड़े पेड़ों पर चढ़कर कुरुमर लाख, गोंद और चीनिक्का इकट्ठा करते रहे। पर कुरुवकोल्ली के ऊंचे वृक्षों में चढ़ गई चीनिक्का की लताएं उनका मुंह चिढ़ाती रहीं।

कहीं से एक आदमी आ गया।

दाढ़ी और बाल बढ़ाए जंगली-सा दिखता आदमी।

कोई भी नहीं बता पाया कि उसकी धोती किस सूत की बनी है या फिर उसका रंग क्या है? कहां से आया? कैसे आया? काम पूरा होने तक वह उनके साथ रहा। पगार लेकर वल्लियूरकाव के उत्सव में आया। दाढ़ी और बाल कटवाए। कपड़े की दुकान से नई धोती खरीदी। नया वेश।

बसवन!

बसवन बाजार में दिखाई पड़ा, यह खबर पूरे गांव में फैल गई। गोपाल वारियर के कानों में भी बात पड़ी। उसी क्षण वे बाजार से लौट पड़े।

फिर भी बसवन गांव में नहीं लौटा।

उसके बच्चे हैं, पत्नी है। पर सब वन में ही क्यों रहते हैं? यहां के जमींदार क्या जंगल के जानवरों से भी नीच-हैं?

मैं अकेली हूं। बसवन की तरह मेरा पति दूर, जहां नजर नहीं पहुंचती, घने जंगलों में मेहनत कर रहा है।

जंगल जाए बिना मैं और मल्लन वेल्लरोडी में नहीं रह सकते?

जवनी, वट्टा और पेम्बी जीवन बिता ही रही हैं आखिर। ऐसी कितनी औरतें!

उन जैसा जीवन क्या मेरे साथ भी दोहराया जाएगा?

अनेक पुरुषों के बच्चों को जन्म देकर पालना पड़ेगा?

उस अंधकार में खड़े-खड़े फूट-फूटकर रो उठने का उसका मन हो आया। वह रो उठी। किसी ने वह आवाज नहीं सुनी। बावली की मर्मर ध्वनि की तरह, जंगल की जोंकों की रुदन वाली आवाज़ की तरह, हवा की कराह की तरह वह आवाज किसी के ध्यान में नहीं

1. मटर की तरह का पौधा
2. आदिवासी जाति

आई।

छेद से बाहर निकल आए केंकड़े उसके पैरों के नीचे से दौड़ गए। दूर नरिनिरङ्गि के पास के जंगल की ओर उसने दृष्टि फेरी। नहीं। देखने को कुछ नहीं। अंधेरे की चादर ओढ़े पहाड़। जंगल के बीच किसी बंजर पहाड़ी पर शेड के भीतर कोने में काम करके थककर मल्लन लेटा होगा। मुझे याद करता होगा?

पहाड़ की ढाल पर शून्यता पर आंखें लगाए चेतनाहीन झोंपड़ी में जाने का उसका मन नहीं किया।

अंधेरे में एक और ईंट की तरह, बगल में कुरिच्चन रामन की झोंपड़ी। झोंपड़ियां, जिनमें प्राणों की गति नहीं।

22

उस दिन खाद डाल देने का काम पूरा हो गया। वह कपड़े धोने और नहाने के लिए कुंबारकुनी की ओर चली।

वेल्लरोडी के एकांत से जहां बावली की वेगवती धारा पत्थरों से टकराती बह जाती है, उसे चिढ़ हो आई।

साबुन-फल को आंचल में बांध लिया। उण्णि के जन्म-दिन पर तिरुवोलम्मा ने जो तंबाकू दिया था, उसे याद करके थैली में डाल लिया।

अरवनाषि की लड़कियां नहाने आई होंगी। पुरानी सहेलियों से बातें करने का मन है उसका। उनके साथ हंस-खेलकर समय बिताने का भी मन करता है।

कौन बात करना शुरू करेगा?

मल्लन की भगाई लड़की।

जुरमाना भी अदा नहीं किया उसने।

कौन उसे पास आने देगा?

उसने उनकी ओर दृष्टि फेरी। संदेह के साथ हंस दी।

यह, वह पुरानी सहेली मारा नहीं। वह नटखटपन कहां? बिना काजल की आंखें। चेहरे से खुशी नष्ट हो गई है। मुसीबतों ने उसे एक मां बना दिया है। बिना बच्चों को जन्म दिए, बिना उन्हें पालने का कहर उठाए।

वह अलग खड़ी रही।

साड़ी धोकर सुखाई।

नहाई। जल में यों ही क्रीड़ा। नहाने के बाद किनारे पर पत्तों की खोज में इधर-उधर घूमने लगी।

जवानी उसके पास आई। वह पेम्बी करियन के बारे में जानना चाहती है।

उसने पूछा, 'वे लोग कब तक आएंगे?'

मारा ने हाथ के इशारे से कहा कि पता नहीं। गालों पर विषाद की काली छाया। आंखों में बरस पड़ने को तैयार खड़े बादल।

जवनी ने उसे हंसाने का निश्चय किया। सहेली के दुख में उसे सहानुभूति हो आई।

पति मिलने पर तंबाकू का एक टुकड़ा भी न दिया। जवनी की शिकायत थी।

मारा का मन चंचल हो गया। कुछ बोले बिना तंबाकू का एक टुकड़ा काटकर जवनी को दिया। सहेली को लालच से तंबाकू चबाते वह चुपचाप खड़ी देखती रही।

पत्तियों की खोज में गई औरतें उसके पास आ गईं। वे ऐसे हंसती रहीं जैसे कुछ हुआ ही न हो। बातचीत की। नई वधू का मजाक उड़ाया। तंबाकू खत्म होने तक चबाती रहीं...

वे पत्तियों की खोज में जो कहीं भी नहीं थीं, तट पर उछल-कूद कर चलती रहीं। शाम तक जल में खेल करके जन्म-जन्मांतर के मित्रों की तरह मजा लिया। बहुत दिनों के बाद मारा मन से हंसी। उस हंसी को देखने वाला जो व्यक्ति नहीं था, उसे याद करके उसका चेहरा फिर से काला पड़ गया। दुख के बादल छा गए!

जब तक बरस न जाएं, मंडराते रहेंगे।

तीसरे दिन मछली पकड़ने को मूलप्पाटी जाने की बात उन लोगों ने उसे बताई।

वह खुश हुई। इन लोगों ने मुझे स्वीकार कर लिया।

शनिवार को मूलप्पाटी में बांध बनाएंगे। शिकारी जोसफ ने कहा है कि उस दिन शाम को मल्लन आ जाएगा। जोसफ ने कुरिच्चन रामन को बताया था।

मूलप्पाटी जाने पर मछली मिल जाएगी। बहुत दिन हो गए मछली खाए हुए। सेयतु मानंतवाडी से नमकीन मछली लाता है। दो मानम धान देने पर चार नमकीन मछली। चार मिर्च। आंवले जैसी छोटी इमली।

उसके लिए दो मानम धान है कहां? उतना अगर होता तो कंजी बना सकते।

मल्लन के लिए मछली तैयार करनी है। भात पकाना है। मिट्टी के घड़े में संभालकर रखा तीन मानम धान उसने सुखा लिया। झोंपड़ी के पीछे, केलों की आड़ में जहां कोई देख न पाए।

उत्कंठित होकर सामने के बरामदे में पहरा देती रही।

धान सुखाने की बात जानकर कहीं कोई आ न जाए।

'मुट्ठी भर धान दे दो।'

'आज कंजी बनाने को कुछ नहीं।'

आसामी के आंगन में धान है तो उस पर सबका अधिकार है। प्रेतात्मा से डरकर कोई भी दे देगा। एक मानम देने भर का है ही नहीं। देने पर मल्लन के लिए भात नहीं।

धूप दूर होने के पहले ही, उसने धान अंदर लाकर संभालकर रख दिया।

दोपहर ढल गई।

जवना और वट्टा पत्तियां तोड़ने के लिए चिन्नड़ी खेत की ओर गए। उसे नहीं बुलाया। वह नहीं जाती। घरवाला यहां नहीं। फिर किसके लिए शाक-सब्जी?

अप्पन बड़े ताऊ के साथ अरवनाषि में स्थिर रूप से रह रहा है। काम से आकर ऐसे ही बैठा रहेगा। लेट जाएगा। इस ओर मुड़कर देखा भी नहीं।

कुरिच्चन की स्त्री कुंबा खजूर की छाल लेने जंगल की ओर चली गई।

पड़ोस की सभी झोंपड़ियां खाली।

उस निर्जनता की सुरक्षा में मारा ने धान की कुटाई करके चावल बना लिया। बांस के डिब्बे में बंद करके रख दिया। झाड़ू-बुहारू की। भूसे का एक कण भी बचने न पाया। सब चूल्हे में जला दिया।

झोंपड़ी के बरामदे से कुछ फूस खींचकर जलाया। ठंडा करके पीसकर कोयला बनाया। गोबर के साथ मिलाकर जमीन और दीवारें लीप डालीं। काले पड़ गए दर्पण में खुद को निहारा। उसके गाल चमक उठे।

मल्लन आएगा।

उस रात वह सो नहीं पाई।

सुबह मूलप्पाटी जाना है।

कड़े वाले बर्तन, तूंबी के बने डिब्बे, बांस की टोकरी और किनारा टूट गए एल्मुनियम के बर्तन लेकर, सिर पर कपड़ा ओढ़कर गीली मेड़ से होकर चली। चिन्नड़ी पहुंचने पर ही उसने उन लोगों को पंक्ति में आते देखा।

तृश्शिलेरी में पढ़ते समय स्कूल में जो बर्तन दूध के लिए ले जाती थी, वही बिना ढक्कन का कड़े वाला बर्तन उसके पास था।

उसे लिए वह इंतजार में खड़ी रही।

वेल्लरोडी का मोड़ पार करके, वे लोग दक्षिण की ओर नदी के उद्गम-स्थल की ओर चले।

नदी के दोनों किनारों पर बड़े-बड़े पेड़ आकाश को छूते खड़े हैं। पहरा देते वृक्षों के मध्य ठंड जम-सी गई है। काला जल। सदियों के प्रवाह से घिस-घिसकर चिकने हो गए तरह-तरह के पत्थर।

पापनाशिनी नाला जहां बावली से मिलता है, वहां तक वे लोग पहुंच गए।

मूप्पन जोगी के नेतृत्व में बांध बांधने का काम शुरू हुआ।

मेंढक के बच्चों से काले-काले जलजीव घबराकर पानी में डुबकी लगाने लगे।

उनके पैरों में गुदगुदी हुई।

बच्चे उल्लास में चिल्लाने लगे।

औरतों ने फावड़ों से तट के किनारे के कंकड़ों को टोकरियों में भरना शुरू किया।

अंधे शिकारी पोट्टन को छोड़ तलमला और अरवनाषि के सब लोग वहां पहुंचे थे।

चींटियों की तरह बिना आराम किए वे लगातार श्रम करते रहे। नदी में एक सुषम चौड़ाई छोड़ उन्होंने आर-पार बांध बनाना शुरू किया। बांध को नदी के किनारे तक लाना है। एक लंबे तालाब जैसे बन गए पानी को रोके रखना है, जिससे पानी के साथ बह आई मछलियां बच न पाएं। खाली पानी पत्थरों में से बह जाएगा।

छोटे-बड़े सभी गोल पत्थर वे उठा लाए। मंद पड़ा उत्साह फिर जग गया।

उत्साह उन्हें मधुमक्खी सा चंचल बना देता है।

दोपहर तक बांध बन चुका। पत्थरों के बीच की दरारों के पास वे खड़े रहे, जिससे उस ओर से मछलियां निकल न जाएं। फिर से मिट्टी खोदी। डालियां काटकर लाए। दरारें बंद कीं। अधिक हो गए पानी को छोटी नाली मे बहा दिया।

प्रवाह की विरोधी दिशा में नाले में टोकरियां रख दीं। बांध के ऊपर पानी कम हो गया।

नीचे धंस पड़े पत्थर दिखने लगे। केवल बंधे के पास जल कुछ गहरा होकर रुका रहा।

'दो अच्छे मछली पकड़ने वाले टोकरे भी चाहिए।' मूप्पन जोगी बोला।

नाले के किनारे, नीचे दो जाल और गाड़ दिए गए।

नदी किनारे वे प्रतीक्षा करते रहे।

थकावट दूर करके सिर और बदन में लगी धूल को झटका। भूख जंगली चूहे की तरह उन्हें भीतर से खरोंच रही थी।

बांध के किनारे का नाला भर गया। ऊपर पड़े पत्थरों के बीच से बंसी डाल वे इंतजार करते रहे।

एलुतपोट्टन ने छड़ी हिलाते हुए तट के चार चक्कर लगाए।

उसके बदन पर धूल नहीं लगी थी। खुद कुछ किए बिना दूसरों से काम करवा लेने में एलुतपोट्टन माहिर है।

बांध में एक बड़ी दरार उसने ढूंढ निकाली। वह अपने साथ चराने के लिए पशुओं को भी ले आया था।

शाम के लिए मछली मिल जाएगी। वल्ली भी हो गई। उसकी सकुचित आंखों में दूसरे

मूर्ख लोगों के प्रति परिहास का भाव झलका। 'वह दरार बंद कर दे रे।' उसने इशारा किया।

जोगी थक गया था। वह एक ऊंची चट्टान पर चढ़ बैठा। उसकी नेत्रशोथ-ग्रस्त आंखों पर आक्रमण करने वाली लालची मक्खियां यहां तक नहीं आ सकतीं, इस बात से उसे संतोष हुआ। कुछ देर मक्खियों को भगाने की मुसीबत के बिना चैन से बैठ सकता है।

दोपहर ढल गई।

थैलियां खाली हो गईं।

तंबाकू चबाते-चबाते पहर बीत गए।

वे एक साथ जग पड़े। भूख, थकावट, मछली पाने का उत्साह। लालच। पत्थरों पर टकराने से बर्तन खनक उठे।

सबसे पहले जोगी उतरा। नीचे, नाले में रखे टोकरे मजबूत हैं, न?

उसने जांचा।

तृप्ति मिली।

किनारे एक बड़ी चट्टान पर आसन जमा लिया।

सिर के ऊपर, दक्षिणी कोने से बादल जंगली हाथी के झुंड की तरह धक्का देते घुस आए। नदी का जल काला हो गया। जंगल काला पड़ गया। चिड़िया लगातार चहचहाती रहीं। जंगली गिलहरियां सिर के ऊपर उछल-कूद करके अदृश्य हो गई।

उन्होंने संघर्ष आरंभ किया। और ठहरें तो रात हो जाएगी। मूलप्पाटी है।

स्त्री-पुरुष सभी उतर पड़े। सभी पत्थरों को हिलाया, उखाड़ लिया। अनुभवी उंगलियां पत्थरों के बीच दबी पड़ी मछलियों को टटोलने लगीं।

छोटी मछलियां।

इतनी छोटी कि आंख में डालो तो किरकिराहट भी न हो।

आंखों में निराशा की छाया। वन की कालिमा चेहरों पर भी छा गई।

मारा को कुछ भी नहीं मिला। कई लोगों का यही हाल। पानी मैला हो गया। दो टोकरियां छानीं। केवल पानी ही निकला। बस छोटे-छोटे केंचुए-से जीव। पिसे सूखे पत्तों से गंदले हुए जल को उन्होंने क्रोध में बिखरा दिया।

घबराकर पूंछ हिलाते भागते जल-जीवों को पत्थर से मारने का मन हो आया। उन्हें किनारे की झाड़ियों में पटक दें, ऐसा गुस्सा।

महापाप!

उन लोगों ने नाले के साफ पानी में उन्हें बहा दिया।

वे अपने समतल सिर झुकाए, पूछ हिलाते हुए पानी में डुबकी लगाते बहते चले गए।

जो कुछ मिला, सब वही काले जीव थे। साल-दर-साल जंगल के सूअरों की तरह, कूड़े के बीच घनी होती जाती झाड़ियों की तरह उनकी संख्या बढ़ती ही जाती है।

उनको देखते-देखते ऊब हो चली। मन भर गया। लौटने की इच्छा हुई। बावली सच में बंध्या होती जा रही है। इस जंगल की तरह?

तृशिलेरी के जोसफ और उसके साथियों ने जल में विष मिलाकर और पटाखे छोड़कर नदी की मछलियां नष्ट कर दी हैं।

क्या करेंगे?

अब कैसे जीवन चलेगा?

वर्षा, वन, नदी— सभी धोखा दे रहे हैं।

उत्साह भरे चेहरे मुरझा गए।

इतनी मेहनत का फल।

उन्होंने निराश होकर एक-दूसरे के बर्तनों को बार-बार देखा। आंखों में अंधेरा। भूख।

मछली पकड़ने में चतुर काली को भी कुछ न मिला।

एक-दूसरे के बर्तन से टकराती नजरें।

जवनी को?

वट्टा को?

पेम्बी को?

उंगली जैसी एक परल[1]।

एक-दो छोटी मछलियां।

एक पतली छोटी आरल[2]।

कपड़े भीग गए। बस यही फल। साड़ियां बदन से चिपक गईं। जब औरतें, बच्चे, बूढ़े अदृश्य मछलियों को पकड़ने का कष्ट उठा रहे थे, उस समय युवक कुछ भी किए बिना तट पर घुटनों के बल बैठ गप्पें मार रहे थे। जल को भी हिला देने वाली आवाज में वे चिल्लाते रहे, भीगे सौंदर्य का आस्वादन करते रहे, ठठाकर हंसते रहे।

खाली बर्तनों ने उन्हें भी निराश कर दिया।

गली साड़ी के भीतर से झलकते सौंदर्य को देखने से भूख तो नहीं मिटती।

अंधेरा न होने की उन लोगों ने प्रार्थना की।

छलनी में फंसी मछलियों की तरह लड़कियों की आंखें चमक उठीं, असमंजस में पड़ गईं।

उन्होंने पता चलते ही कि पाने में जलजीवों के अतिरिक्त कुछ नहीं है, मछली पकड़ने का काम बंद किया।

भूख अपने अनथके दांतों से उन्हें खरोंचती रही।

---

1. एक तरह की मछली
2. एक मछली

बांध के जल में पीसकर मिलाए साबुन-फल की तीक्ष्णता कम हो गई थी।

उनके मध्य अनुभवी काली भी है। पत्थरों के बीच दबी मछलियों के हृदयों की धड़कन भी उसकी अनुभवी उंगलियां स्पर्श से जान जाती हैं। एक छोटी आरल के सिवा उसे भी कुछ नहीं मिला।

मैले पड़ गए पानी में कुछ भी न दिखाई पड़ा। साफ पानी उन्हें देख ठहाका लगाते हुए बगल से बह गया।

मारा के मन में अंकुरित हो आए मोह रूपी धान के कण झड़ गए। मल्लन के लिए मछली बनाने को सिर्फ एक छोटी कोली[1] ही मिली है।

पेम्बी पेरियाटी बोल उठी :

'आने वाले समय में कुछ नहीं होगा।'

ऐसा ही रहा तो आगे सचमुच कुछ भी नहीं होगा।

जंगल, नदी— सब आसामियों को धोखा दे रहे हैं। आने वाले वक्त में सेयतु की दुकान से सूखी नमकीन मछली खरीदकर ही काक्कपुलाएं मनाई जाएंगी। उन्हीं से शादी की दावत तैयार करनी होगी।

जंगल उनके खाली बर्तन देखकर असहाय-सा अपना काला मुख झुकाए खड़ा रहा।

आखिरकार—

तलाश पूरी तरह खत्म हो गई।

युवकों ने बांध पर कूदकर उसे तोड़ दिया।

अभी किस्मत की एक और परीक्षा बाकी है।

वे मछली की उन गहरी टोकरियों को देखते बैठे रहे जिन्हें गहरे पानी से उठाया जाना था।

अनेक दृष्टियां मूप्पन के चेहरे पर टकराईं। जोगी उतर आया। टोकरी उठाने और मछली बांटने के उसके अधिकार को वे लोग ईर्ष्या के साथ सहन करते रहे।

मूप्पन ने औरतों के हाथ के बर्तन को ध्यानपूर्वक देखा।

'मारियम्मा ने प्रेतात्मा को मुक्त कर दिया है।' मूप्पन ने शिकायत की।

बरसात नहीं, खेत में फसल नहीं, जंगल में शहद नहीं, काम नहीं, कंजी नहीं। बावली में एक भी बड़ी मछली नहीं। अंगुल भर की भी नहीं।

कैसे प्राण बचेंगे?

पश्चिम से आती बरसात की प्रतीक्षा में सूखे, गले और दरारें पड़े होंठ लिए थके पड़े खेत—

---

1. एक तरह की मछली

आसामी के अपराधों का दंड।

जोगी ने गुस्से से मारा की ओर देखा।

छिनाल।

जो कभी नहीं करना चाहिए था, वह मल्लन ने किया।

करने के बाद वह बच निकला।

आने दो उसे। बिना जुरमाने के पैसे के आने दो उसे।

मूप्पन की दृष्टि के तीक्ष्ण बाणों ने मारा को अंदर तक घायल कर दिया।

मूप्पन की नेत्रशोथ-ग्रस्त नजर फिर से काले पानी में गड़ गई।

एलुतपोट्टन ने उसे जगाया :

'टोकरियां देख लें।'

'हूं!'

टोकरियों की ओर चले। नदी का जल साफ होने लगा था। संध्या उसमें अपना चेहरा देख रही है। वे डर गए। किसी भी समय वह चेहरा काला पड़ जाएगा।

तीन युवकों ने मिलकर टोकरी उठाई। वह सहज ही ऊंचे उठ गई। नीचे से पानी बह गया। टोकरी की भारहीनता ने आशा की अंतिम ज्योति भी बुझा दी।

खोली गई।

सब कुछ एक समतल टोकरी में डाल दिया गया।

तड़पती मछलियां।

अनेक बंसियों की आंखों के सामने इनी-गिनी मछलियां।

तीन कुहनी तक लंबी आरल।

थू! आरल! किसी को नहीं चाहिए। और कुछ मिलता तो—

कुछ छोटी मछलियां। दो कालियां*।

कुछ जल-जीव। बस!

मूप्पन ने अपनी तरफ बर्तन बढ़ाए लोगों को गिना।

इतने सारे लोगों में इन्हें कैसे बांटूं?

अपना हिस्सा लिए बिना कोई भी नहीं हटेगा। बच्चे पत्थरों के ऊपर चढ़कर खड़े हो गए। मारा अलग खड़ी रही।

उसने सोचा, मूप्पन के सामने मछली मांगने का उसे कोई अधिकार नहीं। मल्लन आ जाए। जुरमाना अदा कर दे। गीली आंखें और भी काली हो उठीं।

पहले अपना हिस्सा। मूप्पन ने बड़ी मछलियां अलग कर दीं। साथ में एक आरल भी।

---

*एक मछली

शेष के टुकड़े किए।

वे लोग बर्तन बढ़ाए धक्का देते हुए आगे बढ़े। एक-एक बर्तन में एक-एक टुकड़ा। साथ में एक छोटी मछली।

जिन्हें मिल गया, वे गोद में छिपाकर खाली बर्तन बार-बार आगे बढ़ाने लगे।

'हट जा।'

उन्होंने नहीं सुना।

'यह जवर मूप्पन नहीं, जोगी मूप्पन है—'

देने के बाद भी बार-बार उसी बर्तन को सामने आते देख जोगी ने ऊंचे स्वर में कहा।

पीछे से सबकी हंसी उठी। फुसफुसाहट।

मारा को भीड़ से दूर, अलग खड़े मूप्पन ने देखा।

इस लड़की को क्या हो गया?

उल्लासपूर्वक खेलती, जंगल और खेतों में उछलती-कूदती, नदी से केंकड़े और मछलियां पकड़ती, दौड़ती-भागती लड़की।

वक्त धोखा देता है।

पहले तो— काक्कपुला के पिछले दिन जाल, बंसी लेकर बावली के किनारे जाना ही काफी था। दावत की सब्जी तैयार। जितना चावल मिल जाए, भात बन जाता था।

अब तो आधा धान सेयतु की दुकान में ही चला जाएगा। नमकीन सूखी मछली लेनी है तो चावल या धान देना ही पड़ेगा।

औरतों के बर्तनों का तो अंत ही नहीं।

जोगी ने खाली टोकरी को औंधा करके ऊपर उठाकर दिखाया। वे लोग एक-एक कदम कर हटने लगे। अपने बर्तनों को देख लंबी सांसें लीं।

मारा के बर्तन में खाली एक छोटी मछली है।

वह तो उसने ही पकड़ी थी। खुद देखा।

मूप्पन ने उसे पास बुलाया :

'आज मल्लन आएगा, मा?'

उसने सिर हिलाया।

उसे लगा कि उसके दिए तंबाकू की तीक्ष्णता मूप्पन भूला नहीं है।

'कुछ नहीं मिला?'

उसने सिर हिलाया। जो कुछ है, इसी बर्तन में है। मूप्पन ने अपने हिस्से की एक मछली निकालकर उसके टोकरे में डाल दी।

विरोध की प्रतीक्षा में खड़े लोगों के ईर्ष्या के अस्त्रों से डरकर वह सिर झुकाए चल दी।

जंगल में और अंधेरा हो गया। नदी स्याही की तरह काली पड़ गई। वे वापस चलने लगे। खाली बर्तनों को हिलाते हुए। भारी पड़ गए पैर। एक श्मशान-यात्रा जैसी चुप्पी।

तुरंत ही वह क्षेत्र निर्जन हो गया। आसामियों के दूर पहुंचने का पता चलने पर कुरिच्च स्त्री कुंबा और उसके तीन बच्चे बाहर आ गए।

मारा और जवनी सबसे पीछे थीं। वेल्लरोडी के मोड़ तक पहुंचने पर आगे वाले लोग काफी दूर निकल गए।

मछली का बर्तन तट पर रख मारा नदी में उतर गई। बहुत ठंडे पानी की लहरों ने पनिहर सांप की कुंडलियों की तरह उसे जकड़ लिया। मैली साड़ी धोई। साबुन-फल नहीं था। पानी के नीचे के बालू से शरीर रगड़कर साफ किया।

डुबकी लगाई। खाली पेट असंतोष प्रकट करने लगा।

गीले कपड़े पहने झोंपड़ी में लौटी। बर्तन की मछली अब तक दम तोड़ चुकी थी।

खेत के मोड़ पर इस अंधेरे में भी केंकड़े पकड़ने बैठी कुरुमाटी ने उन्हें देख लिया। वह बार-बार उन्हें घूरती रही। उसके ओठों पर एक हंसी फूट पड़ी। परिहास की, अहंकार की विषैली हंसी।

मारा को अकारण डर लगा। सांझ बीत गई। यह अरवनाषि क्यों नहीं लौट जाती? किससे मिलने के लिए रुकी है?

कुरुमाटी मेड़ पर.ही बैठी रही।

साड़ी के किनारे को उसके स्पर्श से बचाने के लिए मारा सूखे खेत में उतर, सांस रोककर चली थी। उसे लगा कि कुरुमाटी ने वहां एक जाल बिछाया है। वह मल्लन की प्रतीक्षा कर रही है।

बहन की झोंपड़ी में वेल्लरोडी में छिपकर बैठेगी। यह सोचते ही चौंक पड़ी।

वह जवनी से कुछ भी न बोली।

पुरानी सहेलियों के बीच एक दूरी आ गई है।

मल्लन के आने के बाद प्यार की मिठास से, विरह से, कड़वाहट के आंसुओं से, काली छायाओं से एक दरार बन गई है।

मारा को लगा कि सूअरों द्वारा कुचले खेत की तरह, छितर-बितर गए उसके शून्य मन में अब कोई भी भाव नहीं आएगा।

जवनी की आंखों में, पेम्बी करियन के बारे में बातें करने का लालच भरा हुआ था।

एक मजाक की बात, एक कुशलक्षेम या सांत्वना का एक शब्द—जवनी प्रतीक्षा करती रही। दोनों अपने-अपने अंधेरे कक्ष टटोलती रहीं। चढ़ाई आ गई। वेल्लरोडी अंधेरे में डूब गई थी। उन्हें पता न चला।

झोंपड़ियों में मछली काटने और पकाने का शोर। वे अंधेरे में जाकर नदी से पानी

ले आईं।

नमक, मिर्च और हल्दी में पक रही मछली की गंध। लालच से उस गंध को उन्होंने भीतर गहरे तक खींच लिया।। भूख मिटाने की इच्छा हुई। साथ में पीने को कंजी भी नहीं। उस शाम कुछ लोग जमींदारों के अहातों से हरी पत्तियां चुरा लाए थे। उन्हें पकाया। उन अच्छे दिनों का सपना देखते रहे जब मछली के साथ खाने को भात मिलेगा। यह ध्यान में नहीं आया कि उन दिनों के आने में कई महीने बाकी हैं। पेट भर उबला पानी पी लिया। जिनके पास पिसा कॉफी का छिलका था, वे दूसरों को बांटते रहे।

उससे भी भूख नहीं मिटी। खाली पानी पिए ताल दे रहे पेट के साथ जलते चूल्हे के चारों ओर, नींद की प्रतीक्षा में पड़े रहे। दिन भर बावली के पत्थरों से लड़-लड़कर थक कर चूर हुए शरीर। ठंडी हवा और चूल्हे के ताप के आगे वे झुक गए। अंत में उन पर नींद ने, केवल नींद ने कृपा की।

23

चुंडली बैठा बेटी की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे देख मारा को सुखद आश्चर्य हुआ। इतने दिन ताऊ के पास रहे। इस ओर मुड़कर झांका भी नहीं।

क्यों?

सामने के बरामदे में कुछ ताड़ के पत्ते रखे थे। पुषकुनि की खेती छूटने के बाद अप्पन स्थाई रूप से कोई काम किए बिना इधर-उधर भटक रहा था। जंगल से पत्ते ले आया। अच्छा ही है। अप्पन की उम्र अभी इतनी नहीं हो गई कि काम न कर पाए। अव्वा की पुला से ही यह दशा हो गई है।

बेटी के हाथ के बर्तन में झांककर चुंडली ने पूछा, 'कुछ नहीं?'

बड़ी मछली की बाहर लटकती पूंछ देखकर बूढ़े को आश्चर्य हुआ।

'कहां से मिली, या...?' शंका करने लगे। अकेले रहने वाली बेटी। मछली पकड़ने गई थी। गंदे पानी में भीगी धोती। मैल धोने पर भी दूर नहीं हुआ। पानी में देर तक खड़े रहने के कारण घुटनों के नीचे पांव राख जैसे सफेद हो गए हैं। फिर भी एक साथ मछली पकड़ने जाने पर एक पूरी मछली कैसे हिस्से में मिल सकती है?

'मूप्पन ने दी।' अधिक स्पष्टीकरण दिए बिना वह चूल्हे की ओर बढ़ी। राख जैसे हो गए पांवों को आग जलाकर तपाती खड़ी रही। ठंड दूर हो गई। शरीर का कंपन मिट गया। जब तक मल्लन आए, साड़ी सूख जानी चाहिए। चूल्हे के सामने बरामदे में सूखने

को लटका दिया।

चूल्हे के ऊपर की छत पर रखी पूंजी की गांठ खोली। एक मात्र फटी पुरानी साड़ी। उलटकर तह की और जहां-तहां फटे भागों को अंदर करके पहन ली।

भात बनाया। कंजी एक अलग थाली में रख दी। मछली काटकर धोई। मिर्च और नमक लगाया। संभालकर रखी एक इमली निकाली। सुखाने लगी है। चूल्हे में भूनकर फिर पीसकर निचोड़ लिया।...

बर्तन सब ठीक से कमरे में रखने के बाद देखा, दक्षिणी बरामदे में अप्पन बैठा प्रतीक्षा कर रहा है। अच्छी तरह बुनकर क्रम में रखी बढ़नियां। कुछ खाए बिना वापस जाएगा नहीं। मूलप्पाटी में मछली पकड़ने की बात जानकर ही आया है।

एक थाली में भात निकाला। ऊपर मछली। सामने रखने पर याद आया, अभी पुला का समय पूरा नहीं हुआ। अगली काक्कपुला तक मछली नहीं। उसने देखा कि अप्पन की दृष्टि में सूखे दुख के पीछे लालच के धब्बे भी दिख रहे हैं। दुख के साथ उस भात को अलग रख दिया।

नदी की ओर जाती सड़क के किनारे से कुछ अरारोट के पत्ते तोड़ लाई। उसमें भात रख साथ में नमक-मिर्च रख दिया।

खाना खा चुकने पर जैसे चुंडली थक गया। लगता है, अप्पन आज जाएगा नहीं। बढ़नियां एक ओर हटाकर चूल्हे के सामने ही चुंडली लेट गया। उस दिन शाम के समय चूल्हे के सामने अप्पन ऊंघ रहा था तब 'तलपोति' धान लेकर आए मल्लन का चित्र मन में कौंध आया। उसे लगा जैसे वह घटना पिछले जन्म की थी।

बरामदे को अच्छी तरह उसने झाडू से साफ किया। लगता है कि एक दिन का काम अप्पन यहां बैठकर ही कर चुका। थककर पड़े सो रहे अप्पन को देख उसकी आंखें भर आईं।

बरामदे पर जा बैठी।

मल्लन आएगा, आज आएगा, अभी। गोरे तम्पुरान ने बताया है कि आज पगार मिलने वाला दिन है। पगार लेकर चलने पर यहां अब पहुंचना चाहिए।

हवा में बांस के झुरमुट से सीटी की आवाज के बीच से उस परिचित आहट को सुनने के लिए वह कान लगाए बैठी रही। रात की धड़कन के रूप में केवल ढोल का नाद। कालिंदी के चट्टान पर ठोकर खाते बहते जाने की आवाज आती रही।

जंगल में कहीं एक सियार चिल्लाया। ध्यान से सुना। मूलप्पाटी में नदी के किनारे के बेंत के जंगल में होगा। मल्लन अब नरिनिरङ्ङि पर्वत और कुतिरकोट पार करके कोल्ली के पास के खेतों में पहुंच गया होगा।

कुरिच्चिन रामन की झोंपड़ी से धान की कुटाई की आवाज आ रही है। नडुवंतार के

पशुओं को चराने के बाद वल्ली लेकर बहुत रात गए ही वह पहुंच पाता है। आधी रात तक उसकी झोंपड़ी में जाग रहती है। उसके बिना यहां रहना असंभव था।

उसकी झोंपड़ी पर लटक रहे जंग लगे तीर।

जिसे तीर चलाकर जीवन बिताना था, वह चरवाहा बन गया है। उसकी मां कुंबा मछली की गंध सूंघ कुंबारकुनी से मूलप्पाटी तक भटकती रहती है। उसके नीचे इधर-उधर घूमते रहने के कारण इस बियाबान में डर नहीं लगता।

अप्पन सो गए। वह अंधेरे में प्रतीक्षा में बैठी रही। चूल्हे की लकड़ियां जलकर राख हो गईं, पर उसे पता नहीं चला। शाम से मिट्टी की दीवार के छेद में बैठे मुर्गे ने पंख फड़फड़ाए। फिर से अपशकुन न सुनने के लिए उसने कान बंद कर लिए।

ढोल की आवाज धीमी पड़ गई। कुंबा का धान की कुटाई का काम पूरा हो गया। रात बढ़ने पर बांस से सीटी की ध्वनि भी कम हो गई। काली रात ने उसे चारों ओर से घेर लिया। वह उसके भीतर घुसकर बस गई।

अब, आज नहीं आते। पगार मिलने में देरी होने पर सफर कल पर टाल दिया होगा। बगल वाली झोंपड़ी में जवनी भी बैठी होगी। वन से पैसा लाने पर करियन उससे शादी कर लेगा।

और मैं?

परिवार से बिछुड़ इस निर्जन में अभी कुछ और समय बिताना है। एक-दो हफ्तों की पगार से तो जुर्माना अदा नहीं हो सकता। एक हजार! कितना होता है? बैठे-बैठे ऊब गई तो गिनना शुरू किया। सात से आगे नहीं बढ़ सकी। ऐसे कितने अंतहीन सातों के मिलने से हजार बनते हैं!

तीस चूड़ियों का पैसा होने पर ही करियन जवनी से शादी कर लेगा। पेम्बी से उसका संबंध जो ढीला पड़ चुका है, पूरी तरह कट जाएगा।

जवनी की झोंपड़ी में जल रही आग को उसने टटिया के छेद से झांककर देखा।

अपना चूल्हा तो बुझ गया। उठकर और लकड़ी डाली। कुछ नहीं। धुआं भी नहीं। आग बिल्कुल बुझ गई है। राख ने सफेद दांत-से निकाले। उसे कुरेदा। थोड़ी-सी आग। फूंकें मार-मारके जलाया। आंखों में धुआं भर गया। सिर और शरीर में लगी राख झटक कर वह पुरानी जगह पर आ बैठी। आज मेरी और जवनी की प्रतीक्षा बेकार ही है। तविंजाल में जाकर शहद बेचकर भी कुरिच्चन रामन इतनी रात ढलने से पहले ही लौट आता है। छेद में मुर्गे ने फिर से पंख फड़फड़ाए।

काली रात। पूरे आकाश में बादलों ने काला कंबल पसार दिया है। रात की दीर्घ निःश्वास जैसी हवा झोंपड़ियों को, झाड़ियों को, तट के किनारे खड़े आड्वंजी वृक्षों को झुलाती हुई गुजर गई। काली रात हिल उठी। तड़प उठी। एक विकृत स्वर में सिसक उठी।

वह चौंक कर उठी। नंगी टांगें हवा में सुन्न पड़ गईं। आंखें मलकर उबासी ली।

कुछ सुनाई पड़ रहा है।

भारी कदमों को खींचकर चलने की आवाज है न?

मल्लन की आहट नहीं है।

फिर?

वह उत्कंठित होकर बांस की टटिया की आड़ में जा खड़ी हुई।

खांसी की आवाज। पहचान नहीं सकती, वह किसकी है। एक की नहीं, दो लोगों की आहट है। करियन झोंपड़ी में गए बिना यहां क्यों आया?

सोच पूरा होने से पहले ही वे आंगन में पहुंच गए। करियन की दुर्बल बांहें मल्लन को घेरे हुई थीं। सहारा देकर ला रहा था। बरामदे की ओर पैर उठाते ही मल्लन गिरने को हुआ। आगे बढ़ाया हाथ दीवार छू नहीं सका। वह बिजली की तरह लपककर उस तक पहुंची।

जैसे आग छू ली हो। होठ कांप उठे। अंधेरे में वह उसका चेहरा देख न पाई। आग की तरह तपता शरीर। एक बिजली उसके भीतर से गुजर गई।

कांप रहे मित्र को करियन ने चूल्हे के पास लिटा दिया।

आग के निकट भी मल्लन का बदन कांपता रहा। मारा ने चारों ओर देखा। सूखे कपड़े का एक टुकड़ा भी नहीं। चूल्हे में डाली कच्ची लकड़ी आग नहीं पकड़ रही थी। आग हार मानकर थक गई। लकड़ी से धुआं निकलने लगा। विष-वमन करने वाले नीले सांप की तरह कुंडली खोल, फन फैलाकर ठंडे अंतरिक्ष में नाचने लगा। शीशम की शाखा के टुकड़े-जो अभी सूखे नहीं थे, जहर उगलते रहे। तब भी छाती में बंधे दुख के बांध ने उसे शक्ति प्रदान की।

साड़ी सूखने को डाल दी थी। वह हवा में फड़फड़ाती रही।

छूकर देखा। गीली है। ठंडी हवा, ओस की रात।

गीली हो तो हो। उसने उसे खोल लिया। उसे पहनकर, पहले पहनी फटी धोती की तह बनाकर मल्लन को ओढ़ा दिया। आग जैसे जल रहे शरीर से सटकर पड़ी रही। उसे लगा कि साड़ी जल रही है। तब भी कंपन दूर नहीं हुआ।

करियन जवनी के पास से कुछ काला जीरा, सोंठ, काली मिर्च और नीम की छाल पीसकर उबालकर ले आया।

रोगी के मुंह के कोने से झाग निकल पड़ा। दवा पिलाने का कोई उपाय नहीं। उसे होश नहीं था। होठों पर भयंकर ताप। वे सूख गए थे, पपड़ियां जम गई थीं।

उसने मल्लन का सिर अपनी गोद में रख लिया। तब तक गीली साड़ी सूख चुकी थी।

चूल्हे के ऊपर रखी कड़ाही जैसा ताप। ठूंठ हो गई दाढ़ी के बालों पर उसने हाथ फेरा।

करियन ने रोगी के मुंह में थोड़ा-थोड़ा करके काढ़ा डाला। भीतर नहीं गया। दूसरी ओर से उसकी साड़ी में बह आया।

नसें तने चेहरे की ओर देख न सकने के कारण मारा ने मुंह फेर लिया।

प्रेत बाधा है।

मूप्पन की आंखों का दोषारोपण उसे स्मरण हो उठा। मूप्पनों और मलंकारी को चुनौती देकर मुझसे शादी करने का दंड। नहीं तो, जुर्माना अदा करने के लिए पैसा इकट्ठा करने जाने पर यह रोग क्यों होता?

कैसा बुखार है? ऐसा कभी नहीं देखा। कंबल ओढ़ाने पर भी कंपाने वाले बुखार के बारे में अप्पन और ताऊ की कही बात याद आई। बुखार से पीले पड़कर...

हे मलंकारी, रक्षा करो!

कुछ देर दोस्त को देखते रहने के बाद करियन उठा। अभी तक हालत वैसी ही थी।

वह धीरे से बोला, 'मैं जा रहा हूं।'

मारा ने भी आंखों से उसकी ओर देखा। कहने को कुछ नहीं था। ओस में भीगे सूखे पत्तों पर उसकी आहट दूर होती गई।

चुंडली को तब भी कुछ न पता चला। वह चूल्हे के दूसरी तरफ पड़ा सुखपूर्वक सोता रहा। थककर भरपेट खाकर लेटने से आने वाली नींद सवार थी। बहुत दिन की भूख के बाद।

मैं और मल्लन इस दुनिया में अकेले हैं। वेल्लरोडी के जंगल के घने अंधेरे में हवा में हिल रहे दो सूखे पत्ते।

दूसरा कोई अवसर होता तो यही मनाती कि इस निर्जन का यह जीवन कभी समाप्त न हो।

शाम को सोते के पास की चट्टानों के निकट की झाड़ियों से चमेली की कलियां तोड़ लाई थी। माला गूंथकर बरामदे की छत में खोंस दी थी। वे कलियां खिलकर सुगंध फैला रही हैं। बाल सूख गए। मल्लन आ गया। पर फूल लगाने का भाग्य नहीं। धुंए में फूल मुरझाने लगे। उसकी आंखें भर आई।...

ठंडी हवा ने बांध तोड़ दिया। वह जंजीर तोड़ दिए हाथी की तरह मदमत्त होकर बह चली।

बादल कुछ देर तक गरजते रहे। गुर्राए, एक-दूसरे को काटते-खरोंचते रहे। फिर थक गए।

पानी बरसने लगा। तेज हवा। बरामदे में बांस की टटिया झूल उठी। बंधन तोड़कर

उड़ने की कोशिश करती रही।

जंगल से तेज. निरंतर कोलाहल। रात को कंपा देने वाली भयानक वर्षा।

वह कांप उठी। डर ने उसे मिट्टी की पर्त की तरह ढंक लिया। जंगल से किसी बड़े पेड़ के उखड़ गिरने की आवाज। टूटती शाखाओं का रुदन। सभी आवाजों को दबा देती वर्षा। मारा अंधेरे की ओर घूरती रही। सब कुछ सुनती रही। कुछ भी उसके मन में नहीं गया।

झोंपड़ी पर बिछे पुआल को हवा ने मदमत्त हाथी की तरह उड़ा दिया। वह शिलावत हो गई। सुबह तक ऐसे ही बैठी रही।

अस्थिर हो गए वन में सुबह होने के पहले ही चिड़िया चहचहाने लगीं। अनेक स्वर। अभी तक कभी सुनने का मौका नहीं मिला था।

बारिश रुक गई, लेकिन उसे पता न चला। हवा नहीं। एक अभेद्य निःशब्दता सब तरफ घिरी रही। अभी आधी ही रात बीती है।

दूर, नीचे चिन्नड़ी खेत के भी पार, कुंबारकुनी से मचान गीत की उभरती सिसकियां, आवाजों के गीले पंख।

'ए...फसल हो गई, ए-उत्सव हो गया।

परिवार मिलन हो गया।

लड़कियों के लिए जंगल में जामुन हैं...कटहल हैं...आम हैं...

आ जा रे...मा...आ जा...मा'

आओ-आओ कहकर युवक मन ही मन सिर झुकाए बैठी कामिनियों को पुकार रहे हैं।

परिवार मिलन हो गया? एक तो बाकी है? एक! मेरा मल्लन काक्कपुला के लिए अभी भी पैसे इकट्ठा नहीं कर पाया है।—बाकी रह गया है। केवल मैं नहीं जा पाई। मेरा साथी बेहोश होकर—

उसके भीतर रोके गए दुख का बांध टूट गया। छाती में रुदन तड़पकर जाग उठा। धारा अविराम प्रवाहित होती रही। वर्षा के बाद अधिक शक्ति से बहने वाली बावली की तरह।

किसी ने सांत्वना नहीं दी। आंसू बह जाने के बाद भी दुख एक शिला-खंड की तरह भीतर रह गया।

थक गई। मन का बोझ कुछ हलका हो गया। आंसू की बूंदें गोद में रखे मल्लन के बेहोश चेहरे की सूखी दाढ़ी के बालों में अटक गईं।

साड़ी के छोर से धीरे से पोंछ दिया। बीच-बीच में उभर आती सिसकी रोकने के लिए उसने दोनों हाथों से वक्ष दबा लिया।

रोगी ने आंखें खोलीं। उसने ध्यान से देखा। थाली में बची ठंडी दवा थोड़ी-थोड़ी करके मुंह में डाल दी। पी लिया। इशारा किया – बस। सांस वापस मिली। आखिर होश तो आया।

हे चामुंडी, मल्लन को निरोग करो!

हे मलंकारी! केले का एक गुच्छा चढ़ाऊंगी।

सुनसान रात में, दुख के अनंत क्षितिज की सीमा पर मैं अकेले नहीं हूं। मल्लन मेरे साथ है।

सुबह के पहले का अंधेरा। चांदनी ढल गई। धीरे-धीरे पूरब की दिशा लाल हो उठी। नदी के पार, तलमला में तब भी ढोल बज रहे थे। एक और काक्कपुला समाप्त हुई।

पूरब में चोटियों पर प्रकाश की किरणें फूट पड़ीं।

मल्लन का सिर गोद से धीरे से अलग किया। उठी।

ओझा बुलाना चाहिए। बुखार जस का तस है। पता है कि पैसा नहीं, फिर भी डिब्बा टटोल लिया। एक कड़वे नींबू का फल ही हाथ में आया।

एक नारियल चाहिए। केले का एक गुच्छा। एक मुर्गा। एक नाषि लावा। एक मानम कच्चा चावल। हिसाब लगाने से कोई फायदा नहीं। मुर्गा ढूंढने की जरूरत नहीं। एक सेर धान सेयतु की दुकान में देने पर एक छोटा नारियल मिलेगा। एक मानम धान और देने पर चार-पांच केले भी। अगरबत्ती और धूप तो छोड़ी भी जा सकती है। कम से कम एक कुलकम (साढ़े बारह सेर) धान चाहिए।

तिरुवोलम्मा से पूछ लूं। चार दिन की वल्ली उधार ले सकते हैं। झाड़-फूंक, दवा और कंजी के लिए पर्याप्त है। उससे काम चलाना चाहिए।

दो पोति धान का चावल बनाकर, धोए सफेद कपड़े जैसा साफकर टोकरी में भर वारयम की छत पर चढ़ा दें तो एक कुलकम धान मिल जाएगा। वल्ली तो उधार ले सकते हैं।

घड़े में पिछले दिन का ठंडा भात पड़ा है। भूख नहीं। स्वाद नहीं। नहीं चाहिए।

करियन आया। लेटे मित्र को देखकर बोला :

'जंगल में पगार नहीं मिली। चार दिन से काम नहीं कर पाया।'

पगार की बात पर उसका ध्यान ही नहीं गया। मल्लन के काम पर जाने की बात वह भूल चुकी थी। प्रेत ही मल्लन को उससे छीनकर ले गया था।

करियन को मल्लन के पास बिठाकर वह निकल पड़ी। पौधों की गीली पलकों से तब भी आंसू टपक रहे थे।

पांव अंबलकुन्न की ओर बढ़े।

अभी तिरुवोलम्मा उठी नहीं। कोई भी नहीं जगा। सामने के बरामदे में कंबल ओढ़े सो रहे हैं— वारियर, राघवन नायर और बच्चे।...

रसोई के बंद दरवाजे के सामने वह चुप खड़ी रही।

पेड़ों की छाया में ठंडे पड़े आंगन में झाड़ू लगाया।

नली के नीचे जूठे बर्तन। वर्षा से गंदा हो गया सोते का पानी बर्तनों पर बिखर रहा है। बर्तन धोकर रसोई के बर्तन में औंधे रख दिए।

फिर खड़ी रही। भीतर से कोई आवाज नहीं। दूर लाल चोटियां सफेद पड़ गईं। प्रकाश नीचे बह आया।

भीतर दरवाजा खुलने की आवाज सुनकर वह एकदम से चौंक गई।

'तिरुवोलम्मा!' वह एक विलाप था।

'आती हूं। पता नहीं आज ऐसी अच्छी बात क्यों सूझी!'

वह कुछ बोली नहीं। हिली नहीं। सिर से पैर तक एक तरह की बेचैनी।

मल्लन ने अभी तक कुछ खाया नहीं है। रात की दवाई ही है पेट में। वारस्यार के भंडारघर में धान है। छत के ऊपर टोकरी भर चावल है। खुद उसने साफ किया है। पूछने पर जरूर देगी। जरा बाहर तो दिखे।

प्रतीक्षा के सिवा कोई चारा नहीं।

'मारा, अमरूद के इन पत्तों को पीसकर सानी में मिला दे। लगता है, भैंस की तबीयत ठीक नहीं।'

तिरुवोलम्मा बाहर दिखी नहीं। बिना देखे कैसे कहूं? कहने का मन था, पर भीतर जाने में पैर अक्षम हो गए। मुट्ठी भर अमरूद के पत्ते अधखुले द्वार से आंगन में आ गिरे।

दहलीज से दूर होती जा रही आहट।

दरवाजा खोलकर सुभद्रा ने कुछ और आदेश दिए :

'मां ने कहा— बछड़ों को अहाते में ले जाकर रस्सी से बांध दे।'

'गायों को बासी कंजी दे दे।'

उसने सुना। ठूंठ-सी खड़ी रही। सांसें भी सुन्न पड़ गईं। अमरूद के पत्ते फर्श पर पड़े रहे। जाकर बछड़ों को देखा भी नहीं।

भीतर उबलती कॉफी की गंध।

फिर छाछ मथने की आवाज।

हे भगवती! वह कब बाहर आएगी?

गला सूख रहा है। पेट से धुआं सा निकलता रहा। वेल्लरोडीमूला की झोंपड़ी से कोई मुझे बुला रहा है।

कितनी देर!

छाछ मथने का काम पूरा हुआ।

दोशा बनाने की गंध आ रही है।

अब नहीं रुका जाता।

राघवन नायर सब देखता हुआ, नाद के पीछे सब्जियों के पौधे रोप रहा था।

पान की पीक केले के नीचे थूक, रसोई के आंगन में आया। वह हिल न सकी। दयनीय दृष्टि थी। पलकें कांपीं। आंखें गीली हो आईं।

'क्या है, मारा? क्यों खड़ी है? पत्ते पीस लिए?'

'मल्लन को...' वह सिसक उठी। राघवन नायर घबरा गया।

यह लड़की, मां के मरते समय भी रोती नहीं दिखी। मल्लन पर कौन-सी विपत्ति आ गई?

'क्या हुआ मल्लन को? कल आया न?'

'हां।'

गोरे तम्पुरान से वल्ली पूछ ले तो क्या? ऊरुवयल का मुख्तार है आखिर। कभी सीधे पूछा नहीं है। संकोच में खड़ी रही। शब्द गले में अटक गए। पुरुष से, खासकर जिस खलिहान में काम लगा हो, वहां के तम्पुरान लोगों से कुछ भी मत पूछना। उससे सीधे कुछ मांगना मत—मां का उपदेश है।

मांगें तो जरूर देंगे। जरूरत से भी ज्यादा। पर जितना देंगे उसका दसगुना या उससे भी अधिक लौटाना होगा। कुरुमाटी को देखा न! उसे किसी भी चीज की कमी नहीं। एक लड़की जो कुछ दे सकती है, वह वो सब देती है। केवल वही नहीं, गांव की सभी आसामी स्त्रियों की यही दशा है। याद रखना!

मां कहां?

जूते की आहट दूर होने लगी।

अभी कहना होगा, अभी।

'तम्पुरान! —' राघवन नायर तुरंत रुका।

किसी अगाध खाई में गिर गए जीव की-सी आवाज। हाथ पकड़कर उठाने की याचना करने वाला अति दयनीय स्वर।

वह पास आया।

इस लड़की को क्या हुआ?

'तुझे क्या हुआ? मल्लन को क्या परेशानी है? पगार नहीं मिली?'

'मल्लन को बुखार।'

'कब से?'

'कल आने पर...'

'दवा दी?'

'हां। झाड़-फूंक करवानी है।'

'यहां तेरी वल्ली बाकी है?'

'नहीं। दो दिन की वल्ली चाहिए।'

'एक कुलकम धान?'

'हां।'

'ऊपर आ जा।'

राघवन नायर के पीछे गई। बड़ी कल वाले ताले से बंद द्वार। नया भंडार-घर।

दहलीज के उस छोर पर अंधेरे में, खिड़की से दो आंखें उस पर लगी थीं। उसने देखा नहीं। राघवन नायर ने धान तौलकर सूप में डाल दिया। रसोई की ओर देखकर कहा, 'मारा को एक कुलकम धान दिया है। हिसाब याद रखना।'

जवाब नहीं मिला। राघवन नायर खेत की ओर चला। मल्लन आ गया है। वर्षा भी हो गई। जल्दी ही जुताई शुरू कर सकते हैं।

24

तीर की तरह वह दौड़ पड़ी। करियन और ओझा को वेल्लरोडी की ओर जाते उसने दूर से ही देख लिया था। वह हांफ उठी। पसीना आ गया। करियन के साथ झोंपड़ी के आंगन में घुसी।

छप्पर में चूल्हे के सामने मल्लन आंखें बंद किए पड़ा है। भारी पलकें। सूखी अंजीर की तरह हो गए ओठ। चुंडली पास बैठ उसके पैर दबा रहा था।

झाड़-फूंक देखने के लिए सभी झोंपड़ियों से लोग इकट्ठा हो गए। निमंत्रित, अनिमंत्रित सभी। सुन-सुनकर बहुत लोग आए।

बाहर और भीतर भीड़ जमा हो गई।

रोगी को चूल्हे के पास ही कपड़े ओढ़ाकर लिटाया गया। सीधे लेटने की जगह न होने के कारण उसके पैर आंगन में निकल पड़े।

कुरुमाटी आई। बिना किसी संकोच के वह मल्लन के पास बैठ गई। 'वह ऐसी ही है। जो मन में आएगा, करेगी।' देख रहे लोगों ने कहा।

मारा झाड़-फूंक के लिए लावा और केले तैयार कर रही थी। उसने नहीं देखा।

मारा को लग रहा था जैसे सब औरतें उसे घूर रही हों।

उनकी दृष्टियों में ताड़ना का भाव था।

इसी ने ऐसे हृष्ट-पुष्ट आदमी को इस हाल में पहुंचा दिया।

ऐसा बुखार आना चाहिए था क्या?

'अपने पूर्वजों की भूमि को— जहां जन्म लिया, बड़े हुए, मरे— छोड़कर उसे जंगल में भटकना पड़ा, इसी के कारण न?'

वे बोलने लगे।

'अपना पहाड़ छोड़ने वाले को भगवती क्षमा नहीं करती।' — आसामी यह पहाड़ छोड़ कहीं और जाएं, भगवती कभी माफ नहीं करेगी।

कुरुमाटी के भीतर बिंध जाने वाले स्वर ने उसे चौंका दिया।

उसने दांतों तले ओठ दबा लिए।

लावा और केले मल्लन की दाईं ओर रख दिए।

एक सूप में दो मानम चावल, एक नारियल और सूखे केलों का एक गुच्छा।

कमर पर लाल कपड़ा बांधे वेल्ली ओझा सूप के आगे आ बैठा। सूप में रखे दो मानम चावल ने उसे खुश कर दिया। आजकल कहीं भी झाड़-फूंक करने जाने पर एक-दो मुट्ठी चावल ही मिलता है।

दुर्दिनों में हर कुछ की अधोगति है।

बच्चे और औरतें हैं अधिकतर। वेल्लरोडी में मल्लन की झोपड़ी पर जिधर कोई आंख भी न डालता था, आज तांता लगा हुआ है। मारा के बारे में बहुत-सी अफवाहें फैल गई थीं। औरतें आवेशपूर्वक उसके चारों ओर इस तरह जमा थीं जैसे चीनी के चारों ओर चींटियां।

प्रेत-बाधित लड़की!

हाथी से रौंदे गए केले के पेड़ जैसा हो गया न, यह?

कोई इस बात पर यकीन कर सकेगा कि जो सामने पड़ा हुआ है, वह पहाड़ भी लुढ़का सकता था?

वेल्ली पैरों में घुंघरू बांधकर खीरे के छिलके में अक्ष डालकर उसको खनकाने लगा। उसके माथे का सिंदूर का तिलक चमक उठा।

ढोल बज उठे।

उसने गला फाड़कर देवताओं को पुकारा :

'आकाश और भूमि है...रा...ना...रो
चन्द्र और सूर्य है...रा...रा
कामदेव...वेल्ली देव...
कौरव, पांडव, बारहों हजार देवताओ...'

जंगल के बीच, नदी के किनारे पर स्थित उस फूस की झोंपड़ी में बैठ बारहों हजार

देवताओं से याचना की :

'मल्लन की बीमारी दूर कर दें!'

सूप में पड़े दो मानम चावलों में जितनी योग्यता थी, उससे भी अधिक ईमानदारी से उसने प्रार्थना की।

'तिरुनेल्ली की चहारदीवारी के भीतर...जब तिरुनेल्ली मंदिर बनवाया था।'

राजा ने पूजा के लिए पुजारियों को नियुक्त किया। बाहर और भीतर की पूजा के लिए अलग-अलग पुजारी रखे...

उसका स्वर वन की सीमाओं को लांघ गया :

'एवल एडमुट्टम नालिल तिरुमुट्टम

रात के अनेक पहरों से होकर वह गीत धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया। दोपहर को शुरू हुआ था। समय बढ़ता गया। पर किसी को पता न चला। किसी ने ध्यान नहीं दिया।

रात का काला चेहरा।

और कुछ करने को नहीं था। इसलिए वे क्षमा का भाव लिए बैठे रहे। जम्हाइयां लीं। जिनको पान मिला, खा लिया। जिन लोगों के पास तंबाकू का एक टुकड़ा भी नहीं वे जंगली फल चबाते रहे।

बच्चे खजूर चूसते घूमते रहे। प्रायः सभी की आंखें लाल हो उठी थीं। रोगग्रस्त आंखों पर मक्खियां भिनभिनाती रहीं। कपड़े ओढ़े बहुत समय से पड़े मल्लन की ओर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। जिन्हें उसका ध्यान रखना चाहिए, वे यहां कहीं नहीं हैं। वेल्ली उन्हीं को बुलाने की कोशिश कर रहा है। फिर क्या जरूरत है ध्यान देने की?

ओझा के माथे का सिंदूर पसीने में भीगकर बह उठा। ठंडी हवा चलने लगी। सूप के दोनों ओर वेल्ली जोर-जोर से झूम उठा। उसका अट्टहास, डिब्बों की खनक और घुंघरुओं की तीक्ष्ण ताल—सब को मिलकर मल्लन की आंखें खोल देनी चाहिए थीं।

मल्लन हिला नहीं। जड़वत पड़ा रहा।

पान खाने से लाल हो आई वेल्ली की जीभ बाहर झूलने लगी।

क्षण भर के लिए ढोल रुक गए। वह निश्चल, निःशब्द होकर अंतिम बार मारियम्मा को पुकारने के लिए तैयार हुआ :

'दक्षिण की...

उत्तर की...

कण्णत्ती...

मंत्रवादी ने अट्टहास किया। मारियम्मा को बैठने के लिए जगह नहीं क्या?

नहीं?

नहीं क्या?

नहीं क्या?

लाल जीभ निकालकर चारों ओर घुमाते हुए वह अट्टहास कर उठा।

ढोल तेज-तेज सिर पटक कर रोने के सुर में बज उठे। सीटियों से ऐसी विलाप की ध्वनि निकली जैसे छाती फट गई हो।

रोगी चौंककर उठा।

कुहनी के बल उठने की कोशिश की। थककर गिर पड़ा।

तब भी किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। मुड़कर भी नहीं देखा। मारा ने भी ध्यान नहीं दिया।

उसकी दृष्टि जो पहले मल्लन के मुख पर ही टिकी हुई थी, अब दूर कहीं गड़ी रही।

औरतों ने बातचीत बंद की। ऊंघ रहे लोग जाग पड़े। चारों ओर आंखें फाड़-फाड़कर देखने लगे।

वेल्ली हजारों अर्थहीन दृष्टियों के सामने अर्थहीन गीत की पंक्तियां दोहराता रहा। किसी को उसको रोकने का विचार नहीं आया।

—मरियम्मा बैठने के लिए जगह ढूंढती भटकती रही। अंत में कोल का एक वृक्ष मिला। उसके नीचे जा खड़ी हुई। उसके चारों ओर रेंडी की बाड़ी थी। देवी को स्थान मिला।

वेल्ली ने बेंत झुलाने की गति कम कर दी। नाच-नाचकर थक गए नागों की तरह वह अशक्त हो गया। धम्म से बैठ गया।

घुंघरू चुप हो गए।

तुरंत उसका शरीर हिलने लगा।

नजर जैसे किसी अदृश्य वस्तु की खोज में भटकने लगी। जब दृष्टि एक जगह टिकी रह गई तो वह झट से उठ खड़ा हुआ। सूप से मुट्ठी भर चावल और लावा उठाया। घुंघरू हिलाते हुए, खीरे का छिलका उठाकर वह रोगी के समीप दौड़ गया।

तीन बार चावल से आरती उतारी।

सामने थाली में रखी कुरुति (हल्दी-चूना मिला जल) की ओर देख रही थी मारा। उसने कुछ देखा नहीं, सुना नहीं।

औरतें उसके चारों ओर जमा हो गईं। आवाजें सुन-सुन मारे घृणा के उसकी नसें तन गईं।

कुरुति में उसने अपना चेहरा देखा जो पत्थर-सा कठोर हो आया था। उसका मुंह इतना बदल गया कि देखने वाला पहचान भी न पाए।

उसे कंपन होने लगा। बैठे-बैठे झूमने लगी। झूमने में तन गई नसें ढीली पड़ जाती हैं। एक प्रकार का सुख, थकावट। पुतलियां ऊपर को स्थिर हो गईं।

'लो, आ गया, आ गया, आ गया।'

'वेल्ली बड़ा जानकार है। उसकी विद्या से ही इसमें प्रेत घुस पाया है।'

'जानकार है!'

मारा को परिस्थिति का बोध हुआ। पुतलियां शिथिल पड़ गईं। झूमना भी बंद हुआ। उसने वेल्ली को घूरकर देखा। उससे पूछें तो पता चलेगा–

'मल्लन ने कौन-सा अपराध किया?

मलंकारी इस तरह क्यों क्रुद्ध है?

उसने प्रेतात्मा को क्यों छोड़ दिया है?

पूछ ही लिया :

'क्या मल्लन के शरीर में पिशाच घुस आया है? किसकी बाधा है उस पर? पिशाच की या देवता की?'

'प्रेत...प्रेत...' वेल्ली के भीतर से अट्टहास कर देवी बोली।

'प्रेत को दबा दो।' उसका स्वर खुरदुरा था।

आंखों में पुतलियां हिलीं। मुंह की नसें ढीली पड़ गई। प्रेत दबाया नहीं जा सकता? कौन-सा प्रायश्चित करना होगा?

हजार चूड़ियों की बात याद आई। वह चुप हो गई। कहां से प्रबंध होगा? कैसे भी करूंगी। कुरुमाटी अपनी जरूरतों के लिए पैसा इकट्ठा नहीं करती? अरवनाषि की पुलची नहीं करती?

'प्रेत को दबाने के लिए क्या करना होगा?'

'जुर्माना देना होगा।'

'दूंगी।'

फिर से वह उस कुरुति को ही घूरती रही।

लोगों ने सोचा :

उसके शरीर से पिशाच निकल गया।

वेल्ली की बारी आई।

वह बहुत तेजी से झूमने लगा। सुबह दो मानम चावल ऐसे ही तो उठाकर नहीं ले जा सकता।

औरतों ने मारा को छोड़ दिया।

मुंह फाड़, आंखें फाड़, सांस रोककर वे देवी की आज्ञा की प्रतीक्षा करते रहे।

करियन ने पूछा :

'इतना सब होने पर भी पिशाच पीछा क्यों नहीं छोड़ता?'

मंत्र पढ़ने पर भी प्रेत दूर क्यों नहीं भागता?

'मुर्गा काटना है, कहां है...?'

दर्शक चौंक गए। ताकतवर प्रेत है।

अंततः मुर्गे का खून मांगता है। आजकल कोई भी पिशाच मुर्गा नहीं मांगता था। तिरुनेल्ली में मुर्गे खत्म हो गए हैं। जो नहीं मिलने वाला, उसके लिए आशा लगाने से क्या लाभ?

अब?

मारा के पास एक अच्छा मुर्गा है, यह बात सबको याद हो आई।

उन्होंने एक-दूसरे पर नजर फेरी। मुर्गा है?

जवनी ने मारा के पास जाकर पूछा :

'मुर्गा है?'

बिना कुछ बोले मारा ने दक्षिण की ओर मिट्टी की दीवार पर इशारा कर दिया।

मुर्गा पकड़ लाया गया। उसकी आंखों में केले पर टिकी जलती मशाल की रोशनी चमकी।

वेल्ली ने मुर्गे को ऐसे पकड़ा जैसे कोई खजाना मिल गया हो। पंखों के बीच उंगली दबाकर कसके पकड़ लिया। करियन अंदर से एक तेज धार का छुरा ले आया।

वेल्ली ने अपने सहायक कुरुमन को बुलाया। वह अपनी सीटी एक साथी को देकर दौड़ आया।

कुरुति के थाल के दोनों ओर वे खड़े हो गए। कुरुमन ने मुर्गे के गले को कसकर पकड़ लिया।

एक प्रहार।

एक तड़प।

टूटने और फड़फड़ाने की आवाज।

कुरुति में मुर्गे का खून बह पड़ा। बर्तन लगभग भर गया। मुट्ठी भर लावे से रोगी के शरीर की आरती उतारकर वेल्ली ने उसे भी कुरुति में डाल दिया।

लावा खून के ऊपर तैरने लगा। मुर्गे का सिर और तड़पती देह को लेकर कुरुमन आंगन में चला आया।

वेल्ली स्तोत्र बोलता रहा।

बाएं हाथ में कुरुति की थाली। दाहिने हाथ में केले के पत्ते में मुट्ठी भर चावल, केले और बत्ती।

पुरुष झोंपड़ी से बाहर निकले।

आगे वेल्ली। मशाल लेकर कोई रास्ता दिखाने लगा।

वे नदी के तट की ओर चले। रास्ता वहां से ऊपर जंगल की सीमा की ओर बढ़ जाता है। सीमा पर वे रुक गए। पाला का एक बड़ा पेड़ फैला खड़ा था।

पत्ता बिछाया।

खून बह न जाए, इसलिए छोटी-छोटी डालियां रखीं। कुरुति उसमें डाल दी। बुझ गई बत्ती भी उसमें डाल दी। लौट चले।

तब भी रोगी कराह रहा था। वैद्य कुरुमन ने जो दवा दी थी, उसे पीसकर करियन ने रोगी के मुंह में डाल दिया। एक बूंद भी अंदर नहीं गई।

सब ने लंबी सांस खींची।

जो कुछ कर सकते थे, किया।

अब मरियम्मा ही बचाएं मल्लन को।

मल्लन ने आह भरके करवट ली। सारी दवा मुंह के कोने से बहकर चटाई पर गिर पड़ी।

सब शांत भाव से प्रतीक्षा करते रहे।

वे लोग मुर्गे के पकने की गंध सूंघ-सूंघकर पकड़ने लगे।

चूल्हे पर कच्चे चावल का भात पक गया। चेम्मक्कारन केले के पत्ते की एक पुड़िया लेकर आया। भात परोस दिया गया। मांस का एक-एक टुकड़ा। मुर्गे की जांघ का भाग बिना कटे ही पुड़िया में रखा था, उसे चेम्मक्कारन ने वेल्ली की थाली में डाल दिया। लालची आंखें उसके चारों ओर मंडराती रहीं।

ईर्ष्या भरी दृष्टियां।

अब?

उन सबने पुड़िया को लालच से देखा। बाकी सब छोटे-छोटे टुकड़े हैं। मांस। मुर्गे का मांस। सब को खिलाना है। महाप्रसाद!

भुने मुर्गे का मांस।

सबने लालच से उस प्रसाद को खाया। ऊपर से कच्चा भात भी। क्षण भर में वह भी खत्म हो गया। वह भी सबको नहीं मिला। आए लोगों में सब चावल नहीं लाए थे। जो लाए थे वे खाली हाथ आए लोगों को दोष देने लगे।

आधी रात बीत गई। सुबह होने को हुई तो सब आंखें मलते, जम्हाइयां लेते जाने लगे।

मारा फिर से अकेली हो गई। वह, और बेहोश मल्लन। निद्राविहीन एक और रात बीत चली।

किसी ने उस ओर झांककर भी नहीं देखा। शापग्रस्त झोपड़ी। उसकी छाया में भी जाने से उन्हें डर लगा।

पिशाच का वास-स्थान।

अपराधी लड़की जिसने अपने ही परिवार के पुरुष से प्रेम किया।

दो रात और एक दिन मल्लन वैसे ही पड़ा रहा। बुखार दूर नहीं हुआ। आंखों के गड्ढे नीले पड़ गए। होंठ और गाल पीले पड़ गए। कटाई हो चुके खेत की मेड़ों की तरह पसलियां उभर आईं।

कैसा परिवर्तन!

वह पहरा देती रही। ऊरुवयल में गई नहीं। कुछ खाया नहीं। वचे रह गए धान के चावल बना लेने की बात भी मन में नहीं आई।

उसके आंख खोलने की प्रतीक्षा में बैठी रही।

वर्षा ने सबको आलस से जगा दिया। गीली, काली मिट्टी।

नीचे कुंवारकुनी तक फैले पड़े खेतों में गोबर ढोती आसामी स्त्रियों को मेड़ पर चलते वह देखती रही।

अंबलकुन्न में भी गोबर उठाने का काम शुरू हो गया होगा। जिसको सबसे आगे हल पकड़कर चलना था, वह निर्जीव-सा पड़ा है। दोपहर बीत जाने पर छायाएं घनी होकर लंबी हो गईं। ठंडी हवा बहने लगी। अबकी वर्षा ऐसे ही नहीं जाएगी।

उसने छत की ओर आंखें उठाईं। कल कैसी तेज आंधी थी। आधा फूस उड़ गया। पुआल बिछाने के बाद एक हल्की वर्षा हो जाती तो इस तरह न उड़ पाता। बाकी भारी बरसात में भीगकर दबे पड़े हैं। अब हवा में उड़ जाने की संभावना नहीं। बांस के नग्न लट्ठे दिखाई पड़ रहे हैं। गोरे तम्पुरान छप्पर छाने के लिए फूस देंगे?

मल्लन पहले रोग-शय्या से उठे।

दिन लाल हो गया। काला पड़ने लगा। दिशाओं ने काले बादल ओढ़ लिए। अभी संध्या होने में देर है। काली पड़ी दिशाओं की आंखों में बिजली चमक उठी। आज की वर्षा भारी होगी।

सेयतु के यहां बढ़नी बेचने गया अप्पन वापस नहीं आया।

खजूर की बढ़नियां। तीन साल तक काम में लाने पर भी न घिसें। चार-एक रुपया मिलेगा।

आहट हुई। झपकी से चौंककर उठी। जम्हाई लेकर आंखें मलीं। खुलने को तैयार

न होती पलकें। दो रातों की नींद का बोझ। बिना उठे ही, जिधर से आहट आई थी, उधर नजर डाली। करियन होगा। वह जंगल वापस नहीं गया। पगार का आकर्षण बड़ा है। पर उससे भी बड़ा है मृत्यु-भय। वह कहता है कि जहां जन्म लिया है, उस गांव की अवहेलना करने के कारण ही मल्लन को बीमारी लगी। उसका यही विश्वास है। सभी आसामी यही कहते होंगे।

मैंने ही पैसे के लिए भेजा।

केवल करियन ही खोज-खबर लेता है। आहट आंगन तक आ गई। तड़पकर उठ खड़ी हुई।

गोरा तम्पुरान।

तुरंत एक विचार, एक आशा मन में उदित हुई। तम्पुरान को मंत्र-ज्ञान हैं। वैद्यक भी जानते हैं। जिन औषधियों के बारे में ओझा को पता नहीं, वे भी तम्पुरान को मालूम हैं। जमींदारों के बच्चे जब बीमार पड़ते हैं तम्पुरान ही दवा और गोलियां देते हैं।

कुरुमाटी की बेटी कक्का बहुत दिन से पेट के दर्द से परेशान थी। उसका रोग और किसने दूर किया?

मावो वाले मानी ने कद्दू की चोरी की थी। उसे तम्पुरान ने मंत्र पढ़कर मार डाला था। इस कहावत में कुछ सचाई है क्या?

पुलयन का बुखार भी जो फिर ठीक हो गया था, उसे स्मरण हो आया। एक दिन मना के बरामदे में पान खाकर तम्पुरान अपनी कटार वहीं भूल गए। पुलयन बेड़े का काम करके वल्ली लेने आया तो देखा कि बरामदे में सुंदर म्यान वाली छोटी कटार पड़ी है।

बाहर कोई दिखा नहीं। उठाकर कमर में छिपा भाग गया।

रात में तेज बुखार था। उठ नहीं सका। दूसरे दिन भी उठ नहीं पाया। कइयों ने सोचा, मलंकारी के मंदिर के सामने के कांटेदार बांस तोड़कर बाड़ा बनाने के कारण ही ऐसा हुआ है। उसे डर लगने लगा। एक तरह के पीले पानी की उलटी हुई। सिर चकरा गया। डर बढ़ने लगा। उसने चुपके से अपने पिता को यह बात बता दी।

राघवन नायर की कटार। मंत्रवादी की चीज। अप्पन की आधी जान निकल गई। कटार लेकर अंबलकुन्न की ओर दौड़ पड़ा। एकमात्र बेटा। क्या इस जरा-सी बात के लिए मरना पड़ेगा?

वह बुद्धिहीन है। जमींदार के अहाते से छिपकर कद्दू के दो पत्ते या चार हरी मिर्च तोड़ लेने जैसी बात है यह? कटार की चोरी तो एक बड़ा अपराध है। ऐसी चोरी तिरुनेल्लि में सुनी ही नहीं गई।

मलंकारी का कोप। गुलिकन (एक उपग्रह, ज्योतिष में इसे अमंगलकारी माना जाता है) का शाप! भूखे रहने पर खेत से दो-चार धान के गुच्छे तोड़ लेना मलंकारी क्षमा कर

देती है। कारण, दिख रही यह सारी फसल उसी की है। जिस खेत में खुद काम करते हों, वहां का धान तोड़ लेने पर वह उतना क्रोध नहीं करती।

तब आंगन बुहार रही थी कि चात्तन हांफता-हांफता पहुंचा।

'तम्पुरान, पुलयन बीमार है।'

'क्या हुआ?'

'वह उसी दिन से पड़ा है।'

इस बीमारी की क्या वजह है? वह किस दिन से पड़ा है? यह क्या कह रहा है?

'कब से?'

चात्तन घबराया हुआ खड़ा रहा।

'यहां के बेड़े का काम जिस दिन पूरा हुआ, उसी दिन से पड़ा है।'

'बेड़े का काम पूरा होने के बाद ही पड़ गया। फिर दवा लेने के लिए आज आता है?'

'...'

'मना का काम पूरा हुए दो दिन बीत गए न? किसी वैद्य को दिखला दे।'

'उससे रोग दूर नहीं होगा।'

'तो फिर मानंतवाडी ले जा।'

'वह काफी नहीं।'

'फिर क्या करें? ज्वर बहुत हो तो मामूली दवाई देकर बीमारी न बढ़ा। इसीलिए मैंने कहा।'

चात्तन ने चारों ओर देखा। नाद की ओट लेने के कारण मुझ पर नजर न गई। हाथ की छोटी पुड़िया बरामदे में रख मुंह पर हाथ ढंक के अलग खड़ा हो गया।

तम्पुरान ने पुड़िया खोली। लाल ओठ खिल उठे। पूरी सफेद, चमकती आंखें दिखाते वे ठठाकर हंस पड़े।

हंसी सुनकर तिरुवोलम्मा भी बाहर निकल आई।

'इसी डर का बुखार है तो कोई चिंता नहीं, कल तक दूर हो जाएगा।'

दूसरे दिन पुलयन का ज्वर दूर हो गया। उठकर चलने-फिरने लगा। पर कुछ दिन तक उधर फटका भी नहीं।...

मारा के मन में आशा के अंकुर फूट आए।

तम्पुरान मल्लन की बीमारी दूर नहीं कर सकते?

मारा की आकृति देख राघवन नायर चौंक उठे। अनसंवरे, बिना बंधे बाल जिनमें एक जंगली फूल भी नहीं। बांहों और चेहरे पर फर्श के लिपे कोयले के दाग। कंधों में हड्डियां उभर आई हैं, उनके पास में गड्ढे।

आंखों के गड्ढों में गहरी कालिमा जिसमें नींद, थकावट और भूख दबे बैठे हैं जैसे जलहीन कुएं को देख रहे हों। मछलियां मरी पड़ी हैं।

झाड़ू न लगने पर नाराज होकर आए होंगे। अभी डांटना शुरू करेंगे। वह कांपती रही। आज खेत में खाद डालने का काम भी था। महीनों की प्रतीक्षा के बाद मिलने वाला काम। वल्ली। खाद डालने के काम के बाद फिर खेतों में औरतों का क्या काम? कब झोपड़ी में कंजी बना सकेंगे?

उस बारे में अधिक विचार नहीं किया। मल्लन की बीमारी ठीक हो जाए।

'मल्लन कहां है?'

उसकी आंखों के गड्ढे और काले पड़ गए। सूखी आंखें और कठोर हो गईं। एक प्रकार की मृदुतारहित शुष्क सिसकी।

वह चूल्हे की तरफ चली। अंगारे फीके पड़ गए थे। हल्का ताप। उठती-गिरती छाती पर ओढ़ाई साड़ी। वह दृश्य असह्य था। ऊंचे कद का, सबल मनुष्य आज हड्डियों का ढांचा बना पड़ा है।

नाड़ी देखी। चादर हटाकर छाती पर हाथ रखकर देखा। कांटे जैसी उभर आई हड्डियां। पलकें खोलकर देखीं। यहां की दवा से ठीक नहीं होगा। जरूर मानंतवाडी भेजना होगा।

कैसे?

कोई वहां से जीप ले आए। चालीस से अधिक रुपए लग जाएंगे।

खेती के काम के लिए रखा पैसा है। पर मल्लन नहीं तो चालीस क्या, सौ नष्ट समझो।

जंगल मे मजदूरी करने भेज दिया। सोचा था कि मेहनत-मजूरी कर जीवन बिताएगा। कुछ लोग अपने प्राण तक नहीं बचा पाते यहां। बस एक टुकड़ा जमीन है खेती के लिए। खाली धान की खेती है। वह नहीं तो पूरी गरीबी। जंगल से अब कुछ नसीब में नहीं।

सोचा था, एक-दो फुहारें गिर जाने के बाद उसे जंगल से बुलवा लेंगे। पहली जुताई, बीज की सिंचाई....सबमें इस बार देरी होगी।

वह आशा से मेरी ओर देख रही है।

मल्लन क्या नहीं जिएगा? तुम लोगों को नहीं चाहिए मल्लन? पुषकुनि और वेल्लरोडी की खेती के लिए उसका जीना जरूरी है न?

उसे जिंदा रहना ही होगा। ऐसा नहीं कि तिरुनेल्ली में खेती के काम के लिए और लोग नहीं। लोग जितने भी चाहिए मिल जाएंगे। जब टुकड़ा भर भूमि, मुट्ठी भर लोग और सब तरफ अनियंत्रित जंगल फैला था तब दिक्कत होती थी। वह भी समय था जब हर साल वल्लियूरकाव में आसामियों को मोल लेना पड़ता था। ऐसा नहीं कि वह प्रथा उठ गई है। मिट्टी से ममता रखने वाले आसामी को, उसकी हितैषिणी को एक साल अगर ठीक से काम मिलना है तो खुद को बेचना ही होगा।

मल्लन को जीवित रहना चाहिए। वेल्लरोडी के खेतों में उसी ने प्रकाश फैलाया। बांध का काम पूरा नहीं हुआ—

मल्लन की बीमारी दूर होनी चाहिए। लगता है, इस अनाथ लड़की को सबने बेसहारा छोड़ दिया। जो खुद की देखभाल करने में असमर्थ हो जाए उससे स्नेह का क्या रिश्ता? रिश्तेदार!

जीप बुलाने के लिए किसी को भेज देना चाहिए, इसी क्षण। तुरंत वहां से निकला।

'मैं करियन को मानंतवाडी भेज दूंगा। तू खलिहान आ जा।'

इकट्ठा हो रहे बादल। बारिश किसी भी क्षण शुरू हो सकती है। शुरू हो जाए तो फिर रुकेगी नहीं। घाटियों को पार करके, दर्रों पर चढ़कर जब तक यहां पहुंचेगी, इडवम महीना बीतने को होगा। स्वागत के लिए तैयार रहना चाहिए, नहीं तो उसके क्रोध के प्रवाह में सब कुछ बह जाएगा।

बादल देख चरवाहे जल्दी ही जंगल से लौट चले। जुते खेतों में जानवर उछल-कूद करने लगे। खेतों के बीच बनाई नांद के तोड़ने का समय हो गया।

खेतों में कुछ खाने को न मिलने के कारण जहां झोंपड़ियां दिखीं वहीं पशु छप्पर पर छाए फूस को खींचकर खाने लगे। आंगन में पेशाब करने लगे। झोंपड़ियों में बैठी बुढ़ियाएं कोसने लगीं।

कोसना सुनते हुए, पशुओं के मूत्र की दुर्गंध सहते हुए उसने पहाड़ों को पार किया।

चल नहीं, दौड़ रहा था।

अंबलकुन्न पहुंचकर भंडारघर खोलते-खोलते हांफने लगा। दीवार से सटे बक्से को खोला। रुपए निकालकर कमर में ठूंस लिए। बाकी तीस रुपए ही हैं। खेती का काम कैसे चलेगा, यह विचार ही नहीं आया।

मल्लन की झोंपड़ी से निकलते गोरे तम्पुरान को अनेक आसामियों ने देखा। सब तरफ खबर फैल गई।

मंत्रवादी गोरा तम्पुरान! कोई बात जरूर है, बीमार मल्लन की झोंपड़ी में जाने में।

सूखी घास में चिनगारी गिर पड़ी। धुआं निकला। जो कुछ पास था जल गया। भभके बिना वह पहाड़ों और घाटियों में फैल गया। बाहर कुछ नहीं दिखता। खाली धुआं। अफवाहों का धुआं।

तलमला में रह रहे मल्लन के दादा और बूढ़ी अव्वा भी जान गए।

वह रंडी है। पति की जान लेगी।

क्या यह पक्का है कि जुर्माना अदा न हो पाने की वजह से मल्लन को प्रेतबाधा हुई? मल्लन को उसके हाथ से बचाना चाहिए। उनकी झोंपड़ी में कोई टोना-टोटका नहीं।

उसकी नजर गोरे तम्पुरान पर है।

तलमला के खलिहान में किटुवारियर अपने खलिहान के पास ही एक हवेली बनवा रहे थे। हवेली तो क्या, एक बहुत बड़ा कमरा। नीचे बैलों द्वारा अनाज कूटा जा सकता है। ऊपर बहुत ऊंचाई में बांस के बड़े-बड़े खंभे और पत्थरों से बना बड़ा छज्जा था। वहां से पूरा तलमला दिखाई पड़ता है। पहाड़ से सटकर बावली के पूर्वी किनारे के निकट तक फैले पड़े अपने खेत भी नजर से ओझल नहीं होने पाते। इतनी दूर से नदी किनारे झाड़ियों में खड़ा बच्चा भी दिख जाता है। उद्देश्य स्पष्ट है। किटुवारियर के खेत में धान की चोरी हुआ करती थी। खलिहान में फिर भी ढेरों धान रखा जाता है। क्या पता चोरी होती हो या नहीं? चोरी होने से पहले ही उसका रास्ता बंद कर देना उचित है। सिर्फ संशय है। लोगों ने सुनकर कहा : कंजूस का शक! कहने दो।

आकाश निरीक्षण के लिए किटुवारियर जो हवेली बनवा रहे थे, उसके नीचे संध्या समय गोपाल वारियर पहुंचे। एक परा (एक नाप) बीज की कमी भरानी है।

दोस्त से किटुवारियर का प्रश्न था:

'सुना नहीं, अपने मुख्तार की कहानी?

'कौन कहानी? कौन मुख्तार?

'ओह, मुख्तार कहां है वह? मल्लन की औरत और राघवन नायर के बीच...'

गोपाल वारियर का चेहरा लाल हो गया। मुख्तार कहां है वह!

नहीं, इशारा और किस तरफ है? किटुवारियर ने चेहरे पर सयत्न ओढ़ी हंसी से छिपाने की, असफल कोशिश में उस लाली को देख लिया। मन में हंसे।

इन लोगों का क्या विचार है?

किटु को पराजित कर इस गांव का सबसे अच्छा कृषक बन जाएगा।

राघवन नायर के आने के सदियों पहले ही इस काली मिट्टी के गुण को उसने पहचाना है। मारा से भी बढ़कर सुंदरियों को, आसामियों को, नालायकी को देखा-परखा है।

वह वैद्य निकला। एक कृषक!

सबक तो सिखाना ही पड़ेगा। इस तरह तो वह नायर वारियम में भी 'संबंध' जोड़ लेगा।

उसके मोटे होठों में एक विलक्षण हंसी खेलती रही।

गोपाल वारियर को नदी पार कर जाते हुए वह देखता रहा।

मैं भी गरीबी में पला हूं। स्कूल के लिए रोज चौदह नाषिका (इक्कीस किलोमीटर) चलना पड़ता था। मामा के घर में रहकर वहां सब काम किया, खाली हाथ नहीं बैठा।

मेरा लगाया हिसाब कभी गलत नहीं हुआ है। इतना सब इकट्ठा किया। छप्पन एकड़ खेत। नदी किनारे पुंजा के खेत हैं। गर्मियों में कोल्लीमूला से पानी मिलता है। इधर का जंगल कम घना है, इसलिए जानवरों का उपद्रव नहीं है। मिट्टी कुछ कम उपजाऊ है तो

क्या? बाढ़ का पानी तो नहीं भरता। पानी के साथ बहकर कुछ भी नष्ट नहीं होता।

मैं यहां के किसानों का राजा हूं।

जब एक ढेरी धान का भाव दो-ढाई सौ से भी कम था, तब उधार लेकर खलिहान बनवाया। चूना पुती पत्थर की दीवारें और खपरैल की छत वाला एकमात्र घर। पूंकुन्नम मना पहले ही गिर गया था। मानंतवाडी से ढो-ढोकर खपरैल लाया। ऐसे जमाने में जब तिरुनेल्ली के पेरुमाल भी फूस की छत के नीचे ही बिराजते थे।

यह किटुवारियर को हराएगा?

पहले मल्लन को छीन लिया। फिर जिस भूमि को मैंने बंटाई पर लिया, उसे खाली करवा लिया। वह भूमि जहां कोई पैर भी न रखता था। अब तो अधिकारी हो गया, स्वामी बन गया।

अंबलकुन्न की बातें जानने के लिए किटुवारियर का मुखबिर है एलुतपोट्टन।

राघवन नायर मल्लन की चिकित्सा कर रहा है, यह समाचार पोट्टन ही लाया था।

'बीमारी क्या है?'

'बुखार। प्रेत-बाधा की वजह से।'

'सच?'

'सच नहीं तो क्या! मेरी भांजी है फिर भी उससे शादी करने के बाद उसमें गिरावट आ गई है।' किटुवारियर को पोट्टन पर विश्वास है। दूसरे आसामियों की तरह नहीं। बड़ा विवेकशील। बहुत बुद्धिमान। मलयालम अच्छी तरह बोल लेता है।

किटुवारियर ने खलिहान में गोबर की लिपाई करती मल्लन की बूढ़ी मां वट्टा को बुलाया।

26

वारियम से सीधे नदी तट की ओर उतर आती सड़क की ओर वह आंख लगाए बैठी रही। करियन ऊरुवयल गया था, अभी तक उतरके आया नहीं। गोरे तम्पुरान ने पैसे नहीं दिए क्या? तिरुवोलम्मा ने इजाजत नहीं दी होगी। तिरुवोलम्मा का पैसा है। वारियम की संपत्ति। ऐसी कोई बात होगी कि पैसा पूरा खर्चा करने की आजादी तम्पुरान को न हो।

सड़क खाली ही पड़ी रही।

उसे लगा जैसे पहाड़ की अंधेरी ढाल से कोई आ रहा है। झाड़ियां हिलीं। अंदर घोसलों में छिपी चिड़िया शोर कर उठीं। एक तरह के अकारण डर ने उसे घेर लिया।

दो छायाएं ऊपर चढ़ आईं। मल्लन की अव्वा और उसका सौतेला पिता। उसकी आंखें भर आईं। आखिरकार आ ही गए न? चादर ओढ़े पड़े अचल मल्लन को देखने का उसे साहस नहीं हुआ। मेरा ही दोष है उनके सामने। हट्टे-कट्टे मल्लन की तिरुनेल्ली पेरुमल की शिला की मूर्ति जैसी हो गई आकृति आंखों से देखते न बनी। चींटियों से घिरा जैसे मछली का कोई कांटा।

वे बरामदे में आ गए। बेटे पर नजर डाली। फूट-फूटकर विलाप नहीं। चेहरे की झुर्रियां और भी घनी हो गईं, ओठ कस गए। बुढ़िया ने बहू पर जलती नजर डाली।

वह उसे ऐसे घूर रही थी जैसे वह कोई चुड़ैल हो। अलग हटकर खड़ी रही।

बूढ़ा अपने चमकते दांत दिखाते हुए अट्टहास के स्वर में बोला, 'अरे प्रेत की छाया पड़ी लड़की, तू उसे मार डालेगी।'

वह हिली नहीं। चेहरा पत्थर-सा हो गया। बिना पलकें झपकाए सिर्फ उनका चेहरा देखती रही।

कुछ लोगों की आहट हुई। वे सब आ रहे हैं। तलमला के सारे आसामी। इतने लोग एक साथ क्यों? उसे समझ में नहीं आया।

उसने कभी भी इतनी भीड़ नहीं देखी थी। उसके आंगन में कभी इतने लोगों ने पैर नहीं रखे थे। यमदूतों की तरह खड़े इतने मनुष्यों को देख वह बुरी तरह चौंक गई।

उसकी दृष्टि एक जगह टिक गई थी। वहां से हिली नहीं। आंगन में खड़े लोग मल्लन को झांक कर देखते रहे। उस प्रेत-छाया पड़ी लड़की को भी वे डरी आंखों से निहार रहे थे।

बुढ़िया मुंह खोलकर, छाती पीट-पीटकर विलाप करने लगी। कुछ बकबकाई। तलमला के पहाड़ के मूप्पन करिनीलकरियन से कुछ प्रार्थना करती रही। विलाप के बीच मारा को कुछ स्पष्ट नहीं हुआ।

क्षण भर में उन लोगों ने बांस की पालकी तैयार कर डाली। उद्दामंडी और कालन उसे लेकर आगे बढ़े। उनके चेहरों पर मारा के लिए परिचय का कोई भाव न आया।

वह जग पड़ी। बिजली की तरह स्थिति कौंधी। जोर से चीख पड़ी, 'उसे मत ले जाना।'

वे जरा हिचके।

आंगन में इकट्ठी भीड़ में एक हलचल हुई।

'तू कौन होती है, यह कहने वाली?'

करिनीलकरियन ने पूछा। कुरुमाटी का मामा। उस आवाज को सुनकर वह चौंक गई।

'वह मेरा आदमी है।' बिना किसी हिचकिचाहट के वह बोली।

'कौन-सा खानदान है तेरा?'

'पुत्तूर।'

'और उसका?'

'इड़मला।'

'किसने बताया?'

मामा के पीछे खड़े भांजे की नीली आंखें विषैले तीर छोड़ती रहीं।

'क्या तेरी रीति से शादी हुई है? जुर्माना अदा किया?' यह एक सवाल ही है। मल्लन ने मुझसे शादी की? गलती का जुर्माना भरा?

उसकी जीभ थक गई। शरीर थक गया। मन थक गया।...

उसके प्रिय के, बीमारी के कारण कमजोर पड़े शरीर को झटपट वे लोग उसकी आंखों के सामने ही बांस की पालकी में लिटाकर ले गए।

उसकी शिथिल बांहों को चूम लेने की, अधखुली पलकों को सहलाने की, अनियमित रूप से उठते-गिरते वक्ष पर मुंह दबाकर रो लेने की बरबस इच्छा उठी। पर वह हिल भी न सकी। उसे लगा जैसे तिरुनेल्ली के सारे आसामी उसके आंगन में उतर आए हैं। चारों ओर से नजरें तीर की तरह उस पर लग रही थीं। उसकी तड़प, उसकी बेचैनी, उसकी वेदना वे लोग देख नहीं पाए। या फिर, देखकर अनदेखा करते रहे।

बाढ़ की तरह वे लोग पहाड़ पर से उतर गए। शून्य में कुछ कांटे और कंकड़ ही बचे। दलदल में फंसी एक शिला की तरह वह हो गई। उसकी सोचने की शक्ति नष्ट हो गई। आंखों के आंसू भी सूख गए।

सभी लोग आंखों से ओझल हो गए। पहाड़ पर अंधेरे में खड़ी एक चट्टान की तरह वह निश्चल खड़ी रही। जड़ से उखड़े पेड़ की तरह फिर पछाड़ खाकर गिर पड़ी। जमीन पर मल्लन के शरीर का ताप अभी भी था, वहीं पड़कर अपनी सिसकियां यत्नपूर्वक रोक लीं। जोर से रोने में उसे डर लगा। चारों ओर फैली निर्जनता उसे डरा रही थी। जिस पिशाच ने मल्लन को ग्रस लिया, वही उस घने अंधकार में एक जैसे काले रंग के कई आकार बनाता हुआ छिपा खड़ा है।

उन लोगों ने दवा की थाली एक ओर फेंक दी थी। उससे हाथ टकराया। चूड़ियां जोर से खनक उठीं। उन्हें उसने कसकर पकड़ लिया। रुदन।

बांध तोड़ फट पड़ने वाले बादल जैसी, घाटियों में तेजी से बहते बावली की बाढ़ के पानी के समान, ठोस मिट्टी से जोर से उखड़ जाने वाले बहुत बड़े पेड़ की तरह उसके मन में हलचल उठी।

राघवन नायर ने घाट पर पहुंचते-पहुंचते भीड़ के बीच से जाती पालकी को देख लिया। अब क्या? अनुमान किया — तलमला के आसामी। सिर से पैर तक एक कंपन दौड़ गया।

दांत कटकटाए।

आखिर मुझसे बदला लेने के लिए उसने मल्लन को साधन बनाया है। यह खेल एक

आदमी की जान की बाजी लगाकर खेल रहा है। सोचता होगा कि मल्लन नहीं तो खाली करवा ली बंटाई की जमीन में, कोल्लीमूला में और वेल्लरोडी में कैसे आगे खेती चलेगी? यह किससे वैर निकालना हुआ? किसलिए?

उसी के दूर के रिश्ते की स्त्री है, जिसके बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा होने लायक मैंने बनाया। इस कारण से? मुझसे उन लोगों की जिम्मेदारी लेने को विवश?

पुषकुनि के खेतों में, जिन्हें कोई हाथ नहीं लगाता था, दो फसलें ले लेने की जलन। हाथियों की प्रिय वेल्लरोडी की भूमि को साफ करवा लेने की जलन। कालिंदी के नीचे बांध बनवाकर यों ही बह जाते पानी को रोक लेने के कारण बैर।

सिर झुकाए घाट पर लक्ष्यहीन चलने लगा। वेल्लरोडी के ऊपर अकेले खड़े विशाल पेड़ों के शिखरों पर दिन की अंतिम प्रकाश किरणें भी देखते-देखते ओझल हो गईं।

सेयतु की दुकान से, उसी दिन आई चार सूखी नमकीन मछलियां लेकर लौटते वेल्ली ने उसे देखकर कहा, 'उसको इलाज के लिए ले जा रहे हैं।'

'किसका इलाज?'

'तलमला के मानी का।'

'और टोने का क्या फल निकला?'

'मानी मुर्दो को भी जिला देता है।'

अकेले मुझसे नहीं बनेगा। तलमला के आसामी किट्टुवारियर की अधिकार सीमा में हैं। उन्हें जाकर उपदेश देना या सहायता करना ठीक नहीं होगा।...

वट्टा को लगा कि खाली देखते रहने के अलावा वह बेटे के लिए कुछ न कर पाएगी। रात भर पड़ा-पड़ा चौंकता और प्रलाप करता रहा।

सुबह हुई, दोपहर हुई, शाम हुई। मल्लन वैसे ही पड़ा रहा। केवल सीने में धड़कन। हाथ-पैर ठंडे पड़ने लगे। मां घबरा गई। रोती हुई ऊरुवयल की ओर भागी।

'तम्पुरा...!'

'मल्लन आ गया? अच्छा काढ़ा बना दो। कोई दवा चाहिए तो यहां होगी।'

किट्टुवारियर ने पत्नी को बुलाया। वह धुएं से काला पड़ा बांस का एक डिब्बा ले आई। धुएं से रंग और गंध नष्ट हुए त्रिफला के दो-तीन टुकड़े। एक-आध सूखी हल्दी। दो इलायची। दस दाने काली मिर्च। इतना अलग कर दिया।

वट्टा ने सामने रख दी गई दवाइयों पर दृष्टिपात किया। कुरुमन ने भी तो दवा दी थी। फिर भी ठीक नहीं हुआ। गोरा तम्पुरान मानंतवाडी ले जाने को तैयार था। करियन झूठ नहीं बोलेगा।

उसके मन की बात भांपकर किट्टुवारियर ने कहा, 'मानंतवाड़ी ले जाने लायक कोई बीमारी नहीं उसे।'

अनमनी होकर उसने उन दवाइयों को ले लिया। अगर मानंतवाडी नहीं जाते तो एक बार और टोना करना पड़ेगा।

'तम्पुरा...!'

'क्या है?'

'पचास रुपए चाहिए। कुंडल में कम कर लेना।'

पचास रुपयों की जरूरत! कहती है कुंडल से कम करवा लें। ह! ह! ह!

'क्या सोचती है तू? पहली जुताई भी पूरी नहीं हुई। तूने खुद देखा था, कूटी गई पुंजा कितनी है? मिट्टी की गुड़ाई के पहले ही तुझे कुंडल चाहिए!

इस तरह के बहाने के बिना भी, एक बार 'न' कह देने पर वह चली जाती। जाने को बढ़ी।

बहुत कष्ट के साथ पाकेट से एक-एक रुपए के दो नोट निकालकर उसे वापस बुलाया।

किट्टुवारियर उतना कंजूस नहीं।

दो रुपए लिए वह अपनी झोंपड़ी में पहुंची। अप्पन बैठा इंतजार कर रहा था। लालच से भरी दृष्टि। पूछा, 'क्या मिला?' अरिपू (एक फूल का पौधा) के फल चबाता बूढ़ा उठ खड़ा हुआ।

बुढ़िया को गुस्सा आ गया। मल्लन मेरा बेटा है। इसका कोई नहीं। इस बूढ़े को कोई ध्यान ही नहीं कि मल्लन बीमार है। काक्कपुला के बाद मैंने इससे क्यों शादी की? इसी कारण से तो मल्लन मारा को ले आया। आज बेटे से जिद टूट गई है। जब जिद थी तब बूढ़े के लिए ममता जग आई थी। अभी वह कम हो गई है।

दुकान से कुछ तो खरीदना ही है। दो रुपए बूढ़े को सौंपने होंगे। ऐसे दिन याद ही नहीं जब दो रुपए एक साथ मिले हों। दुकान के सामने शिकारी जोसफ की आवाज आ रही है। चारों ओर लोग इकट्ठे हैं। उसकी आवाज भीड़ को बेधकर आई, 'जरा ठहरो।'

किसी ने नहीं सुना। जोसफ की आवाज ने पेरुमन के मुंह में पानी भर दिया।

इस समय क्या मिला होगा? सूअर नहीं हो सकता। किसी की भी फसल कटनी बाकी नहीं है।

मांस की गंध। बूढ़े ने उसे अपनी नाक में भर लिया। मनुष्य मक्खियों की तरह घेरे खड़े हैं। जोसफ क्या लाया है, दिखाई भी नहीं पड़ता।

लाई चीज बोरे के अंदर है। उस पर अनेकों नजरें चिपकी हुई हैं। सेयतु ने एक छुरा लाकर बेंत काट दी जिससे बोरा बंधा हुआ था। पूंछ पकड़कर उठाया। बहुत बड़ी जंगली गिलहरी। बिना किसी की ओर देखे वह दुकान के अंदर चला गया।

बोरा फिर भी भरा रहा। उसे बांधकर कंधे पर डाल जोसफ चल पड़ा। सेयतु का दिया एक रुपया जेब में ठूंस लिया। जो कुछ बचा है वह तहसीलदार, दरोगा और

फोटो-स्टूडियो वाले को आज ही बेच देगा।

'मैं तुरंत ही लौटूंगा, सेयतु!'

'कब तक?'

'अगले महीने में।'

'तब तक?'

'घर पहुंचने पर खाने को कंदी और पीने को कंजी होगी ही।'

'अच्छी लगेगी वह तुझे?'

'तब तक उपवास रखूंगा।'

'उस दिन जो दिखा था, वह इसी जंगल में है क्या?'

'और क्या? कल रात ही दिखा था।'

'सावधानी रखनी चाहिए।'

'अगली बार चांडी को भी साथ लाऊंगा।'

'तुम्हारे आने से पहले हम भी उपवास रख रहे थे।'

भीड़ छंटने लगी। एक सूअर या भैंसा होता तो! वहां खड़े कुरिच्चन रामन और दूसरे आसामियों के मन में यह बात आई। केवल मांस की गंध ही शेष रह गई थी। वह भी कुछ ही देर तक।

सेयतु की दुकान के भीतर टोकरे धान से भर गए हैं। उसने फसल काट ली है। आसामियों को जो वल्ली मिलती है, वह उसकी टोकरियों में आ गिरती है। कुछ दिनों से नमकीन सूखी मछलियों और मसाले की अच्छी बिक्री हो रही है।

उसने हिसाब लगाया।

जल्दी ही एक दिन मानंतवाडी जाना पड़ेगा। मल्लन के बीमार पड़ने के बाद से खासकर कोई माल नहीं लाया। उसके जंगल जाने के बाद उसके वापस आने की ही प्रतीक्षा कर रहा था। धान बेचना है। किसान न होकर भी मैं धान बेचता हूं। कइयों को जलन है। मल्लन हो तो विश्वास से दुकान सौंपी जा सकती है। टटिया के इधर खड़ा रहेगा।

कब तक ठीक होगा वह?

जंगली हाथी की तरह ताकतवर जवान।

ईश्वर एक तरह से सोचता है...

चीजें खरीदने आए लोग फुसफुसाने लगे।

शाम होने के पहले ही पहाड़ पारकर घर पहुंचना है।

टोकरे अच्छी तरह बंद कर सेयतु दुकानदार बन गया।

'नमकीन मछली।'

'चिवड़ा।'

'चाय।'

'मिर्च।'

'शक्कर।'

मछली की टोकरी खाली हो गई। खाली ऊपर के कांटे बचे। न ले पाए लोगों में क्रोध था, वे नमक, मिर्च खरीदकर लौट गए।

दुकान का बरामदा खाली हो गया। मल्लन का बाप कुछ अलग हटकर खड़ा रहा।

'क्या है कालन, तुझे कुछ नहीं चाहिए?'

'धान, नमक, मिर्च...'

सिर खुजला कर कुछ सोचा...

'दो ठो सूखी मछली, तंबाकू...'

'और भी कुछ चाहिए दो रुपए में— धान, मछली, मिर्च, तंबाकू—मोह तो देखो बुढ़ऊ का।'

सिर झुकाए बूढ़ा खड़ा रहा।

सेयतु ने एक मानम धान तौल दिया। चार मिर्चें गिनकर उसमें डाल दीं। सूखे पत्ते में मुट्ठी भर नमक, हल्दी के दो टुकड़े।

कालन टोकरी की ओर देखता चुपचाप खड़ा रहा।

'अब क्या है?'

'तंबाकू।'

'नहीं है।'

'सूखी मछली?'

'नहीं है। गोश्त चाहिए?'

वह फिर से खड़ा रहा। सेयतु ने दुकान के पीछे रखी बीड़ी लेकर फेंक दी। बूढ़ा चल पड़ा। तंबाकू नहीं तो भी बीड़ी दी है। धन्यवाद दिया। कड़वा बोलता है, फिर भी आदमी अच्छा है।

घाट पर पहुंचने पर हिम्मत टूट गई।

पहाड़ पर चढ़कर करना क्या है? घाट में चट्टान पर राख का ढेर पड़ा हुआ था। वहीं गया। केकड़ों को भूनकर खाकर चले गए लोगों से जलन हुई। मुंह में पानी भर आया। अभी आग है। बीड़ी सुलगाई। बैठकर पीने लगा।

बीड़ी खत्म हो गई। उठकर झोंपड़ी जाने का मन नहीं हुआ। भूख। झपकी। खाली एक मानम धान है। इसको पीसकर कंजी बनाने पर एक घूंट भी मुझे पीने को न मिलेगी। बैठने दो उसे वहां।

जमकर बैठ गया। नदी से ठंडी हवा आई। पलकें बोझिल हो आईं। कहीं वह आकर

मुझे सोता हुआ न देख ले। चौंककर पीछे देखा। मोयतीन का मेमना है।

आग जैसी धूप। पहाड़ पर चढ़ना अभी असंभव है। शाम हो जाने दो। कोई बच्चा केंकड़ा ही पकड़ लाएगा।

'क्या हो रहा है, मामा?' झपकी टूट गई। चौंक पड़ा। ओ! ढूंढती हुई वह आ पहुंची है। दावत जो खानी है। यह ले! धान की पोटली सामने फेंक दी। क्रोध का अभिनय किया।

'तंबाकू चाहिए?' सामने कौन खड़ा है? आंखें मलकर खोलीं। कौन लड़की है यह? पूछ रही है, तंबाकू चाहिए? तंबाकू देने वाली यह लड़की आखिर है कौन?

तुरंत स्मरण हुआ।

मल्लन पर भगवती की छाया है। उसे झोंपड़ी में रख लिया है। क्या प्रेत मेरा भी इम्तिहान ले रहा है?

कड़ी दोपहर! सुंदरी! पहले कहीं देखा है इसे? हंसी, मार देने वाली हंसी उठी। नदी की लहरें भी जैसे देख-देख आंख मार रही हैं।

'क्या है, मामा? कुरुमाटी को जानते नहीं?'

'डर गया।'

'मामा का कैसा डर।'

'ओ!'

'तंबाकू चाहिए?'

'चाहिए-चाहिए।' हाथ फैलाया। उसने आंचल से तंबाकू का एक बड़ा टुकड़ा निकाला।

बूढ़े की आंखें फैल गईं।

लड़की अच्छी तो है। पुलच्चीक्काली की बेटी ही है। इस जैसी ताकत तिरुनेल्ली की किसी लड़की में नहीं।

वह सौंदर्य बिखेरती खड़ी रही। झाड़ियों के सारे फूल जूड़े में थे। साफ उजली धोती। ठीक सामने की ओर एड़ियां। तब भी उसको देखने का साहस नहीं।

तंबाकू का एक टुकड़ा काटकर मुंह में डाल लिया।

'मैं मल्लन को देखने आई हूं।' वह आगे बढ़ी। बूढ़ा भी। उसकी नजर उसके आंचल, वेष और चलने की थिरकन पर गड़ी रही...

अपने पति तथा सुंदरी और घमंडी के रूप में कुख्यात कुरुमाटी का एक साथ आना बूढ़ी को अच्छा नहीं लगा। रूखापन दिखलाने में भय भी था। वह अनदेखा कर दूसरी तरफ मुंह मोड़े बैठी रही। पर कुरुमाटी ऐसे ही पीछे हटने वालों में से नहीं थी।

बिना निमंत्रण पाए ही वह बरामदे में बैठ गई। आंचल खोलकर धीरे से पूरा तंबाकू बाहर निकाल लिया। एक टुकड़ा मुंह में डाला। ऐसे उठी जैसे वट्टा पर नजर ही न पड़ी

हो। बूढ़े से बोली, 'ओफ! कैसी गर्मी है!'

साड़ी का छोर खींच सिर पर डाल आगे बढ़ी।

आंगन में खड़ी रेंड़ी पर चार फल थे। पके हुए को तोड़कर थैली में डाल लिए। नीचे गिर पड़ी भगवती की मूर्ति सीधी खड़ी कर दी। पहाड़ उतरने को हुई। बूढ़ा उसके सुंदर नितंब देखता रहा। उसकी थैली से तंबाकू का एक टुकड़ा और मिल जाता तो कितना अच्छा होता। थोड़ी देर और बैठकर उस लड़की को जाना चाहिए था।

जब वह यहां थी तब जबान नहीं खुली। घर वाली ने बैठने को भी न कहा, उस पर क्रोध हो आया। धान लेकर आया, उस तरफ भी नहीं देखा कमबख्त ने।

आंचल में तंबाकू भरे अतिथि का चला जाना वट्टा सह न पाई।

'तुम जा रही हो?'

'हां।'

'बैठकर जाना।'

वह हंसी। सम्मोहन में डाल देने वाली हंसी।

'समय नहीं है।'

'क्या काम है?'

'कोई खास नहीं। शरीर पर हरी स्याही गोद देती हूं।'

गोदने के काम के सिवा कुछ नहीं। तो?

'अंदर आओ।'

वह सिर ताने लौट आई। मधुर हंसी।

मल्लन के निकट ऐसे गई जैसे तभी देखा हो।

वट्टा झटपट उठी। फर्श पर पड़ी किषी (सिंचाई के लिए कपड़े की गर्म राख भरी पोटली) उठाकर सामने बरामदे में अंगीठी में राख पलट दी। कुरुमाटी ने लोढ़ा अपने हाथ में ले लिया।

'मैं पीस दूंगी।'

दस क्षण में उसने चावल तैयार कर दिया। सिर्फ मुट्ठी भर।

कंजी के लिए पानी लेने वट्टा नदी की ओर चली गई। अतिथि का दिया तंबाकू चलते हुए स्वाद से चबाती रही।

वट्टा के पहाड़ उतर जाने का निश्चय हो चुकने पर कुरुमाटी मल्लन के पास गई। बूढ़ा दक्षिण की ओर के आंगन में बैठ आंखों से मक्खियां भगाते हुए बंदर की एक खाल से रोम निकाल रहा था।

सिर्फ मल्लन और मैं। चारों ओर नजर डालकर गोद से एक पुड़िया निकाली। मल्लन के सिरहाने बैठ गई। किनारा टूटी एक थाली में पुड़िया की भस्म पानी में मिलाई।

उसी क्षण मल्लन ने आंखें खोलीं। पीली, सूखी आंखों में ज्योति की एक रेखा। क्षण भर दृष्टि उस पर लगी रही। फिर चारों ओर घूमी।

वह उत्साह के साथ सटकर खड़ी रही। फिर फर्श पर बैठकर दवा की थाली उसे दिखाई।

उसकी फैली आंखों में डर सिमट आया। असहाय-सा चारों ओर देखता रहा। फिर आंखें बंद कर ऐसे पड़ गया जैसे उसके अंगूठे के अपने मुंह के कोने में ठूंसे जाने की प्रतीक्षा कर रहा हो।

सूखा गला तर हो गया। उसने लालच से उस गाढ़े द्रव को पूरा पी लिया। खटास का उसे पता नहीं चला।

प्यास...प्यास....प्यास!

कभी खत्म न होने वाली प्यास!

उसने फिर से मुंह खोला। वह चूल्हे पर रखे घड़े से कुछ काढ़ा ले आई। उससे बस एक घूंट भरकर उसने करवट ले ली। अलग हो गई चादर के चिथड़े से फिर उसे ढंककर, दूसरी ओर से एक और नजर डालकर वह वापस पहले के स्थान पर जा बैठी।

आंखों में एक नई चमक थी।

अब डरने की कोई बात नहीं। इस दवा के बारे में मारियम्मा ने स्वयं किसी बहुत बूढ़ी दादी को बताया था। परंपरा से चली आ रही औषधि। जो इसे पिएगा हारी-बीमारी से मुक्त हो जाएगा। जो कुछ बीत गया उसे भी भूल जाएगा। मारा भी तब उसकी याद में नहीं रहेगी। जैसे भी चाहिए, उसी तरह वश में कर लेने की विद्या मुझे मालूम है।

आंगन के दक्षिण में बूढ़ा चमड़ा साफ करके धूप में बिछाकर पहरा दे रहा था। वह उसी के पास जाकर खड़ी हो गई।

27

कैसी पीड़ा! उसे लगा जैसे किसी बांध में उसे जीते जी बांध दिया गया हो।

शून्यता का एक बांध! कहीं कोई हलचल नहीं।

वन। सब तरफ फैला जंगल। सामने खाली खेत। नदी। नदी के पास फिर से खेत। खेतों के पार रास्ता रोके खड़ा घना जंगल।

अंधकार रूपी काला कंबल धीरे-धीरे हटने लगा। ठंड में लाल पड़ा ब्रह्मगिरि का चेहरा। कितने दिन बीत गए उसके चेहरे पर जरा-सी खुशी देखे हुए।

रात और दिन झोंपड़ी के बाहर से ही रेंगते चले गए। वहां रोशनी पड़ी ही नहीं।

वे लोग मल्लन को ले गए।

कैसा अपमान!

पत्नी के सामने ही, उससे एक भी शब्द कहे बिना।

तलमला की स्थिति जानने की अकुलाहट। किससे पूछे? कौन जाएगा?

अप्पन आता तो...

मल्लन को वे लोग कब ले गए? उसे लगा कि इस बीच एक लंबी रात बीत गई। दीर्घ रात्रि—बिना किसी आदि-अंत की। किसी ने उससे पूछा ही नहीं।

बिना चांद और तारों की रात। आंधी में रास्ता भटक गए अकेले मुसाफिर की रात।

श्मशान की नाईं शून्य पड़ी वेल्लरोडी। कालिंदी के किनारे पूरब के श्मशान में बहुत दिन पहले आम तोड़ने गई थी। बहुत पहले की तो बात नहीं। एक ही साल हुआ है।

डर लगा था तब। वैसा ही श्मशान अब घेरे हुए है।

पत्तों की नोकों से पानी गिरने की आवाज। मिट्टी की दीवारों से आती उसकी प्रतिध्वनि।

जंगल की ओर से बहती, जानवर की तरह गुर्राती हवा। बरामदे में लटक रही टटिया से हवा अपना बदन रगड़कर, घबराकर भाग गई।

एकांत रात में वह डर से कांप उठी।

वेल्लरोडी में यह झोंपड़ी क्यों बनाई?

दूसरी दोनों झोंपड़ियां सवेरे से ही निर्जन पड़ी सो रही थीं।

रेंग-रेंगकर गुजरते काले पहर।

गिर रही ओस की बूंदें – वे स्मृतियों की बूंदें बन जाती हैं।

उस दिन –

अरिकिषङ्ङ ढूंढने के लिए झाड़ियों में खोज हो रही थी। वह क्यों उस दिन साथ गई? क्या इसी दुख के लिए? तलमला से जवनी नहीं आई थी। और कई लड़कियां भी नहीं गई थीं। पता था कि अरिकिषङ्ङ की लता भी देखने को न मिलेगी। फिर क्यों गई?

साथ में मल्लन था। तब वह नेता था। पहले वह नाराज था, फिर बाद में वन क्यों गया?

कुछ ही लोग थे।

थोड़े दिन पहले जब जंगल जाना हुआ। तब लोग ही उससे विरक्त हो गए थे।

उस दिन बड़ी-बड़ी छतरियां फैलाए बड़े-बड़े वृक्षों के नीचे से चले थे। जहां पशुओं का मार्ग खत्म होता है, वह जगह भी उस दिन चलने में दिखाई पड़ी थी। जानवरों या मनुष्यों

के चलने का आगे कोई मार्ग नहीं। साथियों से छूट अकेले पड़ गई थी। जंगल से आती हजारों आवाजों ने उसे घेर लिया था। भीषणता के नाखून। ब्रह्मगिरि की घाटी में, जंगल में अकेले पड़ जाने की चिंता मार डालने वाली थी।

हाथी की चिंघाड़ आई न?

भेड़िया गुर्रा रहा है?

या बड़ा उल्लू?

हिरन ऐसे ही रोता है?

घने जंगल के बीच में हूं न मैं?

कान लगाकर सुना। अकेली पड़ गई किसी गाय के रोने की आवाज। गले में बंधी घंटियां एक बार झनझना उठीं।

मेरी ही तरह बेचारी गाय भी रास्ता भटक गई है।

मूसत तम्पुरान की जब मौत हुई थी, उन्हीं दिनों मना की एक-दो गायों को रोज भेड़िया पकड़ लेता था। विपत्ति के गड्ढे पैरों तले छिपे पड़े हुए हैं।

सांस लेने में भय।

रास्ता नाम की कोई चीज नहीं।

सामने दीमक की बहुत बड़ी बांबी।

सांप जहां किले बनाकर रहते हैं।

किस ओर मुडूं? तब मल्लन को देखा था। वह चौंक पुलक बनकर मन में अटकी रही।

उधर समतल चट्टान पर मुंह बाए मल्लन पसरा पड़ा था।

जंगली हाथी। ऐसे ही पहले मन में आया था। उसके खुले वक्ष पर पेड़ों की डालियों से होकर प्रकाश की किरणें गिरती रहीं।

रोमों से भरी दृढ़ बांहों के बीच कंकड़ फंसे पड़े थे—

आंखों से जंगल की काली छाया झांक रही थी।

सब कुछ समाप्त हो गया है।

उस दिन बिजली की तरह मन में घुस आया वह अवाच्य दुख नष्ट नहीं हुआ है। मधुर दुख। पर आज मिठास नहीं। कड़वाहट बची है...

तब लगा था कि बांबी के भीतर की सभी दीमकें शरीर पर रेंग रही हैं, जिन्हें झटक नहीं सकती।

वह पास आया था। एक क्षण को आंखें बंद हो आईं। एक नए प्रकाश ने आकर ढंक लिया।

आज के इस दुख का वह प्रारंभ था।

सांस रोके खड़ी रही।

दृढ़ बाँहें। वे कसकर घेर लेती हैं। दीमक की बांबी जिसमें से दीमकें निकलकर शरीर पर रेंग रही थीं, गलकर लुप्त हो गई।

चमकती आंखें। काले पत्तों पर अटक रही प्रकाश की दो बूंदों के समान।

जलाती नजर। हंसती नजर। नजर जिसने मेरे 'मैं' को मिटा दिया।

क्षण-क्षण में बढ़ती जाती वह चमक—

फिर से आंखें मुंद गई।

वह उसके अधीन-सी हो गई।

दुर्बल शरीर बर्फ की तरह गल गया।

गरम सांसें। तपते ओठ।

'भगवती, मलंकारी!...'

एक सिसकी गले में ही रुंध गई।

वह तड़प कर उठी।

सिर के ऊपर वेंडा के पेड़ की एक डाल पर बैठे उल्लू ने अपनी गोल-गोल आंखें घुमाकर नीचे की ओर देखा। वह डर गई। एक अव्यक्त भय!

बिंध जाने वाली, भीतर का सब कुछ बाहर निकाल देने वाली दृष्टि।

उसकी गोल-गोल आंखों में क्या झलकता है?

खेत की मेड़ से केंकड़े पकड़ती कुरुमाटी। पकड़कर जीते-जी ही हाथ-पैर तोड़कर थैली में डालते समय का वह भाव—

जल बिन मछली की तरह वह मल्लन की बांहों में तड़पती रही।

साड़ी उसके हाथ से छुड़ाकर वह भाग निकली। लगा कि उसकी दृष्टि और लंबी सांसें उसका पीछा कर रहे हैं।

मुड़कर नहीं देखा। पल्लू कांटों में फंसकर फट गई। नई साड़ी थी। फटी हुई लेकर घर जाने में डर लगा। पीछे से होकर सीधे नदी पर गई। नहाने के बाद फटा हिस्सा अंदर की ओर कर साड़ी पहनी।

जवनी के सामने जा फंसी।

मारा जंगल से जल्दी ही वापस आ गई थी। उसकी आंखों में नजर गाड़कर हंस पड़ी थी जवनी। उसके सामने खड़े होने पर होठ कांपने लगे, बरौनियां थिरक उठीं।

आज भी केवल वही है...

मिट्टी की दीवार से सटकर बैठ गई। बांस चुभ रहा था, पर अलग नहीं हटी।

यह मारा, वह मारा नहीं।

वह तो मर गई। मल्लन भी चला गया। खाली कुरुमाटी का डर नहीं जाता।

बाहें गूंथकर वक्ष पर दबा लीं।

भीतर कुछ, धुआं निकल-निकलकर नष्ट हो रहा है, पता नहीं क्या। उसमें मैं भी जलकर राख हो जाऊं।

मेरा मल्लऩ!

सोचा था, अब से हमेशा-हमेशा का साथ रहेगा।

निर्जन वेल्लरोडी में इसीलिए तो उसके साथ आ गई थी। अपना मल्लन तो है। सिर्फ वही चाहिए। वेल्लरोडी ही नहीं, ब्रह्मगिरि के किसी भी पाताल में उसके साथ रह सकती है। जी भी सकती है, मर भी सकती है।

मेरे आदमी को वे लोग ले गए। अब कुछ भी नहीं बचा। मूप्पन लोगों के सामने विवाह नहीं हुआ। अपराध के लिए जुर्माना अदा नहीं किया। फिर भी मल्लन अपना पति था।...

वह वैसे ही बैठी रही।

धूप निकली। तेज हुई। पीली पड़ गई। वन की नोक से उसके झड़कर गिर जाने की प्रतीक्षा में बैठी रही।

पांव सुन्न हो उठे। शरीर भारी हो गया। सिर पर मनों बोझ। पलकें मुंदने लगीं।

पीली धूप के झड़कर गिरने से पहले ही पहाड़ों का चेहरा काला हो उठा।

बारिश होगी।

ब्रह्मगिरि और नरिनिरङ्ग के बीच से हवा बांध तोड़कर बह उठी जैसे पूरी तिरुनेल्ली को उखाड़ फेंकेगी। चारों ओर किला बनकर खड़े जंगल की जेल से बाहर निकल न पाने के कारण हवा गरजने लगी। फिर बहुत तेज होकर बह उठी। मदमत्त जंगली हाथी की तरह, जो कुछ रास्ते में दिखा, दूर उठाकर फेंक दिया।

नई झोपड़ियों पर छाई गई पुआल को उड़ा ले चली। अपनी मुट्ठी में मरोड़कर कहीं उड़ा दिया।

छत पर एक तिनका भी शेष न रहा।

बेचैन जंगली जानवर की तरह हवा सब ओर दौड़ रही थी। सूखे पत्ते उड़ चले।

काले आकाश की आंखों से चिनगारियां निकलने लगीं।

वल्लियूरकाव के उत्सव में दिखा लाल रंग वाला भालू याद हो आया। लोहे के तार मरोड़ता, किसी के वश में न आने वाला, बाहर निकलने को परेशान वह वन्य जीव।

यह हवा भी पिंजरा तोड़ देगी।

झोंपड़ी के पीछे खड़े आकाश-चुंबी वृक्षों को बुरी तरह झूलते देख वह चौंक गई।

अदृश्य शिकार को ढूंढते एक क्रूर पशु जैसी हवा।

उसने कानों पर हाथ रख लिए। आंखें कसकर बंद कर लीं।

यह क्रूर पशु बनकर किसे ढूंढती फिर रही है?

तलमला की एक झोंपड़ी में थका पड़ा मल्लन मन में कौंध गया।

वह एक ज्वालामुखी बन गई। भीतर डर जम गया।

यह भी मलंकारी की माया है। पास की झोंपड़ियों में से युंवा अर्थहीन आवाजें उठाने लगे। ऊंची आवाज के सहारे डर भगाने की कोशिश। उनकी चिल्लाहटें हवा के शोर में विलीन हो गईं।

'आ जा...मा...

आ जाओ। कौन आए? बरसात? जिसे यह हवा अपने साथ ले आती है।

गीत का अर्थ न जानने वाले बच्चे।

धीरे-धीरे हवा शांत पड़ गई। सो गई। थककर जंगल की गहनता में कहीं गिर गई। बारिश नहीं हुई। पिंजरा नहीं टूटा।

उसके मन में आया, इसे टूटने में अभी एक महीना और लगेगा। मिथुनम महीने तक हो पाएगा।

डरते-डरते धुंधली चांदनी धीरे-धीरे फैलने लगी।

रात पूरी तरह गहराई नहीं थी।

बहुत दिनों बाद फिर से पास की झोंपड़ियों से धान की कुटाई की आवाज आ रही है।

खाद डालती रही जवनी और पेम्बी को वल्ली मिल गई होगी।

वह काम पर नहीं गई। भूख भी नहीं थी। कुछ भी नहीं। एक अजब सी निर्विकारता।

खुले आकाश तले आंगन में बैठ औरतें बातें कर रही हैं।

क्या कहती होंगी वे लोग? मेरे बारे में? अंबलकुन्न के आसामी मल्लन को तलमला ले जाने की बातें हो रहीं होंगी।

वह उन औरतों के बीच जाकर बैठ गई। उसे हमेशा आतंकित करने वाली विपत्ति को दूर करने की इच्छा थी।

एक प्रकार की धैर्य-हीनता।

कलंकित लड़की, जिसके लिए जुर्माना भी नहीं दिया गया।

हवा की झपकी टूट गई।

कांटेदार झाड़ियों में, वन में, शून्य खेतों में फिर से घुस-घुसकर उसने अपना अंतहीन परिश्रम शुरू कर दिया।

नीचे—

खेतों में दरारें पड़ गई हैं। पिछले दिन की बारिश से अतृप्त, गीले ओठ फैलाए, लालच से, आवेश के साथ वे प्रतीक्षा कर रहे हैं।

उसे स्मरण हो आया।

ऊरुवयल में आज-कल में पहली जुताई शुरू हो जाएगी। बीज सींचने का काम चल रहा होगा। खलिहान में गोबर की लिपाई का काम होगा।

गोरे तम्पुरान किसे बुलाएंगे?

जिसे सबसे आगे रहकर काम करना था, वह अब कहां!

यहां वेल्लरोडी में होता तो गोरे तम्पुरान मानंतवाडी ले जाकर उसकी बीमारी ठीक करवा देते।

उन लोगों ने वह होने न दिया।

वे दुष्ट लोग—तलमला के तोंद वाले तम्पुरान और वहां के आसामियों ने मिलकर—

यह सब मामा का किया-धरा है। उस तोंदवाले तम्पुरान के मन में दुश्मनी है।

उसके चेहरे में खून दौड़ गया।

तलमला में बसाने के लिए वह तोंदियल तम्पुरान अप्पन के पीछे-पीछे घूमता था। जहां जवर पेरुमन की बेटी पेम्बी रहती थी, वहीं रहने को कहा।

किसलिए?

अव्वा ने सुनते ही कहा था :

'मैं नहीं जाऊंगी।'

फिर अप्पन कुछ नहीं बोला।

पेशगी गोरे तम्पुरान से ही ली।

उस कर्ज को चुंकाने के लिए अप्पन अंबलकुन्न के खलिहान में काम करता था?

गोरा तम्पुरान नहीं होता तो?

सब यही कहते हैं—

वट्टा जवनी से जो फुसफुसा रही थी, उसे बहती पुरवैया ने उसके कानों तक पहुंचा दिया।

'नायर से कोई दवा मांगकर पीने को दी थी।'

क्या!

कहती है नायर से दवा मांगकर दी थी। किसे?

मल्लन को?

एक नई बात।

वह स्तब्ध बैठी रही।

तो, इसी वजह से वे लोग यहां से मल्लन को ले गए। किसने यह अफवाह फैलाई?

वह अपने कानों पर विश्वास न कर सकी। पुरवैया पर भी, जो यह समाचार लाई थी, वह यकीन न कर सकी।

हवा गरजती रही।

जानवर गुर्राते रहे। पहाड़ हिल उठे।

अचानक हवा तेज हो गई। एक क्रुद्ध प्रेत जैसे सीटी बजाता हुआ आ गया। बांस की पट्टियां असहाय पड़ी रहीं। फूस के तिनके फड़फड़ाकर उड़ने लगे।

सबने मुझे अपने से दूर कर दिया है। सब एक साथ दूर भाग जाते हैं।

अब क्या बाकी बचा है?

झोंपड़ी का दांत निकालता-सा हड्डियों का ढांचा और छिलका भर रह गई मैं!

तृशिलेरी से किसलिए आए? जब आए थे, तब गांव भर के रिश्तेदार थे, नातेदार थे। संबंधी और मित्र थे। विशु की वल्ली मिलते ही एक साथ कुशल पूछने आते थे। भात खाया, बातें कीं, सब तरफ नजरें फेरीं। अव्वा की सींची कद्दू की लताओं पर नजर लगाकर चले जाते थे।

फिर आते थे कद्दू के पत्ते तोड़ने के लिए।

लताओं के सड़ जाने के बाद फिर वे दिखाई न दिए। कौन थे वे सब?

संबंधी या मित्र?

आज कोई नहीं।

गरजती हवा और गुर्राते हुए जंगल को भी भेदकर तलमला से रुदन का स्वर उठा। क्षण भर में वह जोर-शोर का विलाप बन गया। सारे जड़-चेतन में बिंध जाने वाला वह विलाप।

नहीं, अब नहीं सहा जाता।

कान बंद कर लिए। छाती के भीतर नगाड़े बजने लगे। हजारों ढोलों का नाद एक साथ मिल जाता है। —केवल वही सुनाई दे रहा है, वही विलाप। सिर पटक-पटककर रोते वन, ऊंची आवाज में विलाप करती हवा, इन सबके परे उस विलाप की ऊंची उठती प्रतिध्वनि। पश्चिम से आती हवा की तरह, पूरब से आते बादलों की तरह उसने समस्त दिशाओं को घेर लिया।

कस कर बंद किए कानों से, रोम-छिद्रों से वह विलाप उसके भीतर बिंधकर चक्कर लगाने लगा—

चारों ओर के टीलों से लोग दौड़-दौड़के जा रहे हैं।

कहां जाते हैं वे लोग?

उसे लगा कि वह पागल हो जाएगी।

बाल नोच लिए। दीवार से जा सिर टिकराया। कमजोर झोंपड़ी हिल उठी।

मैं...मैं...मैं भी आ रही हूं...

मैं भी देख लूं जरा..., अपने मल्लन को। उसका विलाप किसी ने नहीं सुना। कोई

सुन भी नहीं सकता। आवाज बाहर नहीं निकलती। वहां जाने पर लोग भगा देंगे।

उखड़ गए बाल, फटी साड़ी, आंसू बहकर गंदा हो आया चेहरा....

निर्जन आंगन में दौड़ आई। कोई नहीं हाथ पकड़ लेने को। सांत्वना का एक भी शब्द देने वाला कोई नहीं।

जवनी भी गई — सब गए — सब—

कैसा विलाप!

केवल मैं नहीं रो सकती?

पेड़, नदी, झोंपड़ियां, लोग, बच्चे— सब रो रहे हैं?

काले बादल उसके सिर के ऊपर जा टकराए। चिंगारियां चमक उठीं। बिखर गए। बिजली कौंधी। पता नहीं, क्या कुछ टूटकर गिर पड़ता है।

नहीं, एक कदम भी नहीं चल सकती।

चारों ओर कुछ टूट कर गिरता है — क्या, क्या? —फिसल जाते पैर, झूम उठती धरती, नीचे से ऊपर तक सिहर जाता आकाश। मलेरिया-ग्रस्त एक बड़े आदमी की तरह कांपने वाला कुछ। बादलों का काला कंबल। उसे लगा जैसे पहाड़ और आकाश टूटकर गिर रहे हैं।

आंगन के बीच पछाड़ खाके गिर पड़ी।

दुख ने उसे संपूर्णतः ग्रस लिया। केवल उसके भीतर भटकते विलाप पर किसी ने ध्यान न दिया। मारियम्मा, लोग, पहाड़, बावली— किसी ने भी!

जंगल में लाख के पेड़ एक साथ पंख फैलाए फड़फड़ाते रहे। रो उठी। वर्षा होने लगी। तेज बरसता पानी जैसे हाथी की सूंड़ से फुहार छूट रही हो। बावली काली स्याही जैसे बाढ़ के पानी से उमड़ पड़ी।

आकाश उसके मुख, शरीर और झोंपड़ी पर ओले गिराने लगा। जल की तेज धाराएं उसे निगल लेने को दौड़ीं। बारिश का ठंडा पानी उसके तपते शरीर से होकर बह गया।

तब भी वह रो नहीं पाई। आंखें भर, मन से रोना संभव नहीं हुआ।

उस तरह पड़े-पड़े ही उसने मल्लन को देख लिया। हल्दी और तेल लगी उसकी देह को कुरुमाटी गरम पानी से नहला रही है।

वे उस शरीर को बांस की पालकी में, नीचे खेतों से, उसके सामने ही, जहां पापनाशिनी और कालिंदी का संगम है, मूलप्पाटी के नीचे के श्मशान की ओर ले जाते हैं।

देखते नहीं बनेगा। नहीं...नहीं...अब क्या देखना? प्राणहीन मल्लन को, छिलका भर रह गए मल्लन को नहीं देखना है।

आंगन के कीचड़ से उठकर, उखड़ते पैर खींचते हुए अंधेरे और कीचड़ से भरे बरामदे में जाकर वह फिर गिर पड़ी। वहां की हालत आंगन से भी बुरी थी। नंगी छत के ऊपर

से आकाश उसे दांत दिखाने लगा। ठठाकर हंस पड़ा। एक पैशाचिक हंसी। डर उससे दूर हो गया था। टूटी-फूटी उस झोंपड़ी की तरह वह भी निर्मम होकर, ठंड में सुन्न, घुटनों के बल बैठी रही।

28

सब कुछ धुल गया। अच्छा और बुरा, सब। राघवन नायर पशुओं के बाड़े के पीछे से नीचे खेतों की ओर देख रहा था। गीली मिट्टी, ढालू भूमि, जो तेज वर्षा के पानी को रोक नहीं पाती। नीचे गर्व में मदमाती बावली बह रही है। अब और इंतजार नहीं किया जा सकता।

यहां कर्किटकम के महीने तक जाकर जुताई पूरी हो पाती है। आलसियों जैसा काम होता है। बैल भी थोड़े ही हैं। वल्ली के लिए धान की कमी है। बाढ़ उतरने की प्रतीक्षा है। कर्किटकम नहीं, इस जुताई का काम मिथुनम महीने तक ही पूरा कर देना है। सामने पूरे दो महीने भी नहीं। फिर बायां हाथ ही नष्ट हो गया है।

खेत पानी पी-पीकर तृप्त हो गए। उन्हें नुकसान का बोध नहीं होता। यहां के आसामियों जैसा ही स्वभाव यहां के खेतों का भी है। जब जो कुछ मिले, भीतर कर लेना। फिर सोए पड़े रहना। जितना चाहिए उतना ही लें, ऐसी कोई चिंता भी नहीं।

बरामदे में आया। कॉफी रखी थी। दोशे के साथ कॉफी पीते वक्त भी मन भटक रहा था। कहां से शुरू करना है? चुंडली दिखाई ही नहीं पड़ता। वह 'दंबट्टतिरा' गया है। यह खयाल ही नहीं कि घर पर सयानी लड़की अकेली है। इनका सिद्धान्त भी अपना दाना चुगने लायक होते ही अलग हो जाने वाला है।

अच्छा ही हुआ जो खाद देने का काम शुरू कर दिया। नहीं तो जो कुछ हाथ में था, उसे भी यह बारिश बहा ले जाती।

आज या कल कर रहे उमड़ते बादल। झड़ना शुरू करेंगे तो दो महीने तक रुकेंगे नहीं। तब तक जुताई करके मिट्टी की अच्छी तरह पिसाई कर देनी है।

'एक दोशा भी नहीं खाया।' वारस्यार दूसरा गरम दोशा लिए सामने हैं। थाली की ओर देखके उन्होंने हंस दिया।

'चटनी अच्छी नहीं बनी तो थोड़ा शहद और घी दूं?'

'नहीं! ऐसी बात नहीं।'

एक दोशा खाकर उठा।

'रात-दिन काम में लगे रहने वाले लोग ठीक से खाएंगे भी नहीं तो कैसे चलेगा? यह वयनाड है। ठंड से टकराने के लिए यहां चार जून का खाना चाहिए ही चाहिए।'

'मैं तो उतना काम नहीं करता। खाली घूम-फिरके देखता भर रहता हूं।'

वे चुपचाप रसोई में चली गई। बेटी से कुछ कहने की आवाज आई, 'मामा के लिए पिछले साल वाले पुराने धान की कंजी बनाएं।'

ये मां-बेटी मेरी कौन लगती हैं? इस जेल में इन लोगों के कारण ही ठहरना पड़ा? है न? क्या? यह स्वार्थ है न? बाहर के जीवन से ऊबकर ही तो यहां आया था? वहां करने को कुछ नहीं था। जमींदार की मजदूरी और अच्छन (पिता) नंबूदरी की पूजा करने वाली परम शुद्ध मां का सान्निध्य।

यह मिट्टी अपनी जादुई ताकत से यहां आने वालों को बांध लेती है। मनुष्यों के आपसी संबंध से भी शक्तिशाली है यहां मनुष्य और मिट्टी के बीच का संबंध। यह मिट्टी और मेरी मां एक हैं। केवल देना जानने वाले लोग, जिनका जमकर शोषण होता है। कभी कन्या रही, संपन्न रही यह भूमि कभी निर्धन हो जाएगी, वृद्ध हो जाएगी। तब भी आने वाली पीढ़ियों को इसी की शरण में जीवन बिताना पड़ेगा।

बाहर निकला। खाद उठाने के लिए मारा को बुलाना होगा। खाद डालने के बाद, दूसरी बारिश होने के पहले ही जुताई भी हो जानी चाहिए। मारा आएगी? पति का शोक शांत हो जाने के पहले?

तब तक उसे खाना देने वाला कौन है? एक जून की कंजी?

मल्लन जब मरा पड़ा था—

शव नहलाया गया। देह पर डालने के लिए कफन नहीं। जिसका बेटा मरा पड़ा है, वह तलमला के खलिहान में पैसा मांगने दौड़ रही है।

किट्टूवारियर बोला था :

'यहां के आसामियों की मौत पर अब कफन भी जुटाऊं! क्या मैं लखपति हूं?'

बुढ़िया रोती-कलपती दौड़ आई। सेयतु की दुकान से मैंने एक कपड़ा खरीद कर रखा हुआ था। कितना अच्छा हुआ!

यहां के खून में रंग नहीं। बेटे की लाश पड़ी है और मां कफन के लिए भटकती फिर रही है। पति के मृत शरीर को देखने की इजाजत नहीं है और पत्नी एकांत में बैठकर रो रही है। प्राणों के डर से दूसरे ही दिन काम पर निकल पड़ी है।

जहां भूख मिटाने का ही कोई रास्ता न हो वहां और किसी बात का कोई मूल्य नहीं। पशु-पक्षियों के जीवन से भी अधिक गया-बीता करुणामय जीवन!

इन खेतों में काम करने वालों की कोई प्रगति नहीं। इनके लिए 'कल' नहीं, 'आज' भी नहीं। बीता 'कल' तो याद करने योग्य भी नहीं—

लालची लोग हैं। सभी चीजों का लालच है। भोजन का, मनुष्य के स्नेह का।

जंगल के बीच इस छोटे-से घेरे में पूरा जीवन मेरे सामने है।

पशुओं के रास्ते से होकर वह आगे बढ़ा। चारों ओर टीलों पर परित्यक्त झोंपड़ियों के ढांचे उभरे खड़े हैं। मारा भी अपनी झोंपड़ी छोड़कर चली जाएगी? वेल्लरोडी छोड़कर दूसरे किसी पहाड़ पर जा बसेगी। उन लोगों का विश्वास है कि यहां काम करने के कारण ही मलंकारी क्रोधित हुई है।

मारा वैसे जाएगी क्या? जा तो नहीं चुकी?

अब तक पूछा नहीं। पूछना चाहिए था। वह अंबलकुन्न खलिहान की आसामी है। उसके सुख-दुख जानने की जिम्मेदारी और किसकी है?

घाट पर काई से काली पड़ी शिलाएं। उनके काले मुख। आंखों में आशा की सूक्ष्म किरणें। काम मिल गया है। बहुत दिनों की भूख का अवसान। खाद देने का काम। पहली जुताई। बाड़ घेरने का काम। कंजी। सुख! भाग्य के दिन।

पहाड़ चढ़कर झाड़ियों के बीच से होकर गुजरती पगडंडी पर चला। टूटकर गिरी डालियां रास्ता रोकती रहीं। फिर भी खेतों की तुलना में पशुओं के बनाए इस रास्ते से होकर जाना कहीं आसान है। शरीर को स्पर्श कर रहे वन के अदृश्य ठंडे हाथ। वर्षा की सुखद ठंड।

वेल्लरोडी की तीनों झोंपड़ियां दूर से ही दिख जाती हैं।

नीचे पहुंचने पर ठिठक पड़ा। कालिंदी की गर्जना बढ़ गई है। बांध का काम जहां पर शुरू हुआ था, वहीं रुका पड़ा है। पगडंडी छोड़ घाट की ओर चला। जल के कठिन प्रहारों से बांध के कुछ पत्थर बिखर गए हैं। वर्षा-काल पूरा हो जाए। यह काम फिर से शुरू करना है।

झोंपड़ियों के ठीक नीचे पहुंचने पर लगा कि टटिया के छेदों से छिपी नजरें बाण की तरह गड़ी आ रही हैं।

संशय से वे लोग मुझे देखते होंगे। जमींदारों को, खलिहान के लोगों को, उजले कपड़े पहनने वालों को, तीनों जून खाना खाने वालों को वे लोग कब बिना संदेह के देख सकेंगे? ऐसा अवसर नहीं आएगा क्या?

अनदेखा कर दिया। मैं हूं, इसीलिए देख रहे हैं। यहां के अभ्यस्त लोग इन लोगों की शंका के भाव को जन्म प्रकृति समझ लेते हैं। तब जब खुशियां थीं, जो आज की तरह न था। अरुचिकर लगने पर भी छोड़ी न जा सकने वाली वृश्चिक महीने की ठंडी हवा की तरह यहां के लोगों के पास क्या कभी कोई समय था या नहीं? कौन जाने!

मारा की झोंपड़ी के सामने पहुंचा। धोती के छोर पर चिपकी रामबाण घास[1] को साफ किया। गला खंखारा। कोई भी बाहर नहीं निकला। चली गई वह? मुझे कुछ भी कहे बिना?

1. एक तरह की बूटी जो कपड़ों पर तुरंत चिपक जाती है।

झोंपड़ी छोड़ दी? जिसके नएपन की गंध भी अभी दूर न होने पाई थी। फूस उड़ गई छत। पिछले दिन ही तो बारिश हुई थी। कुछ और फूस लाकर छत छाई जा सकती है। वह भी कर दूंगा। शायद आज ही बारिश फिर से हो।

बारिश में भीगी टटिया से मिट्टी बह गई थी। वह उस पर मिट्टी लेप रही थी।

बुखार जैसा भाव। पीलापन।

'मारा!...'

वह चौंक गई, मुड़कर देखा। अनाथ भाव लिए आंखें। भूख, मेहनत की काली छायाएं।

किसी मूर्ख की तरह फैली आंखों से उसने देखा। कइयों में जो नहीं दिखता, बुद्धि का ऐसा भाव इस आसामी लड़की में था। वह कहां बह गया?

प्रतीत हुआ कि वह उत्साह उसमें कभी नहीं लौटेगा।

'आज से खाद का काम शुरू करना है।'

वह धीरे से हाथ धोकर आंगन में उतर आई। उसकी दृष्टि में कोई परिवर्तन न आया। काम मिलने की कोई खुशी नहीं।

'जरा जल्दी आना। मैं जवनी और वेल्ला को भी बुला लूं।'

जवाब का इंतजार किए बिना बाहर निकल आया। एक प्रकार का असाधारण सूनापन उस जगह को घेरे था।

जल्दी-जल्दी डग बढ़ाए।

वह वैसे ही खड़ी रही।

तम्पुरान का पीछा करती नजरें, कोहरे का पर्दा ओढ़े दूर खड़ी पहाड़ों की पंक्तियों के ऊपर अस्पष्टता में अटक गई।

सिरों ने झोंपड़ियों के अंधेरे से बाहर झांका। वे आंगन में उतरकर फुसफुसाने लगे। फिर क्रमशः स्वर ऊंचे हो गए। निर्जन खेतों पर जिस ओर गोरे तम्पुरान गए थे और उसकी झोंपड़ी पर वे बार-बार नजर फेंकते रहे। फटकारों के, परिहासों के, आरोपों के विषैले तीक्ष्ण बाण।

'औरत को मर्द भी तो चाहिए न?'

'चाहिए...चाहिए...।' जवनी की मां बोली।

जिनका साहस कम था, वे ओठों पर उंगली रखकर इशारे करते रहे। आंखों में गहन संदेह।

जवनी और पेम्बी बिना उसे बुलाए, बिना उसका इंतजार किए चली गईं।

ऊरुवयल में नांद के पीछे से गोबर उठाते समय और भरी टोकरियां सिर पर लदवाते समय भी उन लोगों का तना चेहरा ढीला नहीं पड़ा।

खेतों में खाद के छोटे-छोटे ढेर।

राघवन नायर के चेहरे पर खुशी दौड़ गई।

आज काम अच्छी तरह चला। बातचीत में वक्त बर्बाद नहीं हुआ। उन लोगों की चाल में आज एक असाधारण तनाव था। कुछ भी हो। एक मानम वल्ली ज्यादा भी देनें पर बुरा नहीं। दो दिन का काम करीब पूरा हो गया।

जवनी और पेम्बी वल्ली लेकर वेल्लरोडी चले गए।

मारा नहीं दिखी। वल्ली तौलने वाला पात्र भंडारघर के ऊपर रखा है या नहीं; जाकर यह देखा। वह खेत के बीच आंवले की छाया में खड़ी है।

'खाना नहीं खाएंगे?' वारस्यार ने पूछा। अनसुना करके धूप में निकल आया।

'तुझे वल्ली नहीं चाहिए?'

उसने मुड़कर देखा। बेजान आंखें।

सिर हिला दिया। बोली नहीं।

पिछली बारिश की ठंडक पूरी तरह से दूर हो गई है। जलती धूप, गरमी लहरें बनकर, भंवर बनकर घेर रही है।

'वल्ली नहीं चाहिए तो घर चल।'

बुलाएं तो जाना चाहिए। वह पीछे-पीछे कुछ दूरी रखकर चली।

तिरुवोलम्मा के सामने जाने में संकोच हुआ। उस दिन तम्पुरान से एक कुलकम धान लेकर गई थी। फिर नहीं आई। पिछवाड़े से जाकर नांद के पास धूप में खड़ी रही।

रसोई के सामने तिरुवोलम्मा मुंह बनाए खड़ी है। यही देखने के लिए आई? नहीं आना चाहिए था।

धूप! खाली सिर पर नहीं, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, सब ओर जहां तक दृष्टि पहुंच सके। नीचे गीली मिट्टी।

धूप में थकी मिट्टी की सांसें। लालच और स्वाद से उस परिमल को शरीर में खींच लिया। उनके चेहरे की ओर नहीं देखा।

रसोई के सामने केले के नीचे थोड़ा हटकर खड़ी रही। सामने वैसे खड़े रहने में संकोच हुआ। ठंडी हवा। चारों ओर नजर घुमाई। ठीक पीछे बांस की नली टूट गई है। सोते का पानी बीच से ही गिर रहा है। नीचे रुका पड़ा गंदा पानी। उसमें सोते का पानी गिरकर उछल-कूद कर रहा है।

जूठे बर्तन नली के नीचे रख, बरामदे में लौटकर वारस्यार ऊंची आवाज में बोलीं, 'टूटी नली को ठीक नहीं किया।'

शिकायत का स्वर।

'उण्णि कहां गया?'

'सुबह ही यहां से निकल गया था।'

'खाना भी खाने नहीं आया!'

'सेयतु की दुकान में कहीं होगा।'

'आज उधर मैं गया ही नहीं।'

'आने दो, इधर।' क्रोध भरा स्वर, पता नहीं किससे?

फिर से चुप्पी।

चारों ओर नजर घुमाई। झाड़ू-बुहारू करने वाले दिन कितनी दूर बीत गए। एक जन्म बीत गया। इस बीच कितना कुछ झेल लिया।

केवल सोते की धारा की शरारती मर्मर ध्वनि! यही अपने साथ थी। यही मेरी सहेली थी। खलिहान में भूसी अलग करते समय, ओखली वाले कमरे में, धान की कुटाई करते समय, जूठे बर्तन मांजते समय, बछड़े को सानी लगाते समय, आंगन बुहारते समय, खतिहान में बिछी फूस पर सूखने के लिए कपड़े डालते समय भी यही, जंगली सोते की यही धारा साथ में गुनगुनाती रहती थी। काम की मेहनत कम कर देती थी। मन के एकांत को भर देती थी।

बाड़े के पास जाकर वह बांस का एक टुकड़ा ले आई। जहां नली टूट गई थी, उस जगह जोड़ दिया। सोते की धारा फिर से रसोई के आंगन में बह पड़ी। पहले की ही तरह शरारती हंसी हंसने लगी। बातें करने लगी। झूला झूलती लड़की जैसा उत्साह।

मुरझा गई कद्दू की लता फिर से सचेत हो उठी। फूले खड़े मिर्च के पौधे। केलों के गुच्छों पर मंडराती मधुमक्खियां। करैले की लताओं के चारों ओर मंडराते पीले पतंगे। मैं इनके बीच वापस आ गई हूं।

'मारा उधर खड़ी है। खाना देना है। दोपहर के बाद भी काम है।'

सामने जूठे बर्तनों का ढेर। किसी की आज्ञा की प्रतीक्षा किए बिना ही वह बर्तन साफ करने लगी। नली का जल उस पर बिखर गया। धारा ठठाकर हंसती है। पुरानी सहेली। केवल वे लोग कुछ नहीं पूछते।

मैं इतने दिन क्यों नहीं आई?

मल्लन की बीमारी क्या थी?

इलाज नहीं करवाया?

तू कैसे जिंदगी बिताती है?

एक शब्द! सांत्वना का एक शब्द—

'क्या करें, किस्मत-फूटी है, साथ में हट्टा-कट्टा आदमी था।' आखिर वे बोलीं। इसी ने उसका नाश किया, ऐसा आरोप उनके स्वर में था। उस पर ध्यान गया।

थाली में भात रखके मंजे बर्तन वे उठा ले गईं।

सड़ने की गंध।

हाथ धोकर कुछ पानी पिया। चावल से आती बदबू से मुंह घूम गया।

न खाने पर कहेंगी कि घमंड है। बछड़ा भी नहीं खाएगा इसे। खलिहान में ले जाकर गोबर की टोकरी में डाल दिया। किसी के न देख पाने का विश्वास हो गया तो कुछ गोबर उसके ऊपर डाल दिया।

मल्लन के जंगल जाने के बाद फिर से गिरवी रख दी गई उस थाली को साफ करते समय उसकी आंखें भर आईं। मल्लन के बीमार पड़ने पर आठ आने के केले खरीदकर पूजा की थी। नौ आना देने पर छुड़बाई जा सकती है। पर किसलिए? किसके खाने के लिए?

वारस्यार रसोई से ऊंची आवाज में बोलीं, 'कुछ कपड़े हैं धोने को। अभी खेत जाने की जरूरत नहीं।'

कुछ गंदे कपड़े आंगन में आ गिरे।

नदी जाने का समय नहीं। चट्टान पर, नली के नीचे कपड़े धोते समय उण्णि तम्पुरान के कुर्ते की जेब से कुछ नीचे गिरा।

दो बीड़ियां।

बीड़ी का रंग और प्रकार देखकर घबरा गई। देखना उसकी गलती है। तृश्शिलेरी में शिकारी जोसफ गांजे वाली बीड़ी बनाता है।

दुविधा में वह खड़ी रही। गीले कुर्ते में तो रख नहीं सकती। गंदे नाले में फेंक, कुछ पानी डालके बहा दिया।

नहीं, किसी ने देखा नहीं। उसी क्षण भीतर से उण्णि तम्पुरान की आवाज सुन वह चौंक गई।

'अम्मा...अम्मा!...' सूअर को भगाने के लिए पटाखा फोड़ने की-सी आवाज।

'मेरा कुर्ता लिया?'

'तो क्या?'

'मुझसे क्यों नहीं पूछा?'

'क्यों, शाम को फिरंगी की तरह सज-धज के निकलने के लिए चाहिए न?'

'मैं पूछता हूं, कहां है?'

'मारा धो रही है।'

रसोई के द्वार से भागकर आया। लाल चेहरा। चंचल दृष्टि मारा और कुर्ते पर घूमती रही। वह सिर झुकाए काम करती रही। भीतर दबा भय। पूछ लें तो?

चुपचाप पैर पटककर जाने की आवाज!

कोई बात आसान नहीं। वेल्लरोडी के दो खेतों की फसल काट ली गई। मुश्किल से आधे एकड़ का धान भंडार-घर में पहुंचा होगा कि जमीन पर फिर से घास-पात जमने लगी। यही बाद में जंगल बन जाता है।

हिस्सेदारी से छुड़ाया हुआ एक एकड़।

पुषकुनि का खेत एक एकड़ भी नहीं।

क्या लाभ इससे? पांच-छः सदस्यों वाले परिवार का खर्च कैसे चले?

झाड़ियों से भरी वेल्लरोडी की ही आशा है। खाली एक या दो खेत ही नहीं। रिजर्व फारेस्ट की सीमा तक की भूमि सफाई करवाके खाली कर लेनी होगी। छः एकड़ तक की जमीन मिल जाएगी। उसके लिए मल्लन जैसे एक-दो कामगार चाहिए। मल्लन नहीं है। फिर कौन?

आधी एकड़ में कुरिच्चन रामन की हिस्सेदारी कर दें। इस तरह वह यहीं रुक जाएगा। वरना मन करने पर वह तविंजाल या पुलपल्ली भी जा सकता है। किसको पता चलेगा?

पेम्बी करियन का जवनी से ब्याह करवाके पास की झोंपड़ी में बसा दें। चुंडली भी है। लेकिन पक्का नहीं।

कुरिच्चन रामन के अलावा किसी के भी जाने को तैयार न होने पर वेल्लरोडी में करियन-जवनी और चुंडली-मारा बहुत दिन टिकने वाले नहीं। नजर चूकने भर की देर थी। एक मानम वल्ली ज्यादा भी देने पर जंगल और जंगली हाथी के मुंह में रहने में संकोच था। प्राणों से प्यार। खासकर ये डरपोक लोग तैयार नहीं होंगे।

काम देना चाहिए। वही इन्हें बांधेगा। धैर्य बंधाने के लिए कुरिच्चन रामन को बसाना होगा। फिर डरने की कोई बात नहीं।

वेल्लरोडी में अदरक के खेतों के बीच की झोंपड़ियों को हटाकर सीमा के निकट ले जाना होगा। वेल्लरोडी से दो फसलें लेनी चाहिए। तिरुनेल्ली के लिए यह एक समाचार बनेगा।

'बहुत बड़े साहस की बात है।' सावित्री वारस्यार बोलीं।

'यहां का जीवन ही खुद में साहस है, नहीं?'

'क्या पता?'

'क्यों नहीं? मुंह पसारे जंगल और वहां रहने वाले जानवरों से सोते-जागते लड़ने को विवश जीवन एक जीवंत साहस नहीं तो और क्या है?'

'हमने केवल यहीं देखा है।'

उनका मुख जरा लाल पड़ गया।

'मैंने बहुत देखा है—'

'यहां से ऊब गए हैं न?'

'ऊब न हो, ऐसी कोई वजह है?'

'मेरी याद में वेल्लरोडी में अभी तक एक ही आदमी ने खेती की है।'

'वह काना?'

'उसका विश्वास है कि इसी कारण उसकी आंख फूट गई।'

'ऐसा क्यों?'

'वेल्लरोडी पहले कुरिच्चन लोगों की मिल्कियत था। वहां जो कब्जा करेगा, उसे कुरिच्चनों का कुलदेवता शाप देगा।'

'रामन को वहां बसा दें तो!'

'खेती करने वाले तो हम हैं।' वे कुछ आगे बढ़ आईं।

'पता नहीं! जो होना है, होगा।'

'कुछ भी कहो, इस बार मैं वहां बीज बोने जा रहा हूं।'

कैसा आदमी है!

उनकी आंखें चमक उठीं। यहां जो है उसे घास की चटाई बुनते रहने के सिवा कोई चिंता नहीं।

दामू वारियर घास काटने वाला छुरा लेकर बरामदे में आए।

'तो निकलते हैं?'

'चलें!'

'लगता है, दोनों किसी देश पर चढ़ाई करने जा रहे हैं।' वारस्यार दोनों पर नजर घुमाती रहीं।

'देश न भी मिले तो भी, दूसरे की जगह होने पर भी, घास की चटाई बिछाकर लेटा तो जा सकता है। नहीं?'

अभी सुबह ही है!

दिशाओं के प्रसन्नता-रहित मुख। निश्चय कर लिया है तो निकल ही पड़ें।

घाट के फिसलते पत्थरों पर संभालकर चलने की दामू वारियर की कला प्रशंसनीय ही है।

रात होने पर भी ऐसे ही जा सकता है, बिना रोशनी के ही। फिर भी इतनी तेज नहीं।

दो जंगलों के संगम-स्थान पर एक छोटी दरार से आंसू-सा स्वच्छ झरना वेग से बह आता है।

पूर्व की धूप से दलदल चमक उठा। सोते का पानी नीचे दलदल में अप्रत्यक्ष हो

जाता है।

निरंतर सुनाई देने वाली कल-कल ध्वनि। दलदल में गला फंस गए जंगली झरने का गद्गद स्वर। दोनों ओर फैली पड़ी खाली भूमि। पहले खेत थे। जंगल ने खेतों को ढंक लिया। सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ आने वाले घास-पात, झाड़ियां, कांटे।

पैरों के नीचे केंकड़े दौड़-धूप करते रहे। किसी अज्ञात स्थल से जोंकों की तीखी आवाज आई।

'सावधानी से चलो। जोंकें होंगीं।'

'खेत में जोंकें?'

'अब ये खेत नहीं। फिर से इन्हें खेतों में ढालना होगा।'

घुटनों-घुटनों तक घास से होकर जाता रास्ता। खुजली। एंड़ियों से लेकर घुटनों तक रेंगती खुजली।

दौड़कर एक पत्थर पर चढ़कर देखा, 'ओ, कुछ नहीं।'

'वो देखने पर नहीं मिलेगी।'

फिर बढ़े। ध्यानपूर्वक। कौन-सी सावधानी बरतें? घास पर पैर रखना ही है। नीचे जोंकें हैं।

भूरे रंग के दो खरगोश सामने से दौड़ते निकल गए।

अदृश्य कोनों में से चिड़ियां चहचहाई। सूरज निकल आने पर भी कोहरे की चादर न उतारने को तैयार वेल्लरोडी।

वन की सीमा से होकर चलते तो अब तक कहां के कहां पहुंच जाते। पर वह पर्याप्त नहीं। इस दलदली प्रदेश को जरा देख लेना ही चाहिए। खेत बनाने हैं।

चलते-चलते अंत में उस नटखट झरने के पास पहुंच गए। यही धारा बांवली नदी बनकर तिरुनेल्ली के लोगों को वरदान देती हुई पूर्वी घाटी की ओर बह जाती है।

पहले जो कल-कल नाद सुनाई दे रहा था, वह पास आता गया। एक छोटा-सा सोता। सोता सीधे ऊपर जाकर फिर मुड़कर नीचे दलदल में गिरकर तुरंत अप्रत्यक्ष हो जाता है।

बरसात में, जब नदी का पानी गंदला हो जाता है, तब जवनी, कुंपा, मारा—सब लोग यहीं से पानी लेते होंगे।

'इतना अच्छा जल यहां छोड़ ये सारी आसामी औरतें नीचे नदी से पानी लाती हैं?'

'हां।'

'क्यों?'

'डर से।'

'नदी के घाट पर पहुंचने के लिए भी कुछ दूरी तो तय करनी ही होती है।'

'यहां जंगली हाथी आकर सूंड़ में पानी भरता है। फिर छोड़ेगा तो वह पानी कालिंदी तक पहुंच जाएगा।'

चढ़ाई में हांफ गए।

दूर कुंवारकुनी घाटी जैसी दिखाई पड़ रही है।

जितना सोचा था उससे भी अधिक ऊंची भूमि है।

भयंकर प्यास लगी हुई है। सुबह खट्टा दोशा खाते समय ही लगी थी।

दलदल में घास के बीच कुहनी तक जाकर गायब हो जाता पानी है। पी लें! मीठा, बहुत मीठा!

घास से जंगलाई एक गुफा। पानी के कटाव से बनी गुफा। नीचे खेत में गहरा कीचड़।

'चेट्टुविलियन ही यहां बोया जा सकता है।'

'हल नहीं जोत सकते।'

'गुड़ाई तो हो सकती है।'

'कौन गोड़ेगा?'

'क्यों?'

'एक बार कुरुमक्कालन कमर तक धंस गया था, जब काना खेती करता था।'

'उतना गहरा है!'

'उससे भी ज्यादा। गर्मियों में तलछट जम जाने से कम है, नहीं तो पूरा आदमी समा जाए।'

'तब गर्मियों में ही गुड़ाई कर सकते हैं, नहीं?'

'हां, इतना ही। यहीं आस-पास।'

'नीचे?'

'गोड़कर बुआई हो सकती है। दो बार।'

चटाई बुनने लायक अच्छी घास झरने के चारों ओर दो आदमी जितनी ऊंचाई पर खूब घनी होकर खड़ी है। ऐसी घास जिसका अभी तक छुरे ने स्पर्श नहीं किया है।

'मैं अपना काम शुरू करूं?'

'ओ, देखूं तो, करियन कहीं दिखता है।'

सोते से फिर थोड़ा जल पिया। वेल्लरोडी के माथे से टकराती हल्की धूप में कैसा ताप!

मीठा पानी। गंदगी से भरे गंगाजल और रामेश्वरम के तीर्थ जल का स्वाद लिया है। यह है असली तीर्थ जल। शुद्ध, पुण्य तीर्थ।

झरने की धारा सामने समतल चट्टान पर कूदकर नाचती ही रहती है। फिर एक बड़ी दरार में घुस जाती है।

'मैं करियन से मिलने जाऊं?'

'हां। मुझे ऐसा डर नहीं।'

दाईं ओर मुड़ा। त्रिकोण की आकृति के मैदान के किनारे का वन यहां कुछ पीछे हट जाता है।

वर्षों पहले उखड़ा एक बहुत बड़ा पेड़ जीर्ण-शीर्ण होकर मोटी हड्डियों-सा पड़ा है।

'यह कौन-सा पेड़ है?'

'पता नहीं।' नीचे झाड़ियों से सिर उठाकर दामू वारियर ऊंची आवाज में बोला।

'पत्ते और डालियां कभी तो देखे होंगे। तब भी नहीं पता?'

'किसने देखे हैं पत्ते और डालियां? जब से याद आता है, यह यहां ऐसे ही पड़ा है। किसे पता, कब गिरा?'

उससे पराजित दीमकें पास ही बांबी बनाकर तपस्या कर रही हैं। क्या होगी उनकी प्रार्थना? मलंकारी दांतों को तीक्ष्ण कर दें या फिर खाद्य पदार्थ नरम कर दें!

बांबी के भीतर समुद्र गरजता है। लाखों दीमकें हलचल मचा रही हैं। आपस में बातें करती होंगी? तुलामास के शांत समुद्र की हल्की मर्मर ध्वनि जैसा गर्जन।

फिर चल पड़ा।

लाल मिट्टी है। आश्चर्य है! यहां की मिट्टी के कितने चेहरे हैं! कितने भाव हैं!

कभी सारे दांत दिखाती हंस पड़ती है। वह खाली हंसी ही है। कुछ देगी नहीं। बंजर है। कभी मुख काला कर लेगी। वहां संपत्ति है। प्रसन्न हो गई तो झोलियां भर देगी।

यह? लाल चेहरे वाली?

प्रदेश का रंग। लाल मिट्टी चेहरे पर दृष्टि लगाए हुए है। एक क्षण रुक गया।

स्मरण हो आया, जब इल्लम के अहाते में आम बीनने जाता था। लाल मिट्टी के बीच झांकते सुनहरे आम।

केवल आम ही नहीं, उससे भी अधिक चाहिए। जीने के लिए जो कुछ चाहिए पूरा इसी से मिलना चाहिए।

रिजर्व फारेस्ट की सीमा पर लगे पत्थर से पहले ही लाल भूमि हट जाती है। सरकार निर्मित सीमा का अतिक्रमण करता जंगल है।

कुछ खाली भूमि मिल जाएगी। इस झाड़-झंखाड़ को साफ कर दें तो अदरख बोया जा सकता है। सूअर जिसे न खाए, बस यही फसल है।

वारस्यार ने जब बिना अदरख वाली पुलियिंची (एक सब्जी) परसी थी, उसे खाते ही तब मन में आया था—

यहां एक घर हो!

पहाड़ों के बीच फैले पड़े पूरे दलदल के क्षेत्र तक नजर पहुंच सकेगी।

दूर, कुंबारकुनी तक नजर आएगी। पास ही आसामियों की झोंपड़ियां। कुछ और चीजों की खेती भी।

घर बनाना है।

हंसी आई।

जंगल की जेल में तपस्या कर रहे मुझ जैसे आदमी के लिए घर किस काम का?

सावित्री वारस्यार का बड़ा बेटा बड़े होने पर शादी के बाद यहां रह सकेगा!

सुभद्राकुट्टी का अंबलकुन्न का घराना!

उण्णि!

वह यहां का किसान बन सकेगा?

पढ़ने को भेज दिया। एक और साल के बाद दसवीं पास कर सकता है। तब तक उम्र इक्कीस। टीचर ट्रेनिंग में भेज देना चाहिए।

तिरुनेल्ली में एक स्कूल खोलना है।

वह पास हो जाएगा? स्कूल खोलने में करीब एक महीना और बाकी है। इस बीच उसे गांजा कौन ला देता है?

मारा ने कुर्ता धोया था। गंदा पानी केले की क्यारियों में भर गया। उसे मोड़कर निकाल देने गया तो वहां दो बीड़ियां थीं, जैसे शिकारी जोसफ के पास रहती हैं।

सेयतु की चेतावनी याद आई। आश्चर्य नहीं, दुख हुआ। मां का प्यारा बेटा!

बांस के जंगल से गुजरता पशुओं का रास्ता झोंपड़ियों के पिछवाड़े पर खत्म होता है। सोई पड़ी झोंपड़ियां। आवाज नहीं, हलचल नहीं, आग नहीं, ताप नहीं, ठंडी झोंपड़ियां। पहाड़ों पर दबी पड़ी हैं जैसे घाट पर मरे पड़े केकड़ों के कवच हों। गोबर लिपे आंगन और बरामदे वर्षा में भीगकर गंदे हो पड़े हैं।

सूनापन। मनुष्य की गंध भी नहीं आ रही।

सब लोग कहां गए?

हवा से बातें करते पत्ते।

पूरब के आंगन में धूप भरी हुई है।

नीचे खेतों में आसामी स्त्रियां घास-पात ढूंढती फिर रही हैं। लाल, नीली, काली बिंदियों-सी वे आगे बढ़ जाती हैं।

कल की बारिश से आज हरी साग उग आई होगी, यही उम्मीद बांधे होगी।

पीछे जंगल में चरवाहों की बातचीत चल रही है।

कुंबारकुनी में एक जीप आकर रुकी। पापनाशिनी में पिंड बहाने कोई आया होगा। जीप से उतरकर एक आदमी आगे बढ़ा। पीछे एक बड़ी गठरी लादे दूसरा आदमी है।

तिरुनेल्ली पेरुमाल का दर्शन करने आए लोग इतनी बड़ी गठरी क्यों लाते हैं?

आसामी की झोंपड़ी के सामने मूर्खों की तरह फालतू खड़ा हूं...। करियन सेयतु की दुकान में होगा। नहीं तो घाट पर होगा।

लौट पड़ा। पीछे आहट आई। मारा जल से भरा घड़ा लिए घाट से आ रही है। पीछे-पीछे जवनी। उसके हाथ में मुट्ठी भर साग।

'और पत्ते तो कहीं नहीं।' वह मारा से बोली।

थम गया। जवनी से पूछ लें।

'करियन कहां है?' उसके चेहरे पर धूप की लालिमा छा गई।

'खजूर के पत्ते लाने गए हैं।'

'किसलिए?'

'बढ़नी बनाने के लिए।'

'एक बढ़नी का कितना मिलता है?'

'चवन्नी।' उसने सिर उठाया।

'कहना कि मैं पूछ रहा था।'

मारा झोंपड़ी के भीतर जा चुकी थी। जिस रास्ते से आया उसी पर लौट चला। दामू वारियर शायद प्रतीक्षा करते होंगे। इसी रास्ते से सीधे उतरकर जा सकता था।

मारा की झोंपड़ी के बरामदे में लटकती बांस की टटिया के पीछे नीले रंग की छाया है।

'मारा...अगले हफ्ते से अदरख की बुआई करनी है।'

'इस बारिश में?' भीतर से ही दबी आवाज में उसने कहा।

'हां।'

कुछ दिन पहले ही बुआई हो जानी चाहिए थी।

दामू वारियर घास की गठरी बनाकर, सोते से जल भी पीकर प्रसन्नचित्त खड़े हैं।

'मिला?'

'संदेश दे दिया। घास मिली?'

'बहुत दिन पहले कभी यहां आया था। पूरा काट नहीं सकता।'

'अब अदरख बो दें तो?'

'क्या?'

'अदरख!'

यह आदमी पागल है क्या? दामू वारियर आश्चर्यचकित खड़े रह गए।

'सुना नहीं? क्या बात है?'

'मैं भी यही सोचता हूं, क्या बात है!'

'इस सीमा के पास अदरख बोने पर कैसा रहेगा?'

'दूर हो गई है। लग जाएगी?'

'क्यों नहीं लगेगी? यह लाल मिट्टी खूब नम है। लगेगी।'

'सरकारी जमीन है न?'

'नहीं, सीमा के इस पार की भूमि किसी की नहीं।'

'नापी हुई है?'

'नहीं।'

'क्या पता।' उस मनुष्य के लिए, जिसका पूरा जीवन चटाई बुनने में कट गया, अदरख की खेती क्या?

जिस रास्ते से आए, उसी पर वापस चलना होगा।

दोपहरी से पहले तक वहां पहुंच तो जाएंगे?

बापू कुम्हार से मिलना है। पहले कभी गोपालन वारियर की दी बंटाई की जमीन को खेती किए बिना छोड़ दिया है। मानंतवाडी जाने वालों से मिलना है। अदरख के बीज और कीड़ों की दवा खरीदनी है। बारिश शुरू होने के बाद निकला नहीं जा सकता।

अंबलकुन्न के नीचे के घाट पर पहुंचने पर दामू वारियर ने पूछा, 'घर नहीं चलते हो?'

'नहीं, दो जनों से मिलना है।'

'खाना खाकर मिल लेना।'

'नहीं, खाके फिर चला नहीं जाता। गोपालन नाई से मिलना है।'

'मुझे देखो न? दाढ़ी-बाल बढ़ाए ऐसे ही काट लेता हूं। तीन-चार महीने के बाद एक बार सारी सफाई करता हूं।' दामू वारियर हंस पड़े।

मुझे भी यही करना होगा। बाल कटवाने के लिए नाई खोजो। ढूंढने पर भी नहीं मिलता। इतनी-सी बात के लिए कितने दिन बिता सकता हूं!

ऐसा आदमी जो ढूंढने पर भी न दिखे। कोल्लीमूला में खेती के समय उसका मिलना मुश्किल नहीं था।

पहरा देने वाले दिनों में, दोपहरी तक सोते रहने के बाद फिर उस्तरा लेकर निकलता था।

अगर घर में धान खत्म हो जाए, सब्जी न हो तो समय से पहले ही आके पूछ लेता था, 'बाल नहीं कटवाएंगे?'

होने दो। फिर शायद दिखाई भी न दे। फसल कट जाने पर धान के भंडार-घर पहुंचने के बाद फिर उसका चेहरा देखने को भी नहीं मिलता। बाल कटवाने पर ज्यादा पैसा देने पर के बावजूद वह नहीं दिखेगा...।

कड़ी धूप। लंबे-लंबे डग भरके वन का उतार पार किया। फैले पड़े खेत। उन्हें रोके हुए नाला। किनारों पर अन्नास की घनी झाड़ियां। यहीं कहीं उसकी झोंपड़ी है।

उस दिन वह शाम को दो रुपए और एक कुलकम धान लेकर गया था। रास्ते में गोपालन नायर की झोंपड़ी में जाकर ताड़ी पी। फिर घर नहीं गया। दूसरे दिन, सुबह काक्कप्पुला से लौटते वक्त किसी आसामी ने नाले के किनारे अनन्नास के बीच उसे पड़ा पाया। काठ जैसा हो गया बदन। खींचकर निकाला गया। धान नाले में बह गया। जिस धोती में बांधा हुआ था, वह भी बह गई। तब से सामने नहीं पड़ा है।

मेड़ों के किनारे नाले में पानी उमड़-उमड़कर बह रहा है। एक दिन तक और। फिर सूखा। लक्षणों के मुताबिक तो जल्दी ही बारिश शुरू होनी चाहिए थी।

बापू का घर पीछे छूट गया। गोपाल वारियर ने उसे जो भूमि बंटाई पर दी है, अच्छी है। निचले खेत। पानी ठहरता है। सबेरे बुआई की। पर वर्षा हुई ही नहीं। पीला हो गया धान कल की वर्षा में काला पड़ने लगा है...

कोई नहीं दिखा जिससे गोपालन के घर का रास्ता पूछा जा सके।...

आखिर एक रास्ता नजर आया। नाले के किनारे सीधे जाता रास्ता। बीच-बीच में लाल, बैंगनी और नीले रंगों में बदलते जाने वाले फूलों का पेड़ केवल उसकी झोंपड़ी के पीछे के वन में ही है। एक अकेला पेड़।

गरमी। पसीना। बनियान भीग गया। पहने-पहने चला नहीं जाता। उतारकर कंधे पर डाल दें तो! तपती धूप!

गोपालन का घर। बकरी के दरबे की तरह। सामने दरवाजा। बांस की गंदी टटिया। पित्त रोगी-सी एक लड़की, चारों पैरों से खंभे से बंधी एक बकरी के थन निचोड़ती खड़ी है। कसकर निचोड़ने पर भी थोड़े-से मिले दूध ने उसके फूले मुंह को और फुला दिया। सिर उठाकर राघवन नायर को देखा।

'गोपालन है?'

'अप्पन? गए।'

'कहां?'

'सड़क पर मजदूरी करने।'

'मजदूरी?'

'हां। कहते थे, दो रुपया पगार है।'

आश्चर्य से आंखें फैल गई! वह लड़की निधि की तरह गिलास छाती से चिपकाए भीतर चली गई।

'मां, वारियम के मुख्तार हैं।'

भाड़ में रखे मिट्टी के बर्तन की तरह मन जल उठा। लौट पड़ा। अब यहां रहने वालों के बाल कौन काटेगा? दाढ़ी-बाल बढ़ा सब साधू हो जाएं।

अंबलकुन्न पहुंचते-पहुंचते सूरज पश्चिम की ओर से दाएं गाल पर प्रहार करने

लगा।

वारियम के सामने का बरामदा निर्जन। झड़े पीले पत्तों से भरी सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते जरा रुक गया। आश्वासन मिला। पापनाशिनी की ओर से आती ठंडी हवा। जलता पेट शांत पड़ गया।

तुलसी के चबूतरे पर सुनहले तसले में पानी। मुंह-हाथ धोए। लगा कि ठंडक नहीं पड़ी। नली के नीचे जाकर अच्छी तरह धो लें।

मारा बर्तन साफ कर रही है।...

तेज भूख। अच्छा स्वाद। पर गलत समय होने के कारण पेट रूठ जाता है। खाना अच्छे से न खा सका। हाथ धोकर पान खाने बैठ गया।

उण्णि के भीतर से मां को बुलाने की आवाज आई, 'मां, मेरा कुर्ता कहां है?'

'झोले में पड़ा है।'

'मुझे नहीं दिखता। आकर दे।'

'खाना खा रही हूं। अभी आती हूं।'

'अब शाम गए खाना?'

खेत का काम पूरा होने को हुआ। गाय-भैंस वन से लौट आए। उन्होंने अब तक खाना नहीं खाया।

'क्यों? किसके लिए पांच बजे तक बैठी रहीं?

मेरे लिए कोई इंतजार न करे।

दूसरे दिन भी देर हो गई। सेयतु की दुकान में डाकिए की प्रतीक्षा कर रहा था। दो बज चुके थे।

नाणु डाकिया पसीने में तर, हांफता हुआ पहुंचा।

'क्या हुआ?'

'क्या हुआ?'

'क्या हुआ?'

सैकड़ों उद्वेग भरे प्रश्न।

'पुलयनकोल्ली में...'

'कोल्ली में...?'

'हाथी!'

'सच?'

'मैंने देखा।'

'वैसे तो—सुना कल गौण्डन के बाग में काम कर रहे कुरुमन को मार दिया?'

'मेरा देखना सच है, तो वह भी सच है।'

घूरती नजरें। भय की गहराई।

'कुरुमन—'

'उसने देखकर सोचा, पालतू हाथी जंगल से लकड़ी ढोने आया है। पास चला गया।'

'फिर?'

'फिर क्या, मार डाला।'

'हाय!'

'कैसे रहें इस जगह?'

'बुद्धि चाहिए। देखते नहीं, कितने दिनों से मैं डाक ला रहा हूं।'

'फिर, उसे देखा?'

'अरे देखा तो सांस ठहरी की ठहरी रही। मन्नतें मान डालीं। पहले तिरुनेल्ली पेरुमाल को पुकारा, फिर कोट्टियूर पेरुमाल को। गुरुवायूरप्पा का नाम पूरा होते-होते उड़ता हुआ-सा मैं सड़क पर राघवन मारार की दुकान के सामने पहुंच गया।'

पसीना पोंछकर वह विस्तार से कहानी सुनाता रहा। डाक देते-देते तीन बज गए।

तीन दिन के अखबार। लालच से एक साथ सभी देख लिए। सीधे घर पहुंचना मनुष्यत्वहीनता है। बहुत-से लोग काम छोड़ केवल समाचार जानने के लिए डाकिए की प्रतीक्षा करते हैं। एक-दो लोगों द्वारा मंगवाए अखबारों को पूरे इलाके के लोग पढ़ लेते हैं।

उस दिन भी वारस्यार बिना खाए प्रतीक्षा कर रही थीं। उसी दिन से नई व्यवस्था शुरू की।

चार बजने के बाद आने पर खाना नहीं खाऊंगा। उसके बाद फिर वे प्रतीक्षा नहीं कर पाएंगी। मेरी तो अनियमित दिनचर्या है। खाने पर ममता रखने का समय नहीं मिलता। बिखरा पड़ा, क्रमरहित, व्यवस्थारहित जीवन!

30

वेल्लरोडी में एक घर बनाना चाहिए। कहा नहीं जा सकता कि तीनों झोंपड़ियों के आसामी कब उन्हें छोड़ दें। एक साथ आमने-सामने और कंधे से कंधा मिलाकर झोंपड़ियां बनाने वाले और एक साथ भूखे रहने वाले उन लोगों के खून में एकांत जीवनयापन का कोई सबूत नहीं।

मन में किले बांधना आसान है। कुछ बांस, घास और थोड़ी-सी मेहनत ही तो है। जंगल में बांस हैं, खलिहान में फूस। अधीन आसामी लोग। पर जब काम करने का प्रश्न उठता है, बात की गंभीरता सामने आ जाती है। बांस सरकारी संपत्ति है। मोह दूर हो जाता है।

गार्ड से मिलकर बांस खरीदने होंगे। प्रार्थनापत्र आसामियों के नाम से होना चाहिए। उच्च वर्ग को बांस काटने की इजाजत नहीं। उन्हें बांस का क्या करना है? पत्थर, सीमेंट और खपरैल से घर बना सकते हैं।

गांव में किट्टूवारियर के अलावा और किसी के पास खपरैल से छाया घर नहीं है। घर बनाने के लिए बांस चाहिए तो आसामी के नाम से लेना होगा। फिर चाहे वह जिंदा हो या न हो, या फिर चाहे वहां उसका जन्म ही न हुआ हो, कोई ध्यान नहीं देता।

गार्ड शंकुण्णि के ओठों पर हंसी।

यह अपना इलाका नहीं, जंगल है। यहां के नियम-कायदे और हैं। उस हंसी में ये सब झलक उठता है।

कुछ भी हो। वह देखने को तो मिला। भाग्य है।

शंकुण्णि का महल ढूंढ निकालना आसान है। पर वहां वह रहता नहीं, इस बात का पता बाद में चलता है।

पहले अंग्रेजों के जमाने में, ब्रह्मगिरि की ठोड़ी के नीचे, गहरी घाटी के भी नीचे, पहाड़ की कमर घेरे एक चाय-बागान था। उन लोगों के इस देश को छोड़कर जाने से भी बहुत पहले।

सेयतु और शिकारी जोसफ के साथ ब्रह्मगिरि देखने को निकला—

जोसफ के लिए जंगल भी अपना घर है, कोई पराई जगह नहीं। जंगली खरगोश की तरह वह छोटा आदमी किसी भी कोने में घुस जाएगा। किसी भी चीज की गंध पहचानने वाले जंगली कुत्ते की तरह। सबल शरीर।

बहुत धैर्यवान।

जंगल के बीच-बीच में चाय के पौधे। घने पेड़ों के बीच में, छूटी हुई वनभूमि में—चाय के पौधों के पैरों तले कुचलकर बड़े हुए वन। पुराने समय के बाग के वंश-नाश का आरंभ करने वाली परंपरा का अगला छोर।

फिर भी विश्वास नहीं होता कि इस भयंकर वन में कभी अंग्रेजों ने चाय के बागान लगाए थे कि वे महल बनाकर रहते, शराब पी-पीकर नाचते और घुड़सवारी करते थे।

'सच?'

'प्रमाण चाहिए?'— जोसफ बोला।

वह आगे बढ़ा। आगे और भी सघन होता जाता वन। पिंजरे में बंद भालू की तरह जंगल में फंसी पड़ी हवा। ठंडी हवा पेड़ों की पंक्तियों को खरोंच-खरोंचकर बाहर निकलने की कोशिश करती रही। भयभीत करने वाले जंगल का सूनापन। एकांत!

एक बहुत बड़े महल का जैसे छिलका हो। हड्डियों का ढांचा सामने खड़ा है। विश्वास आया। तीन-चौथाई भाग काठ-निर्मित, हवा से टूटकर नष्ट हुए पल्ले, बहुत बड़े द्वार और खिड़कियां। पुतली नष्ट हुई आंख जैसे बड़े-बड़े छेद। वह खंडहर किसी भयंकर जंगली जीव की याद दिलाता था।

अस्तबल, नौकरों के क्वार्टर, क्लब, हॉल— एक इतिहास सामने सजीव हो उठा है। बीत गए कल के नाम भर। सब-कुछ घेरे अधिकार जमाए खड़ा है जंगल। बाहर से देखने वाले को केवल जंगल ही दिखेगा।

ठीक पूरब में शंकुण्णि का महल। बहुत बड़ी मेहराबें, सिटकनियां, आधे नष्ट हो गए दरवाजे भी। हवा में पंख फड़फड़ाते से घर में जन-शून्यता। यही है फारेस्ट बंगला। जंगल की देख-भाल करने वाले गार्ड को सरकार की ओर से दिया गया क्वार्टर उसमें है। चाहे तो वह पूरे महल का उपयोग करे। उसमें रहने की योग्यता और धैर्य नहीं तभी तो शंकुण्णि की छाया भी वहां नहीं दिखती। बड़े-बड़े पेड़ों को रखवाली पर नियुक्त कर खुद वह नीचे तिरुनेल्ली में रहता है।

तिरुनेल्ली के सुनार के साथ!

शंकुण्णि को ढूंढने सुनार कुंजिकण्णन की झोंपड़ी में जाना होगा।

चला।

ग्यारह बजे हैं। पूरा दिन है। शंकुण्णि बरामदे में बांस की खटिया पर गाढ़ी निद्रा में है। काले कंबल के ऊपर उसके बाल उभरे खड़े हैं। कुंजिकण्णन कोई जरूरी चीज खोज रहा है। बीच में ही स्वागत किया, 'अरे नए लोग!' भीतर की ओर मुड़कर, 'कुट्टिमालू, मेरी नग जड़ने वाली सुई कहां है?'

'आखिरी बार तुमने कब लिया था उसे?' भीतर से आवाज आई।

'धनु महीने के दिनों में।'

'धनु में?'

'हां! जब मंदिर के दीपोत्सव में जाने के लिए एंव्रोशती अपने कर्णफूल की टूटी कील ठीक कराने लाई थी।'

शहतीर पर, बांस की टटिया की दरारों में शंकुण्णि की खाट के नीचे, हर जगह खोज चलती रही।

'हे पेरुमाल! कल तक रुपए वाला मंगलसूत्र न बनाया तो कुरुमाटी मुझे खा ही जाएगी।'

'कुंजिकण्णन का काम तो खूब अच्छा चलता है।'

'हां, बस।'

बिना घेरे के अहाते में केले के कुछ कमजोर तने, हरी मिर्च के थके-हारे लगते पौधे भी। सामने वाला खेत उसी का है। इस बार हल जोतने का लक्षण नहीं दिखाई पड़ा।

'राघवन नायर जी को मंगलसूत्र चाहिए?

'मंगलसूत्र?'

'सुना, शादी करके यहीं बस रहे हैं।'

'चलो, बुढ़ापे में शादी भी हो ही जाए। एक और वेश।'

'बैठिए।' एक आसन सामने रख दिया।

'नहीं, अभी मंगलसूत्र का समय नहीं आया है। मैं शंकुण्णि से मिलने आया हूं।'

'पास खो गया?'

'कुछ बांस चाहिए।'

'इसे जगाने के लिए-तो पेरुमाल के मंदिर वाले चार पटाखे फोड़ने पड़ेंगे।'

इस उत्तरदायित्व को कुंजिकण्णन ने स्वयं पर ही लिया।

अंगड़ाई लेकर वह उठ बैठा। दस जम्हाइयां एक साथ।

'रात में थोड़ा भी न सो पाया। जोसफ के साथ बाहर गया था।'

'कुछ मिला क्या?

'एक जंगली बकरा।'

'कहां?'

'गोपालन नायर के यहां।'

'दो-तीन पास चाहिए थे।'

'ऐसे ही तो आप लोगों के दर्शन हो पाते हैं।'

ऐसे नहीं तो भी उससे मिलना तो चाहिए ही। उसके भी तो कुछ अधिकार हैं। घर पर भेजने के लिए कटाई के बाद खलिहान से उसे एक पोति धान वेतन के रूप में मिलता है। उसके पालन-पोषण की जिम्मेदारी यहां के लोगों की। घर नया बनाना है? सब्जियों की क्यारियों की बाढ़ बनानी है? नांद बनानी है? अचार के लिए जंगली अंबिया चाहिए? मीठा आंवला? वर्षा और ठंड में रुई वाला गद्दा चाहिए? गायों को चराने जंगल भेजना है? शंकुण्णि रूपी देवता बहुत थोड़ी पूजा से संतुष्ट हो जाता है।

चाहकर नास्तिक बना हो, ऐसा नहीं। मुसीबतों में दर्शन करना भूल गया, बस इतना ही।

कुर्ता पहन, उसके ऊपर रोंएदार शाल ओढ़, बीड़ी कमर में ठूंस, अपनी साथिन बांस की मोटी छड़ी हाथ में लेकर जम्हाई लेते हुए शंकुण्णि साथ में चल पड़ा।

कुछ भी कहें। जंगल-जंगल नहीं घूम सकता तो कम से कम पूरे इलाके की खोजबीन

कर सरकार के दिए खाने की जिम्मेदारी तो निबाहता है, नहीं? कितने लोग फसल काट चुके? कितनी फसल बाकी है कटने को? फसल कितनी अच्छी हुई है?

ऐसा नहीं कि उसे इन सब का हिसाब चाहिए। उसका जो हिस्सा है वह मिल जाए। दूसरों का जंगल से शहद लेना वह अनदेखा कर देता है। उसे पता है कि गद्दों के लिए उन्हें रुई चाहिए। जब फसल अच्छी हुई हो, जब मिस्त्री को पगार देने की ताकत हो तब खलिहान नया बनवाने की लोग सोचते हैं। जंगल में शीशम की गिरी लकड़ियां इफरात होती हैं। जब वे उन्हें उठा ले जाते हैं, शंकुण्णि ध्यान नहीं देता। इतना ही तो चाहिए, न?

जंगल जाने की जरूरत नहीं है। जाने पर किस-किस का मुंह देखना पड़े। शंकुण्णि खुद समर्थ है।

'तीन पास चाहिए।'

'तीन पास पर तो अठारह बांस ही काट सकते हैं।'

शंकुण्णि ने याद दिलाया। उसकी नजर कोल्लीमूला की ओर गई। फसल की कटाई हो जाने के बाद, बरसात होने पर जुताई फिर से कर दी गई है। वहां जो था, अब खलिहान में है, भंडार-घर में है।

'हमारी मुसीबतें आप लोग नहीं देखते।'

'देखता क्यों नहीं, शाम को तुम भी देख लेना।'

उसके मुख पर खुशी आ गई।

'घर बन जाने पर शंकुण्णि, तुम्हें आना है।'

'क्या राघवन नायर घर बनवा रहे हैं?'

'घर तो क्या, मचान समझो।'

करियन और चात्तन की झोंपड़ियों को ठीक करवाया। रामन की झोंपड़ी तोड़कर वेल्लरोडी के आगे की तरफ फिर से बनी। वहां तिरुनेल्ली समाप्त हो जाती है। पीछे पंक्ति में खड़े वन। सीमा पर कुटक का इलाका। फिर से नीचे की ओर उतर जाते जंगल, पहाड़।

तविंजाल में पट्टे की जमीन पर अधिक से अधिक दस परा (एक परा=दस किलो) धान मिलने पर वहां की खेती छोड़ने को विवश रामन को रिजर्व फारेस्ट की सीमा पर डेरा बनाना पड़ा है। ऐसी जगह जहां और किसी आसामी का डर नहीं है।

खाली कोना। लगभग आधी एकड़ जमीन। पीछे के वन में शहद। रामन खुश है। लगातार काम। खलिहान का काम। उसने अपनी मेहनत से सहन में एक और झोंपड़ी तैयार कर दी। तविंजाल से अपने मामा को ले आया। राघवन नायर खुश। इस बहाने को रोकने का एक और उपाय मिला कि अकेले आसामियों के बीच नहीं रह सकता।

राघवन नायर के वेल्लरोडी में घर बनाने की बात जंगल की आग की तरह फैल गई।

गांव का मुख्य समाचार। जहां कहीं दो लोग मिलें, वहीं चर्चा का विषय।

एक और भी खबर—

पति के मरने के बाद भी मारा ने अपनी जगह नहीं छोड़ी। राघवन नायर के घर के पास वह अकेले एक झोंपड़ी में। अनुरूप कड़ियां जल्दी ही बैठ जाती हैं।

अब तक मर्द और औरत को तीन और दो के हिसाब से मिलती आ रही वल्ली की व्यवस्था को राघवन नायर ने चार और तीन कर दिया तो और किसके लिए? जब धान की खेती शुरू भी नहीं हुई थी, तब से चली आ रही व्यवस्था। अकस्मात यह सुधार क्यों?

राघवन नायर से सीधे किसी ने कुछ नहीं कहा। वेल्लरोडी का काला चेहरा रूप बदलकर आकर्षक हो उठा है। छः भागों में फैले पड़े खेत। ऊपर से बहता झरना।

हल से जुताई नहीं हो सकी। जितना सोचा था उससे भी ज्यादा गहरा कीचड़। गुड़ाई करनी पड़ी। बारिश में कीचड़ और भी गहरा हो जाएगा।...

अभी दोपहर नहीं बीती।

नदी पार की। मंदिर की सीढ़ी के नीचे, आम तले गोपाल वारियर बैठा है। वह हंसा। ऊपरी हंसी।

'वेल्लरोडी से आते हो?'

'हां, जरा देख रहा था कि वहां सफाई हो सकती है कि नहीं।'

गोपाल वारियर ने बात बदली!

'राघवन नायर का यहां एक स्थान है।'

'सचमुच!' रास्ता भटक-भटककर आती कथाओं में कोई बाकी बची रह गई है।

'ऐसी बात नहीं! अगर एक घर ही बसाना था तो इस बात की जरूरत नहीं थी।'

'किस बात की?'

'लोग तो बोलेंगे। जगह ऐसी ही है!'

'यह गोपाल वारियर कह रहे हैं या...?'

'कोई भी कहे— वेल्लरोडी की झोंपड़ियों में कौन रहता है?'

'खलिहान के आसामी।'

'मारा अकेली ही है, नहीं?'

'होगी। कभी चुंडली भी रहता है।'

'उसके होश भी ठिकाने है?'

'यहां के कितने आसामियों के होश ठिकाने हैं?'

'मल्लन के जाने का मुझे भी दुख है।'

'इसीलिए...'

'पर इसका मतलब यह नहीं कि आप उसकी देख-भाल करें।'

'मारा आपकी भांजी की ही दासी है।'

'आपकी कोई नहीं?'

'होने या न होने की बात को दूसरे के समझने की जरूरत नहीं।'

'अगर घर ही बसाना था तो अपनी जाति से कोई नहीं जुटी?'

राघवन नायर के होठ तिरछे हुए। आंखों में हंसी।

अपने निर्दोष होने की बात साबित करने की क्या आवश्यकता? होता कौन है यह आदमी मुझे सलाह देने वाला? तिरुनेल्ली के और किसी जमींदार की मुझे उपदेश देने की औकात है? किसी का भी दामन साफ है? सब कुछ हंसी में ही समेटकर पूछा, 'वारियर, मुझे लड़की देने वाला कौन है यहां?'

यह सवाल एक पटाखा था। तुरंत फूटा। जहां लगना चाहिए था वहीं लगा।

'इस तिरुनेल्ली में संबंध जोड़ने लायक कोई घराना है? आपके घराने में लड़कियां होतीं तो क्या मुझसे संबंध कर पाते?'

गोपाल वारियर का मुख काला पड़ गया। पीला हो गया। वह लज्जित होकर चला गया।

बेचारा! सब कुछ कर पाने की सामर्थ्य रखने पर कुछ न कर पाने वाला आदमी। देश भर में जमीन होने पर भी कन्नी और तुला के महीनों में भूखे रहने जैसी हालत। दिन-रात बिना थके काम करने वाला आदमी। पर जो कुछ कमा पाता है सब बाहर ही बाहर चला जाता है। एक दिन उस आदमी की असली हालत देखने को मिली...किट्टुवारियर ने कोल्लीमूला के नीचे की अंबलकुन्न की भूमि पट्टे पर खेती के लिए ली थी। पट्टा गोपाल वारियर ने दिया था। भूमि खाली कराने के लिए गोपाल वारियर से मिलना था। जब देख-रेख के लिए कोई नहीं था तब हाथ से छूट गई भूमि। आज मैं हूं। जितनी देख-भाल बन सके, कर देनी चाहिए। किट्टूवारियर के पास अपनी भी बहुत जमीन है।

'पनवल्ली करीब तीन नाषिका (एक नाषिका= डेढ़ किलोमीटर) दूरी पर है।' सेयतु ने बताया।

यहां लोगों के दो बताने पर दूरी साढ़े तीन निकलती है। चार-पांच मील का अंदाज लगा मन में। यहां चलने वाले अपनी ताकत के हिसाब से दूरी घटाते-बढ़ाते रहते हैं।

घाट से झाड़ियों और बीच-बीच में सिर उठाए बूढ़े वृक्षों की छाया में होकर चल पड़ा। दोनों ओर अंतहीन खेत। किनारे वन। बावली के प्रवाह के साथ-साथ पूरब की ओर बढ़ा।

नदी यहां खूब चौड़ी, पर गहराई कम। किनारों का बंधन तोड़ती हुई, खूब प्रसन्न-सी, नटखटपन छोड़कर सौम्य रूप में अपनी यात्रा पर वह अविराम गति से चलती जा रही है।

पनवल्ली निकट आते-आते खेतों की चौड़ाई घटने लगी। जंगल करीब आ गया।

दाईं-बाईं चली आती पहाड़ियां जहां मिलती हैं वहीं है पनवल्ली। गोपाल वारियर का खलिहान वहीं है। दूर से ही दिखलाई दे गया। केले के झुंडों के बीच फूस की एक छत।

नदी पार करनी है। फिर से चला। सड़क के किनारे फूस की झोंपड़ी दिखी। अकेले रहने वाले किसी कुरुमन (आदिवासी जाति) की होगी। पर सटकर निकलती सड़क को देखकर धारणा बदल गई। चाय की दुकान है। पोन्नानी वाले मुसलमान की चाय की दुकान। सेयतु ने यह निशानी बताई थी।

दुकान में चार इंच चौड़ाई की दो बेंचें है। एक तरफ सूखी पड़ी मेज पर चाय की केतली है। बरामदे में बेंत से लटकते केले के दो गुच्छे हैं।

जिससे मिलना था, वह तो दुकान में ही बैठा है। पनवल्ली तक जाने की जरूरत नहीं। ढाढस बंधा। बैठकर पसीना पोंछा। यहीं से बात करके लौटा जा सकता है।

गोपाल वारियर देखते ही बाहर निकले। पनवल्ली जाती सड़क के सिरे से ही पूछा, 'खलिहान चलते हैं न?'

'अरे, आपसे मिलना ही काफी है।'

'ऐसा नहीं हो सकता। इतनी दूर तक आए न? अब घर तक चले बिना नहीं जाने दूंगा। इतने दिनों से झांका तक भी नहीं है। कोई दुश्मनी तो हमारे बीच में है नहीं।'

उस दिन की बातचीत की ओर है संकेत। कोई वैर नहीं। कोई हानि पहुंचाने का इरादा नहीं। परस्पर शुभचिंतकों के बीच यह दूरी किसलिए!

दोपहर की कड़ी धूप। छतरी नहीं है। कम से कम मुझसे बीस साल तो बड़े होंगे ही। पर रीढ़ की हड्डी सीधी तनी है। आगे चलते उस दीर्घकाय व्यक्ति की छाया में कदम बढ़ाए।

'बुढ़ापे में यह धूप...'

'बुढ़ापा! यह देखा? कंधे पर पड़े अंगोछे के अगले छोर पर एक गांठ...'यह क्या, चिवड़ा? घर में कोई पीसने वाला नहीं भी हो तो आसामी औरतें तो हैं!'

'चिवड़ा! धान है, धान। दोपहर में कंजी बननी है तो इसे घर तक पहुंचाना होगा।' उन्होंने कहकहा लगाया।

ऐसा लगा कि चारों ओर खेतों में फैली पड़ी धूप इस हंसी को सुनकर कांप गई। दोनों हाथ झुलाते हुए उन्होंने कहा, 'ये जो सारे खेत दिख रहे हैं, सब मेरे हैं। मेरे अपने। जन्मभूमि है। इसका एक कण भी किसी को पट्टे पर नहीं दिया गया है।'

आश्चर्य हुआ। क्या इनका दिमाग कुछ हिला हुआ है?

उनकी ऊंची लंबी नाक पर पसीना झलक आया। धूप से मुंह लाल हो गया था। उन स्वच्छ आंखों की गहराई में क्या है? पागलपन नहीं। बुद्धि की अधिकता।

'सब कहूंगा, घबराओ मत। वहां तक तो पहुंचें।'

जलती धूप में, संकरी मेड़ पर बिना कुछ बोले, आगे-पीछे होकर चले।

फूस की छत वाला एक बड़ा घर। सामने खूब बड़ी नांद। ओखली वाला एक बड़ा कमरा। विशाल खलिहान। एक कोने में करीब दो परा (एक परा= दस किलो) बीज सूखने के लिए पड़े हैं। एक के ऊपर एक रखे फूस के चार-पांच गट्ठर।

वारियर ने कंधे से गठरी हटाई।

'लक्ष्मीकुट्टी...'

भीतर से एक बच्चे के रोने की आवाज आती रही।

'इस इलाके का पहला खलिहान है यह।'

कोयला लिपी दीवारें। सब तरफ शीशम के बड़े दरवाजे। सुंदर पायों वाला एक बड़ा तख्त बरामदे में पड़ा है। उस पर घर जैसा ही पुराना, कीचड़ के धब्बों से गंदा गद्दा अजगर की तरह सिकुड़ा पड़ा है। गद्दे पर से एक फटे कंबल की तह बनाकर जमीन पर बिछाई। अतिथि को निमंत्रण दिया, 'बैठो।'

'समय नहीं है। इस बार किट्टू वारियर के पट्टे का समय खत्म होने वाला है न? सोचता हूं, उसे वापस लेकर खुद खेती शुरू करें।'

'ठीक है। पर पहली बार घर आकर बिना बैठे कैसे जाएंगे?'

'लक्ष्मी कुट्टिए...'

'आती हूं।' बच्चा रोता ही रहा।

'यह बच्चा कौन है?'

'बड़े बेटे का।'

'तीन बेटे हैं न?'

'हां, हां।'

'खाली कॉफी पिला रही हूं। मिठास कम होने की वजह से रो रहा है।' बोलते-बोलते भीतर से देहरी पार करके निकलीं।

लक्ष्मी कुट्टी वारस्यार। सावित्री वारेस्यार की मामी। पीठ में कूबड़ है। झुककर चलते-चलते सिर उठाया तो नजर अपरिचित चेहरे पर पड़ी। घबराहट। संकोच। आंखें पोंछकर फिर ध्यान से देखा।

'हे पेरुमाल देव!'

'क्या हुआ?' पति बोला।

'पता ही नहीं था कि बरामदे में कोई और है।'

'कॉफी के लिए चीनी नहीं, यह बात क्या दूसरे नहीं जान सकते?'

उन्होंने पति को देखा। तीखी दृष्टि थी। आयु के उपयुक्त नहीं।

'यह ले, अपनी दावत तैयार कर।'

'कितना है?'

'एक कुलकम।'

'कितना दिया?'

'देने को क्या है, हाथ में?' फसल कटने पर ढाई कुलकम वापस करना होगा।'

'ढाई?'

'पोन्नानी वाला मुसलमान हमारी भलाई करने आकर बस गया है न यहां!'

वे भीतर के अंधकार में गायब हो गईं।

उस बड़े घर के अंदर से बच्चे के रोने की आवाज ऐसे सुनाई दे रही थी, जैसे किसी गुफा से आ रही हो।

'बेटा कहां है?'

'राघवन नायर से कोई पर्दा नहीं, इसीलिए कह रहा हूं...'

'वहां आपकी भांजी बताती थीं, खेती अच्छी चल रही है।'

'चल रही है। यह बात वह जानती है। वह कहानी बाद में बताऊंगा।'

'अगर पता होता इतनी परेशानी में हैं तो...'

'पता चलने पर कुछ भी करने की जरूरत नहीं।...'

'लक्ष्मी कुट्टी, पीने के लिए कुछ।'

'कॉफी दूं?'

हां-हां पर्याप्त होगा।

वे एक लोटे में कॉफी और दो काले पड़ गए गिलास लेकर आई। बिना किसी प्रयास के झुककर चलती हैं। भाव से लगता है कि जन्म से ही कूबड़ है।

बाहर पीले पड़े खेतों की ओर देखना भी मुश्किल है। नीला आकाश विस्फारित नेत्रों से अंगारे उगल रहा है।

खुले में फैली धूप के समान, केले के पत्तों पर हलचल मचाती हवा के समान, शिशु के अनवरत रुदन के समान वारियर का घन-गंभीर गूंजता स्वर सुनाई दिया।

उन दिनों चिन्नड़ी वारियम के लोग राज करते थे। उत्तर के कोट्टयम के राजा के शासनकाल में तिरुनेल्ली देवता की कुछ भूमि मिली। मंदिर भी। खाली भूमि के आकर्षण ने वन के इस मुंह में पहुंचा दिया। सब ओर घना जंगल। बीच में डरकर पंख समेटी-सी खुली भूमि। गुड़ाई कर खेती करते रहे आदिवासियों की फूस की झोपड़ियां। जंगल की सीमा पर घाटियों से आए, सफेद कपड़े पहने विचित्र लोगों को देख वे लोग घर-बार छोड़ जंगलों में भाग गए। पेड़ों की आड़ से झांक-झांककर देखते रहे। भय और संदेह से उमड़ती आंखें। उसी दिन इन लोगों के मन में शंका का विष घुला होगा। फिर आज तक उन लोगों ने किसी भी आगंतुक को सीधी नजर से नहीं देखा। बाहर से आए हुओं को देख किंचित

भी मुस्कान नहीं। चेहरे पर जरा भी खुशी नहीं।

इन लोगों को वश में करने के बाद ही मंदिर से मिली चौंसठ एकड़ भूमि। अच्छी मिट्टी। खूब फसल। एक नाषि़ (पाव भर) चावल पकाकर रोज दो बेला पूजा कर देनी है। बस, कर्तव्य पूरा हुआ।

'आज भी चौंसठ एकड़ है?'

'मामा के समय जो मिली उसमें से कुछ हाथ से छूट गई। नई कुछ अपनी बनाई। अब कुल छियासठ एकड़ है।'

विश्वास नहीं आता। छियासठ एकड़ भूमि का मालिक पोन्नानी वाले मुसलमान की दुकान से एक कुलकम धान दोपहर की कंजी के लिए सूद पर मांगके लाया है।

बड़ा बेटा आया। पिता जैसा। लंबा शरीर, सुंदर गोरा रंग। लाल मुख। बस नाक उतनी लंबी नहीं। आंखों में वह अज्ञात शक्ति भी नहीं। चारों ओर मंडराती चंचल दृष्टि। ऐसा लगा कि कायरता का, आलस का भाव चेहरे में छिपा हुआ है।

हाथ की छोटी-सी पुड़िया उसने धोती में छिपा ली।

बरामदे में न जाकर, पीछे से रसोई के दरवाजे की ओर चला गया।

'आते समय रास्ते में दिखा होगा?'

'नहीं तो।'

'घाट पर अरिपू की झाड़ियों की आड़ में लोगों की आवाजें नहीं सुनीं?'

'वह तो सुनी थीं। वहां तो माधवन और उसकी मंडली ताश का अड्डा जमाते हैं।'

'यह भी वहीं बैठता है।'

'...'

'अब ताश खेलने के बाद थककर लौटा है। जुआ। कहीं कर्जा लिया होगा तो आधा धान बेच देगा। खलिहान में सूखने को दस परा (एक परा=दस सेर) बीज पड़े थे। क्या तुम्हें लगता है कि चींटियों के खाने से वे दो परा भर रह जाएंगे?'

वारियर की छाती फूल उठी। गले की नसें कांपने लगीं। आवाज में और गूंज। पश्चिमी जंगल से लंबी, घनी, भयानक-सी छाया एक थके जंगली सांप की तरह धीरे-धीरे खेतों की ओर बढ़ी।

समय!

'आज पूरे दिन पुराण ही चलता रहेगा? खाना नहीं खाना है?'

'तैयार हो गया? लाओ। अभी हाथ धो लेते हैं।

'मैं चलूंगा, वारियर!'

'जितना खाना है, बस उसका एक हिस्सा। या ऐसा कुछ है कि कंजी नहीं पीते?'

तिरुनेल्ली के राजा के पास जब एक जून की कंजी नहीं, फिर मेरी बिसात क्या होगी?

'अब सामने वाले खेत की मैं खुद देख-भाल करता हूं।'

'बाकी खेत?'

'पट्टे पर दे दिए।'

'किसे? सुना, सब आसामियों को दे दिए।'

'इसी से तो तकदीर फूटी। मैं हल, बीज और वल्ली दे देता हूं। वह किसी तरह बीज बो देगा। फिर शक्ल भी देखने को न मिलेगी। कैसे खेत से फिर कुछ मिलेगा?'

दाहिनी ओर इशारा किया। बीच-बीच में ठूंठ हो गए पीले धान के पौधे। ऊपर नाला बह रहा है। जहां खेत की ओर मोड़ा गया था वहां धारा बंद हो गई है। कौन है इन सब पर ध्यान देने के लिए!

'जमींदारों ने कुछ जमीन हड़प ली है, बूढ़ा है गोपाल वारियर, बच्चे नालायक हैं। ये सब बातें बताने की जरूरत है? साल दर साल दस-बारह पोति धान पहुंच जाए तो भाग्य बखानो।'

बड़े खलिहान में, बीच में दरार पड़ी दीवार पर पीठ टेके बैठा रहा। कंजी पी, खूब गरम, गाढ़ी।

'सब्जी नहीं बनाई?'

पत्ते में लाकर वारस्यार संकोच के साथ बोलीं, 'सुना है कि इस बार अंबलकुन्न की फसल अच्छी हुई है।'

'बुरी नहीं।'

'अपने पास नहीं तो कहीं से कुछ न मिलेगा। यहां जिसके पास हो वही खा सकता है।' उन्होंने लंबी सांस छोड़ी।

'क्या इरादा है? दूसरे की संपत्ति छीन खाएं?' पति ने परिहास के स्वर में कहा।

'मिट्टी के माधो बने बैठे रहने पर हाथ खाली ही रहेगा।'

'मैंने तो एक बात कही।' उनकी आंखें भर आईं। छिपाने के लिए मुंह फेर लिया।

31

दल से बिछड़े हाथी की तरह, जंगली हाथी की तरह, जंगल को हिलाते हुए, मानो सारी पृथ्वी का नामोनिशां मिटा देंगे, कुछ ऐसे भाव में प्रलय जैसे बादल, गरजते हुए छा गए।

हवाओं ने दिशाओं के बंधन तोड़ दिए।

वर्षा...वर्षा...वर्षा।

ऐसा भी होता है।

किसी अज्ञात लोक से आवाजों का प्रवाह। गूंज। निरंतर प्रवाह। लगातार बरसता पानी। वन, देश, मनुष्य, पशु— सभी स्तब्ध हो गए।

ब्रह्मगिरि की पहाड़ियां, नरिनिरङ्गिमला, सागवान के जंगल सभी अप्रत्यक्ष हो गए।

केवल वर्षा की बूंदों की दीवारों से बना एकांत कारागार। हर खलिहान और हर झोपड़ी, जैसे एक जेल बन गए हों। हिलने का भी मौका न देते उस कारागार में मुक्ति की प्रतीक्षा में आलसी मनुष्य घुटनों के बल पड़े रहे। भूखे आसामी, भूखे पशु-पक्षी।

बारिश के कारण परस्पर कट गए लोग। निरंतर कोलाहल। वेग से बह रहे जंगली सोते का वह गर्जन। एक ही ताल के कोलाहल में विलीन होती अनेक तरह की आवाजें। सब आवाजों को निगलकर गरजती बहती बावली। अनजाने ही उस गर्जन को लोग कान लगाए सुनते बैठे रहे। कोई भी काम नहीं हो सकता। खाली बैठना, खाना और सोना। जमींदार लोग खेती शुरू करने की ताक में बैठे रहे।

झोंपड़ियों के छप्परों पर छाया पुआल बह गया। मेड़ें टूटकर खेत एक हो गए। उन पर नदी की धारा बहने लगी।

मुंह फैलाए खड़ी सबसे बड़ी विपत्ति— काम नहीं। वल्ली नहीं। भूख। जंगल जा नहीं सकते। नदी और भूमि एक समान। खेतों में मेड़ें नहीं। उन पर केकड़ों के छिद्र नहीं— सब कुछ गायब।

खेतों में, आंगन में, अहातों में रेंगती जोंकें!

बचे-खुचे खून को पीने के लिए वे बरामदों पर चढ़ रही हैं। भय और घृणा के साथ असहाय होकर वे देखते रहे। जो सामने पड़ीं कुचलकर मार दीं। फिर-फिर जीवित हो जाने वाले भूख के प्रतिरूप।

जिन जमींदारों की पुंजा अभी नहीं कटी थी, वे रोजाना के खर्च को सोच-सोचकर परेशान होने लगे।

मीठी कॉफी पी-पीकर, पान चबाते हुए वे अपने आवेग को रोककर बैठे रहे। सूद पर धान लेना है। बाहर निकलने की ताक में बैठे रहे।...

वारस्यार घी का दोशा और गरम कॉफी लेकर आई।

'आज का दिन सबसे बढ़िया है।'

वे खुश थीं।

'घर में बैठकर खाने वालों के लिए न?' यह बात उन्हें अच्छी न लगी। पर बात छोड़ी नहीं।—

'साल भर जाड़े-पाले और धूप में की गई मेहनत का फल।'

राघवन नायर चुप रहा। उधर पहाड़ों पर वर्षा के परदे के पीछे भूख में तड़पते आसामियों का चित्र मन में आया। जंगल के पशु-पक्षियों की तरह वे भी कुछ इकट्ठा नहीं करते।

'मैं आसामियों की बुरी हालत के बारे में सोच रहा था।'

'उन्हें क्या? आग जलाकर कपड़े ओढ़ पड़े सोते होंगे। उनको मेहनतकर खाने से ज्यादा आराम इसमें ही है।'

सचमुच?— कहा नहीं। बिन कहे ही जान गईं। अच्छा नहीं लगा। कॉफी लाने के लिए फिर से अंदर चली गईं।

'कुरुमन मुद्दन तो आया नहीं?' स्वगत बोला। गरम दोशा खुली हवा में ठंडा पड़ गया था। ऊपर घी जम गया।

'वह धोखा देने वालों में नहीं। कितने कोरम्ब (ताड़ के पत्तों से बनी टोपी) लाने को कहा है?'

'चार।'

'वल्ली पहले ही दे देना ठीक नहीं हुआ।'

ग़लती कहां हो गई, यह वे नहीं जानतीं, पर मुझे पता है। ठीक समय पर किट्टुवारियर ने मुद्दन को बीज लाने के बहाने तृश्शिलेरी भेज दिया। पर बात बीज की नहीं। यहां का काम रोकना है। मुद्दन आसामी नहीं। किसी के भी बुलाने पर जाएगा। पैसा मिले तो कोई भी काम कर देगा। किसी का भी कहना मानेगा। आखिरी आदेश ही मुख्य है। पहले के कर्तव्य को जल्दी ही भुला देगा।

'रोपाई के पूरा हो जाने के बाद ही वह आएगा।' जोसफ ने बताया था।

'वारियर की जमीन वहां है जहां बाढ़ का पानी नहीं भरता। पहले ही बुआई हो सकती है।'

कोरम्ब का काम किसी दूसरे लायक आदमी को देने में देरी हुई।

एक हफ्ता वैसे ही बीत गया। बिना रोक-टोक की बारिश। दुकान तक भी आदमी न जा सके। दुकान तक पहुंचने पर किसी कुरुमर को ढूंढ निकाला जा सकता है। ये दिन उनकी शुक्र दशा की विपत्ति वाले दिन होते हैं। टोकरियां, कोरम्ब, सूप आदि बनाकर ही खर्च चलाना होता है। शहद की एक बूंद भी न मिले, ऐसे दिन।

'दो और तीन के हिसाब में उन्हें कोई शिकायत तो नहीं थी।'

'पगार की यह व्यवस्था कब से शुरू हुई?'

'कहते हैं कि नाना के जमाने से।'

राघवन नायर ठठाकर हंस पड़ा।

नाना के, उनके भी परनाना के समय से चली व्यवस्था आज भी लागू है।

'उन दिनों धान का क्या दाम था?'

'एक गाड़ी धान के दो-ढाई सौ रुपए, बस। ऐसे भी दिन थे!' वारस्यार ने कहा।

'अब कितना है?'

पद्मनाभन चुप रहा।

'आठ सौ-हजार तक पहुंच गया है न?'

मौन।

'आसामियों को भी तो जीना है।'

'पुरानी पगार लें तो कोई बात नहीं।'

'नहीं तो?'

'देख लेंगे उनका जीना भी।'

'क्यों?'

'पनमरम से पणियर लोगों को बुला लेंगे।'

'कितने दिनों के लिए?' पूछते समय भी राघवन नायर के मन में विपत्ति की चिंता उठने लगी।

'जमीन खाली छोड़ दे सकते हैं?'

'कुछ दिन बाद वे भी पगार मांगेंगे, तब?'

आसामी लोग भी कोरम्ब बना लेते हैं। पर उतना अच्छा नहीं, जल्दी टूट जाता है। करियन जानता है या नहीं, पता करना चाहिए।

अखबार आए मुद्दत हुई। डाकिया इधर का रास्ता ही भूल गया है। अब कब आएगा वह? एकांत में सुनसान पड़ा मंदिर। पिंड का तर्पण करने और दर्शन करने आजकल कोई भी नहीं आता।

पेरुमाल देव बैठे तपस्या कर रहे हैं। मात्र नित्य-पूजा का चावल।

पापनाशिनी अति भयंकर बन कालिंदी से लड़ाई कर रही है। उसके अट्टहास की आवाज मूलप्पाटी की पहाड़ियों में गूंज उठती है।

एक महीना वैसे ही बीत गया। वर्षा कुछ मंद पड़ी।

कोरम्ब हो तो बाहर निकला जा सकता है।

बारिश के कारण खेत दिखते ही नहीं। बावली का गर्जन और स्पष्ट हो उठा। चूल्हे के ऊपर ताक पर इमली भरा हुआ एक पुराना कोरम्ब पड़ा है। सुबह की धुंध कम होने की प्रतीक्षा की।

रसोई में सीढ़ी के नीचे से दहलीज की ओर हटकर वारस्यार बोली, 'दीए के बिना क्या वहां कुछ दिखेगा?'

चढ़ते समय कालिख लगी ढिबरी रोती रही। अंधेरा। गीले फूस के बीच छत से रोशनी की एक किरण भी नहीं गिरती। खिड़कियां नहीं। अंधेरे में आंखों के देखने लायक होने

तक वह अंधेरे में घूरता रहा।

कटहल के पापड़, सड़े प्याज और मसालों की गंध नाक में भर गई।

पसीना आ गया। उत्तर की ओर कोई 'चीज' है। चूहों को रोकने के लिए बंद कर दिया है। इमली भरी कोरम्ब कौन-से कोने में है?

बढ़ा हाथ दीवार से जा टकराया। एक भिनभिनाहट। सुई जैसी कोई चीज हाथ में गड़ गई।

बर्रे!

वेदना ऊपरी हिस्से में भी फैल गई।

कुहनी के ऊपर और...और ऊपर।

एक नहीं हजारों बर्रें सिर में भिनभिनाती हुई उड़ीं।

'क्या हुआ? क्या हुआ?' नीचे, सीढ़ी के नीचे से।

बर्रें ने काटा?

'नहीं, कुछ नहीं।'

'बर्रें होगी। ध्यान से।'

चुभने वाली वेदना। कष्ट सहकर कोरम्ब मिल ही गया। इमली के भारी ढेर को एक ही हाथ से एक-एक कर पुरानी टोकरी में भर दिया।

बाहर प्रकाश में देखा। कोरम्ब में इधर-उधर एक-एक छेद।

इमली का रस टपकने से कोरम्ब भारी हो गया है।

बारिश कम होती गई। पर आकाश का चेहरा साफ नहीं हुआ। शाम फिर से शुरू हो जाएगी। कुछ भी हो, कल-परसों से जुताई शुरू कर देनी है। मिथुनम महीना आरंभ हुआ।

कोई छतरी लिए, पहाड़ चढ़कर आ रहा है। किट्टूवारियर का बेटा पद्मनाभन। ऐसे मौसम में वह क्यों आया?

अपने मुंह पर हंसी की एक रेखा चिपकाए वह बरामदे में आकर बैठ गया।

कोरम्ब आंगन में रखकर वह बरामदे में आया।

'क्या है पद्मनाभन, कोई खास बात?'

'कुछ नहीं, जरा वारस्यार से मिलना है।'

'कल से जुताई नहीं शुरू करनी?'

'अभी नहीं।'

आश्चर्य। आधा मिथुनम महीना बीतने पर भी जुताई नहीं होगी तो फिर कब होगी?

'बीज नहीं बोना? कम से कम कर्किटकम महीने तक बुआई हो जानी चाहिए न?'

'काम कैसे शुरू करें? अब यहां जी नहीं सकते।'

'ऐसा क्यों?'

'आसामी मनमानी पगार मांगते हैं।'

'मैं एक मानम ज्यादा देता हूं। यही कहना चाहते हो?'

'हूं...', 'वे कम पर न मानें तब?'

'तब की तब देखी जाएगी।'

'तब जंगल में शहद इकट्ठा करने वाले कुरुमर लोगों को ले आओगे, शायद?'

'कुछ भी करें। आप इन बातों...'

'बीच में न पड़ना। है न? जानता हूं।'

मैं एक परदेशी घाटी से यहां घुस आया हूं। आसामियों को रास्ते से भटका देता हूं। दो-तीन वल्ली से वे लोग तृप्त थे। जानवरों की तरह काम करते थे। ठीक से खाना न पाने वाले, भूखे आलसी पशु। उनके बीच मैंने अतृप्ति का बीज बोया। सोचा कि रोज दोपहर में झोंपड़ियों में जाने में जो समय नष्ट होता है, उसे बचाने के लिए खेतों में काम करने वालों को कंजी दे दी जाए। दोपहर को मिले कच्चे धान को आसामी औरतें जब तक कूटकर कंजी बनाएं, वे प्रतीक्षा करते रहते हैं। यह भ्रम है कि पगार ज्यादा होने पर वे काम भी ज्यादा करते हैं। आलस, विवेकहीनता आदि उनके खून में मिल गए हैं।

'मैं यहां से कुछ धान लेने आया हूं।' पद्मनाभन ने वारस्यार की ओर देखा।

मैं तो बाहरी आदमी हूं। राघवन आंगन में जाकर कोरम्ब ठीक करने लगा।

'इतनी जल्दी क्यों? मां कहती थी, पुंजा अच्छी हुई।'

'यहां कितना भी मिले, नाश ही है।'

'ऐसा क्यों?'

'पनमरम से पणियरों को बुलाने के बाद ही काम शुरू हो सकता है। तृश्शिलेरी का काम पूरा होने से पहले उन्हें लिवा भी नहीं सकते। खर्च के लिए पर्याप्त होना चाहिए न? देखना होगा कि फसल की कटाई कब तक होती है।'

'धान का हिसाब तुम मर्दों के बीच...'

वे भीतर से कॉफी लाईं।

लंबी चुप्पी।

आसमान पर घटा। अभी ही निकलना चाहिए। कोरम्ब इससे अच्छा और नहीं होगा। पद्मनाभन को धान चाहिए। मुझे बाहरी से पूछने में हिचक है। कुछ देर रुका। इंतजार किया।

उसने कुछ भी नहीं कहा।

बच्चे का अभिमान। अनुभवहीन, खुरदुरा गर्व।

बड़ा मैं हूं। मुझे ही झुकना चाहिए।

'कब तक धान चाहिए?'

रोपाई शुरू हो जाने के बाद मिलना काफी है। एक के बदले डेढ़ दे दूंगा।'

'हिसाब धान ले जाते समय लगा लेना।'

वह चला गया। पर उसकी बातें मन में घुमड़ती रहीं। पहले लगा कि उनमें सार नहीं है। दांत में फंसे कण की तरह उन्होंने मन की शांति नष्ट कर दी।

तिरुनेल्ली के खेतों में पणियरों द्वारा जुताई एक घटना होगी। सदियों से, पीढ़ियों से, इस मिट्टी में उगकर, घास-पात बन बड़े होकर, यहीं जीर्ण होकर यहां की मिट्टी में खाद बन जाते इन मनुष्यों की परंपरा को यहां से उखाड़ देने की किट्टूवारियर कोशिश करेगा तो क्या वह हो सकेगा? क्यों नहीं होगा? किट्टूवारियर के आसामी कुल आसामियों के तिहाई हैं। फिर भी वे चूं नहीं करेंगे। कोई भी आसामी शिकायत करना नहीं जानता। हल के बैलों से वह अधिक लायक है, यह ख्याल भी उसे नहीं आता।

दोपहर में भूख नहीं लगी। खाने लगा तो कुकुरमुत्ते की तरह फूला पड़ा हाथ। निर्जीव हो रहीं उंगलियां।

बिना खाए बैठे देखकर वारस्यार ने पूछा, 'दूसरों की बातों में हम क्यों सिर खपाएं?'

'ततैया ने हाथ काट खाया तो क्या यह दूसरे की बात है?'

तब जाकर उन्हें फूला हाथ दिखा।

'मैं जब पूछ रही थी, तब कहा कुछ नहीं।'

'कोई बड़ी बात नहीं है।'

'थोड़ी कच्ची हल्दी पीस देती तो जहर न चढ़ता।'

'जहर नहीं है। एक ततैया के काटने से इतनी व्याकुलता दिखलाएंगे तो आदमी का काटा कैसे सहेंगे?'

'आदमी तो दूसरे को खाता-पीता देखने पर ही जलता है।'

'होने दो।'

'इस हाथ से कैसे खाएंगे?'

'बस, एक चम्मच दे दो।

कांसे का एक चम्मच लाकर दिया। जिधर चाहो, उधर नहीं जाता। चावल जमीन पर बिखर गए।

'बच्चे होते तो हाथ से खिला देती।' वे स्वयं से जैसे बोलीं।'

'बच्चों का-सा मन तो नहीं, हमारा।'

बारिश रुक गई है, पर झोंपड़ियों के जगने का लक्षण नहीं। भीग गए छप्पर। घाट पर लकड़ियों पर अटके कूड़े-करकट के ढेर की तरह भीगी झोंपड़ियां। किसी भी घर से धुआं नहीं निकल रहा।

कीचड़दार काली चिकनी मिट्टी। पहले एक जुताई हो गई, अच्छा ही हुआ। वेल्लरोडी

का चेहरा बदल गया। एक स्वस्थ, सांवली लड़की की तरह शोभित। झाड़-झंखाड़ पीछे की ओर हट गया है।

वेल्लरोडी तक पहुंचते-पहुंचते चुप्पी गहराती गई। केवल कालिंदी की हलचल। कानों के लिए वही एक आवाज। टूटे बिलों को देखकर 'टर्र-टर्र' रोते मेंढक। फिर भी कैसी खामोशी। मनुष्य स्वर का अभाव। निर्जन!

अपना नया घर। कच्चे बांस की दृढ़ दीवारें। गोबर न लगा फर्श। यहां कब मनुष्य की गंध होगी? कौन रहेगा? फर्श पर गोबर की लिपाई होनी चाहिए न? बांस की दीवारों के दोनों ओर मिट्टी लगानी चाहिए। रोपाई जब तेजी पर चलेगी तब यहां कमर सीधी कर सकते हैं। इस बरामदे में लेटकर देखने पर नीचे वेल्लरोडी, चिन्नडी, कोल्लीमूला का दक्षिणी भाग नटुवंतार, पनकुट्टी तथा कुंबारकुन्नी सब दिखाई पड़ते हैं।

अंबलकुन्न से वेल्लरोडी तक का आना-जाना बच सकता है।

नए कोरम्ब बनवाने हैं। मुद्दन का यकीन नहीं कर सकते। जब तक वह आएगा तब तक जरूरत ही खत्म हो जाएगी। करियन और चात्तन एक-एक तैयार कर दें। एक के लिए दो वल्ली दे दूंगा। काम चलाना है, न? तीसरे दिन से बीजों को सींचना चाहिए। जुताई के लिए कुछ और दिन लग जाएंगे।

बादल बड़े-बड़े बाजों की तरह डैने फैलाकर सिर पर घूमने लगे। 'श्...श्...श्...शे।'

जंगलों को कंपाता हुआ पानी बरस पड़ा।

हजारों डमरुओं के एक साथ गूंजने की आवाज।

कोरम्ब पर बड़ी-बड़ी बूंदें पड़ने लगीं।

वहां तक पहुंचते-पहुंचते यह टूट जाएगा?

इमली से टपकती खट्टी बूंदें मुंह और ओठों पर पड़ीं।

मेड़ कीचड़ में डूब गई है। ऊपरी जमीन पर चढ़ जंगल के किनारे-किनारे बढ़ा। हवा में उड़ा फूस कीचड़ में फंसा पड़ा है।

नए घर के बरामदे में भी फूस फैला पड़ा है।

वर्षा चारों ओर तांडव कर रही है। ठंडी हवा। कच्ची मिट्टी और बांस की गंध। निर्जन झोंपड़ी अनाथ-सी पड़ी है। बारिश की ओट में खड़ी संध्या का करुण भाव।

टार्च नहीं ली थी। यहां तो एक मशाल भी नहीं मिलेगी।

दाहिनी ओर की झोपड़ियां वर्षा में बिल्कुल अदृश्य हो गईं। रोशनी नहीं, आवाज नहीं।

पैरों के नीचे से, जंगल के नीचे से, काले कीचड़ भरे खेतों में से घुसकर रात वर्षा के धुंधले, घने पर्दे के पार अपनी जगह बना रही है। बचना चाहिए।

इस गीली रात में यहां भागे बिना बचने का कोई उपाय नहीं।

भीग गई कोरम्ब दुगनी भारी हो गई है। पकड़े हुए तो क्या, ढो ही रहा था। चल

पड़ा। पानी की बड़ी-बड़ी बूंदें उस पर तेजी से नृत्य करने लगीं।

अंधकार एक पर्दे की तरह पीछे-पीछे। केवल कीचड़ से पैर निकालने की आती आवाज। चलने का एकमात्र प्रमाण। झींगुरों का रुदन।

मिथुनम महीने के बादलों का मन और वेल्लरोडी का चरित्र जाने बिना निकला हुआ मूर्ख मैं। पैरों के नीचे से प्रकाश की एक किरण निकलकर मेड़ पर आगे बढ़ आई। पलटकर देखा।

अंधेरे में जलती मशाल। कौन होगा? बूंदों के प्रहार से तड़प उठती ज्वालाएं।

ठिठक गया। इस पहर कौन कुंबारकुनी जाता है? भूख से विवश होकर सेयतु से धान मांगने जाता कोई आसामी होगा। कल वल्ली मिलने पर आज के एक मानम के लिए दो वापस करने होंगे। इस रात में बाहर निकलने का साहस कुरिच्चन रामन ही करेगा। उसके पास कार्तिक में संभाली शहद की एक बोतल है। उसके बदले दो मानम धान मिलने पर अहोभाग्य मानेगा।

'रा...मा!'

उसने पुकार नहीं सुनी। प्रकाश निकट आने तक प्रतीक्षा करता रहा।

'कहां जा रहे हो? कौन है, इस बारिश में इतनी रात को?'

जवाब नहीं।

रामन नहीं है। कोई भी हो, बोलता क्यों नहीं?

धुंधली रोशनी में नीली साड़ी से ढंका सिर। आसामी न होने के कारण और मलंकारी से डर न लगने के कारण चुपचाप सीधे चलती आ रही उस नारी आकृति को देखता रहा।

'कौन है?'

मौन। कुछ दूरी पर प्रकाश रुक गया। बारिश के कारण कुछ और थक गया प्रकाश।

'तू?' मारा का भीगा मुख।

'कहां जा रही है इस रात में?'

'कहीं नहीं।' उसने सिर हिलाया।

'मेरे लिए मशाल ला रही थी?'

'रात में खेत मत जाया करिए।'

'तूने मुझे कैसे देखा?'

वह हल्के से हंस पड़ी।

'कैसे लौटेगी?'

'मुझे मशाल नहीं चाहिए।'

'फिर?'

'झोंपड़ी पास में ही तो है।'

'नहीं-नहीं। मैं साथ आकर रास्ता दिखलाता हूं।' तब भी उसने सिर हिलाया।

तम्पुरान न आएं। वह संदेह से खड़ी रही, पर बारिश ने अधिक खड़े होने का अवसर नहीं दिया।

मुड़कर चल पड़ी। मशाल की रोशनी में केवल उसका सिर और उसे ढंके साड़ी का पल्लू ही दिख पा रहा था। लगा, उसकी चाल में पुराना नटखटपन लौट आया है। बेचारी!

इस लड़की को अब कौन सहारा देगा? उस दिन जब चुंडली उसे लेकर अरवनाषि में रहने आया था तब सोचा था कि मल्लन को यहां रोके रखने के लिए अब किसी और चीज की जरूरत नहीं। पर वह रस्सी से बिना बंधे बह गया।

बिना कुछ कहे, खेत की मेड़ छोड़, पहाड़ चढ़कर वह झोंपड़ी की ओर दौड़ गई।

फिर से पुराना रास्ता। निर्जन। घना अंधकार। मशाल ऊंची करके पकड़ी।

चल पड़ा।

सामने एक और रोशनी।

'तम्पुरान, इतनी रात में?' एलुतपोट्टन बोला।

'पोट्टन तू? अभी तक घर नहीं गया?'

'अरवनाषि में गद्दिका (एक प्रकार की मंत्र-पूजा) हो रही है।'

'इस मूसलाधार वर्षा में गद्दिका सुनने कौन गया होगा?'

'विपत्ति आने पर कौन समय-कुसमय देखेगा?

'कैसी विपत्ति? बारिश?'

'तलमला के खलिहान में पणियरों को लिवा ला रहे हैं।'

'उसके लिए अरवनाषि में गद्दिका?'

'तलमला में करने पर तोंदियल तम्पुरान क्रोध करेगा।'

वह दाहिनी ओर मुड़ गया।

शरीर के लक्षणों पर जमींदारों का नाम रखने वाली आसामियों की इस आदत पर हंसी आई। खाली जमींदार ही नहीं, अपने साथियों को भी वे नित नए विशेषण देते हैं।

पणियर लोगों को लाकर किट्टुवारियर इन लोगों को हरा पाएगा?

इनका ईश्वर यही खेत है। देह भी यही है। खेतों की रखवाली करते पेड़ और उनके नीचे के लंबे, गोल पत्थर इन्हें रोके रहते हैं। इस मिट्टी को छोड़कर वे कहां जाएंगे?

जंगल की इन लोगों पर अब कृपा रही नहीं। कुछ दिन बाद ये खेत भी इनका पेट नहीं भर सकेंगे। खेत तो नहीं बढ़ते। कुछ दिन बाद वे भी बुढ़ा जाएंगे। पहाड़ साफ होकर लोगों के घर बन जाते हैं। खाली पड़ी जमीनें गायब हो जाती हैं। बनावटी जंगलों में फंसे इन लोगों को कोई नहीं बचा सकता।

यहां की गड़बड़ियों का कारण मेरा आना है। जलनखोर कुछ भी कह सकते हैं। कालचक्र

कोई रोक नहीं सकता। ऐसे लोग जो एक नाषि धान का मूल्य भी नहीं समझते। अविश्वास की मूर्तियां हैं। सदियों से उनके अज्ञान में, दयनीयता में, आलस में कोई परिवर्तन नहीं। जागृति नहीं। किट्टुवारियर जैसे लोगों का विचार है कि इनमें कभी कोई जागरण नहीं होगा।

तिरुनेल्ली की छाती पणियर छू नहीं सकते। मन को आश्वासन देने का प्रयास किया। वर्षा का गर्जन नहीं सुना। कुछ भी सुनाई नहीं पड़ा। भूख से मरे, जले-से वे मुख। लालच से काम के दिनों की प्रतीक्षा करते चूल्हे के आगे घुटने टेके बैठे मनुष्य।

मैं सब कुछ अनदेखा क्यों नहीं कर देता? नमकीन मछली बेच सेयतु यहां जीवन बिताता है न? शिकारी जोसफ के मन में क्या उलझन है? सुनार बापु, गार्ड शंकुण्णि, गोपालन नाई, मिस्त्री वेलायुधन तथा पोन्नानी वाला मुसलमान यहां प्रवासी हैं।

उन सबके लिए तिरुनेल्ली मात्र एक सराय है। मेरे लिए?

मूसलाधार वर्षा। इस तरह की एक रात में संध्या-दीप के सामने बैठी मां। आंसुओं से चमकते शुष्क गाल। उस दिन मां क्या सोच रही थी? सोचती होगी कि बच्चों को एक जून की कंजी भी नहीं दे सकती। तिरुनेल्ली भी रो रही है। मेरे पिता नंबूदरी जैसे लोग भी यहां हैं। इन बच्चों का मां के प्रति मोह, अभिलाषाएं— सब कीचड़ के इस गड्ढे में दब जाएं, ऐसा सोचने वाले किट्टूवारियर की तरह मैं भी यहां जी सकता हूं।

एक निस्सार जीव मैं। क्या करूं? इस स्नेह को, धूल के उस कण को मन से बाहर निकाल फेंकने का कोई रास्ता भी नहीं दिखता। स्नेह का यह फंसा कण उस स्थान को घायल करता है। कष्ट पहुंचाता है।

मशाल कब की बुझ गई थी। बत्ती के बीच चिनगारी की मात्र एक आंख। वर्षा के आंसुओं की बूंदें धुंधली चांदनी में खेतों के गालों पर चमक रही हैं।

आसमान के एक कोने में फैलता प्रकाश। तीन चौथाई अंधकार है। काले बादल। उत्तर-पश्चिमी कोने में बादलों के बीच चांद का दुबला चेहरा। अमावसी के बाद के दो दिन बीत गए।

अगली पूर्णमासी के पहले मिट्टी तैयार हो जाएगी?

32

समय पर बुआई नहीं करनी। आसामियों को थोड़ा कड़ा करना था। किसानों की गति किस ओर है?

पोन्नानी से काम करने के लिए जिन लोगों को मूस ने बुलाया था, वह उनकी प्रतीक्षा में बैठा है। घाटी से आने वाले आसामियों से भी चौगुना अधिक उत्साह के साथ काम करेंगे। थोड़ी पगार ज्यादा देनी पड़ेगी तो क्या हुआ? सब कुछ ठीक से चलेगा। जब तक की आशा थी उससे पहले ही रोपाई का काम पूरा हो जाएगा।

तलमला वालों की खेती भी वैसे ही चल रही है। वे तृश्शिलेरी से पणियर लोगों के इंतजार में बैठे हैं।

मुझे किसी का इंतजार नहीं। आस-पास के इन खेतों में मिलने वाले धन से ही इस परिवार का खर्च चलाना है।

बुआई के बीज को गोबर के पानी में भिगो दिया गया। रोपाई के लिए खेत तैयार है।

आज एक हल अधिक हो तो अच्छा रहे। मूसत के गुमाश्ते रामन नायर से मिलना होगा।

खलिहान में पहुंचने से पहले ही कुंबारकुनी के घाट पर रामन नायर दिख गया। खेतों से बहकर आता पानी नदी में धक्कम-धक्की कर बह रहा है। किनारे पर एक चट्टान पर बैठे रामन नायर ने डोरी से नदी में लटकाई कोई चीज ऊपर खींची। एक नाषि (अनाज तौलने का पात्र), बांस की बनी। इसमें एक मानम धान तौला जा सकता है। बित्ता भर लंबाई, चौड़ाई कम। उस नाषि के किनारों को वह पत्थर पर रगड़ने लगा।

मुझे देख नहीं पाया है।

पानी में एक पत्थर फेंक दिया।

उसने मुड़कर देखा।

'आपको ही खोजता था।'

'क्या बात है?'

'उस दिन एक हल की बात की थी न?'

'हमने इरादा बदल दिया।' वह नाषि के किनारे फिर से रगड़ने लगा। घिस-घिसकर भीगा बांस पानी में मिलने लगा।

'पोन्नानी से मजदूर आ गए?'

'नहीं।'

'फिर?'

'सोचा, इस बार भी आसामियों से ही काम करवाएं।'

'वे आएंगे?'

'हम भी उन्हें चार और तीन के हिसाब से वल्ली देंगे।'

नाषि के किनारे खासे रगड़ गए।

'ऐसा नहीं होना चाहिए कि हमने नहीं दिया।'

'मूप्पन लोगों की आवाज में शक्ति नहीं।'

'क्या मूप्पन उनकी भूख मिटा देंगे? दस दिन भूखे रहने पर भी वे काम पर न आएं, ऐसा नहीं हो सकता।'

'यह तो ठीक है।' नाषि काफी रगड़ी जा चुकी। रामन नायर बहुत प्रयत्न लगाकर उठे।

'लो, देखो! ऐसे कुछ उपायों के बिना यहां जिया नहीं जा सकता।' छोटी हो गई नाषि को उठाकर दिखाया।

'उन्हें सिर्फ चार और तीन के हिसाब से ही वल्ली मिलनी चाहिए। नाषि का आकार कोई भी हो।'

अरे रामन नायर जैसा तू सोचता है, उतने मूर्ख नहीं हैं वे। कहा नहीं!

वल्ली घर ले जाकर ठीक तरह तौलने के बाद ही वे कुटाई करते हैं, फिर चाहे कितनी ही कम क्यों न हो। मुझ जैसे नए आदमी से यह बात छिपी नहीं। उनकी नाप अलग थी। जमींदारों की नाप अलग। कुछ समय से यह अंतर बढ़ता ही जाता है। यहां खयाल यह है कि वे लोग यह बात नहीं समझते?

एक दिन चुंडली कहता था, 'मूप्पन के लिए काक्कपुला पर धान तौलना है। एक कुलकम तथा आधा सेर और चाहिए।

'आधा सेर और किसलिए?'

'तभी हमारी नाषि में एक कुलकम पूरा होगा।'

एक कुलकम धान में आधे सेर की कमी। उसे पौन सेर या पूरा सेर करने की रामन नायर सोचता है। हर जगह स्वीकृत छल है। वेश, चाल-ढाल, भोजन और भाषा ही नहीं, नापने में भी जमींदार और आसामी के बीच अंतर है। एक स्वीकृत सत्य। शिकायत नहीं।

हल नहीं मिल सका। मलंकारी के मंदिर के नीचे के खेत की जुताई अधूरी रह गई। मलंकारी ने सेठ को दंड दिया था। क्या मुझे भी सजा देना चाहती है?

जंगल के किनारे, थोड़ा भीतर हटकर पाला के वृक्ष के नीचे विराजमान वह यहां घटने वाली बातें जानती है? आधी बरसात हो चुकने पर भी जुताई न हो पाने की बात? उसके बच्चों को काम न सौंप पनमरम से पणियरों और पोन्नानी के 'मलयालम वालों' को लाने की योजना बनाने की बात?

मलंकारी के मंदिर के नीचे की भूमि पहले कुरिच्चन लोगों की थी। बाकी रह गए लगान के कारण जमीन नीलाम हो गई। बरसों पहले अंबलकुन्न वालों ने वह भूमि ले ली। पर खेती नहीं चली। दूसरे खेतों से ही खर्च चलता था। जटाएं बढ़ाकर बूढ़ी हो चली उस भूमि की ओर किसी ने मुड़कर झांका तक नहीं। सब लोग उसे एक चुड़ैल की तरह मान

दूर ही रहते थे। कुरिच्चन की देवी द्वारा शापित भूमि। शाम के बाद यात्रा करने वाले राहगीर नीचे खेत की मेड़ से होकर जाते थे।

सेठ मलंकारी से नहीं डरता। मंदिर के आंगन तक फैली पड़ी जमीन को उसने वारियर से पट्टे पर ले लिया। जंगल की सफाई कर आग लगाई। गुड़ाई कर खेत बनाया। जिस दिन जुताई शुरू करनी थी, उसी दिन नांद में बंधा एक बैल खो गया। पिछले महीने मानंतवाडी से खरीदकर लाए गए भूरे बैलों के अच्छे जोड़े में से एक।

जहां चरवाहे भी जाने को तैयार न होते उन तंग रास्तों में से झाड़ियों को काट-काट कर सेठ बैल की खोज में गया। पीछे साथ के लिए मानी।

रास्ता रोके झुके खड़े कच्चे बांस को काट दिया। बांस झटके से दो टुकड़े हो गया। सेठ जमीन पर। आंखें बंद किए लुढ़कता रहा। खून से लथपथ मुंह। जंगल से उसे लाया गया। यह बताते हुए बूढ़े मानी की आंखों में इतने सालों बाद भी भय लहरें मारता है।

'मलंकारी को बावली से बाहर निकाल दूंगा।' ऐसी घोषणा करने वाला सेठ बाहर शहर के अस्पताल में दो महीने पड़ा रहा। लौटकर आया तो एक आंख नहीं। तब तक उसकी आंखों का तारा बड़ा बेटा भी चल बसा था। खाली तीन दिन का बुखार!

मलंकारी की ताकत! कुरिच्चन के स्वामित्व वाली भूमि!

हल नहीं मिला तो मुझे भी इस भूमि को छोड़ देना होगा?

काम जब भी पूरा होता हो, हो। खाली नहीं छोड़ना है। यहां के आसामी पूरी कोशिश करें तभी हरा सकेंगे।

आसामी लोग कोरम्ब से पूरा मुंह ढांपे मूसत के खेतों की ओर जा रहे थे।

बेचारे! क्या मैंने इन्हें काम पर जाने से रोका? अरुमुखन कहां है जिसने इन लोगों को मना किया था कि जब तक अंबलकुन्न वालों की तरह चार और तीन वल्ली न मिले, मत जाना। पूरा गांव बोलता है कि अरुमुखन और मैं मिलकर इन लोगों को बहकाते हैं। दोनों ही बाहर के हैं। अरुमुखन कुंबारकुनी के स्कूल में अध्यापक है। वह यहां के सारे आसामियों को जानता है। उसका कहना वे लोग मानते हैं। वह गांव चला गया तो मौका ताड़कर काम पर निकले हैं। भूख की पुकार। अभी युद्ध नहीं, अस्तित्व बनाए रखना ही प्रमुख है। एक राशन की दुकान खुलने की बात है। तिरुनेल्ली में, जहां इतने लोग रहते हैं, राशन की दुकान एलाट करवाने का अरुमुखन पूरा प्रयत्न कर रहा है। उसका पूछना है, कार्ड के अधिकारी बनने जा रहे आसामियों के लिए कुछ नहीं करना चाहिए? चाहिए। राशन कार्ड मिलने पर क्या वे चावल खरीदने के लिए नकद पैसा बनाने को वल्ली बेचेंगे? देखा जाएगा।

बिना आराम का दिन। काले कीचड़ से भरी मेड़ से होकर अंबलकुन्न और वेल्लरोडी के चक्कर। दोपहर के खाने की आदत ही खत्म हो गई। वारस्यार गर्म भात खूब कपड़ों

में बंधे डिब्बे में भरकर भिजवा देती हैं जिससे भात ठंडा न पड़े। पर बैठकर खाने के लिए समय भी तो चाहिए? नजर जरा भी चूकने पर धोखा देने को तैयार बैठे नौकर। सब कुछ फिर ठीक हो गया है। एक मानम वल्ली ज्यादा मिलने की वजह से नहीं। गोरे तम्पुरान भी साथ में काम कर रहे हैं, फिर टाल नहीं सकते।

आश्चर्य! तम्पुरान लोग खेत में उतरकर काम करेंगे? साथ में खड़े होंगे? घुटनों-घुटनों कीचड़ में उतरकर हल जोतेंगे?

जुताई हो गई।

रोपाई का काम चल रहा है।

बहुत मेहनत पड़ रही है, फिर भी आधा कर्किटकम महीना बीतने से पहले रोपाई पूरी कर देनी चाहिए। किसान लोग बैठे तपस्या करेंगे। यहां की मिट्टी का रौद्र रूप है। मानंतवाडी के ब्लॉक ऑफिस में अच्छे बीज मिल जाते हैं। प्रयोगशाला वाले खेतों की मृदु जलवायु वाले बीज इस मिट्टी के हाथ पड़ें तो बर्बादी ही होगी। ऊपर से जंगल से निकल आते अनेक तरह के कीट। तगड़ी मेहनत और अच्छे बीजों से ही यह मिट्टी खुश होती है। चेट्टुविलियन धान हो तो क्या कहना! ठीक समय में प्रसन्न हो जाए तो 'लोंड़ी' या 'पाललोंड़ी' (धान की एक किस्म) बोई जा सकती है।

गंधकशाला धान बोना तो अति साहस का काम होगा!

रोपाई का दिन शुरू हुआ। बहुत दिन से मन में नहाकर जरा आराम करने की इच्छा है। कुरिच्चन रामन काम बहुत करता है। दूसरों से भी करवाता है। उसे देख-देख सौंपकर खलिहान की ओर चला।

उधर से अरुमुखन नदी पार कर रहा है। चेहरे से लगता है जैसे मेरी ही तलाश है। 'पर क्यों?' अरे, मैंने अपने आसामियों को तीन और चार के हिसाब से वल्ली देने की सोची तो वह कोई लड़ाई की घोषणा नहीं थी। दूसरे दें या न दें, मुझे कोई जिद नहीं। मुझे इसमें मत घसीटो।

जब तक वह कुछ बोले, अरुमुखन ने कहा, 'लगता है कि मेरा जाने का समय आ गया।'

'क्या हुआ, मास्टर जी?'

'कोई बच्चा स्कूल नहीं आता।'

'खाली पेट कोई कैसे स्कूल जाए?'

'स्कूल में दूध और अप्पुमाव (एक व्यंजन) पहुंचाने के लिए जीप का खर्च पैंतीस रुपया मैं ही देता हूं।'

'अपने अफसर से कह नहीं सकते कि खर्च चलाने का कोई रास्ता बताए?'

'मानंतवाडी अफसर के यहां चक्कर लगाते-लगाते अब सीधे चला भी नहीं जाता।'

'अभी क्या हुआ?'

'दूध का पाउडर और बाकी चीजें पड़ी-पड़ी खराब हो जाती हैं। वे किसी तरह स्कूल तक तो पहुंचें?'

'हर साल बारिश में यही हालत् हो जाती है न?

'हां। इस बार इंसपेक्शन ओणम के पहले है।'

'अफसर यहां पहुंचेगा कैसे?'

'यह जानने की उन्हें क्या जरूरत? पता चलने पर जीप यहां से भिजवा देंगे। मन में आता है कि सब कुछ भाड़ में जाए। बच्चे कम होने पर लगता है, स्कूल बंद कर देंगे।

'स्कूल बंद कर देंगे!'

तिरुनेल्ली में स्कूल खुलवाने में कितने कष्ट सहे, कितने यत्न किए, अरुमुखन ने पूरा ब्योरा दिया। बाईस साल तक केवल उम्र के बल पर जीवित दुबला-पतला युवक। कितनी आयु होगी उसकी? तीस, चालीस? या सिर्फ पच्चीस के निकट? सांवला रंग। दुबले-पतले शरीर में बीतते वर्ष कोई भी परिवर्तन नहीं ला सके हैं। छोटा-सा हंसमुख चेहरा उम्र को भी जीत लेता है।

उसने आवेश के साथ कहा, 'मैंने और अप्पुमूस ने मिलकर इन्हें आदमियों की तरह स्कूल आना सिखाया।'

मन में आया— अरुमुख, तुम्हारा यह आवेश हमेशा बना रहे। लेकिन कहा कुछ और, 'स्कूल शुरू करने में अप्पुमूस को इतना उत्साह क्यों है? उसके बच्चे तो शहर में पढ़ते हैं।'

'इस स्कूल की हालत इतनी बिगड़ गई है कि बस आज या कल...इसीलिए।'

'आखिर उपाय क्या है?'

'मैं हार गया, राघवन नायर, हार गया। स्कूल खुलते समय स्लेट और किताबें स्कूल से ही दी जाती हैं। अध्यापक लोग अपनी ओर से एक-एक जोड़ी कुर्ता सिलवा देते हैं। बहुत गरीब बच्चों को वजीफा भी मिलता है। सबको दोपहर का खाना स्कूल की ओर से ही दिया जाता है।'

'बच्चों को स्कूल न भेजने का वे लोग कारण क्या बताते हैं?'

'कहते हैं कि पढ़ने के बाद फिर खेती के लायक नहीं रहेंगे। फिर जमींदार लोग सोचते हैं कि पढ़ाई करने पर वे उनके खिलाफ खड़े हो जाएंगे।'

'पेट में एक दाना नहीं, यह भी एक कारण हो सकता है।'

'क्या पता! आप कोशिश करेंगे तो वेल्लरोडी, अंबलकुन्न और अरवनाषि के बच्चे स्कूल आ सकते हैं।'

'देखूंगा।'

'यह काफी नहीं। इतने दिन के बाद स्कूल बंद हो जाए, बड़े दुख की बात है। आप जरा उनसे कहिए। वे आपका कहना मानेंगे।'

'राशन की दुकान का क्या हुआ?'

'कुछ नहीं हुआ। अप्पपारा में एलाट हो गई। चेट्टियों के बाग वालों का असर। फिर चावल और चीनी मंगवाना दुकानदार के लिए भी सुविधाजनक होगा।'

'इतनी तकलीफ सही...'

'मैं पहले ही जानता था। पर सोचा' अपनी तरफ से कोई कसर न हो।' स्कूल की बात फिर से याद दिलाकर वह चला गया।

कुछ भी हो, दो बार अंबलकुन्न की चढ़ाई नहीं चढ़ी जाती। वापस लौट पड़ा। मैं तो क्या, खुद ईश्वर भी कहें तो भी वे मानने वाले नहीं।

रोपाई का इंतजार है। काम शुरू हो जाने पर छोटे बच्चों को घरों में देखने-भालने वाला कौन है? गायों को कौन चराएगा? साल में बस एक बार काम मिलता है। बहुत काम। खाना मिलने वाले दिन। बच्चों को ऐसी कोई आशा नहीं कि नदी के घाट पर बने मकान के अंदर रखी डेस्कों पर बैठने पर इससे कुछ अच्छा मिल सकेगा। गर्मियों के लंबे दिनों में जंगल और गांव में इधर-उधर भटकते बच्चों के पास स्कूल जाते समय पहनने के लिए कपड़े हैं? दो-तीन साल में जो कुछ पढ़ा था, वह कब का भूल गया होगा। आमों तले और जंगलों में भटकते मनों को उस इमारत में आकर्षित करने लायक कोई चीज नहीं।

राघवन नायर को देखते ही वे घरों में घुस गए। सोचते हैं कि उसने और अरुमुखन ने मिलकर जो कुछ कहा था उसे भी नष्ट कर दिया। अरवनाषि के ज्यादातर आसामी तलमला में ही काम करने वाले हैं।

सीधे भी खड़े न हो पाने वाले लोग। कीचड़ भरे खेतों को घूरती लालची नजरें। हरी घास भी उगने के लिए कीचड़ जमा होने चाहिए। मेड़ें ऊंची करनी है।

कैसे ये लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजें?

लालच और शत्रुता के मूर्त भाव जो हैं! भाव जो अपरिपक्व आयु वालों को भी निगलने को तैयार हैं। घृणा की गहराई से झांकती दृष्टियां।

पता था कि कालन वेल्लरोडी में होगा, फिर भी पूछा, 'कालन है?' नंगे बच्चे सामने बरामदे में आग ताप रहे हैं।

औरतों ने सिर हिलाया। बोलीं नहीं। हैरानी से एक-दूसरे की ओर देखती रहीं। जल्दी-जल्दी वहां से लौट पड़ा। अरुमुखन से जो वायदा किया था, वह पूरा नहीं हो सकता।

थके पैरों को आगे खींचा।

रोपाई के लिए जितना तंबाकू और सुपारी आसामियों के लिए खरीदा था, सबका

सब खत्म हो गया। सेयतु की ही शरण लेनी है। जरूरत पड़ने पर वही अभय देता है।

वर्षा की बूंदें हल्की-हल्की पड़ रही हैं। दुकान के अहाते में पहुंचने के बाद ही बहुत-से लोग दिखे। स्कूल के बरामदे और सड़क पर इकट्ठा मैले-कुचैले लोग। बदरंग, फटे कपड़े। भूरे, बिना तेल लगे, घुंघराले बाल। पुरुष-स्त्रियां—सभी निस्तेज।

क्या!

मन में जैसे बादल गरज उठे।

पनमरम से आए पणियर।

अर्थहीन, लक्ष्यहीन घबराई दृष्टियां।

हर जगह पुरानेपन की असह्य गंध। अपनी दृष्टि भी नियंत्रित न कर सकने वाले लोग। शरीर के अभ्यास से यहां की फसल अच्छी बनाने जा रहे हैं।

पणियरों में ऐसे भी हैं जो अच्छा काम कर लेते हैं। रोपाई के समय तिरुनेल्ली में काम की फुर्सत उन्हें न होगी।

किट्टूवारियर का मोह है कि जंगली जीवों और बांबियों की लाल मिट्टी खाने वाले इन विशुद्ध प्राकृत लोगों से काम करवाकर अपना भंडार भरा जा सकता है।

बेचैनी भरी हलचल!

कुछ न कुछ खाकर प्राण बचाने की चिंता में आए लोग!

अपरिचित जगह।

खेतों के परे, अंधेरा भीगा जंगल उन्हें आश्वस्त करता है।

सफेद कपड़े पहने एक आदमी सेयतु की दुकान से बाहर निकला। यह इन लोगों जैसा ही लगता है न?

रुमाल से मुंह पोंछते हुए उन लोगों से वह उनकी भाषा में कुछ बोला।

ओह वही! चमयन! युवा आदिवासी, चुनाव में हार गया था।

उसके कहने के अनुसार ही, वे लोग चुपचाप तलमला की ओर चलने लगे। दो पैरों पर चलती दयनीय आकृतियां।

किट्टूवारियर की हवेली के छज्जे के नीचे विशाल खलिहान के भीतर वे अदृश्य होते गए।

सफेद कपड़े पहने चमयन की आंखें आखिरी आकृति के ओझल हो जाने तक वहीं लगी रहीं। स्वगत ही बोला, 'काम करके जी लें।'

उन्हें खलिहान में पहुंचाकर पद्मनाभन लौट आया। चमयन नेता को साथ लेकर रामन नायर के यहां चला गया। वहां चोरी की शराब बनती है।

सेयतु ने पूछा, 'समझे?'

'हां।'

'देखा?'

'हां।'

'पता है, यह लड़ाई किससे है?'

'जानता हूं।'

'सोचता है, चमयन की खूब खातिर करके इन लोगों से ज्यादा काम ले सकता है।'

चलो, हो ही गया। आशा का अंतिम तिनका पकड़े मन बचने की कोशिश कर रहा था। कैसा दुष्ट है किट्टू वारियर! परंपरा से इस मिट्टी में जड़ें जमाए इन लोगों को एक दिन में उखाड़ सकता है?

'अब? इसका अंत कहां?'

'चिंता न करिए। यहां यह नहीं होगा।'

'अब और क्या बचा, सेयतु?'

'देखिएगा। सुबह तो हो।'

सेयतु-सा आत्म-विश्वास मुझमें नहीं। आजकल उसकी दुकान में बिक्री नहीं होती। आसामियों को जब वल्ली मिलती है तभी जैसे उनकी फसल कटी हो। तब धान सुरक्षित रखने के लिए टोकरियां बनवाएगा। बीच-बीच में मानंतवाडी जाएगा। नमकीन मछली, सुपारी और तंबाकू सिर पर लद-लदकर पहुंचेंगे। सेयतु की चाय की दुकान से धुआं निकलने लगेगा। भीतर पहले से पकाए केले के गुच्छे लटकते रहेंगे।

तलम़ला में किट्टूवारियर इधर-उधर भाग रहे हैं। खलिहान की भीगी छत के ऊपर घना धुआं छा गया है। पणियर लोगों को चूल्हा बनाने के लिए पत्थर दिखा रहे हैं। चूल्हे बहुत बढ़ गए होंगे। धुआं काली घटाओं की तरह उठकर घना हो गया।

राघवन नायर ने सोचा :

गरीब तिरुनेल्ली में कुछ चूल्हे और हो। जिस हिसाब से लालच बढ़ रहा है, क्या ये लोग एक-दूसरे को काट खाने की हालत में पहुंच जाएंगे?

33

रात। आधी रात!

ढोल बजने की आवाज। टिन पर से बेसुरा स्वर। जग पड़ा। दिशा-भ्रम हो गया।

नहीं, सपना नहीं। जगने पर भी वह आवाज सुनाई पड़ रही है। एकांत रात दुःस्वप्न देखकर, अपस्वर सुनकर जग उठती है।

कहां से? पहरे के दिन नहीं। हाथी भगाने की आवाज नहीं। बाली फूट आए खेतों में ही वह घुसेगा। बीज बोने से पहले ढोल बजना अपशकुन है।

आवाज का केंद्र एक जगह रुकता नहीं। दक्षिण की ओर जा रहा है। पनवल्ली की ओर। कहां से आवाज आनी शुरू हुई थी? तब गहरी नींद थी।

तलमला से? उसके नीचे के खेतों से? ठंडे पानी से मुंह पर छींटे मारकर आंगन में आकर खड़ा हुआ। पानी बरस रहा है। अंधेरे में दूर होते जा रहे तालक्रम से आती एक आवाज।

टक, टक, टक – थप...थप...थप...

सामने का दरवाजा भीतर से खुला।

'कैसी आवाज है?'

'समझ में नहीं आता।'

'ऐसी रात में तो काक्कपुला वाले ढोल ही बजाते थे।'

'यह डमरुओं वाली आवाज नहीं।'

'सुबह पता चलेगा।'

आवाज धीमी पड़ते-पड़ते एक गूंज बनकर रात के अंधकार में लीन हो गई।

सीढ़ियों पर जा खड़ा हुआ। तलमला के खलिहान में एक-दो जलते-बुझते दीये दिखे। मशाल? फिर से अंधेरा। रात! बिना कोई आवाज किए पंख समेटे बैठी रात। उस गूंज की अंतिम लहरें रात की लंबी निःश्वास में ठहर गईं। वापस बरामदे में आया तो देखा, वारस्यार वहीं खड़ी हैं।

हिले बिना, अंधेरे में, बरामदे में सफेद कपड़े पहने खड़ी एक आकृति। एक क्षण के लिए मन में आया, यह वारस्यार नहीं। दामू वारियर की पत्नी नहीं। चार बच्चों की मां नहीं। रात के एकांत में अकेली पड़ गई एक औरत।

मन को झटका दिया। बोला, 'अभी सुबह होने का समय नहीं है। द्वार बंद कर दें।'

अंधेरे के हृदय से तड़पकर उठी एक लंबी सांस।

खूंटी से तौलिया लेकर बढ़ाया।

'सिर पोंछ लीजिए। पानी बरस रहा है न?'

'अरे नहीं।' बालों पर उंगली फेर ली।

'मेरे मन में एक शंका आई।'

'क्या?'

'पणियर लोग हैं क्या?'

'कोई भी हों।' उन्होंने मुख मोड़ लिया। आवाज में आए परिवर्तन को अनदेखा किया।

'उण्णि आज मानंतवाडी जाकर लौट आया?'

'आया। फिर बाहर गया, तब से वापस नहीं आया।'

'पूछना भूल गया था। शाम को नहीं दिखा।'

'हमें देखने का समय ही कहां है?' शिकायत का स्वर था। 'इस तरह काम के पीछे पड़ने पर बीमार पड़ने का और कौन कारण होगा?'

'मैं तो सोचता हूं कि रोपाई के बाद खाली बैठे-बैठे मन ऊब जाएगा।'

'जवानी के दिन नहीं हैं। आराम भी तो चाहिए।'

'रात को आराम। दिन में काम। उम्र का हिसाब मैं नहीं देखता। मन ही असली है, है न?'

'किसी और बात पर ध्यान नहीं, यही बात है।'

'अगर शरीर थक गया तो मन भी थक जाएगा। आलस आएगा। काम नहीं होगा।'

जूते उतारकर बाहर एक कोने में रखे। बरामदे में बिछे बिस्तर की ओर लौट चला।

'एक बार और नींद ले सकते हैं।'

कंबल ओढ़ लिया। कब उन्होंने भीतर से दरवाजा बंद किया? दामू वारियर की तालक्रम में सांस लेने की आवाज सुनता लेटा रहा।

जगने पर दिन चढ़ आया था।

खेत का काम आज रामन के ऊपर छोड़ा। बाल कटवाने हैं।

उसे कहां ढूंढूं?

अब कुछ आराम कर सकते हैं। बाली फूट आने तक सुख की नींद लें। विश्राम के दिन हैं। देखते ही देखते वे बीत जाएंगे।

'दरवाजे पर कोई...'

'कौन है, इस...' आधी बात निगल ली।

वारस्यार का नाराज चेहरा! क्या हुआ?

सोचने का समय नहीं। रात वाली आवाज की बात होगी।

जल्दी में पारिजात के फूलों से भरी सीढ़ियां उतरकर आया।

मूपन जोगी कपड़े के छोर को उंगलियों के बीच रगड़ते खड़ा है।

एलुतपोट्टन, तोलामारन, करिनील करियन, पहाड़ का मूपन वेल्ली, अंबलकुन्न का चेम्मक्कारन पुलयन— नीचे भी कुछ लोग खड़े हैं।

घबराहट भरे गंभीर चेहरे।

जोगी के पान से लाल हो आए दांत बाहर झलके। शब्द नहीं निकल पाए।

'क्या बात है, पोट्टन, सुबह ही...?'

'कुछ नहीं।' उसने गला खंखारा।

'जो कुछ कहना हो, कहो।'

'यह हमने कभी नहीं सोचा था।'

कहते हैं, यह कभी सोचा ही नहीं। पणियर लोगों को लाने की बात पर अमल भी हो जाएगा, इसका यकीन नहीं आता होगा।

'क्या किया जाए।'

'तम्पुरान...'

'क्या?'

'मारा को ब्याह लिया!'

'किस तम्पुरान ने?' हैरानी। अगर बात सच है तो गंभीर है। अंबलकुन्न की आसामी औरत। मेरे जाने बिना किसी तम्पुरान ने उससे शादी कर ली। क्या रामन नायर ने उसे ब्याह लिया?

कई आकार मन में उभर आए। दुबले-पतले, पीले मनुष्यों के आकार। आसामियों के सुदृढ़ शरीर, स्वास्थ्य या शक्ति से रहित आलसी युवा जिनके बदनों में रक्त का प्रसाद नहीं है। इनमें कौन मारा के भ्रम में पड़ गया?

मेरे अनजाने वेल्लरोडी में एक शादी!

शादी नहीं हो सकती। कोई गुप्त संबंध? ऐसा है तो ये लोग यहां क्यों आए हैं? मुझसे क्यों कहा? उसके नाम कोई दावा करेंगे क्या?

जो जगह बिल्कुल सूनी लगती थी वहां भी रोज कोई न कोई अद्भुत घटना घटती है। खाली ऊब और असंतोष है यहां। बाहर की दुनिया देखकर वापस लौट यहीं रहने को विवश जमींदारों की यह रोज की शिकायत है।

'तिरुनेल्ली मर चुकी। मरती जा रही है।' इसे ठीक कर यों कहें— 'घटनाओं से भरी जीवंत तिरुनेल्ली' तो ज्यादा ठीक होगा।

'पोट्टन ने आकर कहा कि...' वेल्ली ने बात साफ करने की कोशिश की।

'क्या?'

'अभी जो मैंने कहा...', पोट्टन बोला।

'क्या?'

'चुंडली की बेटी से गोरे तम्पुरान ने शादी कर ली।'

'मैं! मैंने? मैंने चुंडली की बेटी मारा को ब्याह लिया।'

सुबह उठते समय वारस्यार का चेहरा दिखा था।

हंसने का, झाड़ियों, जंगल और चट्टानों को हिला दे...ऐसा ठहाका मारने का मन किया। निष्कलंक मूर्तियां।

किंतु, चारों ओर जम आई खामोशी ने मन को बेचैन कर दिया। खलिहान के लोग इनके एक-एक शब्द पर कान लगाए बैठे होंगे। यही सोचते होंगे कि मैं ही दोषी हूं। नहीं

तो, सीधे कहने की हिम्मत न पड़ती।

हंसना भूल गया।

अब क्या चाहते हैं ये लोग? किसी ने बहकाया है। इससे क्या लाभ? उलझ जाती चिंताएं।

कुछ भी हो। खलिहान के सामने गांव के मुखियाओं का इस तरह आ खड़ा होना ठीक बात नहीं। पहले इन्हें वापस भेजना चाहिए।

'मैंने मारा से ब्याह नहीं किया। समझ गए? और फिर सुनो, ऐसा मेरा कोई इरादा भी नहीं है।'

वे स्तब्ध हो गए। एक-दूसरे को आंखें फाड़कर ताकने लगे। तम्पुरान की आंखों से दूर भागने का मन किया।

'अब सब जाकर अपना-अपना काम देखो।'

मुड़कर अंदर चला गया।

सुबह ही एक विनोद प्रसंग हुआ। क्या यह केवल विनोद है? नहीं! ये गंभीर चेहरे कहते हैं कि नहीं। विनोद के लिए वे लोग इतनी सुबह एक तम्पुरान के सामने जाने वाले नहीं।

मेरी बात पर उनको विश्वास नहीं हुआ। उनकी तो बात क्या, वारस्यार भी विश्वास न करेंगी।

पिछली रात की बातचीत।—

किसी की भी गलत धारणा को बदलने का मन नहीं। खुद-ब-खुद ठंडा पड़ जाएगा।

बरामदे में पैर रखते ही भीतर से सुनाई पड़ा, 'यह सब वारियम में नहीं चलने दूंगा। आसामी औरतों के साथ...'

'बेटा...' एक थप्पड़ की आवाज।

'मुझे हाथ नहीं लगाना। मैं तुम्हारा छोटा बच्चा नहीं।'

'इतनी तकलीफ क्यों उठाई?'

'बड़ा हो चुका न। अब कहने से क्या फायदा?'

'मैं जो कह रहा हूं...'

और अधिक ठहर नहीं सका। जूते की आहट सुनकर अंदर बहस बंद हो गई होगी। मुड़कर नहीं देखा।

वेल्लरोडी के नीचे कालिंदी के बांध पर पहुंचने के बाद ही कदम रोके। हांफने लगा। शरीर पर पसीना। पीछे उड़-उड़ आते शब्द। पकड़कर मसल दिए।

इस बांध का काम फिर से शुरू करना है। यहां नहीं, कुछ और ऊपर। वहां नदी की चौड़ाई कम है। आठ दिन का काम है। आठ तिया चौबीस वल्ली। नुकसान क्या है? पूरी

वेल्लरोडी में पुंजा बोई जा सकती है। पूवल की दो खेती छहों खेतों में हो सकती हैं।

जिस रास्ते से आया था, फिर से उस पर लौटने का मन नहीं किया। जंगल में पशुओं के रास्ते से होकर धीरे-धीरे चला। मन के विरुद्ध चाल। रास्ते पर पड़ी डालियां कूदकर पार कीं। कमान जैसे पड़े दो लट्ठों को नीचे से घुसकर पार किया। बीच में दलदल। अधिकतर दलदली इलाका। बिना कीचड़ में पैर गए पार नहीं कर सकते।

अदरख वाले खेतों को जाकर देखना है। बहुत प्यास लगी है। सोते का पानी भी पिया जा सकता है। याद आया कि आज सुबह की दिनचर्या नहीं, कॉफी तक नहीं पी।

रामन और उसके साथी खेतों में उतर चुके हैं। मेड़ पर खड़ा देखता रहा। मेड़ के बढ़ जाने को, नाले की गहराई अधिक हो जाने को, अच्छी तरह न घुलने वाली मिट्टी को, निचले खेत की बड़ी मेड़ की कमजोरी को, शायद उमड़ सकने वाली कालिंदी के घमंड को—सब को गलत ठहराता रहा, दोष देता रहा।

तम्पुरान के आज के विचित्र रवैये को वे लोग आंखें फाड़कर देखते रहे। रामन ने पूछ ही लिया :

'कल तम्पुरान सोए नहीं?'

'क्यों?'

'पणियर लोगों ने ढोल बजाकर जगह खाली कर दी। अब क्या चिंता?' कुरिच्चन रामन को जान-बूझकर थोड़ी आजादी दी हुई है।

जवाब देने को मन नहीं हुआ। खेत से लौट पड़ा। घाट पर सबसे ऊंचाई पर बना घर। बरामदे में पीछे की ओर लेट गया।

आम की डाली पर झूमता बर्रों का एक बड़ा छत्ता। हवा तेज चले तो आंगन के बीच ही टूटकर गिरेगा।

छायाएं पूरब की ओर हो गई। खाना खाने वारियम जाना चाहिए। चार बजने के बाद फिर वहां कोई इंतजार नहीं होगा।

तांत्रिक राघवन नायर।

चार बजने के बाद दूसरे का छुआ अन्न नहीं खाता।

कैसी-कैसी बदनामी की अफवाहें! दाढ़ी और बाल बढ़ाए हैं। गोपालन नाई नहीं है, इसलिए नहीं, मैं तांत्रिक हूं इसलिए।

मजदूरी पर गोपालन को रोज दो रुपया मिलता है। उसके घर का खर्च भी तो चलना चाहिए। खेती में उसका मन नहीं लगता। बंटाई में और भी भूमि मिल जाएगी। एक नाई को अपनी जीविका चलाने के लिए, गांव में जितने सिर चाहिए, उतने जमींदारों के सिर यहां नहीं हैं।

आसामियों के सिरों को वह हाथ भी नहीं लगाएगा। वे एक-दूसरे के बाल खुद काट

लेते हैं। सभ्य लोग बीस मील चलकर मानंतवाड़ी जाते हैं। बाल 'सेट' करवाएंगे। दूध की मोठी चाय पिएंगे। पैसा हो तो होटल में मछली के साथ भात खाएंगे।

नाई की समस्या—

किट्टूवारियर, नडुवंतार के कृष्ण मारार और गोपालन मूस आपस में बैठकर खुसपुसाए थे।

अपने खेत में, कुंबारकुनी में एक फूस की झोंपड़ी बनवा देने पर किट्टूवारियर राजी हो गए।

'आदमी कौन है?'

'पेरिस से मुत्तू को लिवा लाएंगे।'

'आएगा वह?'

'आएगा।'

'क्या जिम्मा इसका?'

'पेरिस में अब दो लोग हैं। एक बाहर निकलने की ताक में है।'

इस तरह 'मैं' और सेयतु पेरिस गए। पुलयन कोल्ली पार करनी है। नाणु डाकिए को भी साथ में लिया।

मुत्तू को लाने में सेयतु का वैसा मन नहीं। उसे पता है कि उसका काम मानंतवाडी गए बिना नहीं चलेगा। बागान के मैनेजर से चाय की पत्ती लेनी है। चाय की अच्छी पत्ती।

अप्पपारा पहुंचने पर नाणु ने विदा ली।

फूस की झोंपड़ी में नई राशन की दुकान। नया बोर्ड। दुकान में कोई ग्राहक नहीं। इतनी दूर चलकर आसामी लोग खरीदने आएंगे क्या?

दाहिनी ओर मुड़े। नए लगाए सागवान के जंगल से गुजरता तंग रास्ता। सागवान के अलावा और कुछ नहीं दिखता।

'जंगल की कटाई कर इस तरह सागवान लगाने से ही बारिश कम हो गई है।'

'ऐसा क्यों?'

'सागवान गरम होता है। पहले की वर्षा आपने देखी नहीं।'

'अभी क्या कम है?'

'और क्या! कभी तीन-तीन महीने तक पानी बरसता था।'

'और कटाई होगी। जंगल कम होता जाएगा। तिरुनेल्ली का मौसम भी बदल जाएगा। अभी ही गरमी न सह पाएं, ऐसी हालत है।'

सागवान के जंगल में दो मील का सफर। बागान का फाटक। फाटक के सामने, एस्टेट के बाहर लाइन में तीन दुकानें।

'यही है पेरिस।'

सागवान के जंगल और चाय के बागानों के बीच उन फूस के घरों को जिसने 'पे रिस' नाम दिया, उसकी मन में सराहना की। खूब दूरी से हाथी वाले जंगल को पार कर आए थके राहगीरों का स्वागत करने वाली एक चाय की दुकान, साथ ही कई तरह की फुटकर चीजें। एक ओर लोहार बैठता है। एक दुकान में देसी कपड़े की दस धोतियां लटक रही हैं। इन दोनों के बीच नाई की दुकान। दोनों में शेड है। अंदर एक-एक कुर्सी। पर्दे में ध ूल भरा एक शीशा लटक रहा है। रस्सी से लटकती लकड़ी की एक दराज में एक-एक कंघी। एक-एक टिन पाउडर का।

दोनों अपरिचित आगंतुकों के लंबे बाल, लंबी दाढ़ी। मुत्तू ने एक ही नजर में तिरुनेल्ली वालों को भांप लिया।

कानों तक फैली हंसी। बड़ी-बड़ी मूंछें। माथे में सिंदूर का टीका। गले में सोने की नकली माला।

उसने जल्दी-जल्दी कुर्सी की धूल झाड़ी। एक चीथड़े से कंघी पोंछ ली। उस्तरे की धार बैठाने लगा।

सेयतु बोला, 'इतनी तकलीफ मत करो। काम चाहिए?'

'कहां?'

'चाहिए?'

'चाहिए।' उसने बगल में झांका। प्रतिद्वंद्वी वहां नहीं है। उसे बागान में मजदूरों की झोंपड़ी मिल गई है। यही सोचता होगा कि मेरे लिए यहां दो-तीन सिर ही बचे हैं।

'कौन है दूसरा नाई, तुम्हारा दुश्मन?'

'मणिमला जोसफ।'

'जितना काम चाहिए, हम देंगे।'

'कहां?'

'तिरुनेल्ली में।'

तिरुनेल्ली नाम सुनकर चेहरा काला पड़ गया।

'वहां गोपालन मजदूरी के लिए क्यों गया?'

'उसका पैर किसी जगह थिर नहीं होता, इसलिए।'

'मुझे भी कपड़े धोने या बढ़ईगिरी का काम करना होगा?'

'नहीं, वह सब नहीं। तुम्हारा बोझ हमारे ऊपर है। इतना काफी है न?'

वह फिर से संदेह में खड़ा रहा।

'गोपालन की तरह घर-घर नहीं जाना होगा। स्वयं पहुंचेंगे। किट्टूवारियर की ओर से नदी किनारे एक फ्री सैलून है। एयर-कंडीशंड।'

'ओ, मैं आऊंगा।' उसने पर्दे से शीशा उठा लिया। कंघी, पाउडर के डिब्बे, उस्तरे

और पत्थर की धूल झाड़कर डोरी में बांध लिए।

कुरसी ले जाकर चाय की दुकान के सामने रख दी।

'इसे बापुट्टी मिस्तरी को दे देना।'

'आज ही आने की जरूरत नहीं। अभी घर तैयार नहीं हुआ।'

'मैं चलूंगा। जब तक घर बने, पेड़ के नीचे तो जगह होगी न?'

वह साथ में ही आया।

तीन दिन तक बहुत व्यस्त रहा। बहुत-बहुत काम, खाने का भी समय नहीं।

चौथे दिन आंखें खोलीं। पर खुलती नहीं। भूख, भयंकर भूख। नींद। सिर बोझिल हो गया है। दो गिलास अच्छी चाय पीनी चाहिए। नाणु वहां डाक लेकर आया हुआ था।

सेयतु बोला, 'दोपहर के बाद दूध कहां से आएगा?'

काली चाय सामने रख दी।

'यह क्या है?'

'काढ़ा नहीं है। चाय है, चाय। तिरुनेल्ली की चाय।'

'मजाक न करो, चाय दो।'

'अरे दोस्त, यहां यही है।'

वह उठकर चला गया। दोपहर तक पेड़ के नीचे, जहां बाल काटने की जगह बनाई थी, अंगोछा बिछाकर पीठ के बल पड़ा सोता रहा।

आसामी औरतों के कपड़े धोने की आवाज सुनकर जगा।

खाने के लिए अंबलकुन्न आया।

खाने के बाद डकार लेकर बोला, 'यह आखिरी खाना है यहां का।'

'क्या!'

'मैं जा रहा हूं, राघवन नायर!'

'क्यों?'

'कुछ नहीं। मन ऊब गया। लगता है कि अब महीने भर यहां कोई काम नहीं।'

'तिरुनेल्ली में तुझे कोई तकलीफ नहीं होगी।'

'रोज किसी की दया पर मैंने जीना नहीं सीखा।'

वेतन के रूप में मिले धान को सेयतु को बेचकर मुत्तू ने अपनी गांठ बांध ली।

अब?

एक दिन की यात्रा करके बाल कटवाने की जरूरत है?

पांच-आठ नाषिका चलकर पेरिस जाने की जरूरत है? जाने पर भी क्या जोसफ मिलेगा?

उठकर नदी के किनारे-किनारे चला। पानी में मुंह की छाया दिखी तो अजीब लगा—

तो अब मैं इन लोगों के बीच जटाधारी तांत्रिक बन गया। मानंतवाडी जाने की जरूरत नहीं पड़ती। खाली मैं ही तिरुनेल्ली में दाढ़ी वाला बनकर रहूंगा।

मौका मिले।

झरने के ऊपर दलदल के किनारे खिले गुलाबों को मारा एक क्षण देखती रही। तोड़ा नहीं। गोरे तम्पुरान को देखकर हट गई।

फूल कंटीली शाखाओं के बीच से झांकते रहे।

एक गुच्छा तोड़ लिया। घाटी के गुलाब जैसी सुगंध नहीं थी। जला देने वाली गंध थी।

हाथ में रखे रही। सुभद्रा को दे दूंगी।

कर्किटकम महीने की धूप थी। ऐसी धूप जिसमें हाथी का चमड़ा भी सूख जाए।

घाट पर उण्णि और किट्टूवारियर खड़े हैं। राघवन नायर उस तरफ ही बढ़ गया। किट्टू वारियर ने पूछा, 'इस कड़ी दुपहरी में?'

'वेल्लरोडी का बांध टूट गया था।'

'तुम्हें पता चला?'

'क्या?'

'मैंने पणियरों को वापस भेज दिया।'

'क्यों?'

'यहां के काम के लायक वे लोग नहीं हैं। इसके अलावा यह भी नहीं होना चाहिए कि मैंने एक महापाप किया।'

'समझा नहीं।'

'आसामियों का काम करना ही ठीक है। पर कुछ बोलकर उनमें विद्रोह मत भड़काना।'

'मैंने!'

'यह नहीं कि तुमने कुछ किया। मेरी बात सुनो। चार और तीन के हिसाब से क्या हम वल्ली रोजाना दे पाएंगे?'

'मैं ऐसा करता हूं। ज्यादा काम भी होता है।'

'यहां अगर दें भी तो काम में अंतर नहीं पड़ेगा।'

'क्या पता!'

'मैं यह बात कहने नहीं आया हूं।'

'फिर?'

'लेवी लगने जा रही है।'

'सुना।'

'धान मानंतवाडी जाकर बेचने पर हर गाड़ी धान का दाम कम से कम हजार मिलेगा।'

'इस बार हम कष्ट में नहीं पड़ेंगे। लेवी तुल जाने पर भी बाकी धान बेचा जा सकता है, है न?'

'कैसे बेच सकते हैं? आसामियों को पांच पोति करके कुंडल नहीं देना होगा।'

'तो क्या?'

'फिर बाकी क्या बचेगा? यही सोचता हूं।'

आवाज धीमी हो गई।

'इस साल से कुंडल की जगह नकद पैसा देंगे।'

'वे तैयार हो जाएंगे?'

'कैसे नहीं होंगे? सरकार हमें जितना दाम देगी उसी हिसाब से उन्हें पैसा दे देंगे।'

कुछ कहने को नहीं सूझा। सोच-विचार करने के बाद कहने की बात।

पहले जब पैसा नहीं था, तब उन्हें धान दिया जाता था। जब धान का दाम बढ़ गया तो कहते हैं, पैसा देंगे। जो कुछ भी तकलीफ हो, वही लोग उठाएं।

यहां चेट्टुविलियन के ब्लाक में हजार रुपए एक गट्ठर का दाम। गंधकशाला या कुरुवा हो तो बारह सौ, पंद्रह सौ

'कुछ बोले बिना ही जा रहे हो?'

'क्या कहें, रोपाई पूरा होने के पहले।'

'कोई बात नहीं। इतना ही कि पहले विचार पक्का कर लो।'

'सोचूंगा।'

'कोई कुछ भी कहे, हम एक हैं।'

'क्या कहते हैं? कौन?'

'उस मारा की बात सोच रहा था...'

'चुंडली की बेटी मारा मेरी रखैल है, यही?'

प्रहार की शक्ति अधिक हो गई? शर्मिंदा चेहरा। आंखें सांप-नेवले की तरह एक-दूसरे से उलझीं। पीछे हट गईं। बचाव किया।

'एक भूल तो कोई भी कर सकता है। यहां कौन उतना पवित्र है!'

'सब के साथ तो मुझे गिनना नहीं। चाहिए तो सबके सामने ही ब्याह लूंगा। पर, नहीं।'

'सावित्री रोकती है, शायद।' परिहास होता है।

'चाहिए तो उन्हें भी मना लूंगा। बस न?'

जवाब की प्रतीक्षा न करके पलट पड़ा। एक युवक की तरह मैं क्यों अविवेकी बन गया? सांप से बैर किया तो अच्छा हुआ?

पत्थरों पर पैर रख पहाड़ चढ़ते समय सुबह से हुई सारी घटनाओं को क्रम में रखा। लेन-देन का हिसाब करने का समय आखिरकार आ गया? जिस पौधे का बीज बोया था,

उस पर फल आने से पहले ही उसे हिसाब लगाकर छोड़ देना ठीक है? इस परिवार के साथ का संबंध। उण्णि बड़ा हो गया।

साल कितनी जल्दी बीत जाते हैं। यहां मैं अनचाहा होता जा रहा हूं क्या? सुबह उसके मुंह से कैसे बड़े आदमियों-से शब्द निकले थे!

किट्टू वारियर जलता है। मौका मिले तो अंबलकुन्न भी हड़प जाए। सीढ़ी दर सीढ़ी हिस्से में लेकर कब्जा करना चाहता था। अब तो उण्णि को भी वश में कर लिया है। मासूम लड़का।

समय नहीं आया। बहुत काम बाकी पड़े हैं। वेल्लरोडी के निकट वाली भूमि खाली करानी है। सालों पहले किसी ने वहां नीम के पेड़ लगाए थे। जटाएं बढ़ाए, सूखे और बिना सूखे पेड़ बूढ़े हो खड़े हैं।

कॉफी लगानी चाहिए। 'अरबी' किस्म हो तो अच्छा। जल्दी ही फलेगी।

बनाए घर को रहने योग्य बनाना है। किसी के काम ही आएगा। नजर ठीक तरह न पड़े तो वहां कोई काम न चलेगा।

फिर भी उसकी जबान पर वह बात आई न?

उंह! बच्चा!

'क्या है'? मेढक निगले सांप की तरह क्या करते हैं?'

'ओ, कुछ नहीं।...अच्छी तमाकू है?'

'वह सब मैं भिजवा दूंगा। आज आपकी तलाश में सब जगह छान मारी।'

'बात क्या है?'

'पणियर लोग ढोल बजाते हुए रातों-रात गांव छोड़ गए।'

'मुझे बताया गया है कि उन्हें वापस भेज दिया गया।'

'आप किट्टुवारियर को नहीं जानते।'

'समझ में आ रहा है।'

'वह बंटवारा करने जा रहा है।'

'इतनी जल्दी क्यों?'

'लेवी।' वह मेमने की रस्सी पकड़ उसे खींचता ले गया।

अब युद्ध चलेगा। कौन जीतेगा? मनुष्य या जंगल के पशु? चारों ओर शत्रु हैं। सच है, रक्षक ही भक्षक बनता है। उण्णि का मन किसी काम में नहीं लगता। जहां जरूरत हो वहां दिखाई भी न देगा। पहरा देने के लिए चाहे जितने भी लोग हों, पर्याप्त नहीं है। खलिहान के आसामियों को पहरे पर लगाने पर उन्हें पगार नहीं देनी होती है। वह उनका कर्तव्य है।

करियन, चात्तन और चुंडली। चुंडली का होना न होना एक ही बात है।

पैसा बिल्कुल नहीं बचा है। मोटा लट्ठे का कपड़ा खरीदना हे। सूती कपड़ों के चीथड़ों के सहारे इस वृश्चिक महीने की हवा आसामी कैसे सहेंगे? धनु महीने की सर्दी के क्रूर नाखूनों से मुक्ति मिलेगी? पुराने जमाने की तरह ये मोटा सूती कपड़ा अब नहीं पहनते। वल्लियूरकाव के उत्सव में बाजार से रंग-बिरंगी लुंगियां खरीद लेते हैं।

जूट के कंबल खरीद लें। सात-साढ़े सात तक का पड़ेगा। चार के लिए पैसा नहीं। सेयतु की ही शरण जाना होगा। उसके बिना, बिना उसके पता चले इस गांव में पत्ता भी नहीं खड़कता। सभी खबरों का मुख्य केंद्र वह और उसकी दुकान है।

कन्नी महीने से गरीबी के दिन शुरू हो गए हैं। वही है एकमात्र शरण। दो ढेर धान उसे देना है। अब खाली धान से काम नहीं चलेगा। वेल्लरोडी की खाली पड़ी सरकारी भूमि में बोए अदरख भी देने होंगे।

किट्टूवारियर के धान की बालियां बढ़ने ही लगी हैं। अपने पनकुट्टी और नटुवंतार के खेतों की फसल कटने में अभी डेढ़ महीना लग जाएगा।

पकती फसल किट्टुवारियर से सहन नहीं होती होगी।

आधी रात को ढोल बजाकर गांव छोड़ गए पणियर लोगों को कोई भी ताकत रोक नहीं सकी। चांदनी और घने अंधकार में पड़कर सोने का जिन्हें अभ्यास है, वे वारियर के बड़े खलिहान को देखकर डर गए होंगे। उस आलस भरे, बिना काम के जीवन ने उन्हें फिर आकर्षित किया। जिस मिट्टी में पैदा हुए, वहां भूखे रहने पर भी जाने का लालच। पराई तिरुनेल्ली को उन्होंने मन से छोड़ दिया।

ढोल बजाके, सो रही रात को जगाकर उन्होंने जगह खाली कर दी।

वारियर चालाक है। आवाज़ सुनी होगी। पता चल गया होगा। प्राकृत मनुष्यों के समूह को जाने से कैसे रोक पाएगा? बल-प्रयोग करने पर भी उनसे काम कैसे करवा सकेगा?

उस रात जब सो नहीं पाया होगा तभी आसामियों को मनाने की तरकीब सोची होगी।

सुबह होने पर उन्हें बुला लिया। ढोल की आवाज उन लोगों ने भी सुनी थी। इंतजार ही कर रहे थे। भूख, भूख!

कोई शिकायत – दावा नहीं।

तीन की जगह दो ही मानम वल्ली मिल जाए, तो भी काफी है, ऐसी हालत में पहुंच गए थे। भूख ने इस हालत में पहुंचाया। उनका गुस्सा बिना काम किए एक जून की कंजी पीकर लौट गए पणियर लोगों पर था।

'सीख मिल गई न सबको?' खाली उनको शिक्षा देने के लिए मात्र किट्टूवारियर ने पणियर लोगों को बुलाया था। ऐसा अर्थ उसके शब्दों से ध्वनित हुआ।

उन्होंने सिर झुका लिया। हल और बैलों को लेकर खेतों में गए।

शाम को मर्दों और औरतों को दो तथा एक मानम के हिसाब से वल्ली मिली। बाकी कटाई के समय।...

सेयतु की दुकान में एलुतपोट्टन ने सब कुछ विस्तार से बताया। अपने कपड़े के छोर पर बंधे दो मानम धान में आधा बेचकर एक गिलास चाय पी। चार नमकीन मछलियां खरीदीं। दो मिर्च और मुट्ठी भर नमक भी। शेष एक मानम धान दिखाते हुए वह खुद से बोला, 'इसका क्या करना है, एक नाषि धान भी नहीं। पूरी गृहस्थी चलानी है।'

तिरुनेल्ली पेरुमाल के पुत्तरडंड उत्सव[1] या वल्लियूरम्मा के उत्सव तक इन लोगों के पेट भरने वाला कौन है?

तो, किट्टू वारियर की जीत हो गई। जीतकर विराजमान हैं। जो लोग काम की तलाश में तृश्शिलेरी और मानंतवाडी चले गए थे, वापस लौट आए।

एक जून की कंजी दे देने पर यहां जरूरत पड़ने पर कोई भी काम के लिए मिल जाएगा।

काम के सिवा, सामने आई किसी भी चीज को खा लेने के सिवा ये लोग कुछ भी नहीं जानते। मैं जो एक मानम वल्ली अधिक देता था, उसे विष ही समझते होंगे।

तांत्रिक...जिसने मावो वाले मानी को कद्दू चुराने पर मंत्र पढ़कर मार दिया।

आसामियों की ओर देखकर हंसने वाले, उनकी कुशल-क्षेम पूछने वाले इस तम्पुरान के भीतर कोई कुटिल तंत्र है क्या?

एक दिन काम न होने पर चात्तन भूखा पड़ा था। सह न पाने के कारण उसे बुलाया।

सूप में धान देखते ही वह घबरा गया। उस दिन उसकी दृष्टि में जो अविश्वास का भाव था, वह जीवन में नहीं भुला पाऊंगा। इन लोगों के लिए कुछ करने की बात सोचना निरा मोह है।

अपने ऊपर जो बोझ उठा लिया था, उसे कहीं उतारकर रख देना है। किसी सुरक्षित

---

1. फसल कटने के बाद इस दिन नए चावल का तिरुनेल्ली पेरुमाल को भोग लगाया जाता है।

स्थान पर।

मृग-मरीचिकाएं रेगिस्तान में ही हैं। पापनाशिनी के इस प्रदेश को शांति का स्रोत माना था। यहां तो पाप के बीजों से अंकुर फूटते हैं। अतृप्ति, द्वेष, परस्पर वैर।....

मुख्य समस्या पहरे की है।

पहली बालियों में फूट आए धान मोटे हैं। दूसरे खेतों में अभी बाली नहीं आई। जानवरों के आक्रमण का लक्ष्य केवल अपना खेत ही होगा।

मचान बन गए। दलदली भूमि पर एक। पार्श्वों में दो-दो। पहले तो सोचा था कि घाट पर दो मचानों की जरूरत नहीं है।

'भूख से पेट जलने पर वे कालिंदी, बावली तो क्या, समुद्र भी तैर जाएंगे।' दामू वारियर ने चेतावनी दी।

करियन, चात्तन, रामन और चुंडली। चुंडली आया नहीं। उसकी जगह एक मचान पर उण्णि बैठ जाए।

जल्दी से खाना खाया। मानंतवाडी से सोने की तरह सहेजकर लाए पटाखों का लिफाफा उठा लिया।

शाम डूबने को है।

वृश्चिक की हवा। हड्डियों के भीतर घुस जाती सर्दी। हवा अपनी अनगिनत बांहें फैलाकर मनुष्यों का खून पी रही है। इस बार उसने सुबह से ही अपना शिकार शुरू कर दिया था।

'पहरा देने वालों को खाना देना होगा।'

वारस्यार को हैरानी हुई। पिछले सालों में कभी नहीं दिया गया। उनकी दृष्टि में प्रश्न था।

तब भंडार में धान नहीं था। फिर हाथियों वाली खतरनाक वेल्लरोडी में पहरा नहीं था। भूख और डर मिलकर किसी भी रखवाले को वहां से भगा सकते हैं।

चार-चार नौकरों का भात। इतना आसान नहीं। दो सेर चावल पकाना होगा। सब्जी के लिए कुछ नहीं।

कुछ नहीं बोला।

सुबह का भात दे देते हैं। हरी मिर्च और नमक से काम चला लेंगे।

उन लोगों को ओखली वाले कमरे में, अंधेरे में बैठ खाना खाते देख राघवन नायर ने बरामदे से दीया ले जाकर पास में रख दिया। उस समय भी अविश्वास भरी नजरें थीं। कभी न बदलने वाली नजरें।

'इस बार पहरा पूरा होने तक खाना देना चाहिए।'

'उनके पेट भरे जा सकते हैं?'

'कितना देने पर भर जाएंगे?'

'अरे, चाहे जितना भी हो, कभी नहीं भरेंगे।'

'दो दिन भरपेट खा लेने पर फिर हमारे जितना ही खाएंगे।'

'देखेंगे।'

'देख लेना। एक पेट भरने तक ही तो खाएंगे न? खाने दें।'

'बर्बादी ही होगी।'

'कोई बर्बादी नहीं। मैं देख लूंगा।'

भंडारघर से एक-एक कंबल निकाल कर देते समय उनकी आंखों में फिर शंका उठी।

'मोटे लट्ठे की जगह ये खरीदे हैं।'

'इन्हें ओढ़ने पर नींद आ जाएगी, तम्पुरान!'

'न ओढ़ने पर नहीं आएगी?'

'नहीं।'

'तो मत लो।'

'हम सुबह ले लेंगे।'

'अच्छा...'

अब कौन मूर्ख बना? वारस्यार की परिहास भरी हंसी सुनाई पड़ी। पटाखे की पुड़िया उन लोगों को दे दी।

गुलेल से एक पत्थर फेंककर देखा। पत्थर एक जंगली जानवर की तरह गुर्राता, भिनभिनाता हुआ गुंडिका में कहीं जंगली पेड़ों के बीच जा गिरा। भंडार-घर के नीचे खड़े होकर हाथी को भगाने वाला पटाखा छोड़ा। खड़-खड़ की आवाज से शाम कांप गई।

'नाले के पास आग लगाई?'

'हां।'

'घाट पर?'

'हां।'

'दलदल वाले मचान पर?'

'हां।'

रसोई की ओर मुड़कर, 'कॉफी तैयार हुई?'

'लाती हूं।'

गरम कॉफी वे लालच से पीने लगे। राघवन नायर को भी स्वाद आया।

'तम्पुरान मत पीजिए, यह खाली कॉफी है।'

कॉफी के छिलके पीसकर बनाई बिना चीनी की कॉफी।

'तुम लोग चलो। मैं आता हूं। मेरे आने तक कोई एक दलदल के मचान पर बैठा

रहे।'

घबराई नजरें एक-दूसरे से मिलीं।

'डर है?'

जवाब नहीं।

'चुंडली कहां है?'

'नहीं आएगा।' चात्तन बोला।

'क्यों नहीं आएगा?'

'तृश्शिलेरी जा रहा है।—'

'वहां क्या है?'

'रजस्वला होने का उत्सव।'

'मर्द लोग जाते हैं रजस्वला में?'

वे बिना आवाज किए हंसे। कंबलों की ओर आग्रहपूर्वक देखते रहे।

देख लिया कि बैलों को ठीक से बांध दिया गया है या नहीं।

रसोई के बरामदे में रखी गरम चावल की मांड़ गायों के सामने रख दी। कुछ फूस और डाल दिया।

बाहर निकला। वारस्यार ने पूछा, 'कंबल?'

'नहीं।'

'उन लोगों की तो आदत है।'

'किसी की भी आदत बन जाएगी।'

'वृश्चिकम की हवा है।'

'कहां तक कंबल ढोएंगे। उण्णि कहां है?'

'उसने खाना नहीं खाया। कहता है, पेट खराब है।'

'फिर?'

'दवा खरीदने पश्चिम की ओर निकल गया।'

'वैद्य तो अपने गांव चला गया है न?'

'उसे पता न होगा।'

'हूं...!'

चुंडली का मचान खाली ही पड़ जाएगा।

उण्णि के आने की संभावना नहीं। पेट में दर्द है उण्णि के। रखवाली के लिए मचान पर जाना मां का मन न सहेगा।

विचारों की लगाम पकड़ी। बच्चा, विवेक नहीं। जब जरूरत पड़ेगी, खुद सीख जाएगा।

वह वैद्य के यहां नहीं गया है। गया है रामन नायर की झोंपड़ी में। जोसफ है वहां।

पेट के दर्द का काढ़ा वह वहां से लेगा। वारियम में जहां मंदिर की देख-भाल होती है, वह दवा नहीं लाई जा सकती।

नदी के किनारे होकर चला।

रामन को पान देना है। उस पर पूरा यकीन किया जा सकता है। बाई तरफ उसकी बंटाई वाली भूमि की फसल है, दाहिनी ओर अपनी।

हाथी के पहरे के लिए ही रामन ने मचान बनाया है। रामन मजबूत आदमी है। दो दिन का काम किया है। चार बड़े-बड़े बांस काटकर लाया। छह आदमियों की ऊंचाई में एक मचान...

नदी के उस पार कुरिच्चन केलन के खेत के किनारे से धुआं निकल रहा है।

'पहले फसल किसकी कटेगी, राघवन नायर की या मेरी?'

'देख लेंगे।'

'हां, देख लेंगे।'

वह आसामियों को नहीं रखता। पत्नी, बच्चे, भांजे—सब खेत पर आ जाएंगे। काम जल्दी ही पूरा हो जाता है।...

ओस में नहाई, हल्की चांदनी की छप्पड़ पहने खड़ी वन रूपी सुंदरी। कठोर सौंदर्य।

चलने से बदन का ताप बढ़ जाता है। पैदल चलना ही सुखद है।

बांस के जंगल की आड़ से घूरती छोटी गोल-गोल आंखें।

अचानक बाईं ओर से खर्राटों की आवाज आई— अप्पू मारार के खेत से। छोटा खेत। एक मचान। मचान पर रहने वाला...

टार्च जलाई।

चादर ओढ़े सोता पड़ा है। पानी निकालने वाले पंप जैसे तालक्रम में बजते खर्राटे।

वह कौन?

अप्पू मारार की एकमात्र संपत्ति। फारेस्ट बंगले के अस्तबल के पास से निकलता झरना यहां खत्म होता है। हाथी का रास्ता।

जगा दें!

कई बार टार्च जलाई। हिला नहीं। पास जाकर चादर खींच ली।

वह मरा पड़ा है।

एक ठहाका उठा। एक कदम अनजाने ही पीछे हट गया।

फिर हंसी सुनाई पड़ी।

'तुम'

'डर गए?'

'अच्छा किया।'

'तुम लोग कहा करते थे न?'

'क्या?'

'यही कि तिरुवितांकूर वालों का बस तिरुनेल्ली के सूअरों के सामने नहीं चलेगा।'

'हां।'

'आदमी का खर्राटा वह पहचान लेगा।'

'कल वह मेरे पैरों के पास आकर खाने लगा।'

'फिर?'

'कल जो मिला, बेच दिया?'

'छोटा था। पूरा न पड़ा। काटकर बांटने पर शिकायत करने वाले बहुत होते।'

'जिनकी शिकायत रह गई, आज दूर कर देना।'

'कोई जरूरत हो तो मैं यहीं हूं।'

'कल तक दो गोलियां ठीक कर देना।'

'रेडी।'

गोपालन मूसत के मचान से गीत या खर्राटे— कोई आवाज नहीं आती।

मचान पर कोई बैठा है।

'कौन है वह? कुरुमन?'

जवाब नहीं आया। संदेह हुआ।केवल जोसफ है। हाथ के बांस से छुआ। एक बार और। कपड़ा हट गया। सीधे खड़ा कागभगोड़ा।

गोपालन मूस मानंतवाडी गया होगा। कीटनाशक दवाई खरीदने। कुरुमन रात में घूमने चला गया होगा। लाठी से कपड़े को व्यवस्थित कर दिया।

रामन हाथी का पहरा कैसे दे रहा है, देख लें। नीचे आकर खड़ा हुआ। कूक कर जोर से आवाज निकाली। ऊपर से कोई आवाज नहीं। राक्षस जैसा, अपने पैरों को दूर-दूर फैलाए खड़ा बड़ा-सा मचान। जिस वृक्ष से वह सटकर खड़ा है, उसकी भीमाकार छाया।

नीचे कालिंदी के किनारे से हवा में गुलेल घुमाते हुए रामन आया।

दोनों ने मेड़ पर बैठकर पान खाए।

धुआं निकलती अंगीठी में ओस से भीगा पुआल पड़ा है। थोड़ी मिट्टी डाल दी। धुआं नर हाथी का आकार लेकर ऊंचे उठ आया।

टूटे बांध पर कालिंदी का जल टकराके छितरा रहा है। दूर से आते मचान-गीत के स्वर।

'रामन को इस तरह अकेले बैठने में डर नहीं लगता, है न?'

'डर, मुझे? जंगल कुरिच्चन रामन का घर है!'

'तुमने धनुष चलाना नहीं सीखा?'

उसका सिर झुक गया।

'जब सीखने की उम्र थी, तब तविंजाल के चाय के बागान में काम करता था।'

'घर की जमीन नहीं?'

'हमारे घराने में एक सौ दस लोग थे। बंटने पर एक टुकड़ा मिला, वह भी अप्पा के और बच्चे नहीं थे, इसलिए।'

'फिर?'

'बड़े भाइयों को कंदी लगाने दी।'

'तुमने क्यों नहीं लगाई?'

'पैसा नहीं।'

'अब?'

'उन लोगों ने धान बोया है।'

'यहां आने के बाद फिर मामा कहां चले गए?'

अपने गांव। वह धनुष-बाण नहीं छोड़ सकते। वरना हाथ कांपने लगेगा।'

'वहां जाकर?'

'बड़े लोग कोई न कोई शिकार ढूंढेंगे। बेंत या शहद देने पर मांस का एक टुकड़ा मिल जाएगा।'

'इसीलिए बीच-बीच में वहां जाते हैं, है न?'

'नमक-मिर्च के साथ कंजी पीते-पीते मुंह कड़वाने लगता है।'

'मैं चुंडली के मचान पर जा रहा हूं।'

'चुंडली आ रहा था। कुतिरकोट पहुंचने पर सुना कि रास्ते में हाथी है। लौट गया।'

'तुम?'

'मैं इधर आया। वे नहीं दिखे। लगता है, बेगूर से एक साथ आ रहे हैं।'

'इस बार एक युद्ध ही चलेगा।'

करियन और चात्तन सोए नहीं हैं। अंधेरे में करियन की फुसफुसाहट आ रही है।

दलदल के मचान पर करियन बिना पलकें झपकाए बैठा है। बुलाने पर चौंक गया। लंबी सांस ली। कूद कर नीचे उतर आया। फूस की सुखद गर्मी छोड़ करियन का उतरने का मन नहीं कर रहा था। सीमा के निकट वाले मचान पर उसे बलपूर्वक ही भेजा। यहां दलदल वाले मचान पर इस डरपोक को बैठा नहीं सकते।

फिर चल पड़ा। लेटने पर सब के सब झपकी लेने लगेंगे। बीच-बीच में तंबाकू मिलता रहे तो सबमें उत्साह रहेगा।

रास्ता नदी के किनारे से जाकर दलदल के मचान को घेरकर सीमा का चक्कर लगाता है। सभी गोल शिलाएं, सीमा पर लगा पत्थर, झाड़ियां, कांटे—सब के सब सुपरिचित हैं।

एक मितभाषिणी मित्र-सा सान्निध्य रात दे रही है। दूरी होने पर भी उसका भाव समझ में आता है। वह चुपचाप मेरे मन की फुसफुसाहट ध्यान से सुनती है। बीच-बीच में—

उल्लुओं की आवाज, सूखे पत्तों के झड़ने का मर्मर, टूटकर गिरती डालियों की कराहटें, शिकार के पीछे दौड़ते जंगली जीवों की आहट, संकट में पड़े हिरण का चीत्कार, मेढकों का विलाप...

साथ में एक बिल्कुल अपरिचित आवाज आई। एक लड़की रो रही है?

फिर से आवाज वेदना की नहीं, डर की! पुरुषहीन घर! रात में कोई जानवर टटिया रगड़ता निकल जाए तो बस वे रो पड़ेंगी।

स्वयं को रोक न सका। कौन होगा? मारा? या जवनी? जवनी मां बनने के बाद आराम कर रही है। साथ में पोलचीतल्ला दाई है।

मारा अकेली है। चुंडली यहां होता तो भेज देता।

चांदनी में झाड़ियां हिलीं।

पोलचीतल्ला को बुलाकर मारा के पास भेज दें।

जवनी के झोंपड़े के पास पहुंचने के पहले ही दक्षिण की ओर झुरमुट से एक असाधारण-सी आवाज आई। डालियां टूटती हैं। दृढ़ गति। एक-दूसरे से लड़ते जंगली जानवर होंगे। पास नहीं जाना चाहिए। तुरंत टार्च की रोशनी पड़ने पर सामने दौड़ आएंगे। सीमा पर पड़े पत्थर पर चढ़ गया।

खुरदुरा पत्थर।

पीली पड़ गई चांदनी बादलों की ओट में छिपने जा रही है।

सावधानी से टार्च जलाई।

बदन सुन्न हो गया।

मन बर्फ का एक टुकड़ा बन जाता है।

एक क्षण! क्रोध बर्रों के छत्ते की तरह भीतर हिल उठा।

यह लड़का, अभी बीस भी पार नहीं किया। दांत कटक उठे। टार्च का प्रकाश और आंखों की आग उस पर टिकी रही।

एक नजर उठी! फट गया कुर्ता। कांटेदार झाड़ियों में फंसी धोती उसने खींची। फटे कुर्ते का एक टुकड़ा मारा के हाथ में आ गया। उसकी आंखों में जलती ज्वालाएं थीं...

उखड़ती एक सिसकी।

'तम्पुरा...' वह फूट-फूटकर रो पड़ी। रुलाई राघवन नायर तक पहुंचने के पहले ही वह मुड़कर भाग गई।

पेट के दर्द से खाना न खाकर वैद्य को ढूंढने निकला प्यारा उण्णि। मन में घृणा की चिनगारी से धुआं निकलने लगा।

हाथ सुन्न पड़ गए। मेरा बेटा होता तो...

वृश्चिकम् की हवा में माथा सुन्न हो गया।

बचे दिन। रोज खेत में रखवाली नहीं हो पाएगी। चुंडली कल से भटकने लगेगा। हर रात पहरा नहीं दिया जा सकेगा। लड़के की उम्र केवल बीस साल हुई है। आसामी लोग जैसे रास्ता भटकते हैं, जैसा लोग कहते हैं, वैसे वह तंबाकू या पेट में खाना भरने के लिए नहीं भटका है।

यह एकांत। पहरे की रात। बेकार बैठे छोटे तम्पुरान लोग...

बसवन की कहानी— उसकी पत्नी की कहानी दुहराई जा रही है?

गांव वालों की धारणा है कि सभी आसामी औरतें पथभ्रष्ट हैं, सच है तो मेरे मन में खाली खरोंच क्यों? इस गांव में सिर्फ मारा ही है क्या?

निकल पड़ा। रात की क्षमाशील मूर्ति नष्ट हो गई थी। अब वह रौद्र रूप में आई। उसके चेहरे की कालिमा और घनी हो गई।

ठंडा घना अंधकार। छोटे-छोटी आवाजें भी विस्मृत हो गईं।

सुबह तक चलता रहा। उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम। पैरों को थकान नहीं लगी। मन में चैन नहीं आया।

एक रात और समाप्त। एक अर्धविराम। युद्ध समाप्त नहीं हुआ। आरंभ ही हुआ है।

35

शाम को मारा खलिहान में गोबर की लिपाई करके आखिरी बार चमका रही है। बहुत देर हो गई। बांस के खंभों तले कुछ कीड़े मारने वाला पाउडर डालना है। मानंतवाडी जाते समय सेयतु बोला था।

धान अभी भंडारघर के अंदर नहीं पहुंचा। खलिहान के उत्तरी छोर पर बना भंडार घर। घर के भीतर जरा तिलचट्टे कम हो जाएंगे।

राघवन नायर सेयतु के लौटने की प्रतीक्षा में कुंबारकुनी में खड़ा रहा। खड़े ही खड़े तीन दिन के अखबार पढ़ डाले। साथ में छोटे भाई की आई चिट्ठी भी।

वहां भांजी की शादी है। मैं बड़ा मामा हूं। जाना चाहिए। गांव छोड़े कितने साल साल बीत गए?

दूर कहीं खिल उठी रजनीगंधा की महक-सी घर की याद।

सुगंध केवल स्मृति में ही है। अनुभव में कड़वाहट।

स्मृतियों को भगा दिया।

मानंतवाडी से काट्टिकुलम के रास्ते से पैदल आए कुछ आसामी पूंकुन्नम मना के वैद्य का माल लिए चलते चले गए।

'सेयतु नहीं आया?'

'सेयतु मापिला (मुसलमानों को मापिला कहते हैं) को माल लाना है। मंदिर की ओर आती जीप की प्रतीक्षा करता होगा।' रामन नायर बोले।

'आज का पहरा?' कच्चे केलों को धुआं लगाने के लिए दुकान में रख रहे मोयतीन से पूछा।

'जीप मिल जाए तो आज ही आ जाएंगे।'

मोयतीन के स्वर में भय था।

कोल्लीमूला का एक छोटा खेत सेयतु को बंटाई पर दिया था। करीब आधा एकड़। उसकी नजर केवल व्यापार पर रहती है। गंधकशाला धान का दाम सुनने पर उसे आग्रह हुआ। गाड़ी कुंबारकुनी तक आ जाती है। एक ढेर गंधकशाला देने पर बारह सौ रुपया हाथ में आता। खुद खर्च उठाकर मानंतवाडी पहुंचा देने पर डेढ़ हजार!

कोल्लीमूला की मिट्टी ज्यादा गीली है। वहां धान पकने में देर लगेगी। दो हफ्ते की देर। इतना छोटा लड़का अकेले वहां कैसे पहरा देगा?

उसी दिन कह दिया था।

उस कोने पर मत बोना। तीनों ओर के पहाड़ों से सुअर घुस आएंगे। ऐसा कोना जहां मनुष्य की गंध तक नहीं पहुंचती।

सेयतु बिना पलकें झपकाए पहरा दे रहा है। फारेस्ट बंगले के बहुत नजदीक ही हाथी की चिंघाड़ कल भी सुनाई दी थी।

जंगल को, अंधेरे को, शाम को, मन को बेध देती, आग में तपाए लोहे के तार-सी फुंकार।

तुलसी के चबूतरे पर शाम का दीया जलाने आई वारस्यार का हाथ कांप गया। दीया फर्श पर गिरकर बुझ गया।

'कुछ भी हो, भगवान, खलिहान में तो पहुंच गया।'

बधाई के पुष्प आंखों में खिल उठे।

'कह सकते हैं कि इस बार हमारी जीत हुई।'

उन्होंने चेहरे की ओर ताका। बहुत दिन हुए यह खुशी की हंसी देखे। उण्णि की चिंता में उदास हो गए दिन। उत्साहहीन व्यवहार।

रात में खाने के बाद करवटें बदलता रहा। नींद नहीं आती। सेयतु अभी तक नहीं पहुंचा। मंदिर की ओर सड़क पर किसी गाड़ी की आवाज नहीं।

दक्षिण में केलन के खलिहान के पास मशाल जल उठी। उसकी झोंपड़ी घने जंगल के मुंह में है। ठीक पीछे अंधकार भरा बांस का जंगल। अक्सर वह वहां जाता है। अच्छा भोजन मशाल की आंखों-कानों के सहारे, अनजाने में भी वह नहीं छूटती—इस तरह वहां जीवन बिताता है।

'आ जा...मा...', ठंड में कांपती खुरदुरी आवाजें आकाश से गिरती पड़ती आकर बुला रही हैं।

हम जागकर पहरा देते हैं। तिरुनेल्ली में अभी आराम के दिन नहीं हैं।...

इतनी देर हो गई, गाड़ी की प्रतीक्षा की अब कोई जरूरत नहीं। रात में हाथी वाले जंगल से गाड़ी लाने की इच्छा किसी की न होगी। टूटी-फूटी सड़क। धीरे-धीरे जाने वाली गाड़ियों को हाथी गिरा देते हैं।

चालीस रुपए पर गाड़ी किराए पर लेकर आने का घमंड दुकानदार सेयतु नहीं करेगा। चालीस रुपए के लाभ के लिए कभी तो चालीस दिन का काम करना पड़ता है।

खलिहान में धान है। वारस्यार और बच्चों ने बरामदे में बिस्तर लगा लिया। दक्षिण में उण्णि का बिस्तर ऐसे ही पड़ा है।

'उण्णि आज भी...?'

'कहता था, पहरा देने जा रहा हूं, मोयतीन के साथ।'

'मैंने करियन को भेज दिया था।'

'कहने पर सुनता नहीं। ओस पड़ रही है। कोई जाकर कहेगा, नहीं तो...'

कोई क्यों, मैं ही जा सकता हूं। लड़के को बाहर जाने की आदत नहीं।

वेल्लरोडी के खेत से अदरख आया है। मां सब्जी बनाकर प्रतीक्षा कर रही है। बेटे के पसंद की सब्जी। आकर खाना खा जाए।

फिर प्रार्थना भरी दृष्टि।

सीधे क्यों नहीं कहतीं? अपना बेटा होता तो कह देता न? बेटे की तरह ही उसे पाला-पोसा था न? आजकल बेटे की कोई बात मुझसे क्यों नहीं करतीं?

बेटे को अपने माता-पिता से कोई ममता नहीं। आजकल उसकी पढ़ाई के बारे में भी कोई बात नहीं करती। पहले तो रुकी पढ़ाई फिर शुरू करने के लिए कोषिकोड भेजने की बात कहती रहती थीं।

सामने बरामदे में बच्चे मोटे कंबल के लिए झगड़ने लगे।

'मैं मां के पास लेटूंगी।' सुभद्रा बोली।

नहीं मैं।' वासुदेवन बोला।

'तुम भैया के बिस्तर पर लेटो।'

'वह अभी आ जाएगा।'

'नहीं आएगा।'

'आएगा।'

'नहीं।'

'क्यों?'

'जोसफ को आज सूअर मिला है।'

'क्या है री?' बेटी को मां के हाथ का उपहार मिला। उसकी सिसकियां सुनाई देती रहीं।

उठा। मोयतीन के पास जाकर देख आऊं! जूते टटोले। यह एक आदत बन गई है। फिर बारिश के बाद मिट्टी गोंद जैसी हो जाती है।

रात आंखों में बीतती रही। जब पहरा नहीं होता तो यह उन लोगों के लिए आधी रात का समय होता है। यहां आने पर शुरू-शुरू में जगकर, जोंकों का रुदन सुनते हुए अपने जीवन में आई भंवरों के बारे में सोचता रहता।

आज अपरिचित होने का भाव नहीं। ठंडी हवा, नाले का प्रवाह, मचान गीत, डमरू की आवाजें, शक्की मनुष्य— सब कुछ सुपरिचित बन गए।

ठंड में कांपते गले।

'सब सो गए। मां...!' 'तेरे साथ मैं भी..., मेरे साथ आ...जा...।'

अंधेरे में हंस पड़ा। ठंडी रात में प्रेमी प्रिया से कहता है...'आता हूं मैं...तेरे घर में।' 'नहीं, नहीं।'

अंतहीन कष्ट देखते-भोगते मनुष्यों की जीवन के प्रति आसक्ति।

जंगल किनारे जगह-जगह धुआं उगलते अलाव। आंखें फाड़े सर्दी सहते हुए, अज्ञात विपत्तियों को देखकर रातें बिताना। फिर भी जो कुछ चाहिए, वे खा जाते हैं। इन्हें रोकने का, इस अनंत पहरे को समाप्त करने का कोई उपाय नहीं क्या?

कभी केवल कागज पर बना मूलप्पाड़ी का छोटा बांध। बांध से निकली दो नहरें। उन्हें तिरुनेल्ली के खेतों को घेरे खड़े रिजर्व वन की दोनों सीमाओं की ओर मोड़ देना है। कोल्ली की सीमा तक पुंजा बो सकते हैं। गहरी नहर को पार कर जानवर मनुष्य के इस प्रयत्न को नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर सकते।

रेत से महल बना रहा हूं। किट्टूवारियर को पंपसेट के लिए आवेदन किए बहुत साल बीत गए। जल्दी ही मंजूरी मिली है। अब खर्च के लिए पैसा नहीं है। डेढ़ हजार की पहली किस्त, तुरंत। जंगल के बीच यहां तक पहुंचाने का और खर्च।

गंधकशाला के खेत, जिनकी कटाई बाकी थी, सेयतु के पास गिरवी रखे। सेयतु के

पास पूरा पैसा नहीं। 'पण्णयम' के एक चेट्टी ने नकद रुपया गिन दिया। पंद्रह सौ रुपए पर साढ़े तीन ढेर गंधकशाला। एक ढेर का ब्लैक में बारह सौ रुपया नकद दाम है। 'ब्लैक' नाम मात्र है। यह धान है। तिरुनेल्ली का धान। चुपचाप सिर पर ढोकर मानंतवाडी पहुंचा देने के लिए जरा-सी रकम पर तगड़े आसामी मिल जाएंगे। ऐसे आसामी जिनकी हड्डियां केंकड़े खा-खाकर सख्त हो गई हैं। इस तरह के लोग अधिक नहीं, फिर भी हैं।

कुटक की सीमा पार कर, ब्रह्मगिरि के वक्ष से होकर, तिरुनेल्ली पेरुमाल की आंखों के सामने से कुंबारकुनी पार करके, पुलयनकोल्ली होते हुए, सिर पर धान के बोरे लादे मानंतवाडी के 'ब्लैक मार्केट' तक जाते हैं। गंधकशाला पहले ही बेच देने की बात वारियर कैसे बर्दाश्त कर सका! घमंड कर सकता है कि गांव में पहला पंपसेट उसके पास आया है। अगले सालों में पुंजा की खेती से मिलने वाला लाभ।

कोल्लीमूला के मोड़ पर रुका। कोई नहीं दिखाई पड़ता।

चांदनी और सर्दी की शोभा में सुप्त भूमि।

नदी पारकर कोई आ रहा है।

चाल से—?

रामन! फिर तविंजाल कब गया?

उस सिर पर हाथी के आकार की बहुत बड़ी गांठ। गुनगुनाता हुआ वह सीधे मेंड़ पर चढ़ आया।

'तू?'

'तम्पुरान! कहां जा रहे है?'

'मोयतीन के खेत की तरफ। इतनी देर से तू कहां से आ रहा है?'

'बागान से पहले की पगार मिलनी बाकी थी।'

'मिल गई?'

'दो रुपया।'

'सिर पर क्या है?'

'बांस की चिलमनें!'

'तविंजाल से ढोकर ला रहा है? क्या यहां बांस नहीं होता?'

'मामा ने बुनी थी। दो रुपया चाहिए था। वहां कौन लेगा? मैं पगार के रुपए मामा को देकर खरीद लाया।'

'अच्छा हुआ। तेरी झोपड़ी हवा से गिर गई थी, न? अरे, आसामियों की तरह झोंपड़ी बनाना सीख ले।'

'खलिहान में कौन है?'

'अब कोई नहीं चाहिए।'

'अभी तो यह हालत है कि खलिहान में भी पहरा रखना चाहिए।'

'क्या!'

'तविंजाल में सुना।'

'क्या?'

'आजकल जंगली हाथी खलिहानों में घुसने लगे हैं।'

'खलिहान में!'

'हां! कल रात जोसफ के बड़े भाई के खलिहान में घुस आया।'

'तब?'

'तम्पुरान मोयतीन के मचान पर जाएं। मैं अंबलकुन्न जाऊंगा।'

'वेल्लरोडी नहीं जाएगा? मां रास्ता देखती होगी।'

'नहीं, मां से कल मिलूंगा।'

जंगली हाथी की पीठ की तरह टेढ़ी-मेढ़ी हो आई चिलमनों की गठरी लेकर वह चला गया...

केवल गोल आंखें बाहर। कंबल ओढ़कर मोयतीन मचान में घुटनों के बल बैठा हुआ है। खेत के चारों ओर कोनों में चूना लगे कागभगोड़े।

'मोयतीन...!'

जवाब नहीं...

'अरे...!'

'या अल्ला! डर गया।'

'सोचा कि भूत है?'

उसका चेहरा पीला पड़ गया था। खेत में खड़े कागभगोड़ों की तरह बाहर निकलती आंखें। गंभीर भाव से राघवन नायर ने पूछा, 'तूने देखा न?'

'आपने भी देखा, या अल्लाह, किस्मत से जान बच गई—'

'मैंने आमने-सामने देखा। कह दिया कि तू अपना रास्ता पकड़।'

उसका चेहरा और पीला पड़ गया।

चांदनी में रात की छाया दूर हटने लगी।

तांत्रिक राघवन नायर ने जंगली हाथी को सामने देखा। बेहोश करके छोड़ दिया। उसकी आंखें फैल गईं। तरल दृष्टि!

'अरे बुद्धू, वह हाथी नहीं था, रामन था।'

ऐसा नहीं लगता कि उसे यकीन आया।

उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

रात ने किसी रोगी की तरह कांख-कूंख कर करवट बदली। मचान-गीतों की थकी

सिसकियां जंगल की दीवारों से टकराकर गतिहीन भटकती रहीं! जाड़ा अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ। दोनों हाथ मलकर चलने लगा। बिल्कुल असहमति के भाव में ताप शिराओं में फैला। मीत नहीं। कोई आवाज नहीं। केवल बावली का बेरोकटोक प्रवाह। गोल पत्थरों को ठोकर मारते हुए घमंड भरा प्रयाण।

स्तब्ध रह गया, जैसे बिजली लगी हो।

'यह क्या सुनाई पड़ा?'

रात में चलते समय कई आवाजें आती हैं—लोमड़ी की लोरी, जंगली बकरे का रुदन, मुर्गे की बांग, संकट में फंसे सूअर की चिल्लाहट, जंगली कुत्तों का भौंकना। पर यह आवाज इनमें से नहीं। दिशाओं को चीरती आवाज। समझ में नहीं आता, इसका केंद्र कहां है।

एक बार और कान लगाए—

'मोयतीन!' जवाब नहीं। अपनी ही आवाज बिखर जाती है। वह मुंह खोले मचान में पड़ा सो रहा है। डूबती चांदनी ने बाहर निकली उसकी जीभ को किसी अजीब जानवर-सा चमका दिया।

'मोयती...न।'

दबी हुई एक चिंघाड़ फिर से। पहले जितनी तेज नहीं। अंबलकुन्न में, खलिहान के ठीक पीछे के जंगल से।

मोयतीन के खर्राटे। सह नहीं सका। शरीर मोड़के, कड़ा करके पुकारा।

'या अल्ला!'

'क्या है, मोयतीन?'

उसने चुपचाप चारों ओर देखा।

'इस तरह क्या देखता है?'

'वह! वह गया?'

'कौन?'

'वह।'

'तूने सुनी?'

'कैसी चिंघाड़ थी!'

'तू सुनते हुए लेटा रहा?'

उसने आंखें मलीं। उठ बैठा। भयभीत दृष्टि ढीली पड़ी।

'तुम यहां थे?'

'और क्या!'

'मैंने सपना देखा होगा।'

'होगा। यहां बैठ।'

'मैं—'

'सुबह होने को आई। अब लेटना नहीं। सोना मत। सूअर प्रतीक्षा कर रहे हैं। कल से भूखे हैं।'

निकल कर चल पड़ा। नहीं, दौड़ गया। घाट पर पहुंचने से पहले ही कोलाहल सुनाई पड़ा। अंबलकुन्न से। ऐसा शोर, ऐसी हलचल कि लगा टीला ही टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।

विलाप। हलचल। लगातार फूटते पटाखे। जल उठी मशालें।

वारस्यार का स्वर है न? वे रो रही हैं।

'हे तिरुनेल्ली के पेरुमाल!

दौड़ पड़ा, जैसे पांवों में पंख लग गए हों। दिल फट गया।

उलझन के साथ-साथ कुछ-कुछ अंधेरा भी छंट रहा है।

खलिहान में बहुत-से लोग, अनेक चीत्कारें हैं।

क्या है?

क्या हुआ?

यहां खड़े कुछ स्तब्ध लोगों के गले से ही ऐसी चीत्कार सुनाई पड़ी थी।

क्या है?

क्या है?

क्या हुआ है?

किसी के मुख में जबान नहीं।

लोगों को हटाते हुए खलिहान के बीच पहुंचा। नष्ट हुई फसल। धान नहीं, फूस का एक ढेर। दूर बिखरी पड़ी टूटी चिलमनें।

हे भगवान!

रामन? वह अपनी झोंपड़ी में नहीं गया।

किसी ने जवाब नहीं दिया। खलिहान से केले के झुंड तक लोग खड़े हैं।

केले के पेड़ों के बीच बिखरा पड़ा सफेद केले की जड़ का गूदा...

और झाड़ियों के बीच—

रामन के कपड़े।

एक प्रलय! धुंधली चांदनी में समझ में आ गया कि वह खून है। समझने के पहले ही पैरों तले भूमि चकराने लगी। कोई सहारा लेकर किसी तरह खड़ा रहा।

'ईश्वर की इच्छा कौन रोक सकता है?'

हाथ पर कस गई खुरदुरी उंगलियां। किट्टूवारियर की आवाज पहचानी।

टूटा-फूटा शरीर।

चेहरे पर कोई चोट नहीं। कष्ट की झुर्रियां लिए पड़े मरे ओंठ और दाढ़ी।

जीवन में पहली बार फूट-फूटकर रो उठा। रुदन बाहर नहीं आया। मल्लन के मरने पर भी रोया नहीं था। उसके पहले मां के मरने पर भी नहीं रोया। दुख भीतर ही दबा लिया था। आज रोना चाहिए, नहीं तो शरीर बीच से फट जाएगा। रुलाई एक विषैले जीव की तरह भीतर तड़फड़ाती रही।

बैठ गया। जिसके हाथ ने सहारा दिया वही बोला, 'सह लो। इसके सिवा और क्या कर सकते हो?'

नहीं सहा जाता। रामन की जगह मैं होता तो? उसने अपनी जान क्यों दी? किसलिए? हे भगवान, यह भी मुझे देखना बदा था!

भयभीत चेहरे एक-दूसरे को देखते रहे। मरे भाव, सुन्न पड़े अंग, पके खेतों को छोड़ आए पहरेदारों के पैर वहां से धीरे-धीरे चले। ओस में भीगे सूखे पत्तों पर पैर रखते हुए वे चुपचाप टीले से उतरते गए।

चांदनी पूरी तरह डूब गई। सुबह के समय गाढ़े हो आए अंधेरे में वे एक-दूसरे से मुंह चुराते खलिहान में खड़े रहे। पूरी तिरुनेल्ली एक ही भय में डूब गई। अंधकार का एक अंश लोगों के भीतर फैल गया। रात की गीली आंखें बेरोकटोक ओस की बूंदें बरसाती रहीं।

36

किट्टू वारियर ने उन्हें डराकर भगा दिया। अरुमुखन बोला। उसकी नुकीली दाढ़ी गुस्से से हिल उठी। आंखों में वज्र की-सी चमक।

'किन्हें?' इस लड़के को बिना आवेश के कभी नहीं देखा। यही इस बात का प्रमाण है कि वह इस गांव का नहीं।

'कुंबारकुनी के आसामियों को।'

'वहां इतने आसामी थे?'

'और क्या! तीन-चार झोंपड़ियां।'

'पठान वहीं रहता था न?'

'पठान नटुवंतार चला गया।'

'ऐसा क्यों?'

'वह कहीं भी रहे, क्या फर्क पड़ता है? बकरी पालने की सुविधा के अलावा उसे और क्या चाहिए?'

'आसामी कहां गए?'

'अरवनाषि।'

'किट्टूवारियर ने भेज दिया!'

'भेजने के लिए चलाया कौशल सुनेंगे?'

सुना। कुंबारकुनी में परसों कालमुर्गे की अपशकुन की बांग सुनाई दी। जहां तोलावेल्लन ने धान बोया था, उसी जगह पाला के पेड़ के ऊपर की शाखा से आई अपशकुन की आवाज सबने सुनी।

तोलावेल्लन आसामियों का वैद्य है। कुछ टोना-टोटका भी जानता हैं। ओझा की जमीन पर मुर्गे की अपशकुन की बांग हुई है तो जरूर उसमें कोई बात होगी। मनौती करनी होगी। किट्टूवारियर ने तोलावेल्लन को बुलाकर बताया। किट्टूवारियर ने पूरे यकीन से कहा कि पहले कुंबारकुनी में पुलाया लोगों का श्मशान था। अरुमुखन कथा खत्म करने से पहले ही पूछ बैठा, 'क्या पहले यहां पुलया थे?'

उसने हाथ के संकेत से कहा, पता नहीं।

'पुराने जमाने में वे पुलयनकोल्ली में खेती करते थे, ऐसी कोई मनग्रढ़ंत कहानी होगी।'

'क्या पता?'

'फिर?'

'किट्टूवारियर ने खुद धान और नारियल पूजा में चढ़ाया तो आसामियों के आधे प्राण निकल गए।'

'मनौती से प्रेत का उपद्रव शांत नहीं हुआ?'

'जिस जगह से तम्पुरान लोग डरें, वहां भला आसामी रहेंगे?'

'क्या हुआ?'

'सुबह होते ही वे सारी चीजें लेकर जगह छोड़ चले गए।'

'कहां?'

'अरवनाषि में जा बसे।'

उनके इस तरह जगह बदलने और झोंपड़ियां बदलने में कोई नई बात नहीं।

तोलावेल्लन की खेती का क्या हुआ? राघवन नायर को विचार आया कि उसने ही उसे बीज, वल्ली और हल दिया था। उसकी खेती में बहुत रुचि होने के कारण नहीं। गांव में वैद्यशाला खुली। सरकारी वैद्य को भी कम ही काम है। उस साल तोलावेल्लन ने आसामी का काम भी नहीं लिया था। शायद वेल्लरोडी में जुताई के लिए बुला लें। पूछा कि उसके बाद क्या करेगा?

'तम्पुरान लोगों की तरह खेती करने के लिए भगवान ने जमीन नहीं दी।' वह बोला था।

तभी सेयतु की दुकान के पीछे खाली पड़ी सरकारी जमीन की याद आई। अगर रुचि हो इसकी तो खेती करेगा, नहीं तो एक परा बीज और वल्ली नष्ट हो जाएगा। सह लूंगा। हल जोतने के लिए अंबलकुन्न के बैल भी दिए।

उसने जोतकर बुआई की। फिर तृश्शिलेरी चला गया। खर-पतवार बढ़ आई। धान पीला पड़ गया। बीच में एक दिन आकर मेहनत से उसने घास-पात साफ करवाई। कुल चार-पांच बाली धान की मिलेंगी बांट लेने को।

'जिन आसामियों ने जगह छोड़ी, उनके साथ वह भी है?'

'और क्या?'

यह भी मेरे लिए एक चुनौती है? किट्टूवारियर ने सोचा होगा कि मैं सरकारी जमीन पर अधिकार करने की ताक में हूं। बंटाई पर देकर फिर धीरे-धीरे पूरे टीले पर काबिज हो जाएं तो? वेल्लरोडी की सरकारी भूमि में आसामियों को झोंपड़ी बना देने और अपने लिए उपयोग न करने पर भी एक घर बनाने की बात उसे अच्छी नहीं लगी है।

तोलावेल्लन नदी के किनारे से आ रहा था। कंधे पर छोटी, गंदी थैली। जड़ी-बूटी तोड़ने निकलने का भाव।

अपने वासस्थान के नष्ट हो जाने में इसे दुख नहीं? वर्षा के बीतने पर नांद से पशुओं को निकालकर खेतों के पड़ावों में बांधते समय उन्हें भी दुख होता है। इसे वह भी नहीं? पड़ावों में बंद होने की पहली रात में खुर रगड़ेंगे, बेड़ों के भीतर दौड़ते रहेंगे।

वह टीले पर चढ़े बिना सीधे चला गया। मेरे सामने नहीं पड़ना चाहता। लगता है, गलती इसी की है।

'ऐसे ही छोड़ देना ठीक नहीं।' अरुमुखन ने अपना जन्म-सिद्ध वाक्-चातुर्य जारी रखा।

'क्या कर सकते हैं?'

'वहां जाकर बसने के लिए कुछ लोगों को चढ़ाना चाहिए।'

'उनमें हिम्मत है?'

'धीरज बंधाना होगा।'

'फिर?'

'बस जाने पर फिर उन्हें कोई बेदखल नहीं कर सकता। आदिवासी हैं न?'

'कालमुर्गा फिर से बांग नहीं देगा?'

'झोपड़ियां भर जाएं तो फिर वे एक ही रात में इस तरह खाली नहीं करेंगे।'

'उन्हें पट्टा दिलवा दें तो कह सकते हैं, जीत लिया।

'हमें जीतना चाहिए।'

अरुमुखन जैसे कुछ लोग हों तो इन मनुष्यों को अच्छा बना सकते हैं। ऐसे लोग नहीं। यही हकीकत है। किट्टूवारियर के पास पचास एकड़ से भी अधिक खेत हैं, इस सरकारी भूमि की क्या जरूरत है?...

गोरे तम्पुरान और स्कूल मास्टर की बातों को उन लोगों ने कान लगाकर सुना। शंकाएं न मिटीं। उन्होंने अपने काले पंख समेटकर उनके अज्ञान भरे, अंधेरे मनों में अपने घोंसले बना लिए।

'हृवा, हृवा...हू...हू...हृवा।'

लगा जैसे तिरुनेल्ली को घेरे खड़े जंगल के अंतराल से सैकड़ों कालमुर्गों की खुशी से बांग देने की आवाज उन्हें सुनाई पड़ रही है। विह्वल मुख। डरी आंखें। उनका जवाब आशाजनक नहीं था। जिन लोगों के घर नष्ट हो गए थे वे रातोंरात अपने रिश्तेदारों के घरों में जा छिपे।

उस दिन शाम को किट्टूवारियर ने एक चाल चली। कुंबारकुनी में एक लारी आकर रुकी। पूरी तिरुनेल्ली जागकर कान लगाए रही।

किट्टूवारियर एक लारी भरकर कंद लाए हैं। स्कूल के अहाते में ढेर लगा। तिरुनेल्ली में कंद की खेती।

एक घटना है यह! सूअरों, जंगली चूहे और उछल-कूद करते बंदरों से भरे जंगल के किनारे कंद की खेती। अच्छा मजाक!

कंद का नाम सुनते ही आसामियों के मुंह में पानी आ जाता था। तृश्शिलेरी की याद करते थे। वहां काम करने वाले अपने रिश्तेदारों को याद करते थे। अरिकिषङ्ङ को मात देने वाला कंद!

तोंद वाले तम्पुरान को जिसे यह अच्छी बात सूझी, उन्होंने मन ही मन बधाई दी। कभी न कभी एक टुकड़ा फेंकेंगे जरूर।

गांव में खबर फैल गई। किट्टूवारियर मूर्ख नहीं। कुछ होने जा रहा है। कंद की कलमें। उसके बारे में इतना सोचने को क्या है? फिर भी कुछ तो है। किसी को समझ में नहीं आया, वह क्या है? फूटी विपत्ति की तरह कंद की कलमों का ढेर घाट पर पड़ा रहा। दूसरे दिन एक और अद्भुत सुबह देखते हुए तिरुनेल्ली जगी। कुंबारकुनी में झोंपड़ियां। आसामियों के घर। एक, दो या तीन नहीं। टीले भर में। बीच-बीच में। हमेशा की तरह समूह में कंधे मिलाए आमने-सामने नहीं। झोंपड़ियों के नाम पर केवल बांस के खंभे खड़े हैं। ढीली पड़ी लाल, कच्ची मिट्टी।

तलमला में छज्जे में खड़े किट्टूवारियर के शरीर में सिहरन दौड़ गई। अंबलकुन्न से उतरकर भूसे की गठरियां कुंबारकुनी की ओर बढ़ रही हैं। आंखों से चिंगारियां निकलने लगीं। खड़े-खड़े जलने के सिवा कुछ करने को नहीं।

जीवन में पहली बार किट्टूवारियर हारा है। तिरुनेल्ली का राजा किट्टूवारियर।

सरकारी भूमि में वे झोंपड़ियां बनाकर रहते हैं। वह! अरुमुखन! उसे यह करने का साहस कैसे आया? और दूसरे के कारिंदे की क्या औकात!

फिर भी इन कीड़ों के आगे हार नहीं मानूंगा। हवेली से निकल तलमला के आसामियों को इकट्ठा किया। तमाशा देख रहे लोग सांस रोके सामने आ खड़े हुए।

कंद की सारी कलमें एक ही दिन में किसी को क्षति पहुंचाए बिना बो दी गईं। कोल्लीमूला के नीचे के खेत में जहां की फसल कट चुकी थी, खेत गुड़ाई कर तैयार करने का काम अद्भुत ढंग की जल्दी से समाप्त हो गया।

वैर विषधर नाग की तरह दबा बैठा रहा। कष्ट पहुंचाने के बाद छोड़ दिया गया जहरीला नाग। वह कब, किस छेद से कूदकर सामने आ जाएगा, यह सोचने से कोई लाभ नहीं।...

टीले पर उभर आई नई झोंपड़ियां। वे रह जाएंगे? राघवन नायर ने सोचा। निर्बल झोंपड़ियां। दुर्बल लोग। बुद्धि भी कमजोर।

विरोध के, विद्वेष के और वैर के बीज बोए गए। यह किसका आरंभ? या अवसान? इसका जिम्मेदार कौन है? मैं? अरुमुखन? या काल?

अब?

यहां अभी और जीना है।

फूटने वाले अंकुर बढ़ जाएं। बढ़ते देखना है। जंगल में आग लगने के बाद बचे पौधों की तरह जिनका उगना बाकी है, अधिक शक्ति अर्जित कर तेजी से बढ़ेंगे।

गतिहीन दिन।

इसी बीच लेवी की नोटिस आ गई। वे धान तौल ले गए। जितना रुपया मिलना है उसका हिसाब दे दिया।

पैसा नहीं मिला। हाथ में पैसा नहीं। भंडारघर के धान से सारी जरूरतें पूरी नहीं होंगी। पुंजा का काम शुरू करना है। खेत में खाद देना है। मिट्टी के लालच का समय। उसे जो कुछ देना है अभी देना होगा। जंगल से घास-पात काटकर लाने वालों को वल्ली दे सकते हैं। खाली घास-पात से काम न चलेगा। इस बार कुछ रासायनिक खाद भी खरीदने का राघवन नायर के मन में था। नकद पैसा चाहिए। किसी भी तरह हो, कुछ खर्च करना पड़ेगा। जंगल में घास-पात काटने वालों को हंसिया-खुरपा देना होगा। गोबर उठाने की टोकरी, थैले। ब्लैक में बड़ी कीमतें। सब के लिए धान नहीं दे सकते। मानंतवाडी जाती सड़क पर चुंगी का फाटक है।

रिश्वत के बिना धान का एक कण भी नहीं ले जा सकते। ब्लैक में बेचना है तो अफसरों को कुछ भोग लगाने में क्या बेजा है?

एक छूट तो मिलनी चाहिए। रुके पड़े धान को ऐसे बेचना चाहिए कि हानि न हो। कम से कम लेवी का पैसा तुरंत मिलना चाहिए। सब आशाएं हैं। आशाएं - जो पूरी नहीं होतीं। भारी मन से अंबलकुन्न पहुंचा।

भात परोसते समय वारस्यार के चेहरे पर काली छाया पड़ गई थी। उस दिन मारा से जुड़कर हुई बदनामी ने उन्हें व्यथित कर दिया। इसकी आशा नहीं थी। इस तरह की आधारहीन बदनामी को लेकर वे क्यों इतना परेशान हो रही हैं? कम से कम इतना तो पूछतीं कि क्या इसमें कोई सार है। अपनी ओर से सफाई देने पर बात और बिगड़ जाएगी। मैं तो कब का भुला बैठा। उनका यह दुखी काला चेहरा ही उसकी याद दिलाता है। उनके नीरस हो रहे मन के कुछ और भी कारण हैं।

आज कुंबारकुनी, कल वेल्लरोडी, परसों अंबलकुन्न, अरवनाषि, कोल्लीमूला...हरेक से सटी कुछ सरकारी भूमि है। जंगल से सटी भूमि के बारे में विशेषकर यही सोचती होंगी कि मेरे शासन में अंत तक वारयम की जमीन भी आसामियों के हाथ चली जाएगी। खाना यहां और शुकराना वहां। कोहरे को हटा देना चाहिए। छोटी-छोटी बातों के लिए विलंब नहीं करना चाहिए।

'करियन आज झाड़ियां काटने नहीं गया?'

'नहीं।'

'क्यों? वह दो रुपए मांगता था। न देने के कारण होगा?'

'वह आज मानंतवाडी गया।'

'किसलिए?'

'उण्णि साथ ले गया।'

'क्या लाने?'

'मुझसे कुछ नहीं कहा। सब उसकी ही इच्छा पर छोड़ देने के कारण है न?' उनका स्वर टूटने लगा। 'बड़े हो जाने पर कब तक गोद में बिठा सकते हैं?'

'वह नए बीज खरीदने गया है।'

'कौन-से बीज?'

'पुंजा बोने के लिए? बताया नहीं कि कौन-सा बीज।'

'पैसे दिए बिना बीज मिलेगा?'

'उसने गंधकशाला बेच दी।' यह एक प्रहार था। कठिन प्रहार। अचानक पड़ा प्रहार। कौर हाथ से छूट गया। ओठ दांतों में दबा लिए। एक क्षण! जितना हो सका उतनी शांत आवाज में पूछा, 'कितना मिला?' सिर्फ एक नौकर का-सा प्रश्न।

आवाज में आए उस परिवर्तन ने उन्हें चौंका दिया।

जल्दी उत्तर नहीं दिया।

'किसे बेचा?'

'चेट्टी को।'

'कितना देगा?'

'पांच सौ।' वह आवाज एक विलाप थी। वे भीतर की ओर दौड़ गईं।

यह धान हजार मिलने पर भी नहीं बेचा था। यह सोचकर संभाल रखा था कि लेवी ले जाने के बाद, चुंगी पर खर्च होगा। मानंतवाडी में थोक दुकान में बेचने के लिए...

कुछ देर बाद वे बाहर आईं। चेहरा लाल पड़ गया था। बिना सामने देखे धीरे से कहा, 'उस चेट्टी का उसे कुछ देना बाकी था।'

'अब पुंजा के लिए...' पूरा नहीं किया। खाली बीज ही तो नहीं, बीज के लिए कीटनाशक भी खरीदने हैं। बीज इस धरती के अनुरूप नहीं बैठते।

पैरों के नीचे जो मैंने आधार खड़ा किया था, वह किरकिराकर गिर रहा है। कुछ न कुछ टूट जाता है।

सहारा कहां?

हंसी उड़ाने वाले, बैर पालने वाले कुछ जमींदारों के सिवा और यहां कौन है सहायता करने को? सब छोड़-छाड़ चलो।

अंतिम प्रयोग का समय आ गया?

सब के लिए पैसा चाहिए। कहां से होगा?

कुछ कर्ज चुकाया। कुछ हाथी खा गया। अब केवल खर्च का धान बाकी है। बीज से खाना जैसा है वह।

इस साल भी खर्चे के लिए धान सूद पर लेना पड़ेगा तो कैसी दुर्गति होगी! शर्म की बात है!

पुंजा का काम पूरा करना है। वल्लियूरकाव के उत्सव के दिन आसामियों को पेशगी देनी है। सबसे परे इस साल का कुंडल भी देना है। किट्टूवारियर की योजना के हिसाब से अगर कुंडल की जगह नकद दें तो भी मैं अशक्त हूं, यह सच किसे कहूं? कहने से लाभ भी क्या? तिरुनेल्ली में अर्धऋणी लोग ही हैं न? उऋणी तो कोई नहीं। बहुत हो तो कुछ धान ही मिलेगा। जब खर्चे के लिए पर्याप्त न होगा तब सूद पर ले लेंगे। वह काफी नहीं। पैसा चाहिए। यहां पैसा एक मूल्यवान चीज है।

उनके द्वारा मेरी ओर छोड़े जाने वाले आरोपों के संभावित तीर—

एक मानम वल्ली ज्यादा क्यों दी? धनु महीने में पहरे के लिए वल्ली की नई व्यवस्था क्यों शुरू की? बेकारी के दिनों में आसामियों को भंडारघर में रखा खर्चे का धान क्यों दे दिया?

इन खर्चों के बिना यहां के कृषकों को काम करने वाले लोग क्या नहीं मिले? उन

लोगों ने भी बोया, फसलें उगाईं, काटीं...

पुंजा की फसल का काम शुरू हुआ। आवश्यक पैसा कहां से आया, वारस्यार ने पूछा नहीं। बताया भी नहीं। मिट्टी को सुविधानुसार गोड़कर जितनी हो सके उतनी खाद देने का समय। बरसात के पहले चाहे जितनी खाद डालें, बाढ़ का पानी बहा ले जाता है। बहुत खर्चीली खेती है।

पुंजा की भूमि तीन-चौथई वेल्लरोडी में है। अनेक बार अंबलकुन्न चढ़ा-उतरा नहीं जाता।...

उस दिन अप्पपारा से चुंडली अलुमिनियम के दो बर्तन, चीनी की प्लेटें, प्याले, चम्मच, गिलास आदि खरीद लाया।

बोझ उतारकर बोला, 'सेयतु मापिला आएंगे, यहां।'

सुबह तो मिला था।

वारस्यार का भिजवाया भात खाकर जरा कमर सीधी कर रहा था कि चुंडली आ धमका।

चुंडली राशन भी खरीदने गया था। उसके हाथ में कार्ड, थैली या चावल नहीं दिखा।

'राशन नहीं खरीदा?'

वह सकपका गया।

'खरीदकर बेच दिया है न?'

मौन!

'कार्ड दिखा, कहां है?'

उसने सिर झुका लिया।

'बेच दिया, तम्पुरान...'

'बेच दिया?'

'हां, अप्पपारा में दुकान चलाने वाले इब्राहीम को बेच दिया।'

'क्या बेच दिया, चावल या कार्ड?'

'कार्ड। एक रुपया मिला। चाय की दुकान का उधार चुकाना था।'

अधिक विस्तार से पूछने पर उसने कहा, 'सारे आसामियों के कार्ड इब्राहीम के पास हैं। सबको एक-एक रुपया मिला। वेल्लरोडी के दो-तीन कार्ड ही रह गए हैं। वो भी गोरे तम्पुरान के डर से।'

एक रुपए की खुशी में वह बोला, 'कार्ड झोंपड़ी में पड़े रहने से क्या फायदा? कौन आसामी अप्पपारा जाकर राशन खरीदेगा? पैसा किसके पास है?'

उसके सवालों का कोई जवाब नहीं। उत्तर दे सकने वाला इस गांव में कोई नहीं।

वह चला गया।

बर्तन देख मारा को आश्चर्य हुआ। दोपहर में उसने तम्पुरान के जूठे बर्तन मांज दिए।

पहली बार उसने गोबर लिपी जमीन पर झाड़ू लगाया। काम करने वालों को दोपहर की कंजी देने के लिए अंबलकुन्न् से जो तांबे का बर्तन, घड़ा आदि आया था, सब धोकर, झरने का पानी भरकर रख दिए। अब क्या करना है? नई थाली और बर्तनों का क्या करूं?

सेयतु को सीढ़ियां चढ़ते आते देख वह भीतर चली गई।

सेयतु के हाथ में चार दिन के अखबार। चिट्टी होने की संभावना नहीं। इस आदमी के बारे में सोचने वाला कौन बैठा है? भांजी शादी करके चली गई होगी।

सेयतु के चेहरे पर रोज की मुस्कान नहीं। लाल दिखता चेहरा और लाल हो गया है। पगड़ी उतारकर हवा करने लगा। बरामदे में बैठ चारों ओर नजर घुमाई। एक मंदहास ओठों पर झलका, पर बात शुरू करने पर लुप्त हो गया।

'ऐसी हालत आ गई है कि कुछ भी कहना हो तो पूरा टीला चढ़कर आना होगा।'

'एसी क्या बात हो गई?'

उसकी दृष्टि अंदर की ओर घूमी।

'तुम कहो।'

झोंपड़ी के पीछे के अहाते में करेलों की क्यारियों में पानी गिरने की आवाज आई।

'नायर, जैसा सोचा था, बात वहीं खत्म नहीं होगी।'

'क्या?'

'वे लोग दामोदरन को लाए हैं।'

'यह कौन है?'

'पद्मनाभन का साला।'

'किट्टूवारियर ने?'

'हां। खलिहान में आज बहुत सोच-विचार हो रहा है।'

'हूं?'

'वह हरामी है।'

'होने दो। हमें क्या?'

'कुशल शिकारी है।'

'... ...'

'जब इन दिनों पहरे का काम नहीं, तब वह तिरुनेल्ली क्यों आया? क्या विचार है? क्या इससे पहले कभी ऐसी बात हुई?'

'मैंने उसे कभी देखा ही नहीं।'

'वह तुम्हें जानता है। यहां झोंपड़ी में रहने का फैसला कर लिया?'

'ऐसा कुछ नहीं। सांझ हो जाने पर यहीं रुक जाऊंगा। काम जल्दी पूरा हो गया तो

अंबलकुन्न चला जाऊंगा। कोई ऐसा पक्का नहीं है यहां रहना।'

'तो मैं जाता हूं। सावधानी बरतनी चाहिए। ध्यान रखना। ईश्वर का स्मरण करना। बस! अब आ रहे हैं?'

'नहीं। आज यहां हूं। कल सुबह के मुहूर्त पर बीज बोना है।'

'तो ठीक।' उसने अपने साथ लाई थैली फर्श पर झटक दी।

एक कुम्हड़ा। कुछ करैले।

'सब्जी बनाने को कोई हो तो बनवा लें। अपने यहां के हैं। आज ही तोड़े गए हैं।'

वह चला गया।

'मा...रा...!' गीले हाथ पोंछते वह आई।

37

तिरुनेल्ली की खबरें कुंबारकुनी से फैलती हैं। उस दिन की खबर विभ्रांत करने वाली थी। ऐसा समाचार जिसे तिरुनेल्ली ने कभी सुना न था।

चोरी! खलिहान में चोरी हुई है!

हाथी नहीं! मनुष्य! अंबलकुन्न के खलिहान में घुसकर हाथी ने धान नष्ट कर दिया, यह बात अलग है। सुखाकर, भूसा अलग कर दिए गए धान की भंडारघर से चोरी हुई है! किट्टूवारियर के खलिहान से!

समाचार दोपहर की हवा की तरह क्षण भर में सभी दिशाओं में फैल गया।

यह एक साधारण विपत्ति नहीं!

फ्लू की तरह जो घाटियों में फैल जाती थी या 'पोट्टी' (एक बीमारी) की तरह जो सब कहीं होता था या नेत्रशोथ रोग की तरह नहीं।

चोरी! ऐसी बात जो तिरुनेल्ली के इतिहास में कभी नहीं हुई।

इस बात ने जमींदारों को चौंका दिया। आसामियों को कंपा दिया। जमींदारों का मन ही अधिक बेचैन। अब यहां कैसे रह सकते हैं? खलिहान के भीतर मात्र फूस के बने घरों में कोई कमजोर आदमी भी घुस सकता है। पहरे के दिनों की रातों जगे रहने के बाद गहरी नींद में डूब जाने वाली रातें। किसको पता चलेगा? चोर को जो कुछ चाहिए ले जा सकता है।

जमींदारों का एकमत से निर्णय था कि चोर आसामी ही है। यही नहीं, केवल एक का काम यह नहीं हो सकता। पूरा गैंग होगा। जिसकी नसों में आसामी का खून बहता

है उसके पास इस दल का नेता बनने का धीरज नहीं होगा। उनके पीछे जरूर कोई ताकतवर हाथ है। वह किसका होगा?

इसका समाधान रहस्य के रूप में, परम गोपनीय रूप में केवल जमींदारों के बीच चला। वह भी पक्ष-विपक्ष में।

चोरी होने के दूसरे दिन तोलावेल्लन ने मानंतवाडी में एक बोरी धान बेचा था। उसके अपने पक जाने पर कभी कट गया धान क्या अब तक बचा था? होता तो भी अब तक खा चुका होगा न? एक बोरी भरकर धान बेचने को कहां से मिला? यह भी खबर है कि जिसने धान खरीदा, उसका पता है। किट्टूवारियर का दोस्त, अखबार का एजेंट। बात सही ही होगी कि उसने धान खरीदा।

राघवन नायर आश्चर्य चकित रह गया। उचित रूप से एक सूत्र में बांध लिए गए आरोप। उस सूत्र का सिरा कहां है?

तोलावेल्लन के चेहरे पर मरण भय झलक रहा था। वह पीला पड़कर कागज की तरह हो गया था जैसे जरा भी हवा चलने पर गिर पड़ेगा। लगा जैसे एक ही दिन में उसके शरीर की दृढ़ मांस-पेशियां खाली खाल बनकर लटक आई हैं। उसके गोल चेहरे पर गहरी रेखाएं उभर आईं लुढ़ककर बिखर जाने के भाव में आंखें थीं।

एक ही दृष्टि में पता चल गया, यह दोषी नहीं है। हो भी नहीं सकता।

उस दिन किसी भी खेत में पुंजा का काम नहीं चला। आसामी लोग अपनी-अपनी झोंपड़ियों में छिप गए। आधे जुते तिरुनेल्ली के खेत श्मशान की तरह निर्जन हो उठे।

कुंबारकुनी की दुकान के अहाते में उस दिन लोग इकट्ठा नहीं हुए। केवल तलमला के खलिहान में लोग आते-जाते रहे। दोपहर को राघवन नायर ने तोलावेल्लन को बुलवाया।

वह कांपता हुआ, एक छड़ी की मदद से सीढ़ियां चढ़ आया। ऐसी दृष्टि जैसे सामने साक्षात मृत्यु खड़ी हो। वह नजर पूरे जीवन में न भूलेगी।

पूछने पर वह चुप रहा।

कुछ देर प्रतीक्षा की। वह कोई सफाई देगा, ऐसा सोचना भी व्यर्थ है।

मारा से उसने कंजी देने को कहा। बहुत लालच से पी गया। आंखों में हलका प्रकाश। धान की बोरी बेचने की कथा उसने बताई :

उस दिन कुटक के लोग धान की बोरियां लेकर ब्रह्मगिरि पार करके आए थे। सिर पर ढोकर उसे मानंतवाडी पहुंचाना था। दस-बारह कुली थे। धान की कटाई हो चुकने के कारण हाथी की भी समस्या नहीं। घने जंगल से जाने की जरूरत नहीं। कुछ दूरी अधिक चलें तो भी पनवल्ली से होकर काट्टिकुलम पारकर सुबह तक वहां पहुंच जाना काफी है। धान लेने को वहां अलग से लोग होंगे।

कितनी बोरियां थीं, पक्का नहीं बता सकता। कुछ लोग थे। बारह या चौदह? बीस

भी हो सकते हैं।

यह भी स्पष्ट नहीं था कि मालिक कौन था। कोई एजेंट होगा। वेल्लन सबसे पीछे मानंतवाडी पहुंचा। माल जहां पहुंचाने का निर्देश दिया था, वहां पहुंचने पर पता चला कि प्रतीक्षा में खड़े लोग आ चुकी धान की बोरियां जीप में लादकर जा चुके थे।

जो लोग तस्करी के बारे में जानते हैं, उनके लिए यह साधारण घटना है। इस तरह की कई बोरियां बाजार में बेच दी जाती हैं। अखबार के एजेंट ने असहमति का कोई भाव प्रकट किए बिना, जितना मिला, उसे अच्छा समझ लिया होगा।

'तुझे कितना मिला?'

'दस रुपया।'

'कहां है?'

जवाब देने में वह हिचकिचाया।

'कहां है?'

'घाट पर गाड़ दिया है।'

'कहां?'

'पनकट्टी के घाट पर एक चट्टान के नीचे।'

'तुझे धान बेचते हुए किसी ने देखा?'

'सबने। तोंद वाले तम्पुरान ने भी...'

किट्टुवारियर पिछले दिन मानंतवाडी में था। पंप की किस्त अदा करने गया था।

नाले के नीचे, पंचायत के पाखाने के पीछे, जंगल में और घाट पर धान की बोरियां आजकल अनाथ पड़ी मिलती हैं। बीच-बीच में चुंगी वाले शिकार ढूंढने निकलते हैं। कभी-कभी पक्षी के वेग से एक के पीछे एक जीपें उड़ती दिखाई देती हैं।

केवल एक आसामी होने के कारण तोलावेल्लन का एक बोरी धान बेचना अपराध है। किट्टुवारियर ने उसे देख भी लिया तो परम अपराध। सबसे बड़ी भाग्यहीनता यह कि यह बात कुंबारकुनी वाली घटना के बाद हुई। बदकिस्मत तोलावेल्लन कुंबारकुनी के नए अतिक्रमणियों का नेता है, ऐसा सब मानते हैं।

एक अच्छे मौके को क्यों हाथ से निकाल दें उसके भंडार से चोरी हुए धान की बात वही जानता है।

किट्टुवारियर ने ढिंढोरा पीट दिया कि वह पुलिस में रिपोर्ट करेगा।

रिपोर्ट, पुलिस—गांव सिहर उठा। दूसरे दिन भी पुंजा का काम जिसे जल्दी ही पूरा करना था। चला नहीं। सेयतु की दुकान में चाय के लिए रखा पानी उबल-उबलकर सूखता रहा। बिक्री नहीं हुई।

मानंतवाडी से अखबार का रिपोर्टर सुबह-सुबह जीप में जैसे उड़ता चला आया। साथ

में समाचार भी कि पुलिस आ रही है। अखबार के रिपोर्टर को छिपे आसामी टटिया के छेदों से ऐसे देख रहे थे जैसे कोई यमदूत हो।

ऐसी विपत्ति जिसके बारे में कभी सोचा ही न था।

कैसी-कैसी आफत! थोड़ा-सा धान, एक कद्दू, मुट्ठी भर करैले के पत्ते या चार हरी मिर्चों की चोरी की अभ्यस्त तिरुनेल्ली में भंडारघर का तोड़ दिया जाना। चोर पकड़ने के लिए पुलिस का आना।

वे कुंबारकुनी की ओर डरकर ऐसे ताक रहे थे जैसे वह मलंकारी द्वारा शापग्रस्त कोई झोंपड़ी हो। शापित तोलावोल्लन को देखने से बचने के लिए उन्होंने आंखें बंद कर लीं। उनके कांपते मन पुलिस की जीप की गुर्राहट सुनने के लिए कान लगाए रहे।

अंत में यम का रथ आया। आने की बात जोरों से गुंजाती वह जीप सेयतु की दुकान के सामने खड़ी हो गई।

गांव में आने वाली पली पुलिस जीप!

चार कांसटेबिल। अखबार का रिपोर्टर। पुलिस वालों के साथ आए किट्टुवारियर।

वे किट्टुवारियर को देख ऐसे सिकुड़ गए जैसे यमदूत सामने खड़ा हो।

आदेश दिया गया कि जिस पर शक हो, उसे हाजिर करा दें।

चोर को भागकर जंगल में छिप जाने से रोकने के लिए दो बलवान पुलिस वाले उत्साह से तैयार होकर खड़े हो गए। उनकी नजरें बाज की आंखों की तरह वहां घूमती रहीं।

चार लोग मिलकर तोलावेल्लन को लिवा लाए।

चोर ताकतवर ही होगा। पुलिस वाले खूब सावधान हो गए। चार लोगों को भी धोखा दे जाए। थाने से दो और लोगों को ले आना चाहिए था। अपरिचित गांव। खुरदुरे मनुष्य। चारों ओर जंगल। जरा और सावधानी बरतनी चाहिए थी। इस बात पर कैसे यकीन न हो कि इन लोगों ने संगठित होकर डाकुओं का एक गिरोह ही न बना लिया हो?

चार लोग मिलकर लिवा लाए— एक प्रेत को। उनकी नजरें झुक आईं। चेहरे का गंभीर भाव दूर हो गया। यही आकृति है चोर की?

बिना दो लोगों के सहारे के तोलावेल्लन सीधे खड़ा भी न हो पा रहा था। ककड़ी के खेत में लगे कागभगोड़े की तरह पीली पड़ी आकृति।

'सीधे खड़ा हो।' दरोगा ने हुक्म दिया।

उसे सहारा दिए खड़े कुरुमकालन और कुरिच्चिन रामन अलग हो गए। तोलावेल्लन नाम की वह आकृति एक चीथड़े की तरह दारोगा के पैरों पर गिर पड़ी। उसकी आवाज ने जैसे किसी पहाड़ के बीच से अचानक फूट पड़कर बेचैन हो रही खामोशी को चीर दिया। चट्टानों की दरारों से निकलकर, तड़पकर रोती बावली को भी उसके विलाप ने मात दे दी।

आगंतुक घबराए खड़े रहे।

'सीधे खड़ा हो जा!'

'रो मत।'

'सच-सच बता।'

'तूने धान की चोरी की?'

'कौन-कौन थे तेरे साथ?'

'सच बता दे तो छोड़ दूंगा।'

'उठकर खड़ा हो रे!'

जल में लिखी गई आज्ञाएं।

वह अत्यंत करुण रूप में विलाप करता रहा। लगा, वहां इकट्ठा हुई कोई भी शक्ति उस चीत्कार को रोक नहीं पाएगी।

स्पष्टतया दारोगा हार गया। पुलिस वालों के चेहरों पर झुर्रियां पड़ गईं। किट्टुवारियर के चेहरे की गंभीरता दूर हो गई।

दारोगा ने दूर हटकर खड़े दर्शक आसामियों को घूरा।

कैसा बर्ताव करें? सवाल का जवाब तक देना नहीं जानता। सालों से इन गंदे लोगों का साथ है। फिर भी समझ में नहीं आता, कैसा बर्ताव करें? कारण, ऐसा पहली बार हुआ है। उसका रुदन उनके मन को छूने लगा था।

दारोगा की गंभीरता मिटती देख किट्टुवारियर का उत्साह बुझ गया।

इतनी तकलीफ उठाकर सुबह-सुबह मानंतवाडी जाना। जीप का खर्च! सब नष्ट। यहां के पुलिस वालों का भी कोई बूता नहीं है।

सुबह कंबल की गर्म नींद छोड़ी, शांत बैठकर चाय का प्याला न पिया, इन सबको लाया। सब बर्बाद! एक चोरी! भंडारघर से बस एक बोरी धान की चोरी। दारोगा की त्योरियां किट्टुवारियर पर चढ़ गईं।

पर शिकायत करने वाले की आशा बिल्कुल तो नहीं बुझी थी। वह पुलिसवालों की भूख समझ सकता है। ठंडी, कांपती सुबह। क्रोध समझ सकता है। अपनी हवेली के बरामदे में उन्हें ले गया।

क्या करना चाहिए? तोलावेल्लन को लाए लोग एक-दूसरे को आंखें फाड़े देखते रहे। कैसे इस जाल से बचें? कुछ बोले बिना वे लोग हवेली चले गए हैं। अब क्या किया जाए?

किट्टुवारियर ने मुड़कर कहा, 'उससे कहो कि बिना रोए पड़ा रहे। हम अभी आते हैं।'

यह सुनकर वेल्लन का थमता रोना पहले से भी तेज हो गया।

पुलिस वालों के घी, शहद और चीनी के साथ दोशा खाकर, कॉफी पीने के बाद आने तक वह वहीं पड़ा रहा। दर्शक खिसकने लगे। कॉफी पीने के बाद भी पुलिस वालों का

चेहरा जितना शिकायत करने वाले ने सोचा था उतना प्रसन्न नहीं हुआ।

वे लोग जीप के पास आ गए। इस बिना किसी हल की समस्या को मानंतवाडी तक ढोने की जरूरत है? चाहें तो जीप में ले जाएं, पर लाभ क्या?

सोच -विचार के बाद किट्टुवारियर का चेहरा खुश नहीं हुआ। लॉक अप में बंद करके दो हाथ जड़ देते तो इन लोगों का सारा घमंड दूर हो जाता। लाल पगड़ी देखते ही कांपने वाले लोग। कुंडल देने से पहले जरा डरा-धमका देना जरूरी था।

'छि!'

सब बर्बाद हुआ।

जीप चली गई। तोलावेल्लन ने जगह छोड़ दी। फिर वह उस झोंपड़ी में नहीं गया।

मैंने खेती करने को कहा तभी उसने कुंबारकुनी की सरकारी भूमि में धान बोया। उसके फिर से वहां बसने में मैं भी जिम्मेदार हूं, राघवन नायर ने सोचा। मुझसे दुश्मनी के कारण ही किट्टुवारियर ने उसे फंसाना चाहा।...

धूप में चलते-चलते आगे कुछ दिखाई नहीं देता। घर के सामने के बरामदे में जाकर लेट गया। रसोई से बच्चों को खाना परोसने की आती खटपट। वारस्यार की डांट। उनके स्वर में एक तरह की तुर्शी जो पहले नहीं थी।

'अरे, कल खाने का ठिकाना नहीं। चोरियां हो रही हैं। अब जमीन भी उन्हीं लोगों के कब्जे में चली जाएगी। देख लेना, समय आने दो।'

'मां, मामा यहां आकर अब क्यों नहीं बैठते?' सुभद्रा बोली।

'अब मामा को हमारी जरूरत नहीं, देखभाल करने को और भी लोग हैं', मां बोली।

चुपचाप दबा पड़ा रहा। पता नहीं, कितनी देर लेटा रहा। लगा, कोई पास खड़ा है। सिर उठाकर देखा, वारस्यार। नाखुश चेहरा।

एक क्षण नजरें मिली रहीं। झटपट उठ बैठा।

'क्या हुआ, तबीयत ठीक नहीं?' उनका हाथ आगे बढ़ आया। एक पल, वे ठंडी उंगलियां माथे पर अटकी रहीं। फूलों की पंखुड़ियों-सी। मन ने आग्रह किया कि वे ऐसे ही टिकी रहें। धीरे से हाथ खींचकर वे बोलीं :

'चलते रहने से ही ऐसा हुआ। पड़ जाने पर कोई देखने वाला भी नहीं।' उनकी आंखें गीली हो गई थीं।

धूप में चलने से है। सच सिर्फ इतना नहीं था। वेल्लन के खिलाफ शिकायत के कारण प्रातःकाल ही निकल पड़ा था। एक गिलास कॉफी के सिवा पेट में पानी तक नहीं गया। यह बात तो कह नहीं सकता। उन्होंने दोशा और कॉफी वेल्लरोडी भेजा था। वह वहां पड़ा होगा।

'खाना नहीं खाएंगे?'

'खा लूंगा।'

'कालन (एक सब्जी) बनाया है।'

'बच्चों ने खा लिया?'

'हां।'

उठकर हाथ धोने जा रहे इस आदमी में ऐसा कुछ है जो मैं समझ नहीं पाती। भीतर सैकड़ों शंकाएं उभर आती हैं। वे शंकाएं बनी ही रहेंगी। सदा एक दूरी बनी रहेगी।

खाना खा लिया। खेत में उस दिन काम नहीं था। सामने बरामदे में दामू वारियर के हाथ की बुनी चटाई बिछाकर लेट गया।

'वारियर कहां?' तुरंत याद आया।

'तबीयत ठीक नहीं। सिर चकराता है।'

ओखली वाले कमरे से उस दिन चटाई बुनने की आवाज नहीं आ रही थी। दक्षिण के बरामदे में कंबल ओढ़े वारियर झपकी ले रहे थे। छूकर देखा। ताप नहीं था। ठंडा! हल्दी की तरह पीला चेहरा।

उन्होंने हंसने की कोशिश की।

'क्या-क्या हुआ आज?'

'खास कुछ नहीं।' कहना शुरू करें तो खत्म होने पर न आएगा और दामू वारियर की सुनने की तबीयत भी नहीं।

'खून की बहुत कमी है। मानंतवाडी डाक्टर को दिखाना चाहिए। पीलिया है क्या, शक पड़ता है।'

'कौन तकलीफ करे इन सबके लिए?'

'मैं साथ चलूंगा।'

'वे जो कहते हैं, सच है?' वारियर बोले।

'कौन?'

'कल पद्मनाभन आया था।'

वेल्लन की धान की चोरी वाली बात है।

'खाली सच कहने पर निठल्लों का समय कटेगा?'

दामू वारियर के चेहरे पर मंद हास। परस्पर विश्वास की हंसी। कंबल ठीक से ओढ़ाकर बाहर निकल आया।

वारस्यार बरामदे में खड़ी थीं।

अपनी आंखों में उभरे प्रश्न को दबाकर कहा, 'एक बात पूछूं?'

मारा की बात होगी।

'चुप क्यों हैं? पूछना अच्छा नहीं लगता?'

'सोच रहा था, ऐसी भी कौन-सी बात है!'

'कई लोग कह रहे हैं। सच है?'

'क्या?'

'तोलावेल्लन को यह करने को विवश किया?'

'क्या? धान की चोरी के लिए?'

'जो सुना वही पूछती हूं। ऐसा नहीं कि मुझे विश्वास है।'

'विवश करने पर भी क्या उन लोगों में चोरी करने का साहस होगा?'

'विश्वास हो जाए तो फिर ऐसी कौन-सी बात है जो कोई कर नहीं सकता?

'कौन-सा विश्वास?'

'यही कि पीछे कोई सहारा है।'

'क्या ऐसा लगता है कि वह व्यक्ति चोरी करने में सहायता देगा?'

'मुझे नहीं, पर कई लोगों को लगता है।'

'ऐसा क्यों?'

'क्योंकि सभी बातों में आप उनके पक्ष में हैं।'

'सभी बातों में नहीं। यह ध्यान आने पर कि सभी मनुष्य हैं, ऐसी चीजें भी दे देता हूं जो अपनी नहीं। अब ध्यान रखूंगा।'

वह बात लक्ष्य पर लगी।

'यहां जो कुछ है, किसने बनाया है?'

'मैंने नहीं। इन खेतों में काम करने के लिए मैं किसी को अपने साथ नहीं लाया। यहीं की जमीन, यहीं के आसामी।'

'पद्मनाभन कहता था। सहन नहीं होता, इसीलिए बता रही हूं।'

'मेरे कहने पर विश्वास हो तो कहूं?'

सब कुछ बताया। वेल्लन की कही कहानी। उन्हें यकीन हुआ। आंखों में प्रकाश चमका। चेहरा प्रसन्न हो गया। पूछा, 'यह बात पुलिस वालों को क्यों नहीं बताई?'

'किसने? उसने या मैंने?'

'कोई भी।'

'मेरे कहने पर उन्हें विश्वास आता?'

'वह बेचारा तो बच जाता।'

'उसे कुछ नहीं हुआ। उन लोगों ने तो छोड़ दिया था। इतना होने के कारण वह गांव से चला गया। मैं उसे बचाने की कोशिश करता तो भी वह चला जाता। फिर किसलिए?'

'अपनी बदनामी को ही मिटाने के लिए?'

'मुझे अपने चेहरे का कलंक नहीं मिटाना। इससे किसी को कोई कष्ट भी नहीं। फिर

मुझे विश्वास भी नहीं कि यह कलंक है।'

'अपना हठ कभी नहीं छोड़ेंगे?'

'ऐसा ही समझ लें।'

दूसरे दिन तिरुनेल्ली में तोलावेल्लन कहीं नहीं दिखा। बड़ा बेटा और बहू अरवनाषि चले गए।

छोटी बेटी रोज की तरह जंगलों में भटकती रही। नदी में उछल-कूद करती रही। घाट पर पड़ी चट्टान पर पड़कर धूप में बदन गरमाती रही। आम के पेड़ों के नीचे भटकती रही।

गलियों में भटकती गायों को उसकी झोंपड़ी का आसरा मिल गया। मिट्टी की दीवारें गिर गईं। भीतर की टटिया अपने दांत दिखाने लगी। आंधी-बवंडरों में फूस थोड़ी-थोड़ी करके उड़ गई। तिरुनेल्ली उसे पूरी तरह भूल गई। बच्चे तो कब का भुला चुके थे! सिर्फ मेरी ही याद में वह है, राघवन नायर ने सोचा। किसान बनने की कोशिश में ही उसे यह जगह छोड़नी पड़ी। समूह का एक भाग बनकर वह आज भी यहां रह सकता था। लेकिन क्यों?

38

पुंजा का काम आज पूरा हो गया। जड़हन की टोकरियां खाली हो गईं। कालिंदी का जल खेत की ओर मोड़ दिए गए नालों से बह गया। ऊपर की तीन सीढ़ियों के खेतों को सींचने के लिए झरने का जल काफी है। पतली-सी धारा का अनवरत प्रवाह। पुंजा के पक जाने पर भी वह ऐसे ही रहेगा।

करियन, चात्तन और चुंडली को पांच-पांच पोति धान कुंडल के रूप में देना है। लेवी पर एक क्विंटल का पैंसठ रुपए के हिसाब से मिला। महीनों पहले की किट्टुवारियर की बात याद आई कि कुंडल में धान की जगह पैसा ही दें। ऐसा करने पर पंद्रह पोति धान बच जाएगा। उसे उचित समय पर ब्लैक में बेचा जा सकता है।

मेरे आने से पहले तृश्शिलेरी के एक लड़के ने इन लोगों को संगठित करने का प्रयास किया था। अरुमुखन की कही कहानी। एक ढेर धान के जब पांच सौ रुपए से भी कम मिलते थे। तीन और दो मानम वल्ली के साथ मर्द और औरत को छः तथा चार आने अधिक देने की बात पक्की हुई। वह समय जब आसामियों को देखने को भी पैसा न मिलता

था। ठीक है, दे देंगे। किट्टुवारियर और दूसरे लोग सहमत हो गए। पर शाम को वल्ली देने के समय बोले :

'एक-एक मानम धान रह गया है। फसल काटने के समय दे देंगे। तभी पैसा भी देंगे।'

बेचारे! बाकी रह गई वल्ली और पैसा एक साथ मिलेगा। तिरा और काक्कपुला के दिनों की वे प्रतीक्षा करते रहे।

हिसाब लगाया। घटाया। कभी-कभी कन्नी और तुला के महीनों में बेकारी के दिनों में एक-एक मानम उधार लिया है।

सूअर के खाए धान का हिसाब।

कीड़ों द्वारा नष्ट हुए धान का हिसाब।

आखिरकार वे ही जमींदारों के कर्जदार बने। स्पष्ट रूप से लिखे हिसाब को उनके सामने पढ़ दिया गया।

उदारता के नाम पर दो-तीन कुलकम धान मिल गया। जिनको एक पोति से अधिक मिला ऐसे इक्का-दुक्का। कुंडल, बाकी रह गई वल्ली, पैसे—सब छूमंतर।

छः आना, चार आना सपना ही रह गया।

आज स्थिति बदल गई है। धान सोने जैसा कीमती हो गया है। कुंडल के लिए इसलिए पैसा देने की व्यवस्था शुरू है।

पूरे गांव में खबर फैल गई।

कुंभ महीना शुरू हो गया है। पैसा मिलेगा तो तिरा पर दावत कैसे करेंगे? काक्कपुलाएं कैसे मनेंगी? धान देने पर सेयतु नमकीन मछली और मसाला दे देगा। पैसा देने पर वह धान नहीं देगा।

कुंभ और मीनम महीनों का चेहरा काला ही पड़ा रहेगा।

किट्टुवारियर का दिया पैसा लेकर तलमला के आसामी सेयतु के पास आए।

एक बार— बस, केवल एक ही बार। आज काक्कपुला शुरू हो रही है। मानंतवाडी जाकर चावल लाने का समय कहां? शायद मिलेगा भी नहीं।

सेयतु ने कृपा की।

दो रुपए का आधा सेर चावल। चावल की बोरी पर से उसने पानी की सुराही हटाई। पानी सूख गया था। भीगकर मोटा हो गया चावल। तौलते समय नाषि में लगा रहेगा। टोकरी में डालते समय चावल में कंकड़ों की आवाज आई। सच तो यह है कि उसने कंकड़ नहीं मिलाए। आजकल उसके भी दिन बुरे चल रहे हैं। फसल के बाद कुंडल में धान न मिलने के कारण उसकी दुकान में भी कच्चे धान की कमी हो गई है। जो कुछ था उसकी कंजी बन गई।

सेयतु की टोकरियां खाली ही पड़ी रहीं। बड़ी टोकरियों में लया नमकीन मछलियों का ढेर बिका ही नहीं। बस, अनेक लालची नजरें और बड़ी-बड़ी मक्खियां वहां मंडराती रहीं। कच्चे धान की सुगंध की जगह सड़ी मछली और धूप में सूखती चाय-पत्ती की गंध वहां भरी रही। मानंतवाडी से जो पालकाड़न चावल लाया था बस वही एक-दो नाषि करके पूरा बिक गया।

'नायर, इससे जीवन नहीं कटेगा। उत्संव के बाद मैं गांव चला जाऊंगा।'

सेयतु, जो धान की बोरियां बेचकर पैसा कमाता था। आज यह हालत कि मानंतवाडी से सोने के दाम में चावल खरीदना पड़ता है। आसामियों के कभी-कभी एक नाषि चावल खरीद लेने से या शक्कर की चाय बेचने से उसका जीवन चलेगा? किसी लाभ के बिना वह इस तिरुनेल्ली में क्यों रुके?

सदा हंसते रहने वाला चेहरा आज उदास है।

'अच्छे दिन आएंगे, सेयतु! शांत रहो।'

'शांत बैठने पर अब तक जो चार पैसा कमाया वह भी हाथ से निकल जाएगा।'

जाने का ही विचार है उसका।

साबुन, कंघी, बीड़ी—नया कुछ भी नहीं लाया। धीरे-धीरे उसकी दुकान खाली होती जा रही है। केवल केले के कुछ सूखे गुच्छे लटके हुए हैं।

'तू यह ढूंढ कि अगली फसल तक कहीं कोई भूमि बंटाई पर मिलेगी क्या?'

'मेरे और मिट्टी के बीच बनती नहीं, नायर! अल्लाह ने मेरे लिए खाली कारोबार का काम बनाया है।'

दिन अच्छे न आए तो वह शायद गांव छोड़ देगा। आशा का मार्ग बिल्कुल बंद न हुआ। तलमला के दो-तीन लोगों को छोड़कर और किसी ने कुंडल में पैसा नहीं लिया है। उनकी आशा है कि उत्सव निकट आने पर किसी तरह धान मिल ही जाएगा...

आज अरवनाषि में भी ढोल, डमरू बज रहे हैं। जब धान की तंगी नहीं थी तब एक टीले की काक्कपुला के बाद ही दूसरे में शुरू हो जाती। पूरा गांव इकट्ठा होता। लोगों को कम करने के लिए ही उन लोगों के द्वारा ढूंढा उपाय।

अरवनाषि के नीचे पुषकुनि में सेयतु के सब्जी लगाए खेत से जाते समय चेम्मक्कारन को चार सेर चावल ले जाते देखा था। यह चावल वह तृश्शिलेरी से लाया है।

'कहां से लिया?'

'वहां कुछ दुकानें हैं।'

'क्या दाम लगा?'

'दो रुपया सेर पर दस पैसा कम।'

'काक्कपुला के लिए?'

'ओ! कैसी काक्कपुला।'

'चावल नहीं मिलता, इसलिए ही न?'

'पहले चार-चार दिन काक्कपुला मनाते थे।'

पहले चार दिन मनाई जाने वाली काक्कपुला अब एक जून की दावत में समाप्त हो जाती है। चार सेर चावल के भात से सौ-डेढ़ सौ आदमी कैसे जीएंगे?

चावल कितना मिले, उस ओर ध्यान नहीं जाता। साल में एक बार सभी का मिल-जुलकर इकट्ठा होने का दिन। सज-धजकर परिवारों सहित हर टीले पर रहने वाले लोग आ जाएंगे। चेम्मक्कारन के मन में क्रोध की आग उठी!

पुंजा का काम पूरा हो चुकने के बाद भी गोरे तम्पुरान को वेल्लरोडी आते देख मारा को हैरानी हुई।

तम्पुरान यहां नहीं सोएंगे तो वेल्लरोडी निर्जन पड़ जाएगी। थोड़ी निराशा थी। यह घर क्यों बनाया? कुछ दिन लगातार यहां सोते थे। तम्पुराटी ने एक बिस्तर, चटाई और तकिया वेल्लरोडी भिजवा दिए थे। पुंजा का काम खत्म होने के कारण खाना, सोना सब अब वारियम में ही। पानी की धार मोड़ने या घास-पात हटाने जैसे छोटे-मोटे काम ही खेत में होंगे। उनके लिए दिन-रात यहां बिताने की जरूरत नहीं। कोई नहीं, फिर भी वह भीतर-बाहर झाड़ू बुहार देती है। तम्पुरान के न होने पर बाहर से दरवाजा बंद करके वह अपनी झोंपड़ी में चली जाएगी। भीतर एक भंडार-घर है। वहां वेल्लरोडी में बोने के बीज रखे थे। वल्ली भी। कुंडल दे चुकने पर भंडार खाली हो गया है। दस सेर धान होगा। काक्कपुला में जाने के लिए कुछ मिल जाए तो अच्छा। मल्लन के बाद पहली काक्कपुला है। कुछ देने पर चेम्मकारती बहुत खुश होगी।

कुंडल में कुछ भी नहीं लिया है। कुछ लेना बाकी भी नहीं। जब काम नहीं होता, तब भी यहीं से चलता है। तम्पुरान जो भात बनाते हैं उसका बचा हिस्सा मिल जाता है।

तम्पुरान को दूर से ही पहाड़ चढ़ते आते देख वह आशा से खड़ी रही। एक कुलकम धान। मांगने पर दे देंगे।

राघवन नायर के हाथ में एक चिंचिड़ा है। आज खाना और सोना यहीं होगा। क्षण भर में उसने रसोई के बर्तनों में पानी भर दिया। काम सब पूरा हो गया। चावल तम्पुरान खुद पकाएंगे। सुबह आकर बचा भात खाकर बर्तन साफ करने का ही काम है।

वह आंगन में उतर आई।

अरवनाषि से आती डमरुओं की आवाज तेज हो गई। उसके पैरों को अधैर्य ने जकड़ लिया। कितने दिन हो गए काक्कपुला में गए हुए। मुंडेर की परछाईं आंगन में खड़े गुलाब के पौधों को भी पार कर गई है।

कटहल के पास तम्पुरान के पहुंचने पर उसने पूछा, 'मैं जाऊं?'

राघवन नायर ने उसकी ओर देखा। लड़की नहाकर, सजी-धजी खड़ी है। साफ साड़ी। गोरी एड़ियों पर कीचड़ नहीं। पैरों में मेंहदी। गले में, बहुत दिन पहले मल्लन की दी सिक्कों की माला। कंधे का आधा भाग और नग्न हंसुली पत्थर की मालाओं से ढंकी हुई है। पास पहुंचने पर केतकी के फूलों और उबली रेंडी के तेल की खुशबू।

काजल लगी आंखों में जलती बत्तियां!

लड़की आज तैयार होकर ही निकली है। गांव का कोई भी युवक कल उसके घर 'कोल' और 'वल्ली' देकर रिश्ता मांगने आ सकता है।

सेयतु का काला, उदास चेहरा देखकर मुरझाया पड़ा मन अब जरा खिला। आज उसका रूप मल्लन जैसे किसी युवक को मोह ले।

धान के लिए पूछने की मारा को हिम्मत बंधी।

उसको कुंडल में देने के लिए, रखे धान में से एक कुलकम तौल दिया। चुंडली को एक साथ देना नष्ट ही करना है। यही अवसर है। बाकी उत्सव के निकट...

'मैं जाऊं? उसने सवाल दोहराया।'

'तू तो काक्कपुला में दावत खाएगी। मुझे क्या खाना नहीं खाना?'

'आप ऊरुवयल नहीं जाएंगे?'

'अब वहां तक नहीं चला जाता। बूढ़ा हो गया।'

लड़की हंस पड़ी। सफेद मोती चमक उठे। बहुत दिनों के बाद उसकी खिलखिलाहट सुनकर मन रोमांचित हो गया। चूड़ियां खनकाती हुई वह रसोई में गई। चूल्हा जलाया। आंगन से सूखी लकड़ियां लेकर रसोई में रख दीं। बर्तनों में पानी भरा। चिंचिड़ा काटकर रख दिया।

सब कुछ दस मिनट में करके वह देहरी पर आई।

'आग जला दी।'

'चावल चूल्हे पर चढ़ाकर जाना।'

'मैं!' वह आश्चर्य से अवाक् रह गई।

'मैं चावल पकाऊं तो तम्पुरान खाएंगे?'

आसामी औरत के हाथ का भात तंपुरान खाएंगे! वह चकित रह गई। सांस रुक-सी गई।

'तू नहीं पकाएगी तो आज मैं भूखा ही रह जाऊंगा। सिर में इतना दर्द है कि खड़ा भी नहीं रह सकता।'

तम्पुरान बरामदे में खाट पर लेटे कह रहे हैं। भीतर से तड़प उठी। दोपहर बीत गई। सांझ होने को आई।

'तम्पुरान ने दोपहर में नहीं खाना खाया?'

'नहीं, मारा! सीधे कुंबारकुनी से आ रहा हूं।'

वह वापस रसोई में चली गई। अरवनाषि में बजते डमरुओं की आवाज तेज हो उठी। रसोई में बर्तनों की आवाज।

'गई नहीं तू? चावल पक जाने पर मैं उतार लूंगा। सब्जी भी बना लूंगा।'

भात और सब्जी चूल्हे से उतार दिए। थाली साफकर, केले का एक पत्ता काटकर ला रखने के बाद ही वह गई। पहाड़ अपने माथे पर सिंदूर लगा रहा था। उसके जाने के बाद वेल्लरोडी बिल्कुल सूनी हो गई। सेयतु के सब्जी वाले खेत की चिंचिड़ा बहुत स्वाद है। इस साल की पहली है। इतने दिन करैला खाकर काटे। बहुत भात बाकी नहीं बचा। बर्तन ढंककर पत्ता बाहर फेंक दिया। हाथ धोए। बाहर पड़े तख्त पर बिस्तर बिछाकर लेट गया। पूरे बदन में दर्द हो रहा है। अच्छी तरह नींद लेने के दिन ही भूल गया। कुंडल भी दे देने के बाद इस साल का काम लगभग पूरा हो जाएगा।

सूनी रसोई में उस लड़की की चूड़ियों की खनक अटकी हुई है। बाकी सब शांत, सुनसान!

आसामियों की तीनों झोंपड़ियों में से कोई आवाज नहीं। सब लोग अरवनाषि गए हैं। मैं ही अकेला हूं वेल्लरोडी में।

'अकेले मत रहना।' सेयतु की चेतावनी।

'दामोदरन ने कुछ इरादा कर ही लिया है।' अब तक दामोदरन सामने नहीं पड़ा है। बहुत हो जाए तो आखिर वह क्या करेगा? अकेले एक मुझको भगा देने से क्या काल के परिवर्तन से किट्टुवारियर बच पाएगा?

इस बार कुंडल के मामले में बिलकुल नहीं पडूंगा। वे चाहे पैसा दें या धान दें। लेना, न लेना आसामियों की मर्जी। उन लोगों से अलग होकर कुंडल में धान देना यदि एक अपराध है तो उसका नतीजा भुगत लूंगा। साल भर मिट्टी में काम करने पर धान उनका अधिकार है, पैसा नहीं। उसे छीन लेना महापाप है। इस पाप में मैं नहीं शामिल हूं। किट्टुवारियर और दूसरे लोग कहते हैं कि यहां से धान दिए जाने के कारण दूसरे खलिहानों में आसामी पैसा लेने को तैयार नहीं होते हैं।

मुझे सबक सिखाने का उन लोगों ने फैसला किया है। सेयतु ने बताया था। किस तरह?

डमरू की आवाजों ने रात की निर्जनता को, शांति को गला दिया। घने अंधकार में झड़ रही आवाजें!

यह उन लोगों की भाषा है— मारा की, चुंडली की, करियन की, चात्तन की, तोलावेल्लन की, कुरुमाटी की...

निराशा का बोझ उतारकर डमरू बजाते हुए वे सुबह तक नाचते रहेंगे। चार सेर चावल से बनाई कंजी से काक्कपुला की दावत मनाएंगे। सब कुछ भूल सूरज निकल आने तक ओस से भीगी फूस पर पड़े सोते रहेंगे। सुबह खाली पेट और-भारी पलकें लिए पास के पहाड़ की काक्कपुला का सपना देखते हुए निकल जाएंगे। इस साल के सपने पूरे होने से रहे। बेचारों को क्या नहीं पता? कार्य-कारण को एक सूत्र में गूंथकर सोचने की क्षमता नहीं है उन लोगों को? अब अगले कितने साल! भूख मिटा पाने की संभावना से खाली काक्कपुलाएं!

मिट्टी की दीवार पर, किसी बंद न की गई दरार से एक झिल्ली कानों को बंद कर देने वाली आवाज में चीखती रही।

उठकर रसोई में एक गिलास ठंडा पानी पिया। आंगन में आकर खड़ा हो गया। छोटे कटहल के ऊपर पत्तों के बीच से झांकता चांद। बर्फ के टुकड़ों की तरह किनारे पर लगे सफेद बादल।

कटहल की डाली पर घोंसले में जगकर रोते चिड़ियों के बच्चे। उन्हें भी भूख और ठंड लगती होगी। ऐसा समय—जब खेत में एक बाली भी नहीं है।

चांदनी में धुली पड़ी धरती। दूर आकाश के पूर्वी कोने में तारे अदृश्य हो गए। पूर्वी पहाड़ियों को ढंके चांदनी का चेहरा काला पड़ गया। धीरे-धीरे चलते बादल। शायद पानी बरसे। आज या कल? न भी बरसे। इस पूरब के बादल का क्या भरोसा!

बचपन में—

वे रातें, जब मां आसमान ढंके बादलों को देखती बिना सोए बैठी रहती थीं—

घर में छप्पर नहीं छाया गया था।

बारिश किसी भी क्षण हो सकती है।

भीतर का दर्द —

बिना छाई छत की दरारों को ढंकते बादल। मां और बच्चे उस दिन बारिश न होने की प्रार्थना करते रहे।

आज?

एक बार पानी बरस जाता तो अच्छा होता।

पुंजा अच्छी निकलेगी।

सोते का प्रवाह कमजोर पड़ गया है। कालिंदी में बनाया बांध और ऊंचा होता तो ठीक था, ऐसा लगता है। जैसे सोचा था उस हिसाब से तीसरी सीढ़ी के खेत को पर्याप्त पानी नहीं मिलता।

धुंधली और चमकीली होती चांदनी। पूर्वी क्षितिज से, अकेले भटकते आ रहे एक दो मेघ-खंड।...

बिना सोए, कंबल ओढ़े पड़े रहने की तकलीफ। उस लड़की के चले जाने पर घर सचमुच जेल जैसा हो गया है। मैं किसके लिए इस जेल को झेल रहा हूं?

यहां पहली बार आने पर लगा था, अलग-थलग पड़ा एक गांव। कुछ भी न जानने वाले लोग। कच्ची मिट्टी, जिसे बस में कर लें तो जीवन के अंत तक विश्वास कर सकते हैं। यह कठिन हृदय वाली है। वश में करना ही चाहिए। उसकी चरण सेवा के लिए इन परम निष्कलंक आसामियों को गुलाम बनाते जमींदार।

खुद जमींदारों के बीच ईर्ष्या, द्वेष और वैर। एक-खेत में सूअर के घुसने पर दूसरे खुश होंगे। लड़ाइयों और अनिश्चित फसल ने मिलकर इन लोगों को हृदयहीन बना दिया?

फिर भी—

उस उण्णि ने कहा, 'मामा कंधे पर बैठकर कान काट रहे हैं, मां! आसामी औरत से रिश्ता जोड़कर उन लोगों को अच्छा बनाने की कोशिश कर रहे हैं।'

एक मेरी कोशिश से ये लोग सुधर जाएंगे? ऐसा होता तो खुशी से उस लड़की से रिश्ता जोड़ लेता। रामन नायर नें पेम्बी को ब्याह लिया। इससे उसका पेट भर जाता है। कभी लुकछिप कर कुछ दे देती है तो मां और छोटे भाई की भी भूख मिट जाती है।

मैं?

यहां के छोटे-मोटे काम करवाकर बचा भात या कंजी उसे दे देता हूं। जब खेतों में काम नहीं होता तब रात के खाने की बाकी जूठन उसे देने के विचार से कभी-कभी शाम को यहां आ जाता हूं। मन न करे तब भी चावल पकाता हूं। बाकी पड़ा रहेगा। सबेरे उसकी एक जून की भूख मिट जाएगी। रिश्ता जोड़ने पर भी उसे और कौन-सा फायदा मिल जाएगा? एक अच्छा युवक उसे जो मिल सकता है, वह बात भी खत्म हो जाएगी। पूरा जीवन नष्ट हो जाएगा। मुझ अधेड़ की गुलाम। एक और गुलाम की सृष्टि कर दूंगा। भविष्य में गुलामी के लिए कुछ बे-बाप के बच्चे पैदा कर दूंगा। मेरे नाम पर और कइयों के भी बच्चे वह जन्म दे सकती है। सिर्फ उसकी नहीं, सभी आसामी औरतों की यही दशा है। रूप की कोई बात नहीं। तब अरवनाषि में लंबे दांतों वाली, तीन ओठों वाली, सूखी जटाएं सिर में बांधे उस काली ने कैसे एक बच्चे को जन्म दिया था? एक सुंदर, गोरा बच्चा। उच्च वर्ण के लोगों का रंग और बाल, आसामियों का दृढ़ शरीर और मुख श्री-युक्त एक आकार। भविष्य का एक गुलाम वह भी। ऐसे एक समय का सपना क्या देखा जा सकता है, जब ये सब न चलेगा? भूख की गुलामी। गरीबी की गुलामी। वजह यह कि आने वाले दिनों में इन लोगों को आसामी का काम भी नहीं मिलनेवाला।

'भौं...भौं...भौं—' चौंक गया।

अचानक एक आवाज आई। कम चौड़ी मेड़ से पैर फिसल गया। इस गांव में सिर्फ एक या दो कुत्ते हैं। घाटी से या मानंतवाडी से लाकर पाले जाते हैं। पर बदली जलवायु

में वे मर जाते हैं।

अप्पुमारार के पास एक अच्छा कुत्ता है। कुछ दिन पहले पूंकुन्नम मना का वैद्य उसे बंगलोर से लाया था। लगता है, जलवायु मनमाफिक बैठ गई। वैद्य कहता था कि अगली बार जाने पर उसका जोड़ा भी ले आएगा। वैद्य स्वयं की चिकित्सा के लिए हर साल बंबई जाता है। गले का कैंसर। धान के प्रदेश में बिना चावल खाए जीने वाला बस एक आदमी। अप्पुमारार के घर से उसके लिए दूध और आटा आ जाता है।

वेल्लरोडी छोड़कर कुछ आगे चला आया। अप्पुमारार के खलिहान के पास पहुंचने की बात कुत्तों की भौंक ने याद दिलाई।

यह साफ है कि कुत्ता मुझे देखकर नहीं भौंक रहा है।

चांद पश्चिम की ओर पहाड़ के शिखर से सटा खड़ा है।

आधी रात का वक्त। मारार का कुत्ता इस वक्त किसे देखकर भौंक रहा है?

तोलावेल्लन पर चोरी का आक्षेप लगा तो भी यहां कोई चोर नहीं है। मुट्ठी भर बाली भी खेत में नहीं है। एक कुलकम धान के लालच पर भी कोई आसामी इस आधी रात के समय नहीं निकलेगा। ऐसा गांव जहां रात-दिन भूखे रहने वालों में चोरी करने की बुद्धि भी नहीं बची है।

'भौं...भौं...भौं...' आदमी देखने पर ही कुत्ता ऐसी आवाज में भौंकता है।

सोई रात जाग उठी। पानी में गिरे पत्थर की तरह भौंकने की आवाज उस चुप्पी में डूब गई।

'अप्पु मारार, जरा कुत्ते को बांध लो। मेड़ के ठीक सामने अहाते के पार खड़ा हूं मैं।'

जरा चौंक पड़ा। दबी होने पर भी साफ सुनाई पड़ी आवाज— दामोदरन!

अप्पू मारार के बरामदे में छोटी-सी रोशनी चमकी।

'दीया वगैरह कुछ नहीं चाहिए। जरा कुत्ते को बुला लो।'

'घर नहीं आते हो?'

'नहीं।'

'आधी रात को कहां जाएगी सवारी?'

'तुम्हें क्या?'

'काम तमाम करना होगा, है न?'

'उस ओर से जंगली बकरे की आवाज सुनी थी। कल सुबह जाना भी है।'

'फिर कब आएगा?'

'शाम तक।'

'बंदूक किसकी है?'

'मामा की।'

'मैं भी आऊं?'

'नहीं।' उसने फिर कहा, 'कुत्ते को बांध लेना। लौटते समय वरना पकड़ लेगा।'

'हां।'

मारार के बरामदे की रोशनी बुझ गई।

रास्ते से बाईं ओर हटकर खड़ा रहा। दामोदरन वेल्लरोडी जाती सड़क पर चला गया। जैसा अप्पु मारार से बोला था वैसा उस पार नहीं। जंगली बकरे के पीछे भी नहीं गया।

बंदूक जिसे किट्टुवारियर कभी नहीं निकालता था, आज भतीजे को थमा दी है। भतीजे को, जिसे वह हमेशा बदमाश कहकर धमकाता फिरता था। जोसफ को भी, बस एक बार पूछने पर भी बंदूक नहीं दी थी। एक नाली की बंदूक। एक नाली की बंदूक लेकर कभी कोई शिकार नहीं करने जाता। जंगल नहीं जाता। अब तो फसल भी कट चुकी।

वेल्लरोडी जाने वाले ने मारार को यह क्यों कहा कि नदी के पार जा रहा है।

तो सेयतु ने जो कहा, सच है? आखिर में बात यहां तक आ गई? बंदूक दिखाकर भगाना चाहता है? या फिर मेरा जीवन इतना मूल्यवान है!

जिस रास्ते से वह गया, उसी ओर बढ़ा।

चार कदम चलते ही पीछे से आहट आई।

चांदनी कुछ-कुछ निकल आई थी। जंगल के काले किले को पार करने की मेहनत के बीच में हंसकर विदा लेता चांद!

'नायर—! अचानक आई सेयतु की आवाज पहचान में नहीं आई।

'या अल्लाह!'

'मुझे दो मिनट की देरी हुई।'

'तुम क्या कर रहे थे?'

'जरा झपकी ले रहा था कि कुत्ते के भौंकने से जग पड़ा। सीधे इधर का रास्ता पकड़ा।'

'कुत्ते का भौंकना सुन इधर आने की कैसे सूझी?'

'मुझे शक था। उसी दिन कहा था न?'

'नींद नहीं आ रही थी। इसलिए बाहर निकल पड़ा।'

'या अल्लाह! खुदा ने मदद की।'

'उधर आएगा या लौट जाएगा?' सांस रोके पड़े स्तब्ध मन।

'कुछ भी हो, अब वेल्लरोडी नहीं जाना। अल्लाह ने जो दिया उसका तिरस्कार मत करो।'

'अरे, मेरे मर जाने से किसी को कोई नुकसान नहीं होगा।'

'वह सब बाद में देखेंगे। अभी चलो, नायर!'

नदी पार कर लें तो कुंबारकुनी पहुंच जाएंगे। चिकनी शिलाओं पर सावधानी से पैर

रखे। सांप की तरह तड़पती लहरें। उन्होंने पैरों को घेर लिया। ठंड शिराओं में लिपट गई।

मोयतीन के खर्राटों की आवाज आई। दुकान के बरामदे में रखी बेंच की ओर इशारा करके उसने कहा, 'लेट जाइए। सुबह होने को है फिर भी...'

'नहीं। बस बैठूंगा। अब नींद नहीं आएगी।'

सेयतु के लेटने की जगह बनाकर बेंच के आगे की ओर हटकर बैठ गया। बावली की रोज की मर्मर ध्वनि पास से सुनता रहा।। दूर कटकर साफ होते जंगल में आग फैलकर जलती रही। जंगल से आवाजें आ रही हैं। तरह-तरह की आवाजें। फारेस्ट बंगले के दक्षिणी छोर से जंजीर की खनखनाहट, जो रोज सुनाई देती है। दल से जंजीर तोड़कर भाग आया हाथी। घायल पैर लिए वह ब्रह्मगिरि पार नहीं कर सकता। उसने ही रामन को मारा। वह चिंघाड़ जो उस दिन सुनाई पड़ी थी। खलिहान के ऊपर के अहाते में पड़े अलाव में अनजाने पैर चला गया होगा। जंजीर से घायल पैर में मवाद होगी। दोनों पैर मवाद से सड़ गए। अब अधिक दिन नहीं बचेगा। बारिश में मैसूर के जंगलों में शरण ढूंढने भी नहीं जा सकता। इस बरसात को वह जीत नहीं सकता। कितनों का खून पिया है इसने। कितनों के खलिहान नष्ट कर इसने दिल तोड़े हैं।

'नायर, बैठे-बैठे ही सो गए?'

'जंजीर की खनखनाहट सुनी?'

'सुनी। उसी का घमंड दिखा रहा है।'

'बेचारा!'

'बेचारा कहकर बैठने से तो काम नहीं चलेगा।'

'क्या करना चाहिए?'

'दावा करना चाहिए अदालत में।'

'तुम यह क्या कह रहे हो?'

'कल ही वारियर के खिलाफ दावा करना चाहिए— बिना लाइसेंस की बंदूक रखने के लिए।'

'तो क्या होगा?'

'वारियर बड़ा डरपोक है।'

'भतीजे को झूठ-मूठ में ही बंदूक दी थी?'

'ताकत दिखाने के लिए। अब जरा उसे औकत दिखानी चाहिए।'

'इतना करने की जरूरत है?'

'और क्या! दावा करना है, बिना लाइसेंस की बंदूक रखने और उसे लेकर घूमने के लिए। तिरुनेल्ली में और भी पुलिस आ जाए। उन लोगों ने ही शुरूआत की है।'

'बात फैलेगी!'

'फैलने दो। जान का सवाल है।'

'हूं।'

'हूं काफी नहीं। दावा करना।'

'करूंगा।'

'क़ब?'

'कल।'

'मैं जाकर कागज दूंगा, अगर आप से न बने।'

'हूं।'

'नायर!'

'क्या?'

'कुछ दिनों के लिए अपने गांव क्यों नहीं चले जाते?'

'अरे क्यों? डरकर?'

'छोटे भाई और भतीजों को देखने नहीं जा सकते?'

'सोचूंगा।'

'इसमें इतना सोचने को क्या है! घर है, बच्चे हैं।'

'अरे, मैं नहीं जाता। बूढ़ा हो चला। एक सीमा तक ही कुछ कर सकता हूं।'

'बूढ़ा हो गया? या अल्लाह! सागवान के काठ जैसा आदमी।' दोनों जोर से हंस पड़े। एक लंबी रात का अवसान हुआ।

39

अच्छा ही हुआ कि घर बदल लिया। नींद खुलने पर उन लोगों के दिखाई पड़ने वाले चेहरे।

यह पहुंचना अंबलकुन्न के दरवाजे पर होता।

मारा आंगन में झाड़ू लगा रही है। आवाज सुनकर जागा।

पत्ते में कोयला लिए खड़ी सामने सुभद्राकुटी नहीं है।

आंगन से चूड़ियों की यह खनखनाहट तब भी सुनाई देती थी। वेल्लरोडी में पुंजा का काम शुरू होने पर मारा वहां की नौकरानी न रह गई। आज यहां, कल किसी दूसरे खलिहान में जा सकती है।

आंगन में आम से एक डाली बांस की छड़ी से तोड़ गिराई। पत्ते लेकर लपेट लिए तो मारा कोयला लेकर आई।

दो दिन पहले अरवनाषि़ में काक्कपुला में गई सुंदरी। लगता है, सौंदर्य जरा और खुल गया। बरसात से नहाए खुले खड़े वन से होकर आती हवा की सुगंध।

उसने रसोई में झाड़ू लगाया। सोते से पानी लेकर आई।

'काफी नहीं चाहिए? मुंह खुला ही रह गया। आवाज बाहर नहीं निकली। एक क्षण। दृष्टि सीढ़ी पर स्थिर हो गई। तुरंत भीतर भाग गई।

राघवन ऩायर मुंह धोकर एक लोटा पानी लेकर आया। बरामदे में चढ़ने को हुआ तो देखा वे लोग फिर से आए हैं!

मूप्पन और बाकी जने। ऐसे भी हैं लोग।

फिर मन ठंडा हो गया। कुंडल की समस्या लेकर आए होंगे। साथ में तलमला के आसामी भी हैं। पहाड़ के दो मूप्पन जोगी और वेल्ली।

वेल्ली सिर झुकाए खड़ा रहा।

जोगी नेता बनकर आगे बढ़ा।

'क्या है?'

'कुछ नहीं।'

कहता है कुछ नहीं! उस दिन अंबलकुन्न में आकर जो कह गया उसका बचा भाग पूरा करना है?

मारा रसोई में है। धुआं बरामदे तक पहुंचता है। आसामी औरत के हाथ का खाने वाला तम्पुरान। और क्या चाहिए? सबूत सामने है।

उनकी नजरें भीतर झांकने लगीं।

'काक्कपुला कल समाप्त हुई।' जोगी बोला।

'मारा को शुद्ध किया गया।' वेल्ली बोला।

अरवनाषि़ में काक्कपुला के समाप्त होने और मारा को शुद्ध कर लेने की बात मुझे क्यों बताते हैं?

'सब लोग कहते हैं...' वही पुरानी कहानी।

'क्या कहते हैं सब लोग?' आंगन में उतर आया।

'मैंने मारा को ब्याह लिया, है न? या फिर किसी ने तुम लोगों को विवश किया है कि ब्याह करना ही चाहिए?'

उन लोगों की जबान बंद हो गई।

जोगी मुंह फैलाकर धीरे-धीरे हंसकर बोला, 'तम्पुरान कहें तो हमें कोई आपत्ति नहीं है।'

हे ईश्वर! ऐसे भी महामूर्ख हैं। कितने पाखंडी हैं! इससे अधिक क्या प्रमाण चाहिए, इन्हें?

वेल्लरोडी के इस सूने में जब घर बनाया, तभी से ये लोग अंदाज लगाते होंगे। अगर कहूं कि मारा खाली मेरा खाना पकाती है तो ये लोग तो क्या, वारस्यार को भी यकीन नहीं आएगा। एक लड़की से खाना बनवाने भर के लिए भला कोई घर बदलेगा? वारस्यार के हाथ के यश का क्या किसी को नहीं पता? यह बात कि वारियम के लोगों के लिए वेल्लरोडी की जमीन आंखों के सामने खाली करवा ली। आखिर दूसरों के लिए मंचेरी वाला नायर इतनी तकलीफ क्यों उठा रहा है? ऐसे कितने मुख्तार हैं! कीष् इल्लम के मुख्तार से भी अधिक रोबदार कोई है? उसने इल्लम पर ही अधिकार जमा लिया। शंकरन नायर समर्थ था। इसमें उतनी सामर्थ्य नहीं, मशहूर भर है। एक आसामी औरत को अधीन बनाने के लिए सामर्थ्य की क्या आवश्यकता? सबकी आंखों के सामने एक कीड़ा भर बनके रह गया हूं। तम्पुरान की इच्छा के कोई विरुद्ध नहीं।

'तुम लोग क्यों आए हो?'

'मूप्पन लोग जुरमाना लगाने आए हैं...'

'जुर्माने के लिए? किसे अदा करना है?'

'यह भी क्या कहना पड़ेगा?'

क्या ये भी वही कहें कि जुरमाना किसलिए लगाया है? अच्छी बात है!

जोगी के ओठों पर फिर से हल्की हंसी झलकी।

'मारा को गर्भ है।' उसकी आंखों की वह झूठी हंसी!

यह अंतिम अस्त्र है। इन लोगों के तरकश में ऐसा तीर होने की संभावना नहीं थी। किसने यह पट्टी पढ़ाई, किट्टुवारियर ने या फिर उण्णि ने?

'बच्चा पैदा होने के पहले ही जुर्माना भरना होगा!'

बच्चा पैदा होने के पहले ही प्रायश्चित! किसका बच्चा? गर्भ के कारण ही उसके चेहरे पर वह चमक है जो पहले न थी? सोचने पर कांप उठा। रंग पीला पड़ गया। स्तब्धता छा गई। एक अक्षर बोले बिना सुन्न खड़ा रहा। पैर के अंगूठे से ऊपर उठती ठंड।

दांत कस गए। ओठ दांतों में दबा लिए। द्वेष, क्रोध, वेदना जो कुछ उभरा, सब को, दांतों तले कुचल दिया। कमरे में कोई आवाज नहीं।

चिंताओं ने बवंडर का रूप धारण कर लिया। चूड़ियों की खनखनाहट नहीं।

आवाज किसी तरह आने पर पूछा, 'उसने यह कहा है?' उस गर्जन से वे चौंक गए। शिलावत होकर झुकी आंखों से दाएं-बाएं देखने लगे।

'तलमला में सुना...' जोगी बोला।

तो यह भी एक छिपा हथियार है। वेल्लन द्वारा धान की चोरी की खबर की तरह!

अगर यह सच है तो इस लड़की की जिम्मेदारी कौन लेगा? कौन करेगा इसकी देख-भाल?

उन लोगों ने उसे छोड़ दिया। मुझ पर छोड़ रहे हैं। जुर्माना देने पर फिर कोई बात नहीं। दूसरे के बच्चे को...

दूसरे के बच्चों को पालने की नियति।

नहीं!

वे भी दूसरों के बच्चे हैं। उण्णि, वासुदेव, सुभद्रा... फिर ये सारे कष्ट क्यों सहे? कैसा स्वार्थ भरा विचार आया! उनके साथ रहने पर मुझे भी तो अकेलेपन से छुटकारा मिला। लक्ष्यहीनता की जगह कोई उद्देश्य मिला।

उण्णि!

विचार घूम-फिरकर एक बिंदु में केंद्रित हो गए।

वही होगा। वही उसका पति बने।

छिः कैसी मूर्खता! अभी बीस भी पार नहीं किए। उसके सिर मढ़ दूं। क्या फायदा? वह जुर्माना देगा। नहीं तो उसके नाम पर खुद दे दूंगा। मारा उसकी रखैल है, समाज से स्वीकृत। समाज को शिकायत नहीं है। उन लोगों को तीस रुपया मिलना चाहिए। लड़की भटकाने के बदले मूप्पन लोगों को मिलने वाला प्रायश्चित!

वह एक अनाम बच्चे को जन्म देगी। अनेक ऐसे बच्चों की तरह जिनके पिता अनाम हैं, वह भी बड़ा होगा। जिसने जुर्माना भरा है उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं कि वह मां या बच्चे को पाले-पोसे।

मन में हिसाब लगाया। पहले इनको विदा करना चाहिए।

'अब तुम लोगों को क्या चाहिए?'

'जुर्माने का रुपया।'

भीतर गया। उसकी परछाईं भी कहीं नहीं है। भंडार के भीतर का दरवाजा खोला। तीस रुपए गिन लिए। अदरख बेचने का पैसा। अपनी मेहनत का फल। सरकारी भूमि से मिले इस पैसे को एक अरक्षिता लड़की को, एक अनाथ बच्चे को दे रहा हूं। मिट्टी से जो मिला वह लड़की को। यहां मिट्टी और लड़की एक समान हैं। यहां के जमींदार दोनों को ही लूटते हैं। इन दोनों के न होने पर यह जगह कब की सूनी हो जाती! जंगल हो जाता।

इस कलंक की चिनगारी पर और लकड़ियां डाल दूं। खुलकर आग जले। जलकर सब खत्म हो जाए। बचेगी, मुट्ठी भर राख। वह बच्चा! भविष्य का एक गुलाम जिसका कोई भी इस्तेमाल कर सकता है।

खेतों में पहरे के लिए खड़े किए कागभगोड़े या मचान की तरह, जरूरत पूरी होने के बाद कोई भी ध्यान नहीं देगा। एक और बारिश होने के बाद सब कुछ मिट्टी में मिल जाएगा। खाद बन जाएगा। बहकर नष्ट हो जाने वाली खाद का एक अंश।

गोरे तम्पुरान ने जुर्माना भरना मान लिया। अब उसके पास कोई आसामी नहीं आएगा।

यह जान लेने पर वह क्या सोचती होगी? जितना सोचा था उससे भी अधिक मन बेचैन हो उठा। घर के पीछे रसोई का दरवाजा बंद होने की आवाज आई। करैले की क्यारियों में गिरते पानी की आवाज सुनाई पड़ने लगी।...

खामोशी। दरवाजा बंद करके वह चली गई होगी।

हवा में झूमती पुंजा की धान की बालियों को पार कर आर्ती कुरिच्चन की पत्नी कुंबा और रामन की मां सहसा दिखाई नहीं पड़ीं।

सीढ़ियों पर सूखे पुन्नक्का (एक फल, इससे तेल निकालते हैं) के चरमराने की आवाज सुनकर चौंक गया।

मैले कपड़े। दुर्गंध। बुढ़िया कटहल के नीचे बांस के खंभे से टेक लगाकर हांफने लगी। कुंबा फाटक पर खड़ी रही। चेहरे के सौंदर्य को मैल ने ढंक लिया है। वक्ष को ढंके सलूके पर मक्खियां भिनभिनाती रहीं।

तब भी रामन का हंसमुख चेहरा सामने घूमता रहा।

झोंपड़ी बनाकर पहले अपनी मां और मामा को लाया। मामा के लिए जो उसने तेज तीर बनाए थे, उनका क्या हुआ? तविंजाल से झोपड़ी के लिए नई चिलमनें लाया था। यहां स्थाई रूप से रहना चाहता था। अब मां और युवा पत्नी वेल्लरोडी में अपने समाज से कटकर नहीं रहने वाले।

तविंजाल की भूमि जिसे लोगों ने हड़प लिया, अब बुढ़िया को वापस नहीं मिलती। वेल्लरोडी में खाली करवाई सरकारी भूमि धीरे-धीरे जंगल हड़प लेगा।

बुढ़िया ने कई बार आंखें टिमटिमाईं। कपड़े के छोर से नेत्रशोथग्रस्त आंखों को पोंछती रही। गंदली आंखों के चारों ओर मक्खियां। धोती पर मक्खियां।

'हम तविंजाल जा रहे हैं।' बुढ़ियाने कहा।

'जाकर कहां रहोगे?'

'कहीं भी रहें, मौत आने तक तो रहना ही है।'

'मैं रुकने को नहीं कहता।'

'यहां कैसे रहें? कोई देखने वाला है? आसामियों की छूत वाला खाना खाना पड़ेगा।'

आसामी औरतों की छूत से बदन में ऐसी मैल लग जाएगी जो नहाने पर भी दूर न हो। पर हंसने का मौका नहीं है यह।

'छूत' से परे सवाल यह है कि आगे जीने का कोई रास्ता नहीं!

लगता है, बुढ़िया को कुछ खाए बहुत दिन बीत गए। दिया धान कब का खत्म हो गया होगा। इसीलिए अपने गांव जा रही है। अंदर भात या कंजी पड़ी होगी। पर दूसरे के चौके की चीज नहीं खाएगी।

भीतर गया वारियम से भिजवाए गए चावल में करीब एक सेर बचे हुए हैं। सूप में डाल लिए। अदरख बेचने पर मिले पैसों में से बचे पंद्रह रुपए भी निकाल लिए।

चावल गठरी में बांध, रुपए आंचल में सहेजकर बुढ़िया बांस की लाठी के सहारे खड़ी रही। सूखी आंखों में चमक...

सिर खुजलाती हुई, आंखें पोंछकर बुढ़िया एक-एक कदम रखती सीढ़ी पर प्रतीक्षा करती बहू के पास पहुंच गई।

वेल्लरोडी के खेतों से होकर दक्षिण में वे दो काली बिंदियों-सी बन गईं। कुंबारकुनी पार करके पनंकुट्टी में अनन्नास की झाड़ियों में वे भी ओझल हो गईं।

उनके पति के साथ रहने आई लड़की चली गई। उन्होंने बांस की जो चिलमन बुन दी थी, उसे मारा ने गोबर लगाकर धूप में सूखने के लिए रख दिया है। चिड़ियां उड़-उड़ कर धान के दाने ढूंढती रहीं।

सामने का दरवाजा बंद करके निकला।

बांध का काम फिर से शुरू हो गया है। पहले के टूट गए बांध के जरा ऊपर जहां कालिंदी की चौड़ाई कम और गहराई ज्यादा है। दोनों ओर झाड़ियां और कांटे रास्ता रोके खड़े हैं। जानवर नहीं उतर पाएंगे।

घाट पर चंपा के पेड़ के नीचे विराजमान भगवती। नीचे नदी में जब वारस्यार यहां नहाने आतीं तब सुभद्रा को लेकर यहां आना न भूलतीं। शिला पर बने दीए में तेल डाल बत्तियां जलाकर ही लौटतीं।

शिला का दीया सूखा पड़ा हुआ है। गोल-गोल पत्थरों के बीच औंधी पड़ी देवी की मूर्ति। दायां हाथ टूट गया है। उठाकर सीधे रख दिया।

दामू वारियर हंसिया लेकर आए।

उनका चेहरा सूखकर पीला पड़ गया है। अनाकर्षक पीला रंग।

'मानंतवाडी नहीं गए? सुना कि उण्णि साथ जाएगा, इसलिए मैं नहीं गया।'

'ओ! उण्णि!'

'बांध का काम पूरा होने से पहले यहां से जा नहीं सकता। तो साथ के लिए करियन को भेज दूंगा।'

'मानंतवाडी जाने पर सुई लगाएंगे। अस्पताल में भर्ती होने को कहेंगे। यह सब कौन करे!'

'बीमारी बढ़ गई तो?'

'मुसीबत कटे।'

'ऐसा मत कहें। कल ही जाइए।'

वारियर घास काटने लगे। हाथ कांप गया। हंसिया छीन लिया।

'इतने दिन तो चटाइयां बिनी। कुछ दिन खाली भी रह लें।'

उन्हें घर भेज दिया।

नौकर कंजी पीने झोंपड़ियों में चले गए। बांध के काम के लिए दोपहर को कंजी देना उचित नहीं। कभी काम दोपहर से ही शुरू होता है। कभी-कभी सुबह से होने लगता है। दोपहर के बाद फिर लकड़ी काटने जाएंगे। गर्मी के हर मौसम में सौ या उससे भी ज्यादा लकड़ियां इकट्ठी करनी हैं। खलिहानों के अहाते लकड़ी की गांठों से भर देने हैं। जंगल से काटकर लाई लकड़ियों के एक बड़े गट्ठर के चार आने मिलते हैं।...वर्षा शुरू होने से पहले काम पूरा करना है। गर्मियों के इन दिनों में, जब खेतों में काम नहीं होता है, प्राण रोके रखने का बस यही एक उपाय है।

करियन लकड़ी काटने गया है। बांध पर मिट्टी डालने का काम चात्तन को सौंप दिया।

घर की ओर चला। चार बजते होंगे। अब वारस्यार इंतजार न करेंगी। जरा नहाना है। नहाने के बाद कंजी। दोपहर और रात का खाना एक साथ।

शाम हो जाने पर भी जलती धूप। आंखों से जैसे धुआं निकल रहा हो।

कुंबारकुनी तक जाने पर गांव का अता-पता मिलता। आज नाणु डाकिया नहीं आएगा। परसों छुट्टी थी। आज भी अखबार न होगा। अखबार का न होना दो दिन पहले की छुट्टी की याद दिलाता है। केवल विशु (एक त्योहार) की छुट्टी मनाते हैं। यहां आए कितने ओणम (एक त्योहार) बीत गए? बचपन की स्मृतियां याद दिलाती गदराई झाड़ियां। गरीबी के दिनों में यहां कैसा ओणम। वृश्चिकम महीने के आखिर में जो धान नहीं कट पाए उसकी ओर देख दिन गिनने वाले लोग! अगले ओणम में गांव घूम आएं तो कैसा रहे?

लगा कि आंगन में कोई खड़ा है। हथेली से ओट करके देखा।

वारस्यार!

जब यहां फूस की छत भर थी, उस समय सब्जियां तोड़ने आया करती थीं। मटर, साग और भिंडी अपनी इच्छानुसार चुनकर ले जाती थीं।

खेत की मिट्टी से जब ईंटें बनवाईं तब उन्होंने पूछ लिया, 'किसलिए?'

'फूस की छत पक्की करवा लें।'

'वेल्लरोडी में घर? किसके लिए?' आंखों में संदेह की छाया उठी।

'जब बूढ़ा हो जाऊंगा, तब यहां आकर लेटने के लिए।'

उनकी एक नजर देखा! उसमें बहुत कुछ था। अनदेखा कर दिया। यह उम्मीद नहीं थी कि घर बदलना इतना मुश्किल होगा। उण्णि का अपमानजनक व्यवहार देख ऐसा लगा कि पूछने और कहने का कोई अवसर दिए बिना बदल लेना चाहिए।

आंगन का बेला, खलिहान की ड्योढ़ी पर खड़ा कोन्ना का पेड़, सांझ को खिलते पारिजात के फूल, खाने के समय पूंछ उठाए शरीर रगड़ती सफेद बिल्ली, आंगन के उत्तरी ओर बांस

की नली से बहता हंसता-खेलता सोते का पानी। सब ऐसे दोस्त बन गए थे कि बिछुड़ना असंभव...

कैसे यहां आ सका? सदा पीछे पड़कर तरह-तरह के सवाल पूछती सुभद्रा कुट्टी को कैसे भूल सका?

गांव छोड़ते समय भी इतना दुख न लगा था।

सब कुछ छोड़ कर आया भी नहीं। अब भी भोजन वहां ही है। केवल रात का खाना यहां होता है। ऐसा कोई दिन ही नहीं जब वहां जाना न हो।

आज खाने के लिए न जाने की वजह यही होगी।

वे आंगन में ही खड़ी रहीं।

अंदर आने के लिए कहने की क्या जरूरत?

दरवाजा खोल, चटाई निकालकर बरामदे में बिछाई।

'मैं एक मेहमान बन गई हूं, है न?'

वे हिलीं नहीं।

'मेहमान न भी हों तो भी मेरे नहाने तक बैठ नहीं सकतीं?'

उनका चेहरा पत्थर जैसा था। आग में जला-भुना पत्थर।

उनकी जलती नजरें सब तरफ घूमती रहीं। रसोई का बंद द्वार, कोयले से लिपा चमकता फर्श, गोबर से लिपी दीवारें, जिनमें अंगूठी के साफ निशान। उन अर्धवृत्ताकार निशानों पर दृष्टि टिकी रही। जिसके निशान हैं, उसके बारे में कुछ कहने को वह सख्त चेहरा तैयार न होता।

'तो इसके लिए घर बनाया?' पत्थर के तेज, नुकीले टुकड़े।

'लोगों के कहने पर भी मुझे यकीन न आया था।'

'फिर?'

'आंखों-देखे पर अब विश्वास हो गया।'

'क्या देखा?'

'सब कुछ।'

'क्या-क्या?'

'जो वे लोग कहते हैं, सच है न?'

एक आसामी औरत के लिए कोई इस तरह मूप्पन लोगों को नहीं डांटेगा। तो यह बात है? इस बात का उन्हें पता चला है?

उनकी नज़र बरामदे के दक्षिणी छोर की अलगनी पर टिकी रहीं।

मारा को देने के लिए खरीदी गई नई साड़ी। साधारण-सी नीली साड़ी। वल्लियूरकाव के उत्सव के दिन निकट हैं। उसे साड़ी खरीद देने वाला तो चला गया। उसकी बातों से

बिना बात के अनजाने ही संबद्ध भी हो गया। एक साड़ी खरीद दी तो क्या हुआ? सोचा था कि पैसा दे दें, पर लगा कि व्यर्थ में दुकानदारों से ठगी जाएगी। अभी उसे दी भी नहीं, उत्सव का दिन नजदीक आ जाए।

वह उधर अलगनी में पड़ी है। धोती और बनियान के बीच। पर उनके इस तरह देखने से बेचैनी हुई। एक क्षण को लगा कि वह साड़ी न होती तो ठीक था। अब खुद अलग करनी होगी। फिर वे देख भी चुकीं।

'इसी के लिए घर बनाया?' सवाल हजारों आकार ग्रहण करके बर्रों की तरह आक्रमण करता है।

रसोई के पीछे दरवाजा खुलने की आवाज हुई।

वह आ गई। शाम के काम का वक्त। आंगन में झाड़ू लगाना है। रसोई में झाड़ू लगाना है। पानी भरना है। दोनों औरतों की आंखें क्षण भर मिली रहीं। दोनों पक्ष हार मानने वाले नहीं।

हे भगवान!

ये औरतें! इनके मुख के पीछे गहराई में झाग की तरह उठती भावनाएं! नहीं, इसकी व्याख्या मैं नहीं कर सकता।

जो उम्र में छोटी है उसकी नजर ने हार नहीं मानी। किसी की अधीनता माने बिना वह रसोई के काम में ऐसे लग गई जैसे कुछ हुआ ही न हो। सचमुच एक घरवाली की तरह। उसे यह आजादी कहां से मिली? कब मिला ऐसा धैर्य? आंगन में कोई दूसरी स्त्री खड़ी है—

छि! इस अवसर को नहीं आने देना था।

वारस्यार झट से मुड़कर जाने लगीं।

'मारा, तू गई नहीं?' जरा ऊंची आवाज में पूछा।

'आपने अभी खाना नहीं खाया। इसीलिए नहीं गई।'

मैंने खाना नहीं खाया तो इससे क्या?

'किसने कहा कि मैंने खाना नहीं खाया?'

'आप नदी के किनारे थे न?'

'तो क्या?'

'मैं कंजी बना दूंगी।'

कहती है कि मैं नदी के किनारे था। मेरे लिए कंजी बना रही है। वारस्यार ने सुन लिया होगा। इसीलिए वे आई थीं, खुद देखने-सुनने!

उनके वहां तक पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो जाएगा। पीछे-पीछे निकला। साथ पहुंचने के लिए बहुत तेज चलना पड़ा। इतनी तेज चल सकती हैं यह!

आगे-पीछे जरा दूरी रखकर चले। बीच में एक खामोशी जो टूटती नहीं, एक दरार जो भरती नहीं।

अंबलकुन्न चढ़कर फाटक पर पहुंच गए। वे आंगन में बेले के पास पहुंच चुकी थीं।

'मैं जा रहा हूं।' सीढ़ी चढ़े बिना ही कहा।

'मुझसे सच बता सकते थे?'

'ऐसा कोई सच नहीं जो बताया न हो।'

'अब भी मूर्ख बना रहे हैं?'

'मेरा विश्वास था कि इतने दिनों में आपने मुझे अच्छी तरह जान लिया होगा।'

'मेरा यकीन गलत साबित हुआ।'

'नहीं। गलत नहीं है।'

'तो मैंने जो देखा, वह?'

'क्या देखा?'

'वह भी कहने की जरूरत है?'

'नहीं! मैं बताऊंगा। मारा के रसोई में काम करने की बात है? उस यतीम लड़की के लिए जो साड़ी खरीदी, उसे अलगनी में देखने की बात है?'

उनका चेहरा पीला पड़ गया।

'मैं जा रहा हूं।'

'खाना नहीं खाएंगे?'

'तबीयत अच्छी नहीं। बस कंजी पिऊंगा।'

'वह बना रही होगी?'

'हां। इसी में सुविधा है। यहां कंजी पीने पर फिर चलना पड़ेगा।'

'यहां नहीं सो सकते?'

'नहीं। जोर मत दीजिएगा।'

'वह बाट जोहती होगी?'

'ऐसा है तो यही सही।'

'तबीयत को क्या हुआ?'

'खास कुछ नहीं। सिर में दर्द!'

'क्या! पहले तो नहीं था!'

'उम्र बढ़ती जा रही है न?'

'सिर में लगाने के लिए मैं कुछ कुंजुप्यादि (घर में बनाए जाने वाले तेल) दूं?'

'ठीक है।'

घर वापस पहुंचने पर बहुत अंधेरा हो गया था। सिर में जैसे कोई लोहे की कीलें

चुभा रहा है। असहाय, एकाकी, बरामदे के अंधेरे में जहां एक भी बत्ती नहीं, आकर बैठ गया। नहीं, गिर गया।

आवाज सुनकर वह दौड़ आई। बंद ताला खोलके दरवाजा खोला। बरामदे के बुझे दीए पर नजर पड़ी। तुरंत दियासलाई लाकर जलाई। नहीं— तेल नहीं। फिर अंदर जाकर तेल लाया। दीया जलाया।

उंगली में लग गए तेल को बालों पर पोंछते खड़ी रही।

खाट पर पड़े-पड़े उसके क्रिया-कलाप देखता रहा। उसके बालों में लगी बेले की कलियां खिलकर सुगंध फैला रही थीं।

अचल पड़े तम्पुरान को उसने झुककर देखा। माथे पर कांपती नसें। उंगलियां अनजाने आगे बढ़ आईं। जलती हैं। वह चौंक गई।

वह रात, जब ज्वर से कांपते मल्लन को लाया गया था। उसे लगा कि इस बात को कई साल बीत चुके। वैसी ही भयानक रात फिर निकट आ गई है।

उसकी आंखों में डर सिमट आया।

'हे भगवती!' भय और दुख से मिश्रित एक विलाप उठा। आंखें भर आईं। फूटने को हो आए रुदन को उसने दांतों में दबा लिया।

वह दौड़कर भीतर गई। काली कॉफी में काली मिर्च मिलाकर ले आई। एक घूंट में पीकर सिकुड़कर लेट गया। बेले के फूलों की बिंध जाने वाली गंध। नाक में चुभती खुशबू। उससे जाने को कहने को जबान उठी ही नहीं। अंधेरी काली रात और जगते तम्पुरान के बीच वह पहरेदार बनी खड़ी रही।

40

बुखार कुछ दिन तक बना रहा। मारा ने पलक तक न झपकाई। दिन-रात बिस्तर के पास खड़े-खड़े काट दिए। एक स्नेहमय पालतू जानवर की तरह गोरे तम्पुरान का एक-एक भाव परखती रही। ऊरुवयल से जो टूटा चावल आया उसकी कंजी बनाई। दिन में तीनों जून हठ करके दवा पिलाती रही। दामू वारियर की दी दवा का काढ़ा बना-बनाकर समय से देती रही। मंदिर से आते ढोल के नाद और बरामदे की छाया ने समय का पालन करने में सहायता दी।

सोलहवें दिन जाकर बुखार उतरा। बदन ठंडा हो गया। पसीना आया।

फिर भी एक बार भी तिरुवोलम्मा ने झांककर भी नहीं देखा। बहुत कड़वा मिजाज है, उसने सोचा।

राघवन नायर ने गर्म पानी से स्नान किया। कच्चे चावल से बनी कंजी पी। बीत गए आराम के दिनों की ओर पलट कर देखने लगा। बहुत दिनों के बाद जिद करके मारा को अपनी झोंपड़ी भेज दिया। उत्सव के लिए खरीदी गई साड़ी तब भी अलगनी में पड़ी थी। उसने पहले ही देख लिया होगा। उठाकर देने पर बिना कुछ कहे उसने ले ली।

दुबले और पीले पड़ गए तम्पुरान की ओर उसने छिपकर देखा। अपने लिए साड़ी खरीद देने वाला दूसरा पुरुष!

नहीं। कुछ नहीं। एक चट्टान जिसमें कोई दरार नहीं। दबे, कसे ओठ। भावरहित चेहरा जैसे ब्रह्मगिरि के ऊपर की गरुणशिला चट्टान।

उसने ओठ काट लिए। भीगती आंखें नीचे झुका लीं। काम की पगार। उत्सव की नई साड़ी की जो खुशी होनी चाहिए थी उसका एक अंश भी मन ने अनुभव नहीं किया।

राघवन नायर को लगा कि साड़ी से वह खुश नहीं है। उस एक साड़ी से ही पूरा साल बिताना है। केवल नई साड़ी के लिए औरतें वल्लियूरकाव के उत्सव का सपना देखती हैं।

इसे क्या हुआ? खुद खरीदारी न कर पाने का दुख?

अंबलकुन्न का क्या हाल है?

सेयतु बताता था कि पानी की कमी से कोल्लीमूला के नीचे घाटी में नदी किनारे बोई पुंजा पीली पड़ गई है।

सोचा था कि उण्णि पढ़ाई के लिए कोषिकोड नहीं गया तो अच्छा ही हुआ। बाहर की दुनिया देख लेने पर वह इस मिट्टी को भूल जाएगा। अब यहीं घूमता है, मगर कोई लाभ नहीं। दस दिन बिस्तर पर क्या पड़ा कि पुंजा सूख गई। कहने से काम नहीं चलेगा। उन लोगों के पीछे पड़कर करवाना होगा।

उण्णि कहां है?

धोई पड़ी बनियान पहन ली।

बहुत दिन ऐसे ही पड़े रहने से चिकने हो आए पैरों को जमीन पर रखने पर गुदगुदी लगी। बहुत दुबला हो गया हूं। ढीली पड़ गई बनियान। थकावट महसूस नहीं हुई। लंबे आराम के बाद—

कुंबारकुनी का संबंध ही टूट गया।

कई दिनों के अखबारों का बिस्तर के नीचे ढेर लग गया है। सेयतु ला देता है। आजकल देर तक नहीं बैठता। उत्सव की तैयारियां होंगी। खास खबरें संक्षेप में बता देता है। चुंगी

जारी है। धान का दाम बढ़ता ही जा रहा है। तिरुनेल्ली के आसामी कुंडल लेने को तैयार नहीं होते। उन लोगों को धान ही चाहिए। जमींदार तैयार नहीं। लेवी पर जितना मिलता है, उतना ही किट्टुवारियर उन्हें देगा। किट्टुवारियर के पीछे सारे जमींदार। अगली बार, सब लोग मिलकर जितनी पगार तय करेंगे वही मिलेगी। धान नहीं, नकद पैसा। फिर कुंडल का अधिकार भी नहीं रहेगा। रोज-रोज पगार देने के बाद फिर कोई संबंध नहीं। काम की पगार। वारियर और दूसरे जमींदार तर्क करते हैं कि फसल में उनका क्या अधिकार है!

'पहरा देने की बात का क्या होगा सेयतु?'

'अब तक पहरे के लिए मजदूरी जैसी कोई चीज नहीं थी। कहते हैं कि वही व्यवस्था शुरू होगी।'

'फसल बचाने की आसामी की जिम्मेदारी नहीं रहेगी, कुंडल मिलने का अधिकार भी न रहेगा।'

'हां, बिना किसी बात के किट्टुवारियर पहरे की वल्ली और निश्चित पगार देने को तैयार न होगा।...'

जमींदार और जमीन पर काम करने वालों का संबंध शिथिल हो जाता है। खेती करने वाला मात्र मजदूर बन जाएगा।— फिर भी कोई दोष नहीं। निश्चित पगार तो मिलेगी। वल्ली में हेराफेरी भी न रहेगी। उससे कोई लाभ नहीं।

पुंजा के खेतों की ओर चला जहां खर-पतवार बढ़ गए थे। लहलहाकर बढ़ने वाले ये घास-पात नहीं होते तो पुंजा अच्छी होती।

खर-पतवार साफ करने के लिए खाली औरतों को भेजना काफी नहीं। चार पत्ते साफ करने के बाद सीधे खड़ी हो जाएंगी। इधर-उधर ताकेंगी। बगल के खेतों में काम करने वालियों से बातें करेंगी। उनकी नजरें रास्ते में जा रहे लोगों का जहां तक बन सके पीछा करती रहेंगी।...

वारियम में जाना चाहिए। कल से ही खर-पतवार की सफाई के काम का प्रबंध करना होगा। वेल्लरोडी में वल्ली देने के लिए कुछ भी नहीं बचा। वारस्यार से पूछना है। अपने खर्च के लिए रखे धान में से वल्ली देनी पड़ेगी। आशा थी कि फिर से पुरानी कहानी न दोहराई जाए। सूद पर धान लेकर रोज का खर्च चलाना। चुंगी के कारण धान भंडार से न भी निकलता तो भी खर्च तो ठीक-ठाक चलता। उण्णि ने व्यापार सब मिट्टी में मिला दिया। कम से कम एक गाड़ी धान बेच सकने के कारण पुंजा का तीन चौथाई काम हो गया। पुंजा अच्छी निकलेगी तो इस साल धान उधार नहीं लेना पड़ेगा। वेल्लरोडी की पुंजा सबसे पहले ले लेने के कारण शेष हुए बिना न रहेगी। सब सोच-समझकर ही कुंडल दिया। इसके लिए वारस्यार को क्रोध करने की जरूरत नहीं। अगले साल की खेती उण्णि चलाए।

एक परीक्षण के बाद छोड़ने का समय आया?

बहुत दिनों से निर्जन पड़ी झोंपड़ी। किसी के रहने का कोई लक्षण नहीं। अप्पन इधर-उधर घूमते रहे होंगे।

जवनी और बूढ़ी पेम्बी घास-पात साफ करने गई हैं।

किसी की नजर में पड़े बिना मारा झोंपड़ी के अंदर चली गई। कमरे के अंदर से कई छोटे जीव दौड़ गए। एक चमगादड़ जो छत में लटका हुआ था, पंख फड़फड़ाते हुए रास्ता न सूझने के कारण चक्कर लगाता रहा। फिर बाहर निकल गया।

साड़ी जिसे छाती से लगा रखा था, कहीं नहीं रखी। एक साड़ी देकर विदा कर दिया।

जो कुछ सोचा, मन में जो मोह जागा—सब बेकार। बीते दिनों के वे अपूर्व स्पर्श—आग जैसा तपता माथा, सूखे होठ, दाढ़ी बढ़ा चेहरा, शरीर का कंपन...सब कुछ उंगली की नोक पर अटका हुआ है।

उसने चूल्हा नहीं जलाया। चूल्हा बाहर के बरामदे में है। बाहर जाने का मन नहीं किया। वे लोग देखेंगे तो हंसेंगे।...तम्पुरान के पीछे जाकर आई है। यही हाल होता है सबका। याद रखना। गोरे रंग पर भ्रमित मत होना। जमींदार के भंडार के धान के लिए ललकता मन। जो कुछ हो, कोई भी हो, जहां रखना चाहिए, वे लोग वहीं रखते हैं।

रात की ठंडी बांहों ने उसे आलिंगन में ले लिया। उसकी गरम लंबी सांस के भीतर की पुरानी ठंड का घनापन कम हो गया। जंगली चूहों की गंध कमरे में भरी हुई है। उसने हाथ खींचकर दरवाजा खोल दिया।

धीरे-धीरे दूर जाती दिन की रोशनी और तुरंत फैलती रात के अंधकार का दृश्य दिखा।

याद आया जब पुष्कुनि में झाड़ियों के बीच वेल्लिला के फूल तोड़ रही थी तब पहली बार गोरे तम्पुरान को देखा था। तारों की तरह चमकती आंखें। ऐसी सौम्य दृष्टि जो और किसी जमींदार के पास नहीं। कितनी बातों में छिप-छिपकर देखा। एक बार भी उन्होंने मुड़कर नहीं देखा। आज भी!

रात के एकांत में, दूर किसी कोने से बुलाने जैसा भ्रम दिलाता, मोहित करता वह स्वर। नहीं, कुछ नहीं, ऐसा केवल आभास होता है।

'आ जा...मा...'

अदृश्य किंतु सर्वत्र व्याप्त स्वर। सिर्फ मुझे स्पर्श किए बिना चले जाते प्रार्थना के गीत। तू आ ...कौन है बुलाने को? अब है कौन? किसी के लिए कान लगाए वह ठंडी चटाई पर औंधे मुंह पड़ी रही। जमीन पर हवा के साथ आती दबी आहट।...

चटाई का ठंडा स्पर्श...

ठंडी हवा की सिसकियां...

ओस की गिरती बूंदों की कराहें...

झाड़ियों की मर्म ध्वनि...

जिस स्वर का कानों को इंतजार है, बस वही नहीं सुनाई देता।...

फिर से वह आहट।...

खाली लगता है?

क्या है! कौन!

बाहर घने हो आए अंधेरे की ओर वह देखती रही। अनंत अंधेरे से पास आती जा रही आहट।

खुले दरवाजे से उसने झांका...

अंधकार में भाग जाते जंगली चूहे...

आहार ढूंढते, इधर-उधर चलते छोटे जीव-जंतु।

छिद्रों से बाहर निकलते जीव...

सब केवल आभास है। भय। रात। अकेलापन। घास साफ कर वापस आ चुकी जवनी की झोंपड़ी में भी आवाज ठहर चुकी है।

चात्तन की झोंपड़ी अंधकार में डूबी पड़ी रही।

वह लेटे-लेटे कान लगाए आहट सुनती रही। अंधकार में आंखें गड़ी रहीं।

एक सफेद परछाई। पास आती जा रही है। दो चमकती आंखें। चेहरा स्पष्ट नहीं। गोरे तम्पुरान का चेहरा दिल में भरा रहा। आंखों की ये चमक पहले कभी नहीं देखी है...

अधिक कुछ सोचे बिना वह हड़बड़ाकर उठी। दिल धड़क उठा। ठंडी हवा के एक झोंके ने कसकर उसका आलिंगन किया। वह रोमांचित हो गई।

आखिर में मलंकारी ने क्या प्रार्थना सुन ली है? पास होती जा रही आहट। नजरों की चमक बढ़ती जाती है।

आंगन में, केले के पत्तों में, बरामदे में लटकती बांस की चिलमन में बंद किए बिना छोड़ दिए दरवाजे में अटक जाता वह स्वर—

आ...जा...मा...

वह दरवाजे के पास गई। आंगन में जहां चांदनी और परछाई आलिंगनबद्ध हैं, ध्यान से देखा। चांदनी में धुले मंद हास करते पुंजा के खेतों को देखा।

वह परछाई साफ दिखी। उसने बरामदे में आकर उसका हाथ पकड़ लिया। उंगलियां ओठों पर दब गईं।

उन उंगलियों की कोमलता ने उसे चौंकाया। उस दृष्टि की सुइयां उसमें चुभ गईं। उस स्पर्श से शरीर के रोमांच को दूर जाते उसने अनुभव किया।

बांहों के दृढ़ बंधन को वह हटा नहीं सकी। चुंबनों में दबे ओठों से कोई भी स्वर नहीं निकला।

वह स्तब्ध खड़ी रही। चुपचाप याचना करती रही—जाओ, चले जाओ। अभिलाषाएं झड़ गईं। अंत में उसने कल्पना की कि वह गोरा तम्पुरान है। मन की शक्ति शरीर में नहीं।

तेज प्रवाह। उसके विरुद्ध न तैर पाने पर वह अवश हो गई। प्रवाह ने उसे ऐसी जगह पहुंचा दिया, जहां जाना वह कभी नहीं चाहती थी। वह परिचित विजय-सूचक स्वर उसने सुना, 'रे लड़की, क्यों उस बूढ़े पर तू मरती है?'

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

'बूढ़ा सोचता है कि मैं अब भी बच्चा हूं।'

वह हिली नहीं। बाहर चांदनी में घूरती रही।

'तू किसे चाहती है? उस बूढ़े को या मुझको?'

उसकी आंखें रत्नों जैसी चमक उठीं। छाती में एक बेचैनी भरा स्पंदन।

'मैं कल भी आऊंगा।'

रत्न और अधिक उग्र रूप में चमक उठे। वह उस चमक का सामना नहीं कर पाया।

'अब वहां रात में मत रहना। उस पर यकीन नहीं किया जा सकता।'

वह उसकी बांहों से छूटकर अलग हो गई।

'मैं जाऊं? मां ढूंढती होगी।'

आहट दूर होती गई।

उसके भीतर से एक सिसकी निकली। मुंह में साड़ी का छोर ठूंस लिया। यह प्रार्थना करते हुए कि कहीं सुबह न हो जाए वह औंधे मुंह पड़ गई। सुबह की ठंडी हवा ने उसे जगाने की कोशिश की। वह पहले से जाग रही थी।

रोगमुक्त हुए तम्पुरान का स्मरण हो आया। वह सब कुछ भूल झट से उठ बैठी। ठंडे हुए पड़े कंधे। साड़ी का आंचल खींचकर डाल दिया। बाहर निकलकर दरवाजा बंद किया। ओस से भीगे पत्तों को कुचलते तीर की तरह वह पहाड़ पार कर झरने पर गई। परिचित हो जाने पर उस निर्जन प्रदेश से अब डर नहीं लगता।

मुंह धोया। कुछ पानी पी लिया। आंखों में छींटे मारे।

अंधेरा पूरी तरह दूर नहीं हुआ था। आंगन में झाड़ू लगाया। पिछले दिन का बर्तन का पानी फेंककर फिर से भरा।

काली कॉफी पीकर गोरे तम्पुरान जब खेत चले गए तब उसने मुक्त रूप से सांस ली। फिर भी मन जो जाल बुन रहा था, उससे बाहर नहीं निकल पाई। उस दिन उसने बहुत काम किया।

भंडार से धान लेकर उबाल लिया।

छत पर पहले से उबले धान को एक टोकरी में भरा। अच्छा कुंतगा (धान उबालने वाला बर्तन) घर में है। उबले हुए धान को छत पर फैला दिया। धान की टोकरी उठाकर झोपड़ी में गई।

खर-पतवार साफ करने के लिए किसी ने उसको नहीं बुलाया। अच्छा ही हुआ। गोरे तम्पुरान के सामने पड़ने का मन नहीं। उसका वेश्या-सा मुख। शापग्रस्त मिट्टी। अपने से ही एक प्रकार की घृणा। वह जिद से काम करती रही। एक परा धान का चावल बना दिया।

चावल लेकर जब वापस आई तब तक सूरज डूबने को हो चला था।

रात का खाना बनाना चाहिए? आने वाली रात की ओर उसने देखा।

जमकर बैठ गई। मना करें तो भी यहीं ही सोऊंगी। एकांत झोंपड़ी में बिना अप्पन के नहीं जाऊंगी। गोरे तम्पुरान के जिद करने पर भी न जाऊंगी।

अपनी बात कहने की प्रतीक्षा में बैठी रही।

इतने दिन आखिर पास रही। बीमारी में रात-दिन सेवा की। मेरे हाथ का बनाया भात खाते हैं न? मूप्पन लोगों का जुर्माना भरा न? आने वाली रातों में क्या सोने न देंगे? इतना कटु मन है उनका? केवल बाहर से हंसने वाला मनुष्य!

पर शब्द बाहर नहीं निकलते। कुछ भी नहीं बोल सकती। उसे लगा कि वह हार जाएगी। अब कुछ भी नहीं बचाने को। सब कुछ नष्ट हो गया है? कुछ हो भी तो क्या? उसे अनुभव हुआ कि पिछली रात में मन में जन्मी घृणा ने बढ़कर उसे पूरा ग्रस लिया है। नहाई नहीं। बाल नहीं ठीक किए। कपड़े भी नहीं धोए। मैले वेश में फीकी चिंताओं में घिरी बैठी रही।

गोरे तम्पुरान के यहां नौकरी मिलने पर सफाई रखने की इच्छा हुई थी। उसे याद आया कि वह फिर से आसामी औरत बन गई है।

इस याद ने उसे कठोर और उत्साह रहित बना दिया। बेला खिलकर सुगंध फैला रहा था। वह बिना हिले बैठी रही।

बरामदे में दीया जलाया। नहीं आएंगे? और प्रतीक्षा करूं? बीमारी के पहले की दिनचर्या शुरू हो गई? शाम हो जाए तो फिर प्रतीक्षा न करके झोंपड़ी में चले जाना चाहिए, यही निर्णय है। खाना चाहिए होगा तो तम्पुरान खुद बना लेंगे। उसने चूल्हे के सामने लकड़ियां इकट्ठी कीं। बर्तन में पानी भरा। सब्जी काट कर ऐसी जगह रख दी जहां से साफ दिखाई पड़े। बरामदे के दीए में थोड़ा और तेल डाल देना चाहिए। बोतल उठाई। देखा, तेल नहीं है।

कुछ देर और रास्ता देख लें..., मन ने कहा। कटहल की डालियों के बीच काले होते जा रहे आसमान को ताकती बरामदे में बैठी रही। फिर भी मन में वह भय अटका हुआ

है। एकांत रात। फिर आने को बोल गया उण्णि तम्पुरान।

जवनी और उसकी मां तथा चात्तन की पत्नी वेल्ला पनंकुट्टी में काक्कपुला में गए हैं। आज सारी झोंपड़ियां खाली पड़ी हैं। वह डर गई। सूनी वेल्लरोड़ी। काक्कपुला में जाने के लिए किसी सहेली ने नहीं पूछा। गोरे तम्पुरान की झोंपड़ी का पहरा देने वाली मुझको उन लोगों ने कब का छोड़ दिया है।

एक लंबी सांस।

संध्या बढ़ने पर ठ़ंड तेज हो गई है।

अंधकार बढ़ता गया। पनंकुट्टी से आते डमरू के क्षीण स्वर।

दूर ब्रह्मगिरि के आंचल के बीच पहाड़ियों में फैलती आग दिखाई पड़ी। जंगल की आग। दिन में केवल धुआं दिख रहा था। आग लंबी जीभ बढ़ाकर सूखी घास के मैदानों को चाट रही है।

ये पहाड़ियां जो आज तक भूरी-भूरी ही दिखीं, कल जले मुंह लेकर झांकेंगी। आग पास के पहाड़ों पर भी फैल रही है।

आग से वह और डर गई। आहट ने चौंका दिया। करियन को देखकर हैरान रह गई। वह बोला, 'तम्पुरान इधर नहीं आएंगे।'

'क्या?'

'तम्पुरान का छोटा भाई आया है।'

वह समझ नहीं पाई। कौन आया? तम्पुरान का छोटा भाई? करियन, कटहल, आंगन और घर सब कुछ चक्कर खाने लगे।

'दरवाजा बंद करके झोंपड़ी चले जाने को बोला।'

'किसने?'

'तम्पुरान ने।'

यह देखकर कि उसे विश्वास नहीं आया, उसने स्पष्ट रूप से बताया, 'तम्पुरान की बीमारी की बात जानकर आया है।'

बीमारी जानकर आए उस छोटे भाई ने उसे अकारण भयभीत कर दिया। तम्पुरान उसके साथ चले जाएंगे? ऐसे कितने लोग हैं जो यहां स्थाई रूप से रहना नहीं चाहते? छोटा भाई कितने दिन रहेगा? तम्पुरान हमेशा के लिए चले जाएंगे?

बंद दरवाजे की ओर मुड़कर देख, वह चल पड़ी। करियन पीछे-पीछे। झोंपड़ी के मोड़ पर पहुंच करियन बोला :

'उधर कोई नहीं, सब काक्कपुला में...'

उसने कुछ नहीं सुना। वह एक रेंगता यंत्र बन चुकी थी।

'मैं पनंकुट्टी जा रहा हूं' उसने कहा।

उसने मुड़कर नहीं देखा।

मैं अकेली हूं! अनाथ! तृश्शिलेरी में कहीं भटकते अप्पन सोचते होंगे कि गोरे तम्पुरान की देख-रेख में लड़की सुख से है।

अनेक दिन के बाद अव्वा की याद ने उसे व्याकुल कर दिया। बेटी ब्याहने के लिए जन्मभूमि आई अव्वा।

अव्वा कहां? कालिंदी किनारे के श्मशान में बैठकर मेरा रोना सुन रही है? पहाड़ों के शिखरों से टकराती मीनम मास की हवा की आंखों में जो आग है, वह मां है? रंडी कहकर मुझे डांट रही है?

दूर पनंकुट्टी में डमरू का नाद सुनाई पड़ा। सीटियां बज उठीं।

झोंपड़ी के बरामदे में अकेली, भयभीत, अंधेरे का भाग बनकर बैठी रही।

पास आई आहट नहीं सुनाई पड़ी। उण्णि को वह नहीं देख पाई। किंतु जंगल से आई काल-मुर्गे की अपशकुन बांग उसने सुन ली।

हू...हवा...हा...हू...हू...

ब्रह्मगिरि में फैल जाती दावाग्नि...

वह कांप उठी।

41

चला गया वह। आया किसलिए? मुझे बताए बिना सेयतु ने क्यों उसे बुला लिया? इस मिट्टी को छोड़कर चले जाने से क्या हासिल होगा?

यह बात उसकी समझ में आई? शिवरामन अपने इस बड़े भाई को समझ नहीं सकता?

जोर नहीं दिया।

उत्सवों की हलचलों से युक्त मानंतवाडी। वल्लियूरकाव के पास का चौराहा।

धूल! धूल! धूल!

गाड़ियां। अनगिनत लोग! कितने-कितने देशों से आने वाले! जिन्हें कभी नहीं देखा। अपरिचित रंग। लिपियां। चेहरे। वेश। स्वर।

लाल मिट्टी सने लोग। धूल में लथपथ गाड़ियां। धूल सनी गठरियां। टोकरियां। गांठें। धूल में सराबोर पशु।

वल्लियूरकाव जाने का उत्साह न हुआ।

काट्टिकुलम से होकर तिरुनेल्ली वापस लौट आया। वापसी में दिखाई पड़े—जले चेहरे, उदास आंखें, बच्चों के उदास मुंह।...

कानों में मंजीठी के झुमके पहने पणियर-स्त्रियां। उनके मुख पर हंसी। बालों में तेल चमकता है। तेल लगे चेहरे। साफ धुले कपड़े। कपड़ों के ऊपर दुपट्टा, कैसा वेश! लटकती स्प्रिंगों की तरह बाल झुलाती वे जल्दी-जल्दी चली गई।

कुंडल न मिलने के कारण निस्तेज चेहरों का क्या वे परिहास कर रहे हैं? पणियरों के पास बागानों में मजदूरी का पैसा होगा।

बिना कुंडल मिले उत्सव में जाते आसमी लोग।

इस बार के उत्सव से वे ठंड के सुन्न कर देने वाले वृश्चिकम, धनु महीनों के कष्ट नहीं भुला सकेंगे। गरीबी के दिन — एक दिन के लिए तकलीफ उठाने के तीन सौ चौंसठ दिन। उत्सव नहीं तो आसामी को जीवन नहीं। उत्साहपूर्वक मनाया जाने वाला, साल में बस एक बार आने वाला—रंगों का, प्रकाश का, उत्साहारितेक का एक दिन किस तरह नष्ट हो रहा है!

दोष किसका?

फसल कटने के बाद जब तक धान भंडार-घर में पहुंचे, शांति से प्रतीक्षा करते रहे। पीढ़ियों से चले आए अपने अधिकार के प्रति निश्चिंत रहे।

किट्टुवारियर ने पुंजा के काम के लिए वल्ली नहीं दी। कौन है पूछने को? पगार दी। नकद पैसा। हर तरफ काला धन। केवल ब्लैक मार्केट में बिकने वाला धान। पगार नियम के अनुसार। लेवी का भाव अगर प्रति क्विंटल पैंसठ रुपए है तो तीन और दो मानम धान के हिसाब से वे देंगे। किट्टुवारियर का नया हिसाब सुन कुछ समझे बिना वे लोग आंखें फाड़े खड़े रहे।

'तुम लोगों को पगार ही चाहिए, न। मुझे हिसाब रखने की जरूरत नहीं। रोज पैसा दिया न? एक पैसा भी कम किया क्या? अब यहां क्यों खड़े हो?' किट्टुवारियर का गर्जन हुआ।

बहुत बड़ा प्रहार। वे चकित खड़े रहे। कुंडल नहीं! फिर कैसी खेती! पकी फसलों का पहरा क्यों दिया? जानवरों की देखभाल क्यों की? छप्पर क्यों छाए? पशुओं के बाड़े के छप्पर क्यों बनाए? नदी से जल की धारा मोड़कर पुंजा की सिंचाई क्यों करते रहे? इन सबके पैसे कहां?

उन लोगों को अरुमुखन की कही बात याद आई। अंधेरे सवालों में रोशनी पड़ती है। एक-एक सवाल अधिक स्पष्ट होता जाता है।

उत्सव में कैसे जाएं?

फिर से खुद में उलझ जाते विचार। पूरा एक साल तिरुनेल्ली में मेहनत की। एक

दिन बाहर जाकर मौज मनानी ही चाहिए। मंदिर के आसपास घूमना चाहिए। पेट भर खाना तो मिलेगा।

काट्टिकुलम पार किया तो उन लोगों का दल जाते दिखा। भात की ललक। नमक, मिर्च और नारियल की बनाई सब्जी के साथ बढ़िया खाना—मंदिर का अहाता जहां खाने की गंध अटकी रहती है। जहां देखो भात।

सुना है कि धान का सोने जैसा दाम हो जाने पर भी दावतों में कोई कमी नहीं। मूपिल नायर, मेमंडु नायर और पनमरम के नायरों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्द्धा है। आज कोई सौ परा चावल का भात बनाएगा तो कल की बारी वाला दो सौ परा चावल का भात तैयार करवाएगा। आज एक सब्जी है तो कल दो। मीनम की चौदहवीं तारीख तक पहुंचते-पहुंचते स्पर्द्धा चरम सीमा पर पहुंच जाती है। मंदिर के आस-पास भात का उत्सव। जूठे बर्तनों का अभिषेक। सड़ी भोजन-सामग्रियों की गंध।

वे लोग समृद्धि की गहराई में डूबने जा रहे हैं। कुंडल नहीं मिला तो क्या! अगले साल भर के लिए खुद को बेच सकते हैं। गुलामी का पैसा लेकर खुशियां मना सकते हैं। गुलाम बनने की जल्दी में जाते लोग।

तिरुनेल्ली में कल तक कोई उत्साह नहीं दिखा था।

झाड़ियों में जंगली फूल ढूंढती कोई आसामी औरत नहीं।

हमेशा की तरह, हरा गुदना गोदने वाली कुरुमाट्टी की थैली में अनगिनत चवन्नियां नहीं पड़ रहीं। पहले वह कंजुणी के पत्ते तोड़ने खेतों में भटकती रहती थी। इस बार नहीं दिखी।

सेयतु की दुकान पर एक आने के एक के हिसाब से मिलते नारियल के छिलके उसने नहीं खरीदे।

जितने छिलके थे, उन्हें जलाकर, पीसकर कंजुणी के रस में मिलाकर, नुकीली सुई लिए वह व्यर्थ प्रतीक्षा करती रही।

कुछ हल्की गतिविधियां कल ही दिखाई दीं। घाट पर रंग उड़ी धोतियां सुखाने के लिए बिछाई गई हैं—फटी-पुरानी धोतियां। बच्चे नदी में बार-बार कूद फिर धूप में जलती चट्टानों पर लुढ़कते रहे। शाम तक वे इस तरह नहाते-सुखाते रहे।

अपने जोड़े को ढूंढने की जल्दी में नहाकर, साफ कपड़े पहनकर, बाल संवार, बीड़ी पीकर, गले में रेशमी रुमाल लपेटकर जिसे पिछले साल उत्सव से खरीदा था, युवा लोग तड़के ही चले गए थे।

दोपहर बीतने तक कुंडल न मिलने की बात उन्हें भूल गई। लड़कियां घाट से सूखी, फटी साड़ियां खींच, पहनती हुई दौड़ती चली गईं। बच्चों ने चट्टानों को छोड़ दिया। आमों के नीचे से दौड़ गए।

मूक बावली सबकी साक्षी बनी खड़ी रही। उन लोगों के विलाप, प्रार्थना, भोलापन, चपलता, मोह—सब कुछ की। काट्टिकुलम पार करके राघवन नायर कुछ और बढ़ा तो सामने खामोश तिरुनेल्ली। मीनम की धूप में मुरझाई तिरुनेल्ली। अनाथ पुंजा के खेत। पीले पड़े धान। आज भूल का भी दिन है। खलिहान और झोंपड़ियों के लोगों की भूल का दिन। भूल के सामने एक ही विचार—उत्सव में जाना है।

एक साल से मन में लिखते आए आवश्यकताओं की सूची बार-बार पढ़ लेते हैं।—

पनवल्ली पहुंचा तो देखा, हाथ हिलाते युवक की चाल में गोपालन वारियर आ रहे हैं।

गरीब हो गए उस आदमी में ऐसा कुछ है जो कभी नष्ट नहीं हुआ।

पनवल्ली के खेत कर्ज में डूब गए हैं। कम से कम कर्ज बढ़ाने के लिए तो जरूर, अगले साल की भी खेती चलानी चाहिए। है न?

ऐसा आदमी जो किसान के रूप में जन्मा। जिद है किसान की ही तरह मरने की भी।

उसके पशुओं के बाड़े में बस लकड़ियां हैं। खलिहान में बंटाई के धान। भीतर आधी गरीबी।

पेशगी लेकर बाजार जा रहे हैं। यहां उन लोगों के जाने के पहले दे देना भी काफी है। इतना पर्याप्त नहीं। ठीक अवसर पर दिए जाने वाले पैसे का दोगुना मूल्य है वह।

'लौट क्यों आए?'

'तबीयत अच्छी नहीं। कितनी बार का तो देखा है।'

'मैंने भी इस बार न जाने को सोचा। उन लोगों को देने के लिए पैसा आज ही जुटा पाया।'

'कितने लोग चाहिए?'

'छह थे अब तक। इस बार दो ही चाहिए। घर के सामने वाला खेत भी बंटाई पर दे दिया।'

जितना कुछ है बंटाई पर दे देने पर भी कम से कम एक खेत रोके रखने की जिद है।

'मिट्टी बेटा है! क्या बेटा बेच सकते हैं, चाहे कितना ही नालायक क्यों न हो?' यही सवाल है।

'धान बेच दिया?'

'बेचने को नहीं। चेट्टी ने सूद ले लिया।'

'पूंजी?'

'उधार। अगली फसल के लिए बीज खरीदना है...'

सिकुड़ी खड़ी झोंपड़ियां। सूखे जंगल। दावाग्नि से झुलसे घास के मैदान। दूर—क्षितिज में सिर ऊंचा किए खड़ी ब्रह्मगिरि।

इस साल की दावाग्नि वेल्लरोडी के दो पहाड़ों के पार पहुंच गई। सोए बिना बैठे रहनी वाली रातें।

कहां नहीं जा सकता कि बच गए। आग बुझी नहीं है। आकाश में उड़ जाते धुएं की हल्की पर्तें। रात में आग चमकने लगती है। किसी भी ओर अपनी जिह्वा बढ़ा सकती है।

मारा यहां क्यों नहीं आती? जब से शिवरामन आया, उसने आना बंद कर दिया। जवनी आकर झाड़ू-बुहार करके चली जाती है। मारा रोज खर-पतवार साफ करने के काम पर जाने लगी है। तीनों जून का खाना वारियम में फिर से हो गया है।

'घर से आने वाले को यहां के नियम बताने की क्या जरूरत है?'

वारस्यार का सवाल। अच्छा सवाल था। खानदान के आदमी को बड़े भाई के आसामी औरत से फंस जाने की बात पता न चले।

उस दिन जो कहा था, उस पर उन्हें विश्वास नहीं आता। आएगा भी नहीं!

मारा को रोज वल्ली तौल कर दी। उसने कभी सिर नहीं उठाया। लेकर चुपचाप मुड़ जाती है। पता है कि वह भूखी नहीं रहेगी। ऐसा मन को विश्वास देने का प्रयत्न किया कि अधिक पूछ-ताछ की कोई बात नहीं है।

कितनी रातें!

सूनी वेल्लरोडी की झोंपड़ी में बैठकर उसने सुश्रूषा की। ठंडी उंगलियों का स्पर्श। सौम्य चेहरे की मुस्कराहट। एकांत दूर करने वाली चूड़ियों की खनखनाहट।

आलस के दिन —अवसान होता है तो सबका एक साथ।

शिवरामन को रोकने का मन था। कहा कि पत्नी और बच्चों को ले आए।

वह बोला, 'मैं नहीं आऊंगा। बड़े भैया कि कमाई मुझे नहीं छीननी। दावेदारों को दे देना...'

वह जान गया होगा।

क्या?

मूप्पन लोगों की यही बात की मारा पेट से है और उसके लिए जुर्माने की बात। दो और दो चार ही।

तो उसके प्रसव का समय आ गया?

उसके पेट के बच्चे का पिता कौन है? अब इसकी खोज की जरूरत नहीं।

मैंने जो कमाया—

वेल्लरोडी में खाली कराई सरकारी भूमि। एक घर। टैक्स भरकर पट्टा लिया। वह अपना

हो गया। कोई भी ले ले। नहीं तो जो वन से लिया वह वन को ही। मरने तक रहने की एक जगह...

सर्वणी खेत पार किया, धूप की दुर्बल लंबी बांहें।

सेयतु उत्सव नहीं गया। वह चल-फिर नहीं सकता। घुटने पर एक बहुत बड़ा फोड़ा। नारियल के छिलके जितना बड़ा। मानंतवाडी चलें तो आपरेशन हो सकता है।

उसने कहा, 'नहीं, नायर! फूटने को हुआ।'

उसने 'मटकीमला' जाने का निर्णय कर लिया है। बैठकर मक्खियां नहीं भगा सकता। मटकीमला में कॉफी के बागान हैं, लोग हैं। नमंकीन मछली और चाय वहां भी बिकेगी। यहां से ऊब गया। ऊब जाने के कारण हैं—

गोपालन मूस व्यापार शुरू करने जा रहा है। किट्टुवारियर का भी हिस्सा है। एक नई दुकान खुल रही है।

व्यापार बढ़ेगा। चुंगी जल्दी ही खत्म होगी। कुटक से अवैध रूप से धान लाने वाले इसी रास्ते से जाएंगे। आधी रात को दुकान खुली रखने पर बिक्री अच्छी चलेगी। पता नहीं कि उसके साथ कोई और बात भी है।

सेयतु ने अपने पुरानी केतली और चाय के धब्बे पड़े गिलास मूस को कम दामों पर बेच दिए।

दुकान के सामने सूने बरामदे में पुरानी बोरी पर पैर पसारे वह बैठा है।

खाली बेंच पर आ गिरा।

'इस साल के उत्सव में केवल हम नहीं गए।'

'दस बोरी शकरकंदी थी। एक-एक कर बाजार भिजवा दी। बिक गई। यही बाकी।' सेयतु ने कहा।

'तू कब जाएगा?'

'फोड़ा फूटते ही, तुरंत।'

'मोयतीन?'

'ठेकेदारों के साथ शकरकंद के काम के लिए रहने दे।'

'अब भी पैर बहुत दुख रहा है?'

'यह तब होता, जब पहरे का समय था...'

'रात में जरा भी नींद नहीं आती?'

'मैं सोचता था, तुम भाई के साथ चले जाओगे।'

'इसलिए तो तुमने चिट्ठी लिखकर उसे बुला भेजा?'

'यहां एक झोंपड़ी बनाकर वह भी रहता!'

'मैंने मना तो नहीं किया।'

'कुछ जमीन होती तो उसका मन ठहरने का था।'

'मैंने सरकारी जमीन खाली तो करवाई है।'

'उसके दावेदार तो अलग हैं न?'

'कह चुके?'

'दामू वारियर कैसे हैं?'

'बहुत बुरा हाल है। पित्त जिगर में भी होने का शक है।'

'अस्पताल में कौन है?'

'पनंकुट्टी वाला छोटा भाई।'

'वारस्यार आज वहां गई है।'

'काट्टिकुलम से होकर मैं लौटा। इसीलिए देखा नहीं।'

'उण्णि आज भी चेट्टी से मिलने गया है।'

'मिलने दो।'

'खयाल रखना। वे बच्चे और मां कष्ट में पड़ जाएंगे।'

'हूं।'

सिर्फ मेरे लिए वारस्यार भात तैयार कर रख गई। मंदिर जाने की व्यस्तता और अस्पताल में वारियर के लिए धुले कपड़े भिजवाने के बीच भात और सब्जी भी बनाई। भूख नहीं, तो भी थोड़ा तो खाना ही चाहिए। कल सुबह वे आएंगी। बर्तन ऐसे ही देखा तो—

पहले बछड़े को कंजी।

सानी वाले बर्तन में ऊपर तक मक्खियां भरी पड़ी हैं। एक कालापन मात्र। चावल की मांड़ दिखाई नहीं देती। बाहर जाकर पलट दिया।

बर्तन नाली के पास ले जाकर धोया। बंद रसोई में मक्खियां भिनभिना रही हैं। निर्जन घर में मक्खियों का आधिपत्य। दीवारों में जहां मीनम की गरमी से ठंड बची हुई है, वे चिपकी रहीं।

भूख बुझ गई। आज खाना नहीं चाहिए। फिर से दरवाजा बंद करते समय मक्खियां एक साथ माथे और चेहरे पर आ टकराईं।

अहाते में बछड़े की आवाज। ऊपर बांस के झुरमुट से गाय रंभाई।

तुम लोगों को आज पानी नहीं मिला— आता हूं— बड़े तसले में पानी डालकर गाय के सामने रख दिया।

पहाड़ उतरते समय आंखों से जैसे धुआं निकला। सिर के अंदर कुछ जल रहा है...

मारा उत्सव में नहीं गई।

जवनी के तैयार होकर निकलने तक धूप चढ़ आई थी।

'आओगी नहीं?'

'नहीं।'

'क्यों?'

'नहीं, मेरे लिए उत्सव नहीं।'

नीचे, मीनम की गरमी में मुरझाई तिरुनेल्ली को देखती हुई, वेल्लरोडी के कोने की झोंपड़ी के बरामदे में वह बैठी रही। मनुष्यरहित तिरुनेल्ली।

रोमांचरहित हवा–

पक्षियों का थका रुदन–

पीले पड़े पुंजा के खेत।

थकी पड़ी तिरुनेल्ली के निःश्वासों की तरह ऊपर ब्रह्मगिरि में जंगल की आग से धुआं निकलता रहा। आग नहीं, धुआं। उड़कर कई-कई आकारों में वह आकाश में विलीन होता रहा।

ब्रह्मगिरि की लंबी सांस! उसके मन के किसी अज्ञात कोने में छिपी चिंता के ढेर से धुआं निकलता रहा। इस धुएं का आधार, वह चिनगारी कहां है, यह ढूंढ सकने में वह अक्षम थी। जानते हुए भी कि वह उसे जला रही है, उसने बिना कुछ कहे समर्पण कर दिया। धुआं निगल-निगलकर मर जाऊं। बस मुट्ठी भर राख बचे।

पश्चिम में छाया लंबी पड़ने लगी तो उसे याद आया–

अंबलकुन्न जाकर गाय दुहनी है। तिरुवोलम्मा ने सुबह करियन से कहला भेजा था। गोरे तम्पुरान के रात के पीने के लिए दूध चाहिए तो आकर दुह ले, ऐसी ध्वनि। बीमारी से उठे तम्पुरान के लिए दूध।

जल्दी से पहाड़ उतर गई। सूखे घास की ठूंठें मीनम महीने की गरमी से कड़ी हो गई हैं। पैरों में दर्द हुआ। पर खेत में नहीं उतरी।

दुहने के लिए बर्तन चाहिए।

वारियम में बर्तन घर में बंद होंगे।

तम्पुरान के खलिहान से एक लोटा ले लूं।

दाहिने ओर के रास्ते से चली।

नया-सा लगता रास्ता।

कितने दिन हुए तम्पुरान के खलिहान में गए हुए?

उस दिन शाम को छोटे तम्पुरान के आने की बात सुनकर तिरस्कृत-सी चली आई थी।

हां। अब मैं किसलिए?

छोटा भाई आ गया है।

तेरा कलंक एक परछाईं की तरह क्यों पीछे पड़ा है?

ड्योढ़ी पर पहुंचते-पहुंचते हांफ गई। शरीर से जैसे भाप निकल रही हो। कटहल तक पहुंचने पर पैर बिल्कुल थक गए। ठंडी हवा। वन की हृदय-हरीतिमा से आती ठंडी हवा।

ठंडी हवा ने एक संगीत की तरह उसे सहलाया।

उसकी ताल में वह धीरे-धीरे बह गई।

सामने बरामदे में लोटा है, पानी है। रहने दो। दुहने का समय हो ही रहा है।

उस सर्वव्यापी संगीत के सामने उसने अपने मन को खुला छोड़ दिया।

जंगल में गिलहरी कटकटाई।

चिड़ियों के चहचहाने की आवाज आई।

कटहल पर उड़ती मधु-मक्खियां।

बरामदे में पड़ी खाट से सटकर वह फर्श पर बैठ गई। छत पर गोबर लगाकर लगा दी गई धान की बालियों में एक क्षण आंखें गड़ी रहीं। ठंडी हवा के संगीत ने उसकी पलकें सहलाईं...

धूप में निकलना ठीक नहीं हुआ।

भूख-प्यास बुझ गई। जरा लेटना चाहिए। पहले जरा पानी पी लूं। भूख का सामना फिर कर सकते हैं। शाम होने दें या रात हो जाए। अथवा एक दिन खाना नहीं खाया तो क्या होगा, देख लें!

हाथ बढ़ाकर बरामदे में रखा, लोटा उठाया। धूप से गरम पानी छलक गया।

सोते के पानी की ठंडी-ठंडी उंगलियों का परस।

उस सुख को पोंछे बिना गीले अंगोछे से बदन ढंककर राघवन नायर सामने के बरामदे में आया।

पैर किससे टकरा गया, यह देखने के लिए आंखों से गीला तौलिया हटाया।...

बंद नीली पलकें— पीले पड़ गए गालों पर बालों की बिखरी लटें।

एक मीठा सपना जिसे भूल नहीं सकते!

एक सुंदर चित्र जिसे मिटाने का मन नहीं।

ओठों पर पसीने की बूंदें।

नहीं! अंदर नहीं जाना। यह चित्र मिट न जाए। यह स्वप्न टूट न जाए। इस क्षण की मूर्ति मुझसे खंडित न हो जाए।

ओंठों के कोनों में छिपी हल्की हंसी।

पल बीतते गए। उस प्रवाह में बहे बिना, शिला बन खड़े रहना — नहीं, रह सकता— मैं इतना अक्षम हूं!

मारा! आवाज बाहर नहीं आई।

कड़ी दोपहरी का आलस्य। हवा का जादू! एकांत का संगीत। एक सपना जो जाग नहीं पड़ता, एक चित्र बनकर जो मिट नहीं जाता, एक फूल बनकर जो मुरझाता नहीं। एक दीर्घ सबल क्षण—

देखते-ही देखते आंखें भर आईं। ओठों की हंसी ओझल हो गई। पलकों का स्पंदन थम गया।

खिलने जा रही कली का सौंदर्य—

जैसे बैठी थी वैसे ही एक ओर झुक गई—

ठीक बगल में पानी से भरा लोटा—

क्षण भर में उसे बांहों में ले लिया।

राघवन नायर को विश्वास नहीं हुआ—

धूप में मुरझाया फूलों का एक गुच्छा। बोध-अबोध के बीच बिखर गया एक सुंदर स्वप्न।—आधे क्षण का वरदान। आधे क्षण का शाप।

तुरंत वह सचेत हुई।

तड़पकर उठी। अपने कंधे पर रखे खुरदुरे हाथों को, गोरी उंगलियों को एक क्षण घूरती रही। आंखों में अविश्वास की लहरें — सांझ की रोशनी में शोभा बिखेरती आंखें — दुख फूट रहा है जिनसे।

दो भरी झीलें।

कंधे पर ठहरे हाथों को वह हटा नहीं सकी। केवल झुकाव को बचाया।

झुके चेहरे के नीचे काली मिट्टी लिपी भूमि पर आंसुओं की गरम बूंदें गिरकर गायब हो गईं।

'मैं जा रही हूं।' उसका स्वर बहुत दबा हुआ था।

आंगन के कटहल के पत्तों की मर्मर ध्वनि की तरह, सोते के जल के कल-कल जैसा, चिड़ियों की चहचहाहट की भांति अपने आप से फुसफुसाहट।

खाली आवाजें—

'मारा!'

'मैं जा रही हूं।' सच! वह जा रही है? सपना सच हो रहा है? कहां जाती है? किसलिए?

'तू उत्सव में नहीं गई?'

उसने सिर हिलाया। जैसे उसकी आवाज मर गई हो। धीरे-धीरे आंखें गीली हो गईं। छाती भीग गई।

नहीं, इतना नहीं सह पाऊंगा। रोती लड़की की ओर खाली देखता नहीं रह सकता।

उत्तर-दक्षिण टहलने लगा। बरामदा काफी लंबा नहीं। वह वहां एक मूर्ति के समान खड़ी हो गई। पल थक गए!

'चुंडली कहां है?'

उसने दूर कहीं दृष्टि टिका दी।

'उत्सव पर भी नहीं आया?'

'नहीं। मैं जा रही हूं।'

'तू जाएगी? सच में तू जाना चाहती है?'

वह चकित रह गई। उसकी आंखों में छायाएं भर गईं।

'तू क्यों जाती है? यहीं रह जा, हमेशा के लिए!'

वह चौंक पड़ी जैसे सामने बालों की लटों में लटकी कोई विपत्ति फूट पड़ी हो। पीढ़ियों का बोझ ढोकर गुजरते क्षण—

'चार या आठ दिन के लिए नहीं, हमेशा...हमेशा के लिए तू यहां रह जा।'

'मैं बुरी हूं, तम्पुरा —' फट जाती कच्चे बांस की पीड़ा, सिसक।

'मुझे पता है। तू सोचकर बता।'

'मैं बुरी...बुरी...बुरी...'

'होने दो।' दबे स्वर में लोहे की दृढ़ता थी। उसका निषेध कर पाने की, उपेक्षा करने की, उसे भेदकर दूसरी ओर जा पहुंचने की शक्ति मारा में नहीं थी।

तरंग प्रिंटर्स, लक्ष्मी नगर, दिल्ली द्वारा मुद्रित